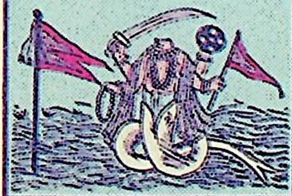








ग्रह लाघव











खेमराज
श्रीकृष्णदास
प्रकाशन

॥ श्रीः ॥

श्रीयुतगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञविरचितो

ग्रहलाघवः ।



पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराज-
कीयप्रधानसंस्कृत विद्यालयपरीक्षोत्तीर्ण श्रीयुत
भोलानाथात्मज-भारद्वाजपण्डित-
रामस्वरूपकृतया
सान्वयोदाहरणभाषाटीकया सहितः



मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : फरवरी २००८, सम्वत् २०६४

मूल्य ८० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at the Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

धन्यवादाः ।

सन्त्वसंख्याता धन्यवादाः श्रीयुतविद्गुण-ग्राहकाय वेदशास्त्रादिग्रन्थोद्धारकाय तोषितभूसु-राय श्रीवेङ्कटेशचरणकञ्जालये श्रेष्ठिश्रीकृष्ण-दासात्मजक्षेमराजगुप्ताय, येन लीलावत्यादि ग्रन्थानां भाषाव्याख्याप्रकाशनानन्तरं दानमाना-दिना सन्तोष्याहमस्य वर्य्यस्य श्रीगणेशदैवज्ञ-कृतग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थस्य सान्वयभाषा-व्याख्यायै प्रेरितो ग्रन्थमेनमन्वयसनाथितभाषा-व्याख्यालङ्कृतं कर्त्तुं प्राभूवम्। ईदृक्परोपकरण-चणान् मनुजाभरणान् सपरिवारान् चिरायुषः कुर्य्याद्यज्ञेश्वरः ॥

इति—

स एव पण्डितो रामस्वरूपः ।

भूमिका ।

" अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्तजगदाधारमूर्त्तये ब्रह्मणे नमः ॥ "

ज्योतिषशास्त्र आर्य्यावर्त्तनिवासी हिन्दुओंका सर्वस्वधन है, ज्योतिषके न होनेसे हिन्दुओंका एक क्षण भी कार्य नहीं चल सकता, जिस समय जीव गर्भमें आता है उस समयसे लेकर मृत्युकालपर्य्यन्त क्या मृत्युकालके अनन्तर भी ज्योतिषशास्त्रसे हिन्दुसन्तानका सम्बन्ध रहता है, हिन्दुओंको प्रत्येक कार्य्यमें ज्योतिषकी सहायता लेनी पड़ती है इस कारण प्रत्येक हिन्दुओंको थोड़ा बहुत ज्योतिषशास्त्र अवश्य जानना चाहिये, परन्तु कालकी विकराल गतिसे आजकल हमारे देशमें ज्योतिषकी चर्चा जैसी लुप्त होगई है, उसको स्मरण करनेसे चित्त अत्यन्त ही खिन्न होता है, ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन तीनों वर्णोंके लिये अत्यन्त आवश्यक है—

" सिद्धान्तसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम् ।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्त्तं कर्म्म न सिद्ध्यति ।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्म्मितं पुरा ॥
अत एव द्विजैरेतदध्येतव्यं प्रयत्नतः ॥ "

अर्थात्–सिद्धान्त, संहिता और होरा–रूप ज्योतिःशास्त्र वेदका निर्मल नेत्र है, इसके विना श्रौतकर्म्म और स्मार्त्तकर्म्म सिद्ध नहीं हो सकता, इस कारण ब्रह्माजीने प्रथम इसकी रचना करी है इस लिये तीनों वर्णोंको इसका अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है, आजकल जो हमको कर्म्मफलकी प्राप्ति नहीं होती इसका कारण केवल ज्योतिषशास्त्रका न जानना ही है. अब यह जानना आव-

श्यक है कि जिसके जाने विना कर्म्मफलकी प्राप्तिमें भी विघ्न हो जाता है उस ज्योतिषशास्त्रका क्या स्वरूप है? ज्योतिषशास्त्र वेदके छः अङ्गोंमें एक अङ्ग है और वेदाध्ययन तथा वेदविहित कर्म्म आदिके कालका निर्णय करना इसका प्रयोजन है; जैसे—

" वेदास्ताव्द्यज्ञकर्म्मप्रवृत्ता यज्ञाः
प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात्कालबोधो यतः
स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात् ॥"

अर्थात्-वेदोंमें जो कुछ यज्ञादि कर्म्म कहे हैं; वह सब कालज्ञानके विना यथावत् फलदायक नहीं होते और वह कालज्ञान इस ज्योतिषशास्त्रके विना नहीं होता, इस कारण ज्योतिषशास्त्रको वेदका अङ्ग कहा है, इस ज्योतिषशास्त्रके अनुसार वर्त्ताव करनेसे अनेक प्रकारकी सम्पत्ति प्राप्त होती है, इस ज्योतिषशास्त्रको जाननेवाला जन्म-मृत्यु-सुख-दुःख-रोग-शोक और वृत्ति आदिका यथावत् वृत्तांत कह सकता है, इस कारण ही ज्योतिषशास्त्र अहङ्कार करके कहता है कि—

" विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
सफलं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥"

अर्थात्-ज्योतिष शास्त्रके सिवाय अन्य शास्त्रोंमें विवादके सिवाय कोई फल नहीं है, सफल है तो ज्योतिष शास्त्र ही है, जिसके साक्षी सूर्य्य और चन्द्रमा हैं, यह ज्योतिष शास्त्र अति प्राचीन है, इसकी प्राचीनताका निर्णय करना विडम्बना मात्र है, क्योंकि जब ज्योतिषवेदका अङ्ग है तब तो यही कहनाहोगा कि,ज्योतिष शास्त्र वेदका समकालीन है; इसके विषयमें ऐंग्लेण्डीय बुद्धिमानोंने जो कुछ लिखा है, वह भी यहां दिखाना आवश्यक है,एशियाटिकसोसायटीके सभासद बेन्टलि (John Bentley) ने हिन्दुओंके अनेक ज्योतिष ग्रन्थ और ग्रन्थकर्त्ताओंका तथा प्रसङ्गसे

पौराणिक अनेक विषयोंका वृत्तान्त निरूपण करनेके लिये अपने अमूल्य समयको व्यय करके जो (Historical Veiw of the Hindu astronmy) पुस्तक लिखा है, उसके प्रारम्भमें ही ज्योतिष शास्त्रके उत्पत्ति समयका निर्णय करनेमें असमर्थ होकर लिखा है—

(The early part of astronomy the Hindus-like that of other nations is involved in great obscurity. Wecan filnd no trace who the persons were that first began the science nor the means employed by them for effecting their ground purpose.) और पिटर बार्लो (peter Barlow) महाशय हिन्दुओंके प्राचीन ज्योतिषको यद्यपि शास्त्र कहना स्वीकार नहीं करते हैं परन्तु इसके प्राचीन होनेको स्वीकार करते हैं कि—(However ancient may be the rude observations of the Chinese and Indians, they possessed no science properly so-called) किन्तु रिचर्ड एण्ड प्रॉक्टर (Richard and proctor) ऐंग्लेण्डीय विद्वानोंमें कुछ साधारण मनुष्य नहीं हैं, उन्होंने प्राचीन ज्योतिषका इतिहास लिखते समय (Encyclopedia Britannia) अपने पुस्तकमें लिखा है—(The clims of the Indians rest on a more solid foundation. We are in possession of the tables from which they compete the eclipses and place of the planet and the method by which they effect the computations. We have in short, an Indian Astronomy committed to writing which reprents the celestial phenomena with ciderable exactness and which therefore could be produced by a people for advance in science.)

परन्तु यह महाशय भी यह शास्त्र कितना प्राचीन है सो निश्चय नहीं करसके, अभिप्राय यह है कि, निःसन्देह हिन्दुओंका ज्योतिष शास्त्र अत्यन्त प्राचीन है, क्योंकि आजकल हरएक वस्तुको खोज करनेमें ऐंग्लेण्डीय विद्वानोंके बराबर किसी दूसरेका साहस देखनेमें नहीं आता और जब यही लोग हमारे ज्योतिष शास्त्रके प्रारम्भकालको नहीं पा सके, फिर हमें अपने ज्योतिःशास्त्रके अति प्राचीन होनेमें किस प्रकार सन्देह हो सकता है। यह ज्योतिष-शास्त्र प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त है-एक भाग गणित ज्योतिष और दूसरा भाग फलित ज्योतिष है. गणित ज्योतिषमें ग्रहोंका स्वरूप अवस्था-गति आदिका निश्चय किया गया है, इस गणित ज्योतिषके भी तीन भेद हैं--सिद्धांत १ तन्त्र २ और करण ३। सिद्धांतमें कल्पसे, तन्त्रमें युगसे और करणमें इष्ट शकसे गणित करनेकी रीति कही है, तहां इष्ट शकसे गणित करना अन्य रीतिकी अपेक्षा सहज है, यद्यपि इष्ट शकसे गणित करनेके अनेक ग्रन्थ हैं, परन्तु करणग्रंथोंमें आजकल "ग्रहलाघव" अतिमाननीय है, और बहुधा इसीके द्वारा आजकल पञ्चाङ्ग बनाये जाते हैं, इस कारण इसका सर्वसाधारमें प्रचार करनेके लिये श्रीयुत गुणग्राहक शास्त्रोद्धारक परमधर्म्मज्ञ सेठ श्रीकृष्णदासात्मज खेमराजजीने मुझे इस ग्रन्थका भाषानुवाद करनेके लिये वारंवार लिखा; तब मैंने उक्त सेठजीकी इच्छासे इस ग्रन्थका अन्वय-हिन्दी भाषामें अर्थ और विस्तारपूर्वक उदाहरण श्रीयुत मल्लारि दैवज्ञ और विश्वनाथ दैवज्ञकृत संस्कृत व्याख्याके अनुसार लिखा और सेठ श्रीयुत श्रीकृष्णदासात्मज खेमराजजीको समर्पण करा है, आशा है कि, अब इस ग्रन्थको अवलोकन करके मेरे परिश्रमको सफल करेंगे और जहां मनुष्यधर्म्मानुसार त्रुटि हो उसको पूर्ण करनेके लिये मुझे सूचित करेंगे ॥

पण्डित रामस्वरूपशर्म्मा, मुरादाबाद.

गणेशदैवज्ञ.



इस ग्रन्थके कर्ता गणेशदैवज्ञके पिताका नाम केशव था और इन्होंने पितासे विद्या पढी थी, इनकी माताका नाम लक्ष्मी था, यह गणेश दैवज्ञ भारतवर्षमें गणेशका अवतार थे ऐसी जनश्रुति है. उन्होंने तेरह वर्षकी अवस्थामें ग्रहलाघव नामक इस ग्रन्थकी रचना करी थी, ऐसी चिरकालसे जनश्रुति है, 'ग्रहलाघव' के बनानेका समय ग्रहलाघवीय अहर्गणके लानेसे १४४२ शक है, गणेशदैवज्ञके जन्मका समय १४२९ शकेके औरे धोरे है यह गणेशदैवज्ञ गणितविद्यामें अत्यन्त प्रवीण थे. इन महाशयने जितने ग्रन्थोंकी रचना करी है उनका परिचय नृसिंह दैवज्ञने स्वरचित ग्रहलाघवकी टीकामें लिखा है, जैसे—

"कृत्वाऽऽदौ ग्रहलाघवं लघुबृहत्तिथ्यादिचिन्तामणि
सत्सिद्धान्तशिरोमणेश्च विवृतिं लीलावतीव्याकृतिम् ।
श्रीवृन्दावनटीकिकां च विवृत्तिं मौहूर्ततत्त्वस्य वै
सच्छ्राद्धादिविनिर्णयं सुविवृतिं छन्दोऽर्णवाख्यस्य वै ॥
सुधीरञ्जनं तर्जनीयन्त्रकं च सुकृष्णाष्टमीनिर्णयं होलिकायाः ।
लघूपाययातांस्तथाऽन्यानपूर्वान् गणेशो गुरुर्ब्रह्मनिर्वाणमापत् ॥"

इस लिखनेसे मालूम होता है कि, गणेशदैवज्ञने ग्रहलाघव १ लघुतिथि चिन्तामणी २ बृहत्तिथिचिंतामणि ३ सिद्धान्तशिरोमणिकी टीका ४ लीलावतीकी टीका ५ विवाहवृन्दावनकी टीका ६ मुहूर्त्ततत्त्वकी टीका ७ श्राद्धादि निर्णय ८ छन्दोर्णवकी टीका ९ सुधीरञ्जनी १० तर्जनीयन्त्र ११ कृष्णजन्मष्टमीनिर्णय १२ होलिका निर्णय १३ आदिग्रन्थोंकी रचना करी, उनमेंसे ग्रहलाघव लघुतिथिचिन्तामणि - बृहत्तिथिचिन्तामणि-लीलावती-विवाहवृंदावन और मुहूर्त्तत्त्वटीका-इतने ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं; जिनमें

ग्रहलाघवका विद्वान् बहुत आदर करते हैं और ग्रहलाघव प्रायः सर्वत्र छपा हुआ और लिखा हुआ मिलता है और इसके ऊपर टीकाएँ भी बहुत पण्डितोंने की हैं अन्य ग्रन्थोंके मिलनेमें कठीनता पडती है, इनकी रची हुई लिलावतीकी टीकाका नाम 'बुद्धिविलासिनी' है, इनके बनाये हुए पद्योंके देखनेसे काव्यसाहित्यादिके विषयमें भी यह अतिप्रवीण प्रतीत होते हैं, इन्होंने अपने पिता केशवसे साठ वर्षके अनन्तर ग्रहोंका अन्तर देखकर शाके १४४२ मे नवीन रीतिसे गणना करके इस ग्रन्थको रचा है ॥

काशीस्थराजकीयप्रधानपाठशालापरीक्षोत्तीर्णः
पण्डित रामस्वरूपशर्म्मा
मुरादाबाद. U. P.



श्रीः ।

अथ ग्रहलाघवकी अनुक्रमणिका ।



इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

ग्रहलाघवः ।

सान्वय सोदाहरणभाषाटीकासमेतः



श्रीगणेशं नमस्कृत्य पार्वतीनन्दनं परम् ॥
श्रीगणेशकृतौ कुर्वे भाषां तत्त्वप्रकाशिकाम् ॥

इष्ट देवताको नमस्कार रूप मङ्गलाचरण "वसन्ततिलका" छन्दमें लिखते हैं।

ज्योतिःप्रबोधजननी परिशोध्य चित्तं तत्सूक्तकर्म्मचरणैर्गहनार्थपूर्णा ॥ स्वल्पाक्षरापि च तदंशकृतैरुपायैर्व्यक्तीकृता जयति केशववाक्छ्रुतिश्च ॥ १ ॥

अन्वयः—तत्सूक्तकर्म्मचरणैः, चित्तं परिशोध्य, ज्योतिःप्रबोधजननी, स्वल्पाक्षरा, अपि, गहनार्थपूर्णा, च, तदंशकृतैः, उपायैः, व्यक्तीकृता, केशववाक्, श्रुतिः, च, जयति ॥ १ ॥

अर्थ वेद के विषे भली प्रकार वर्णन करे हुए स्नान, दान जप, होमादि सुन्दर कर्मों के द्वारा चित्तको निर्म्मल करके मुमुक्षु पुरुषोंके अर्थ ज्योतिःस्वरूप ब्रह्मका ज्ञान करानेवाली तथा

थोडे अक्षर और गम्भीर अर्थयुक्त, रावण आदिकों करके रचना किये हुए भाष्योंसे स्पष्ट करी हुई जो भगवतके मुखसे उत्पन्न होने वाली वेदवाणी है सो सर्वोत्कर्ष करके युक्त है। अथवा वेदोंको प्रमाण मानने वाले केशव नामक पिता के रचना किये हुए ग्रहकौतुक आदि ग्रन्थों में कहे हुए ग्रहसाधन आदि कर्मोंके द्वारा चित्तको निर्मल करके नक्षत्रआदिकोंके ज्ञान को उत्पन्न करनेवाली तथा थोडे अक्षर और बहुत अर्थवाली और केशव के पुत्र तथा शिष्यादिकोंके बनाये हुए अनेक टीकाओंसे स्पष्ट करी हुई केशव नामवाले पिताके मुखसे उत्पन्न वाणी सर्वोत्कर्षयुक्त है ॥ १ ॥

अब अपने करणग्रन्थ और रामावतार विष्णु भगवान् की समता को द्योतन करते हुए "औपच्छन्दसिक" छन्दमें मङ्गलाचरण लिखते हैं—

परिभग्नसमौर्विकेशचापं दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुम् ॥ सुफलप्रदमात्तनृप्रभं तत्स्मर रामं करणं च विष्णुरूपम् ॥ २ ॥

परिभग्नसमौर्विकेशचापम्, दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुम्, सुफलप्रदम् आत्तनृप्रभम्, तत्, विष्णुरूपम्, रामम्, करणम्, च, स्मर ॥ २ ॥

(हे शिष्य ! ग्रन्थके आरम्भ करनेके समय) प्रत्यञ्चासहित शिवजीका धनुष तोड़नेवाले, मोतियों के हारसे शोभायमान, सुन्दर भुजावाले, मुक्ति आदि शुभफल देनेवाले, मनुष्यशरीर धारण करनेवाले, उन सर्वजनप्रसिद्ध विष्णुभगवान् के अवतार श्रीरामचन्द्रजी महाराजको स्मरण कर ॥ अथवा (हे गणक !) जिसमें ज्या और चाप इनको त्याग दिया है, जिसमें अपवर्त्तित अर्थात संक्षिप्त गुणक और भाजक हैं, जिनमें चन्द्रमाका मन्द-

केन्द्र और भुजरूपवृत्त भली प्रकार वर्णित है, मन्दफल शीघ्र फल आदिको देनेवाले अथवा चन्द्रग्रहणादिका ज्ञान देनेवाला जिसमें शङ्कुकी छाया ग्रहण करी है ऐसे नाना प्रकारके छन्दोंसे शोभायमान वक्ष्यमाण करणग्रन्थको स्मरण कर ॥ २ ॥

अब गर्गाचार्य्य भास्कराचार्य्यादिकोंके रचना करे हुए करणकुतूहलादि ग्रन्थों के होनेपर भी इस ग्रन्थकी रचना करने की आवश्यकता "वसन्ततिलका" छन्दमें कहते हैं—

यद्यप्यकार्षुरुरवः करणानि धीरास्तेषु ज्यका-धनुरपास्य न सिद्धिरस्मात् ॥ ज्याचापक-र्म्मरहितं सुलघुप्रकारं कर्तुं ग्रहप्रकरणं स्फुट-मुद्यतोऽस्मि ॥ ३ ॥

यद्यपि, उरवः धीराः, करणानि, अकार्षुः, (तथापि) तेषु, ज्यकाधनुः, अपास्य, सिद्धिः, न, अस्मात्—(अहम्) ज्याचापकर्म्मरहितम्, सुलघुप्रकारम्, स्फुटम्, ग्रहप्रकरणम्, कर्तुम्, उद्यतः, अस्मि ॥ ३ ॥

यद्यपि वृद्ध धैर्य्यवान् गर्गऋषि और भास्कराचार्य आदिकोंने करणग्रन्थ रचना किये हैं (तथापि) उन ग्रन्थोंमें ज्याचाप को त्यागकर ग्रह आदिकी सिद्धि नहीं होती है, इस कारण (मैं गणेश दैवज्ञ) ज्या चाप क्रिया रहित, अर्थको देनेवाले संक्षिप्त और स्पष्ट अर्थवाले ग्रहसम्बन्धी ग्रहण--उदय--अस्तादि क्रियाओंके साधनेवालेग्रन्थको करनेको उद्यत हुआ हूँ ॥ ३ ॥

अब ग्रहस्पष्ट आदि कार्य्य करनेके निमित्त अहर्गण जाननेकी रीति दो श्लोकोंसे कहते हैं—

द्व्यब्धीन्द्रोनितशक ईशहृत्फलं स्याच्चक्राख्यं रविहतशेषकं तु युक्तम् ॥ चैत्राद्यैः पृथगमुतः सदृग्घ्नचक्राद्दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ ४ ॥ खत्रिघ्नं गततिथियुङ्निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिषट्कलब्धैः ॥ ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै वारःस्याच्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥ ५ ॥

द्व्यब्धीन्द्रोनितशकः, ईशहृत्, (कार्य्यः) फलम्,—चक्राख्यम्, स्यात् । रविहतशेषकम्, तु, चैत्राद्यैः, युक्तम्, पृथक्, (स्थाप्यम्) सदृग्घ्नचक्रात्, दिग्युक्तात् अमुतः अमरफलाधिमासयुक्तम्, खत्रिघ्नम्, गततिथियुक्, निरग्रचक्रांगांशाढ्यम्, पृथक्. (स्थाप्यम्) अमुतः, अब्धिषट्कलब्धैः, ऊनाहैः, वियुतम्, अहर्गणः, भवेत् । वै, गणः, शरहतचक्रयुक्, अब्जात्, वारः, स्यात् ॥ ४ ॥ ५ ॥

वर्त्तमान शाकामें १४४२ एक सहस्त्र चारसौ बयालीस घटावे जो शेष रहे--उसमें ११ ग्यारहको भाग देय जो लब्धि मिले वह चक्र कहाता है, भाग देनेसे जो शेष बचे उसको १२ बारहसे गुणा करे जो गुणनफल होय उसमें चैत्रादि मास अर्थात चैत्रशुद्ध प्रतिपदासे लेकर इष्टकाल पर्य्यन्त जो गतमास हों उनको जोड देय (यह मध्यम मासगण कहलाता है) इसको दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें द्विगुणित चक्र और दश १० से युक्त कर देय तब जो अङ्क हों उनमें ३३ तैंतीसका भाग देय जो लब्धि मिले उसको (अधिमास कहते हैं) द्वितीय स्थानमें लिखे हुए मध्य-

ममासगणमें युक्त कर देय तब जो अङ्क हों उनको ३७ से गुणा कर देय जो गुणनफल हो उसमें गत तिथि अर्थात शुक्लप्रतिपदासे लेकर इष्ट दिन पर्य्यन्तकी गत तिथि युक्त करके चक्रमें छः ६ का भाग देय, जो शेष बचे उसको छोड देय जो लब्धि हो वह भी गत तिथियुक्त करे हुए अङ्कोंमें युक्त कर देय (यह मध्यम अह गण कहाताहै) इसको दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें ६४ चौसठका भाग देय जो लब्धि हो वह क्षय दिवस होते हैं, इन क्षय दिवसोंको द्वितीय स्थानमें घटा देय जो शेष रहे वह अहर्गण (दिनोंकी संख्या) होता है, पूर्वोक्त चक्रको ५ पांचसे गुणा करके जो गुणनफल मिले उसमें अहर्गण युक्त करके ७ सातका भाग देय जो शेष बचे उससे चन्द्रवार आदि दिनोंका बोध करे अर्थात यदि ० शून्य शेष होय तो सोमवार जाने, १ शेष होय तो भौमवार जाने, २ शेष होय तो बुधवार इत्यादि जाने ॥ ४ ॥ ५ ॥

विशेषरीति--इस रीतिसे इष्टवार मिलता है, कदाचित् इस प्रकार इष्टवार नहीं मिले तो अहर्गणमें १ एक युक्त कर देय या १ एक घटा देय तब अहर्गणोत्पन्न वार और इष्टवार बराबर मिलेगा। इस प्रकार अहर्गण स्पष्ट होता है।

उदाहरण—शाके १५३४ वैशाख शुक्ल १५ सोमवार घडी ५४ पल १० विशाखानक्षत्र घडी ३९ पल ५५ वरीयान् योग घडी० पल ९ उस दिन चंद्रग्रहणकापर्व कितना होगा यह बात जाननेके निमित्त अहर्गण सिद्ध करते हैं—

यहां शाके १५३४ में १४४२ को घटाया तब ९२ बानवे शेष रहे इसमें ११ ग्यारहका भाग दिया तब ८ आठ लब्धि हुए इसका नाम चक्र है--शेष बचे ४ चारको १२ बारहसे गुणा करा तो ४८ अडतालीस हुए इसमें चैत्रादिक गतमास १ जोडा तब ४९ उनचास हुए यह मध्यम मासगण कहाता है, इनको दो स्थानमें

द्विगुणित चक्र १६ सोलह और १० युक्त करा तौ ७५ पिछहत्तर हुए इसमें ३३ तैंतीसका भाग दिया तब २ दो लब्धि हुए यह अधिक मास कहाता है, इसको द्वितीय स्थानके अङ्क ४९ उनचासमें युक्त किया तब ५१ इक्यावन हुए, यह मासगण कहाता है, इसको ३० तीससे गुणा किया तब १५३० एक सहस्र पांचसौ तीस हुए इसमें गततिथि १४ चौदहको युक्त किया और छः का भाग दिये हुये चक्रकी लब्धि १ एकको युक्त किया तब १५४५ एकसहस्र पाँचसौ पैंतालीस हुए (यह मध्यम अहर्गण कहलाता है) इसको दो स्थानमें लिखा एक स्थानमें ६४ चौंसठका भाग दिया तब २४ चौबीस लब्धि मिले यह क्षय दिवस कहलाते हैं, इसको द्वितीय स्थानमें लिखे हुए मध्यम अहर्गणमें घटाया तब १५२१ एक सहस्र पाँचसौ इक्कीस बचे यही अहर्गण है १५२१ इस अहर्गणमें पाँचसे गुणा करे हुए चक्र ४० चालीसको युक्त कर दिया तब १५६१ एकहजार पाँचसौ इकसठ हुए इसमें सात का भाग दिया तब शून्य ० शेष बचा इस कारण अहर्गणोत्पन्न वार सोम आया, यही इष्टवार है।

१५३४ शक	
१४४२	४९ मध्यममासगण
११) ९२ (८ चक्र	चक्र ८×२=१६
८८	१०
४	३३) ७५
१२	२ गत अधिकमास
४८	४९
१ गतमास	५१ मासगण
४९ मध्यममासगण	
५१ मासगण	१५२१ अहर्गण

३०　　　　　　　　　　　　　　८×५=४०

१५३०　　　　　　　　　　　　७) १५६१

१४ गततिथि　　　　　　　　　　२२३—

च० ८÷६=१　　　　　　　　　　० बाकी रहा

६४) १५६५ मध्यम अहर्गण यहां शून्य शेष रहा है इस कारण

२४ क्षयदिवस　　सोमवार मिला इस प्रकार अह-

१५२१ अहर्गण　　गणोत्पन्न वार　और　इष्टवार बराबर है ।

विशेष रीति—जिस वर्षमें अधिक मास पड़ता हो उस वर्षमें अधिक मासके पूर्व अथवा अनन्तर अहर्गण साधना होय तो जो मास अधिक पड़ता होय उस मासके पूर्व अहर्गण साधनके समय पूर्व वर्षकी अपेक्षा अधिक मास अधिक आवे तो ग्रहण न करे अर्थात अधिक मासमें एक १ घटा देय और जो मास अधिक पडता होय उसके अनन्तर अहर्गण साधनेके समय पूर्ववर्षकी अपेक्षा अधिक मास कम आवे तो उसमें एक १ और युक्त करके पीछे अहर्गण साधे ।

उदाहरण=शके १५५५ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा १ शुक्रवार इस वर्षमें वैशाख अधिक मास पडता है और चैत्रशुक्ल प्रतिपदाको अहर्गण साधते हैं—

१५५५ शक　　　　　　　　　　३६ मध्यम मासगण

१४४२　　　　　　　　　　च. १०×२=२०

११) ११ (१० चक्र　　　　　　　　१०

११०　　　　　　　　　　　३३) ६६

३) शेष बचे
१२
३६ मध्यममासगण.

२ अधिक मास—यहाँ वैशाख माससे प्रथम अधिक मास लब्ध होता है परन्तु वह ग्रहण नहीं किया अर्थात् इस २ में एक घटाकर केवल १ ही ग्रहण किया ॥

३६ मध्यममासगण
१ अधिकमास
३७ मासगण
३०
१११०
० गततिथि
१० च०÷६=१
१११९ मध्यमअहर्गण

६४) १११९ मध्यअहर्गण
१७ क्षयदिवस
१०९४ अभीष्ट वारलानेके निमित्त इसमें १०९४
१ एक और मिलाया तो १०९५ स्पष्ट अहर्गण हुआ.

उदाहरण २ द्वितीय—शाके १५३० इस वर्षमें भाद्रपद अधिक मास है तहां कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा शनिवारमें अहर्गण साधते हैं ॥

१५३० शाके
१४४२
११) ८८ (८ च०
८८
० शेष
१२ —

७ म० मा० ग०
च० ८×२=१६
१०
३३) ३३
१ अधिकमास—

— ०
७ ग० मा०
७ म० मा० ग०
२ अधिकमास
९ मा० ग०
३०
२७०
० ग० ति०
च० ८÷६=१
२७१ म० अहर्गण

—यहां अधिक मास लब्ध नहीं होता है, तथापि ग्रहण किया तब अधिक मास हुए २ ॥

६४) २७१ म० अहर्गण
४ क्षय दिवस
२६७ अहर्गण

अभीष्टवार लानेके निमित्त इसमें एक घटाया तब शनिवार मिला अत एव २६६ ही ठीक अहर्गण है ॥ यही वार्ता श्रीभास्कराचार्य्यने अपने सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखी है ।

अब सूर्य और चन्द्रमाआदि ग्रहों के ध्रुवांङ्क लिखते हैं—

खविधुतानभवास्तरणेर्ध्रुवः खमनला रसवार्द्धय ईश्वराः ॥ सितरुचो भमुखोऽथ खगा यमौ शरकृता गदितो विधुतुङ्गजः ॥ ६ ॥ शैला द्वौ खशरा अगोः क्षितिभुवो भूतत्वदन्ता विदः केन्द्रस्याब्धिगुणोडवः सुरगुरोः खं षडचमा वस्विलाः । द्वाक्केन्द्रस्य भृगोः कुशक्रयमला राश्यादिकोऽथो शनेः शैलाः पञ्चभुवो यमाब्धय इमेऽथ क्षेपकः कथ्यते ॥ ७ ॥

खविधुतानभवाः, तरणेः, भमुखः, ध्रुवः (भवति)। खम्, अनलाः, रसवार्द्धयः, ईश्वराः, सितरुचः (ध्रुवः, भवति)। अथ, खगाः, यमौ, शरकृताः, विधुतुंगजः (ध्रुवः), गदितः॥ शैलाः द्वौ, खशराः, अगोः, (ध्रुवः भवति), भूतत्त्वदन्ताः, क्षितिभुवः (ध्रुवः, भवति)। अब्धिगुणोडवः, विदः, केन्द्रस्य, (ध्रुवः, भवति), खम्, षडयमाः, वस्विलाः, सुरगुरोः, (ध्रुवः भवति)। कुशक्रय, मलाः द्राकेन्द्रस्य, भृगोः, (ध्रुवः भवति)। अथ, शैलाः, पञ्चभुवः, यमाब्धयः, इमे, शनेः, राश्यादिकः (ध्रुवः, भवति)। अथ, क्षेपकः कथ्यते॥ ६॥ ७॥

ख कहिये शून्य० विधु कहिये १ तान कहिये ४९ भव कहिये ग्यारह ११ यह सूर्यका राश्यादि ध्रुव होता है। ख कहिये० अनल कहिये ३ रसवार्द्धि कहिये ४६ ईश्वर कहिये ग्यारह ११ यह चन्द्रमा का ध्रुव होता है। खग कहिये ९ यम कहिये २ शरकृत कहिये ४५ यह चन्द्रमा के मन्दोच्च का ध्रुव होता है। कुलाचल कहिये ७ और दो २ खशर कहिये ५० यह राहु का ध्रुव होता है। भू कहिये १ तत्व कहिये २५ दन्त कहिये ३२ यह मङ्गल का ध्रुव होता है। अब्धि कहिये ४ गुण कहिये ३ उडु कहिये २७ यह बुध केन्द्रका ध्रुव है। ख कहिये० षड्यम कहिये २६ वस्विल कहिये १८ यह गुरुका ध्रुव है। कु कहिये १ शक्र कहिये १४ यमल कहिये २ यह शुक्र केन्द्र का ध्रुव होता है। और शैल कहिये सात ७ पञ्चभू कहिये १५ यमाब्धि कहिये ४२ यह शनिका ध्रुव होता है।

यह सब यन्त्रके द्वारा स्पष्ट करके दिखाते हैं ॥

नाम	रवि	चं.	मन्दोच्च	रा.	मं.	बुधके	गुरु	शुक्रके	शनि
राशि	०	०	९	७	१	४	०	१	७
अंश	१	३	२	२	२५	३	२६	१४	१५
कला	४९	४६	४५	५०	३०	२७	१८	२	४२
विकला	११	११	०	०	०	०	०	०	०

इसके अनन्तर क्षेपक कहते हैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

रुद्रा गोऽब्जाः कुवेदास्तपन इह विधौ शूलिनो गोभुवः षट् तुङ्गेऽक्षात्यष्टिदेवास्तमसि खमुडवोऽष्टाग्नयोऽथो महीजे ॥ दिक्छैलाष्टौ ज्ञकेन्द्रे विभकलनवभं पूजितेऽद्र्यश्विभूपाःशौक्रे केन्द्रे गृहाद्योऽद्रिनखनव शनौ गोतिथिस्वर्ग तुल्यः ॥ ८ ॥

रुद्राः, गोऽब्जाः, कुवेदाः, तपने गृहाद्यः, (क्षेपकः, स्यात्)। शूलिनः, गोभुवः, षट्, इह, विधौ. (क्षेपकः, भवति)। अक्षात्यष्टिदेवाः, तुंगे, (क्षेपकः, भवति)। खम्, उडवः, अष्टाग्नयः, तमसि, (क्षेपकः, भवति)। अथो, दिक्छैलाष्टौ, महीजे, (क्षेपकः, भवति)। विभकलनवभम्, ज्ञकेन्द्रे (क्षेपकः, भवति)। अद्र्यश्विभूपाः, पूजिते, (क्षेपकः, भवति)। अद्रिनखनव, शौक्रे, केन्द्रे, (क्षेपकः, भवति)। गोतिथिस्वर्गतुल्यः, शनौ, (क्षेपकः, भवति) ॥८॥

रुद्र कहिये ११ गोऽज कहिये १९ कुवेद कहिये ४१ यह सूर्य्यमें (क्षेपक होता है) । शूलिनः कहिये ११ गोभुव कहिये १९ और ६ यह चद्रमामें क्षेपक होता है । अक्ष कहिये ५ अत्यष्टयः कहिये १७ देव कहिये ३३ यह चद्रमाके मन्दोच्चमें क्षेपक होता है । ख कहिये० उडु कहिये २७ अष्टाग्नयः कहिये ३८ यह राहुमें क्षेपक होता है । और दिक् कहिये १० शैल कहिये ७ अष्ट कहिये ८ यह मङ्गलमें क्षेपक होता है । कम हैं भकला २७ कला जिनमें ऐसी जो नौ ९ राशि अर्थात् आठराशि ८ उन्तीस अंश २९ तैंतीस कला ३३ यह बुधकेन्द्रमें क्षेपक होता है । अद्रि कहिये ७ अश्विनौ कहिये २ भूप कहिये १६ यह गुरुमें क्षेपक होता है । अद्रि कहिये ७ नख कहिये २० और ९ यह केन्द्र शुक्रमें क्षेपक होता है । गो कहिये ९ तिथि कहिये १५ स्वर्ग कहिये २१ यह शनिमें राश्यादि क्षेपक होता है ॥ ८ ॥

यह सब यन्त्रके द्वारा स्पष्ट करके दिखाते हैं ॥

नाम	रवि	चन्द्र	चन्द्रोच्च	रा.	मं.	बुधकेंद्र	गु.	शुक्रके०	श.
राशि	११	११	५	०	१०	८	७	७	९
अंश	१९	१९	१७	२७	७	२९	२	२०	१५
कला	४१	६	३३	३८	८	३३	१६	९	२१
विकला	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अब अहर्गणसे मध्यमग्रह लानेकी रीति लिखते हैं ॥

दिनगणभवखेटश्चक्रनिघ्नध्रुवोनो दिवसकृदुदये स्वक्षेपयुङ् मध्यमः स्यात्॥निजनिजपुररेखा-न्तःस्थिताद्योजनौघाद्रसलवमितलिप्ताः स्व-र्णमिन्दौ परे प्राक् ॥ ९ ॥

चक्रनिघ्नध्रुवोनः, स्वक्षेपयुक्, दिनगणभवखेटः, दिवसकृदुदये, मध्यमः, स्यात् । निजनिजपुररेखान्तःस्थितात्, योजनौघात्, रसलवमितलिप्ताः, परे, प्राक्, इन्दी, स्वर्णम्,(भवति) ॥ ९ ॥

आगे कही हुई रीतिके अनुसार अहर्गणसे लाये हुए ग्रहमें चक्रसे गुणा किये हुए ध्रुवको घटा दे । जो शेष रहे उसमें अपना क्षेपक युक्त कर दे तब जो अङ्क हो वह सूर्यके उदयकालमें मध्यम ग्रह होता है ॥

अपने अपने नगरसे दक्षिणोत्तररेखा जितनी योजन होय उस योजन संख्यामें ६ छः का भाग दे जो लब्धि हो सो कला विकलादि होती हैं; वह अपना नगर दक्षिणोत्तर रेखासे पश्चिम हो तो धन और पूर्व हो तो ऋण जानना । इसको रेखान्तर संस्कार और प्रथम फल संस्कार कहते हैं ॥ ९ ॥

मध्यमग्रह लानेकी रीतिमें यह ध्यान रखना चाहिये कि,ग्यारह वर्षपर्यन्त चक्र एक ही रहता है और क्षेपकाङ्कमें चक्रसे गुणा किया हुआ ध्रुवक घटावे जो शेष रहे उसको अहर्गणोत्पन्न ग्रहमें मिला दे इस शेषको ध्रुवोन क्षेपक कहते हैं ॥ इस विषयका उदाहरण लिखते हैं—

उदाहरण--सूर्यका ध्रुवांक० राशि १ अंश ४९ कला और ११ विकला हैं, इस ४ को चक्र ८ से गुणा करा तो० राशि १४ अंश ३३ कला और २८ विकला हुआ, इसको क्षेपकांक ११ राशि १९ अंश ४१ कला० विकलामें घटाया तो ११ राशि ५ अंश ७ कला ३२ विकला यह सूर्यका ध्रुवोनक्षेपक हुआ, इस रीतिसे सम्पूर्ण ग्रहोंका ध्रुवोनक्षेपक जानना चाहिये; सोई हम स्पष्टरीतिसे कोष्ठकमें लिखते हैं —

नाम	रवि	चन्द्र	चन्द्रोच्च	रा.	मं.	बुधकेंद्र	गु.	शुक्रके०	श.
राशि	११	१०	४	४	७	०	०	७	९
अंश	५	१८	२५	४	१२	१	१	२७	९
कला	७	५६	३३	५८	५२	५७	५२	५३	४५
विकला	३२	३२	०	०	०	०	०	०	०

अब मध्यम रवि जानने की रीति लिखते हैं—

स्वखनगलवहीनो द्युव्रजोऽर्कज्ञशुक्राः
खतिथिहृतगणोनो लिप्तिकास्वंशकाद्याः॥ऽऽ॥

स्वखनगलवहीनः द्युव्रजः, लिप्तिकासु, खतिथिहृतगणोनः (कार्यः) (तदा) अंशकाद्याः, अर्कज्ञशुक्राः, (स्युः) ॥ ऽऽ ॥

अहर्गण में खनगलव कहिये ७० सत्तरका भाग दे तब जो लब्धि हो सो अंशादि होती है। इस लब्धि को अंशात्मक माने हुए अहर्गण में घटावे, जो शेष रहे उसकी कलादिमें अहर्गणसे १५० का भाग देकर जो लब्धि हो उसको कलाआदिमें मानकर घटा दे तब जो शेष रहे सो अहर्गणोत्पन्न रवि .बुध और शुक्र होते हैं, इसको " दिनगणभवेत्यादि " रीतिसे अथवा अपना अपना ध्रुवोनक्षेपक मिलाकर मध्यम रवि-मध्यम बुध और मध्यम शुक्र बनाले ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण- अहर्गण १५२१ में ७० का भाग दिया तब लब्धि=२१ हुए इनको अंश मानना चाहिये, शेष बचे ५१ इनको ६० से गुणा किया तब ३०६० हुए इसमें ७० का भाग दिया तब ४३ लब्धि हुए इनको कला मानना चाहिये। शेष बचे ५५ इनको ६० से गुणा किया तब ३००० हुए इसमें ७० का भाग दिया तब ४२ लब्धि हुए इनको विकला माने इस प्रकार अहर्गणमें सत्तर

का भाग देने से २१ अंश ४३ कला ४२ वि० लब्धि हुए इनको अंशात्मक अहर्गण (१५२१ अंश) में घटाया तब १४९९ अंश १६ कला १८ विकला बचे। इनकी कलादि १६ क० १८ वि० में (अहर्गण १५२१) में १५० का भाग दिया तो लब्धि हुए १० इनको कलात्मक माने। शेष रहे २१ इनको ६० से गुणा करा तो १२६० हुए इनमें १५० का भाग दिया तो लब्धि हुए ८ इनको विकलात्मक माना। इस प्रकार लब्धि हुए १० कला ८ विकला इनको ऊपरके अंशोंको छोड़कर कलादिमें घटाया तब शेष रहे १४९९ अंश ६ कला १० विकला। (ऐसी रीति है कि अंशों में ३० का भाग देकर जो शेष बचे वह अंश होते हैं और जो लब्धि मिले वह राशि होती है, यदि बारहसे अधिक लब्धि आवे तो लब्धि में बारहका भाग देकर जो शेष रहे उसको राशि माने और लब्धि को त्याग देय) इस कारण यहां १४९९ अंशोंमें ३० का भाग दिया तब शेष रहे २९ यह अंश हुए और लब्धि मिले ४९ यह बारह से अधिक है इस कारण बारह १२ का भाग दिया तो शेष रहा १ यह राशि हुई और लब्धि को त्याग दिया इस प्रकार करने से १ रा० २९ अं० ६ क० १० वि० यह अहर्गणोत्पन्न सूर्य्य हुआ। इसमें ऊपर कही हुई "दिनगणभवेत्यादि" रीतिके अनुसार (०।१।४९।११)+८=०॥ १४।३३।२८ चक्रसे गुणा करे हुए ध्रुवाङ्कको घटाया $\frac{१}{०}$। $\frac{२९}{१४}$। $\frac{६}{३३}$। $\frac{१०}{२८}$ तब शेष रहे १।१४।३३।४२ इसमें मध्यर्कके ११।१९ ४१।० क्षेपकाङ्कको जोड़ दिया तो १।४।१३।४२ हुए यह मध्यम रवि हुआ। अथवा अहर्गणोत्पन्न रवि १।२९।६।१० में रवि का ध्रुवोनक्षेपक ११।५।७।३२ जोड दिया जाय तब १३।४।१३।४२ हुए यहां राशि बारहसे अधिक है इस कारण राशियों १३ में बारह का भाग देकर शेष एक को राशि माना तब वही १।४।१३।४२ मध्यम रवि होगया।

अब मध्यम चन्द्र लाने की रीति लिखते हैं——

गणमनुहतिरिन्दुः स्वाद्रिभूभागहीनः
खमनुहृतगणोनो लिप्तिकास्वंशपूर्वः ॥ १० ॥

स्वाद्रिभूभागहीनः, गणमनुहतिः, लिप्तिकासु, खमनुहृतगणोनः, (कार्य्यः तदा) अंशपूर्वः इन्दुः (भवति) ॥ १० ॥

अहर्गणको १४ से गुणा करे जो गुणनफल हो उसको अंशादि जाने उसमें उसीको १७ का भाग देकर जो अंशादि मिले सो घटा देव तब जो शेष रहे उसकी कलादिमें अहर्गण से १४० का भाग देकर जो लब्धि होय उसको कला आदि मान कर घटा देय तब अहर्गणोत्पन्न चन्द्र होता है तदनन्तर उक्त क्रिया करने से मध्यम चन्द्र होता है ॥ १० ॥

उदाहरण—अहर्गण १५२१ को १४ से गुणा करा तो २१२९४ अंशात्मकहुए इनमें १७ का भाग देनेसे प्राप्त हुई लब्धि १२५२ अंश ३५ कला १७ विकलाको घटाया $\frac{२१२९४}{१२५२}$ । ३५ । १७ । तब २००४१ अंश २४ कला ४३ विकला शेष रहा तब अहर्गण १५२१ में १४० भाग देकर लब्धि हुए कलादि १० कला ५१ विकला इनको ऊपरके शेषके कलादिमें घटाया २००४१ । $\frac{२४}{१०}$ । $\frac{४३}{५१}$ । तब शेष रहे २००४१ । १३ । ५५ अंशमें तीसका भाग देकर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार राशि करी तो ८ रा० १ अं० १३ क० ५२ विकला यह अहर्गणोत्पन्न चन्द्र हुआ, इसमें ऊपर "दिनगणभवेत्यादि" कही हुई रीतिके अनुसार चन्द्रके ध्रुव ३ । ४६ । ११ को चक्र ८ से गुणा करा तब ३ । ० ९ । २८ हुआ इसको अहर्गणोत्पन्न चन्द्र ८ । १ । १३ । ५५ में घटाया

तब ७ । १ । ४ । २४ शेष रहे इसमें चन्द्रका क्षेपक ११ । १९ । ६ । ० जोडा तब ६ । २० । १० । २४ यह मध्यम चन्द्र हुआ । अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमें चन्द्रमाका ध्रुवोनक्षेपक युक्त करनेसे भी यही मध्यम चन्द्र होता है ॥

अब चन्द्रोच्च साधनेकी रीति लिखते हैं—

नवहृतदिनसंघश्चन्द्रतुङ्गं लवाद्यं
भवति खनगभक्तद्युव्रजोपेतलिप्तम् ॥ ८८ ॥

नवहृतदिनसंघः खनगभक्तद्युव्रजोपेतलिप्तम् लवाद्यम् चन्द्रतुङ्गम् (भवति) ॥ ८८ ॥

अहर्गणमें ९ का भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय उस अहर्गणमें ७० का भाग देकर जो कलादि मिले सो जोड़ देय तब अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च होता है तब उपरोक्त रीतिके अनुसार चन्द्रोच्च साधे ॥ ८८ ॥

उदाहरण—अहर्गण १५२१ में नौ का भाग दिया तब लब्धि हुए अंशादि १६९ अंश ० कला ० विकला इसमें अहर्गण १५२१ में ७० का भाग देकर लब्धि हुए कलादि २१ कला ४२ विकलाको जोड दिया तब १६९ अं० २१ क० ४२ वि० हुए । इसमेंके अंशोंमें तीस ३० का भाग देकर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार राशि बनाई तब ५ राशि १९ अंश २१ कला ४२ विकला यह अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च हुआ तब उपरोक्त "दिनगणभवेत्यादि" रीतिके अनुसार चन्द्रोच्चके ध्रुव ९ । २ । ४५ । ० को चक्र ८ से गुणा करा तब ० । २२ । ० । ० हुआ इसको अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च ५ । १९ । २१ । ४२ में घटाया

तब ४ । २७ । २१ । ४३ हुआ इसमें क्षेपकांक ५ । १७ । २३ । ० जोडे तब १० । १४ । ४३ । ५४ यह चंद्रोच्च हुआ ॥

अब मध्यम राहुके लानेकी रीति लिखते हैं—

नवकुभिरिषुवेदैर्घस्रसंघाद्द्विधाप्तात्
फललवकलिकैक्यं स्यादगुश्चक्रशुद्धः॥ ११ ॥

नवकुभिः, इषुवेदैः, द्विधा, घस्रसंघात, आप्तात् फललवकलिकैक्यम्, चक्रशुद्धः, अगुः, स्यात् ॥ ११ ॥

अहर्गणको दो स्थानमें लिखे, एक स्थानमें उन्नीसका भाग देय जो लब्धि होय उसको अंशादि माने । फिर दूसरे स्थानमें लिखे हुए अहर्गणमें ४५ पैंतालीसका भाग देय जो लब्धि हो उसको कलादि माने, इन दोनों लब्धियोंको जोड लेय तब जो अङ्क हों उनको चक्र कहिये १२ बारह राशिमें घटावे जो शेष रहे उसको अहर्गणोत्पन्न राहु जाने । तदनन्तर उपरोक्त रीतिके अनुसार राहु साधे ॥ ११ ॥

उदाहरण—अहर्गणको १५२१ । १५२१ । दो स्थानमें लिखा एक स्थानमें १९ का भाग दिया तो ८० अं० ३ क० ९ वि० यह अंशादि लब्धि हुई फिर दूसरे स्थानमें लिखे हुए अहर्गणमें ४५ का भाग दिया तब ३३ कला ४८ विकला यह कलादि लब्धि हुई । इन दोनों लब्धियों $\frac{0}{0}$ । $\frac{८०}{०}$ । $\frac{३}{३३}$ । $\frac{९}{४८}$ को जोडा तब ८० अं. ३६ क. ५७ वि. हुआ इसको १२ राशिमें घटाया तब शेष रहे ९ । ९ । २३ । ३ यही अहर्गणोत्पन्न राहु हुआ । इसमें पूर्वोक्त रीतिसे राहुके ध्रुव ७ । २ । ५० ० को चक्र ८ से गुणा करा तब ८ । २२ । ४० । ० हुए इसको घटाया तब० । १६ । ४३ । ३ शेष रहे इसमें राहुके क्षेपकांक ० । २७ । ३८ । ० को जोडा तब

१।१४।२१। ३ यह राहु हुआ। अहर्गणोत्पन्न राहुमें राहुका ध्रुवोन क्षेपक मिलानेसे भी यह राहु आता है।

अब मध्यम मङ्गल लानेकी रीति लिखते हैं—

दिग्घ्नो द्विधा दिनगणोऽङ्ककुभिस्त्रिशैलै-
र्भक्तः फलांशककलाविवरं कुजः स्यात्॥ ऽऽ॥

दिग्घ्नः, दिनगणः, द्विधा, अङ्ककुभिः, त्रिशलैः, भक्तः, (कार्य्यः), ततः, फलांशककलाविवरम्, कुजः, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अहर्गणको दिक् कहिये दशसे गुणा करके दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें उन्नीसका भाग देय जो लब्धि मिले उसको अंशादि माने, फिर दूसरे स्थानके गुणा करे हुए अहर्गणमें ७३ का भाग देय जो लब्धि मिले उसको कला आदि जाने। इस प्रकार अंशादि और कला दोनों लब्धियोंका जो अन्तर होय उसको अहर्गणो-त्पन्न मङ्गल जाने फिर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार मध्यम मङ्गल लावे ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण--अहर्गण १५२१ को १० से गुणा करा तब १५२१० हुए इनको दो स्थानमें लिखा १५२१०। १५२१०। फिर एक स्थानमें १९ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ८०० अं. ३१ क. ३४ वि. फिर दूसरे स्थानमें ७३ का भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई २०८ क. २१ वि. इन दोनों लब्धियोंका अन्तर किया ८०० । $\frac{३१}{२०८}$ । $\frac{३४}{२१}$ तब ७९७ अं. ३ क. १३ वि. शेष रहे यहां ३० का भाग देकर पूर्वोक्त रीतिसे अंशोंकी राशि करी तब २ रा. १७ अं. ३ कला१३वि. यह अहगणोत्पन्न मङ्गल हुआ। तब ऊपर कही हुई रीति "दिनगणभवेत्यादि" के अनुसार मङ्गलके ध्रुव १।२५।३२ को चक्र ८ से गुणा करा तब २।२४।१६। हुए इसको अहर्ग-

णोत्पन्न मङ्गल २ । १७ । ३ । १३ में घटाया तब ११ । २२ । ४७ १३ शेष रहे इनमें मङ्गलके क्षेपकाङ्क जोड़ दिये ११/१० । २२/७ । ४७/८ । १३/० । तब ९ । २९ । ५५ । १३ यह मध्यम मङ्गल हुआ ॥

अब बुधकेन्द्रके लानेकी रीति लिखते हैं--

त्रिघ्नो गणः स्ववसुदृग्लवयुग्ज्ञशीघ्र-
केन्द्रं लवाद्यहिगुणाप्तगणोनलिप्तम् ॥ १२ ॥

त्रिघ्नः, गणः, स्ववसुदृग्लवयुक्, अहिगुणाप्तगणोनलिप्तम्, लवादि, ज्ञशीघ्रकेन्द्रम्, (स्यात्) ॥ १२ ॥

अहर्गणको ३ तीनसे गुणा करके जो गुणन फल हो उसको अंशात्मक माने, उसमें २८ का भाग दिया तब जो लब्धि मिले उसको अंशादि माने. वह उस पूर्वोक्त गुणन फलमें युक्त कर देय और उसमें (अहर्गणमें) ३८ का भाग देकर जो कलादि लब्धि मिले उसको घटा देय जो शेष रहे सो अहर्गणोत्पन्न बुधकेन्द्र होता है तदनन्तर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार बुधकेन्द्र साधे ॥ १२ ॥

उदाहरण--अहर्गण १५२१ को ३ से गुणा किया तब ४५६३ अंशात्मक हुए इनमें २८ का भाग दिया तब अंशादिक लब्धि हुई १६२ । ५७ । ५१ इसमें तीनसे गुणा करे अंशात्मक अहर्गण ४५६३ जोड़ दिया तब ४७२५ । ५७ । ५१ हुए इनमें अहर्गण १५२१ में ३८ का भाग देकर जो कलादि लब्धि हुई ४० क० १ वि० इसको कलाओंमें घटाया ४७२५ । ५७/४० । ५१/१ । तब ४७२५ । १७ । ५० यहां ३० का भाग देकर पूर्वोक्त रीतिसे अंशोंकी राशि करी तब १ रा. १५ अं. १७ क. ५० वि. यह अहर्गणोत्पन्नबुधकेन्द्र हुआ इसमें पूर्वोक्त "दिनगणेत्यादि" रीतिके अनुसार बुधकेन्द्रके ध्रुव ४ । ३ ।

२७ । ० को चक्र ८ से गुणा किया तब ८।८।२७। ३६ हुआ, इसको घटाया ३ । २० । ४५ । ४६ । तब ४ । १७ । ४१ । ५० हुआ, इसमें बुधकेन्द्रके क्षेपक ८ । २९ । २३ । को जोड़ा तब १ । १७ । १४ । ५० यह बुधकेन्द्र हुआ ।

अब मध्यम गुरुके साधन करनेकी रीति लिखते हैं--

द्युपिण्डोऽर्कभक्तो लवाद्यो गुरुः स्याद्
द्युपिण्डात्खशैलाप्तलिप्ताविहीनः ॥ ऽऽ ॥

अर्कभक्तः, द्युपिण्डः, द्युपिण्डात् खशैलाप्तलिप्ताविहीनः, लवाद्यः, गुरुः, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अहर्गणमें बारहका भाग देकर जो अंशादि लब्धि हों उनमें (अहर्गणमें) ७० का भाग देकर जो कलादि लब्धि हो उसको घटा दें जो शेष रहे सो अहर्गणोत्पन्न गुरु होता है इससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार मध्यमगुरु साधन करे ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण--अहर्गण १५२१ में बारह १२ का भाग दिया तब अंशादि लब्ध हुए १२६ अं. ४५ क. ० वि. । अहर्गण १५२१ में ७० भाग दिया तब कलादि लब्धि २१ क. ४३ वि. हुए इनको अंशादि लब्धिमें घटाया तब १२६ अं. २३ क. १७ वि. यह शेष रहा यही अहर्गणोत्पन्न गुरु हुआ । तब पूर्वोक्त रीतिके अनुसार अंशोंमें ३० का भाग देकर राशि बनाई तब ४ रा० ६ अं० २३ क० १७ वि० यह अहर्गणोत्पन्न गुरु हुआ । तब गुरुके ध्रुव ० । २६ । १८ । ० को चक्र ८ से गुणा करनेसे ७ । ० । २४ हुए इसको अहर्गणोत्पन्न गुरुमें घटाया तब ९ । ५ । ५९ ।१७ शेष रहा इसे गुरुका क्षेपक ७। २। १६ । ० जोड़ा तब । ४ । ८ । १५ । १७ यह मध्यम गुरु हुआ ॥

अब शुक्रकेन्द्र लानेकी रीति लिखते हैं-

त्रिनिघ्नद्युपिण्डाद्द्विधाऽक्षैः क्विभाब्जै-
रवाप्तांशयोगो भृगोराशुकेन्द्रम् ॥ १२ ॥

त्रिनिघ्नद्युपिण्डात्, अक्षैः, क्विभाब्जैः, द्विधा, अवाप्तांशयोगः, भृगोः, आशुकेन्द्रम्, (भवति ॥

अहर्गणको तीनसे गुणा करके जो गुणनफल मिले उसको दो स्थानमें लिखकर एक स्थानमें पांचका भाग दे तब जो लब्धि हो उसको अंशादि जाने । फिर दूसरे स्थानमें लिखे हुए गुणित अहर्गणमें एक सौ इक्यासी का भाग दे जो लब्धि मिले उसको अंशादि माने, तदनन्तर दोनों लब्धियों का योग करे तब अहर्गणोत्पन्न शुक्र केन्द्र होता है । तदनन्तर उपरोक्त रीतिके अनुसार शुक्र केन्द्र लावे ॥ १२ ॥

उदाहरण---अहर्गण १५२१ को ३ तीनसे गुणा करा तो ४५६३ हुए इनको दो स्थान में लिखा ४५६३।४५६३ फिर एक स्थान में ५ पांच का भाग दिया तब लब्धि हुए अंशादि ९१२ अंश ३६ क० वि० हुए ॥ फिर दूसरे स्थान में १८१ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि मिले २५ अं. १२ क. ३५ वि. इन दोनों लब्धियों ९१२/२५ । ३६/१२ । ३५ को जोड़ा तब ९३७ । ४८ । ३५ हुए । यहां अंशोंमें तीस ३० का भाग देकर राशि बनाई तब ७ राशि ७ अंश ४८ कला ३५ विकला यह अहर्गणोत्पन्न केन्द्र शुक्र हुए तदनन्तर पूर्वोक्त "दिनगणभवेत्यादि" रीतिके अनुसार केन्द्र शुक्र के ध्रुव १ । १४ । २ । ० को चक्र ८ से गुणा करा तब ११ । २२ । १६ । ० हुए इसको अहर्गणोत्पन्न केन्द्र शुक्र ७ । ७ । ४८ । ३५ में घटाया तब ७ । १५ । २२ । ३५ शेष रहे इसमें शुक्र केन्द्रके क्षेपक ७ । २० । ९ । ० को जोड़ा तब ३ । ५ । ४१ । ३५ यह केन्द्र

शुक्र हुआ। अहर्गणोत्पन्न केन्द्रशुक्रमें केन्द्रशुक्रका ध्रुवोनक्षेपक मिलानेसे भी यही केन्द्र शुक्र होता है॥

अब मध्यम शनि लानेकी रीति लिखते हैं--

खाग्न्युद्धृतो दिनगणोंऽशमुखः शनिः स्यात्
षट्पञ्चभूहृतगणात्फललिप्तिकाढ्यः ॥ ऽऽ ॥

खाग्न्युद्धृतः, दिनगणः, षट्पञ्चभूहृतगणात्, फललिप्तिकाढ्यः, अंशमुखः शनिः स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अहर्गणमें ३० का भाग देकर जो लब्धि मिले उसको अंशादि जाने उस (अहर्गण) में फिर १५६ एक सौ छप्पनका भाग देकर जो कलादि लब्धि मिले उसको जोड दे तब अहर्गणोत्पन्न शनि होता है उससे पूर्वोक्त रीति से मध्यम शनि लावे ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण—अहर्गण १५२१ में ३० का भाग दिया तो लब्धि अंशादि ५० अं०४२ क० हुए तदनन्तर अहर्गण १५२१में १५६ का भाग दिया तब लब्धि हुए९क०४५वि०इन दोनों लब्धियोंको जोडा तो ५०।५१।४५ हुए यहां अंशों ५० में ३० तीस का भाग देकर राशि बनाई तब १।२०।५१।४५ यह अहर्गणोत्पन्न शनि हुआ। तदनन्तर पूर्व कही हुई "दिनगणेत्यादि" रीति के अनुसार शनिके ध्रुव ७।१५।४२।० को चक्र ८ से गुणा करा तब ०।५।३६।० इसको अहर्गणोत्पन्न शनि १।२०।५१।४५ में घटाया तब १।१४।१५।४५ रहे इनमें शनि का क्षेपक ९।१५।२१।० जोडा तब ११।०।३६।४५ यह मध्यम शनि हुआ, अहर्गणोत्पन्न शनिमें शनिका ध्रुवोनक्षेपक युक्त करनेसे भी मध्यम शनि बनता है।

इस प्रकार मध्यम ग्रहोंको साधकर डेढ़ श्लोक में मध्यम ग्रहोंकी कलादि दिनगति लिखते हैं---

गोऽक्षा गजा रविगतिः शशिनोऽभ्रगोश्वाः प-ञ्चाग्नयोऽथ षडिलाब्धय उच्चभुक्तिः ॥ १४ ॥

राहोस्त्रयं कुशशिनोऽसृज इन्दुरामास्तर्काश्वि-नो ज्ञचलकेन्द्रजवोऽर्यहिक्ष्माः ॥ लिप्ता जि-ना विकलिकाश्च गुरोः शराः खं शुक्राशुके-न्द्रगतिरद्रिगुणाः शनेर्द्वे ॥ १५ ॥

गोऽक्षाः, गजाः, रविगतिः, (अस्ति) । अभ्रगोश्वाः, पञ्चाग्नयः, शशिनः, (गतिः, अस्ति) । अथ, षट्, इलाब्धयः उच्चभुक्तिः, (अस्ति) । त्रयम्, कुशशिनः, राहोः, (गतिः अस्ति) । इन्दुरामाः, तर्काश्विनः, असृजः, (गतिः, अस्ति) । अर्य्यहिक्ष्माः, लिप्ताः, जिनाः, विकलिकाः, ज्ञचलकेन्द्रजवः, (अस्ति) । शराः—खम्, गुरोः, (गतिः, अस्ति) । अद्रिगुणाः, शुक्राशुकेन्द्रगतिः, (अस्ति) । द्वे, शनेः, (गतिः, अस्ति) ॥ १४ ॥ १५ ॥

गो कहिये नौ ९ अक्ष कहिये ५ पांच अर्थात् ५९ कला और गज कहिये ८ आठ विकला यह सूर्य्यकी मध्यम गति है, अभ्र कहिये शून्य० गो कहिये नौ ९ अश्व कहिये ७ अर्थात् ७९० कला और पांच ५ अग्नि कहिये ३ तीन अर्थात् ३५ विकला चन्द्रमाकी मध्यम गति है और षट् कहिये ६ छः कला तथा इला कहिये १ एक, अब्धि कहिये ४ चार अर्थात् ४१ विकला यह चन्द्रोच्चकी

मध्यम गति है। तीन कला कु कहिये १ एक शशि कहिये १ एक अर्थात् ११ विकला यह राहुकी मध्यम गति है। इन्दु कहिये १ एक राम कहिये ३ तीन अर्थात् ३१ कला और तर्क कहिये ६ छः अश्विन् कहिये २ दो अर्थात् २६ विकला यह मंगलकी मध्यमगति है। अरि कहिये ६ छः अहि कहिये ८ आठ क्षमा कहिये १ एक अर्थात् १८६ कला और जिन कहिये २४ चौबीस विकला यह बुधकेन्द्रकी मध्यम गति है। शर कहिये ५ पांच कला और ख कहिये ० शून्य विकला गुरुकी मध्यम गति है। अद्रि कहिये ७ सात गुण कहिये ३ तीन अर्थात् ३७ कला शुक्रकेन्द्रकी मध्यम गति है। दो कला शनिकी मध्यम गति है ॥ १४ ॥ १५ ॥ यह सब नीचे कोठामें स्पष्ट रीतिसे लिखते हैं--

नाम	र.	चं.	चन्द्रोच्च	राहु	मं.	बुधकें०	गुरु	शुक्रकें०	शनि
कला	९५	७९०	६	३	३१	१८६	५	३७	२
विक	८	३५	४१	११	२६	२४	०	०	०

कौन ग्रह किस ग्रन्थके अनुसार लानेसे वेधसे
मिलता है यह विषय लिखते हैं--

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिकोनाब्जो गुरु-
स्त्वार्य्यजोऽसृग्राहू च कजज्ञकेन्द्रकमथार्य्यै-
सेषुभागःशनिः ॥ शौक्रं केन्द्रमजार्य्यमध्यग-
मितीमे यान्ति दृक्तुल्यतां सिद्धैस्तैरिह पर्व-
धर्म्मनयसत्कार्यादिकं त्वादिशेत् ॥ १६ ॥

अर्कः, सौरः (घटते)। विधूच्चम्, (सौरपक्षीयम्, घटते)। अंककलिकोनाब्जः, अपि, (सौरः. घटते)। गुरुः, तु, आर्य्यजः,

(घटते)। असृक्—राहुः, च, (आर्य्यपक्षीयौ, घटेते)। कुजङ्ग-केन्द्रम्, (घटते) अथ, सेषुभागः, शनिः, आर्य्ये (घटते)। शौक्रम्, केन्द्रम्, अजार्य्यमध्यगम्, (घटते)। इति, इमे दृक्तुल्यताम्, यान्ति, इह, तु, सिद्धैः, तैः, पर्वधर्म्मनयसत्कार्यादिकम्, आदिशेत् ॥ १६ ॥

सूर्य्य सूर्य्यसिद्धान्तानुसार वेधसे मिलता है। चन्द्रोच्च सूर्य्यसिद्धान्तानुसार वेधसे मिलता है। और नौ ९ कलाहीन चन्द्रमा भी सूर्य्यसिद्धान्तके अनुसार वेधसे मिलता है। गुरु-मङ्गल और राहु यह आर्य्यसिद्धान्तके अनुसार वेधसे मिलते हैं। बुधकेन्द्र ब्रह्मसिद्धान्तके अनुसार वेधसे मिलता है और ५ पांच अंशाधिक शनि आर्य्यसिद्धान्तके अनुसार वेधसे मिलता है। शुक्रकेन्द्र तब वेधसे मिलता है जब ब्रह्मसिद्धान्त और आर्य्यसि-द्धान्त दोनोंकी रीतिके अनुसार साधकर उन दोनोंका योग करके आधा कर लेय इस प्रकार पूर्वोक्त ग्रन्थोंके अनुसार साधे हुये यह ग्रह वेधसे मिलजाते हैं। इस ग्रंथमें पूर्वोक्त रीतियोंके अनुसार ग्रह साधकर ग्रहणादि पर्व, व्रतादि धर्मकार्य्य, नीतिकार्य और विवाहादि मङ्गकार्य आदिको कहे ॥ १६ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरण ग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादपत्तनवास्तव्यगौडवंशाव-तंसश्रीयुतभोलानाथतनुजपंडितरामस्वरूपशर्म्मणा विरचितया विस्तृतोदाहरणसनाथीकृतान्वयस-मन्वितया भाषाव्याख्यया सहितो मध्य-मग्रहसाधनाधिकारः समाप्तिमितः ॥१॥

अथ रविचन्द्रस्पष्टीकरणपञ्चाङ्गानयना-धिकारो व्याख्यायते ।



तहां प्रथम भुज--कोटि--पद--सूर्यमन्दोच्च--केन्द्र और रवि-मन्द फल साधनेकी रीति लिखते हैं--

दोस्त्रिभोनं त्रिभोर्ध्वं विशेष्यं रसैश्चक्रतोऽङ्का-धिकं स्याद्भुजोनं त्रिभम् ॥ कोटिरेकैककं त्रित्रिभैः स्यात्पदं सूर्य्यमन्दोच्चमष्टाद्र्योंऽशा भवेत् ॥ १७ ॥

मन्दोच्चं ग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रं तदाख्यं बुधैः केन्द्रे स्यात्स्वमृणं फलं क्रियतुलाद्येऽथो विधेयं रवेः ॥ केन्द्रे तद्भुजभागखेचरलवोनघ्ना नखास्ते पृथक् तद्धोंऽशोननगेषुभिः परिहृता-स्तेंऽशादिकं स्यात्फलम् ॥ १८ ॥

त्रिभोनम्, (केन्द्रम्) दोः (भवति) । त्रिभोर्ध्वम्, रसैः, विशेष्यम्, (तदा, दोः, स्यात्) । अंकाधिकम्, चक्रतः, (विशो-ध्यम्, तदा, दोः) स्यात् । भुजोनम्, त्रिभम्, कोटिः (स्यात्) त्रित्रिभैः, एकैकम्, पदम्, स्यात् । अष्टाद्र्यः अंशाः, सूर्यमन्दोच्चम्,

भवेत् । ग्रहवर्जितम्, मन्दोच्चम् बुधैः, तदाख्यं केन्द्रम्, निगदितम् । क्रियतुलाद्ये, केन्द्रे, स्वम्, ऋणम्, फलम् स्यात् । अथ, रवेः, केन्द्रम् विधेयम् । तद्भुजभागखेचरलवोनघ्नाः, नखाः, (कार्य्याः), ते, पृथक् (स्थाप्याः) तद्दोंऽशोननगेषुभिः, परिहृताः, ते, अंशादिकम्, फलम् स्यात् ॥ १७ ॥ १८ ॥

केन्द्र किंवा ग्रहादिक तीन राशि की अपेक्षा कम हो तो भुज होता है। और तीन राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो छः राशिमें घटाकर जो शेष रहे वह भुज होता है। नौसे अधिक होय तो बारह राशि में घटा कर जो शेष रहे वह भुज होता है। तीन राशिमें भुज घटाकर जो शेष रहे सो कोटि होती है। तीन तीन राशि का एक एक पद होता है। २ रा. १८ अं. ० क. ० विकला यह रवि का मन्दोच्च होता है। मन्दोच्चमें ग्रह घटा देय जो शेष रहे सो मन्दकेन्द्र होता है (और शीघ्रोच्चमें ग्रह घटा कर जो शेष रहे सो शीघ्रकेन्द्र होता है) मेष आदि छः केन्द्र में धन मन्द फल होता है (अथवा शीघ्रफल होता है)। तुला आदि छः केन्द्रमें ऋण मन्द फल होता है। रविका मन्द केन्द्र उक्त रीतिसे लावे। रविका केन्द्र लाकर उसके भुज करे और उन भुजों के अंश करे, उनमें नौ ९ का भाग देय जो लब्धि मिले उसको बीच अंशमें घटावे जो शेष रहे उसको उपरोक्त नवमांश से गुणा कर देय जो गुणनफल होय उसको अलग एकांत स्थान में लिखे। फिर नौ ९ का भाग देय जो लब्धि होय उसको ५७ अंशमें घटावे जो शेष रहे उसको अलग एकांतमें लिखे हुए पूर्वोक्त अंशादिमें भाग देय जो लब्धि होय उसको अंशादि मन्द फल जाने। यह मन्दफल, केन्द्र मेष राशिसे तुलाराशि पर्यंतके भीतर होय तो धन और तुलाराशिसे लेकर मेषपर्यन्त ६ राशिके भीतर होय तो ऋण जाने। तदनन्तर यदि मन्दफल मध्यम

रविमें धन होय तो युक्त कर देय और ऋण होय तो घटा देय तब मन्द स्पष्ट रवि होता है ॥ १७ ॥ १८ ॥

उदाहरण---रविके मन्दोच्च २ रा०, १८ अं०, ० क०, ० वि० है, इसमें मध्यम रवि १ रा० ४ अ० १३ क० ४२ वि० घटाया तो शेष रहा १ रा० १३ अ० ४६ क० १८ वि० यह रविका केन्द्र हुआ, यह केन्द्र तीन राशि से कम है, इस कारण भुज है। इससे जो राशि है उसके अंश करके अंशों मैं जोड़े तब ४३ अं. ४६ क. १८ वि. हुए इनमें नौ ९ का भाग दिया तब लब्धि हुए ४ अं. ५१ क. ४८ वि. इनको २० अंशमें घटाया तब शेष रहे १५अं० ८ क० १२ वि० इनको भुज के नवमांश ४ अं० ५१ क० ४८ वि० से गुणा करा तब ७३ अं० ३६ क० ५२ वि० हुए इनको दो स्थान में लिखा एक स्थान में ९ नौ का भाग दिया तब ८ अं० १० क० ४५ वि० लब्धि हुए इनको ५७ अंशमैं घटाया तब शेष रहे ४८ अं० ४९ क० १५ विकला इनका दूसरे स्थानमें लिखे हुए ७३ अं० ३६ क० ५२ वि०मे भाग देनेके लिये भाज्य ७३ अं० ३६ क०६२वि० ० भाज्य ४८अं०४९क०१५ वि० इन दोनोंकी कला करी तबभाज्य २६५०१२ भाजक १७५७५५ हुए। फिर भाज्य २६५०१२में १७५७५५ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई १ अं०,३० क०,४८वि० यह रविका मन्द फल हुआ यह धन है क्योंकि केन्द्र मेषादि छः राशि से कम है । इस कारण इस १ अं०, ३० क०, २८ वि० मन्दफलको मध्यम रवि १ रा०, ४ अं०, १३ क०, ४२ वि० मे युक्त किया तब १ रा० ५ अं०, ४४ क०, १० वि० यह मन्दस्पष्ट रवि हुआ।

अब पलभा और चरखण्ड लानेकी रीति लिखते हैं—

मेषादिगे सायनभागसूर्य्ये दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा ॥ त्रिस्था हता स्युर्दशभिर्भुज-

क्रैर्दिग्भिश्चरार्द्धानि गुणोद्धृताऽन्त्या ॥ १९ ॥

सायनभागसूर्य्ये, मेषादिगे (सति, या) दिनार्द्धजा, भा, सा, पलभा भवेत् । (सा), त्रिस्था, दशभिः, भुजङ्गैः, दिग्भिः, हता, ततः, अन्त्या, गुणोद्धृता, (कार्य्या) तदा चरार्द्धानि, स्युः ॥१९॥

जिस दिन अयनांशसहित सूर्य्य--राशि अंश कला विकलासे शून्य होय उस दिन मध्याह्नके समय समान भूमिपर बारह अंगुलका शंकु रक्खे जो छाया पडे उसको पलभा कहते हैं। तिस पलभाको तीन स्थानमें लिखकर क्रमसे १०।८।१० से गुणा करे, अन्तके तीसरे गुणनफलमें ३ तीनका भाग देय तब क्रमसे तीन चरखण्ड होते हैं ॥ १९ ॥ (कुछ प्रसिद्ध स्थानोंकी पलभा ग्रंथके अंतमें लिखेंगे ॥)

उदाहरण—काशीकी पलभा५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुल है इसको पहले १० से गुणा करा तब ५७ अंगुल ३० प्रतिअंगुल यह प्रथम चरखण्ड हुआ । फिर पलभा ५ अंगुल ४५ प्रति अंगुल को ८ से गुणा करा तब ४६ अंगुल० प्रति अंगुल यह द्वितीय चरखण्ड हुआ । पलभा ५ अंगुल ४५ प्रति अंगुलको १० दशसे गुणा करा तब ५७ अंगुल ३० प्रति अंगुल हुआ। इसमें ३ का भाग दिया तब १९ अंगुल १० प्रति अंगुल तीसरा चरखण्ड हुआ। इस प्रकार प्रथम चरखण्ड ५७ अं०, ३० प्र० हुआ, दूसरा चरखण्ड ४६ अं० हुआ, तीसरा चरखण्ड १९ अं०, १० प्र० हुआ ।

अब चर, चरसंस्कार भुजसंस्कार और अयनांश लिखते हैं--

स्यात्सायनोष्णांशुभुजर्क्षसंख्यचराधंयोगो लवभोग्यघातात् ॥ खाग्न्याप्तियुक्तस्तु चरं ध-

नर्णं तुलाजषड्भे तपनेऽन्यथाऽस्ते ॥ २० ॥
देयं तच्चरमसृणे विलिप्तिकासु मध्येन्दौ द्विगु-
णनवोद्धृतं कलासु ॥ भाप्तं तद्द्युमणिफलं
लवेऽथ वेदाब्ध्यब्ध्यूनःखरसहृतःशकोऽय-
नांशाः ॥ २१ ॥

सायनोष्णांशुभुजर्क्षसंख्यचराद्ययोगः, लवभोग्यघातात्, खाग्न्या-प्तियुक्तः, चरम् स्यात्। (तत्) तु, तपने तुलाजषट्के, धनर्णम्, (स्यात) । अस्ते, अन्यथा ॥ २० ॥ तत् चरम् असृणे, विलिप्तिकासु, देयम् । (तत् एव) द्विगुणनवोद्धृतम्, मध्येन्दौ, कलासु, देयम् भाप्तम् । (यत्) द्युमणिफलम्, तत्, (अपि) लवे (देयम्) अथ, शकः, वेदाब्ध्यब्ध्यूनः, (ततः) खरसहृतः, अयनांशाः (स्युः) ॥ २१ ॥

सायनरविकी पूर्वोक्तकेन्द्रसे भुज लानेकी रीतिके अनुसार भुज लावे, वह भुज यदि राशि शून्य होय तब अंशोंको छोडकर केवल अंशादिमात्राको प्रथम चरखण्डसे गुणा करे और यदि भुजमें एक राशि होय तो राशिको छोडकर अंशादिको द्वितीय चरखण्डसे गुणा करे और यदि भुजमें दो राशि होंय तो राशिको छोडकर केवल अंशादि मात्राको तृतीय चरखण्डसे गुणा करे जो गुणन फल हो उसमें ३० तीसका भाग देय जो लब्धि मिले उसमें जिस चरखण्डसे गुणा करा हो उससे पहला चरखण्ड जोडदेय तब चर होता है ॥ वह सायन मेषादि छःराशिके भीतर होय तो ऋण होता है और छः राशिसे अधिक

तुलादिसे कम छः राशि होय तो धन होता है। यदि सायंकालीन ग्रह करना होय तो चरको विपरीत ग्रहण करे अर्थात् सायन रवि मेषादि छः राशियोंके भीतर होय तो धन और तुलादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण जाने ॥ २० ॥ वह चर यदि धन होय तो मन्दस्पष्ट रविकी विकलाओंमें युक्त करदे और ऋण होय तो घटा देय तब स्पष्ट रवि होता है। चरको २ से गुणा करके नौका भाग देय जो लब्धि होय उसका चरके समान धन ऋण समझे और मन्द स्पष्ट रविकी कलाओंमें युक्त कर-देय (इसको चर संस्कार और द्वितीयफलसंस्कार कहते हैं।) रविके मन्द फलमें उसका भाग देकर जो लब्धि होय उसको भी चरके समान धन ऋण माने और मन्दस्पष्ट रविके अंशोंमें युक्त करदेय (इसको मन्दफलसंस्कार और तृतीयफलसंस्कार भी कहते हैं। इन दोनों रीतियोंका चन्द्र स्पष्ट करनेमें काम पडता है)। शालिवाहनशकेमें चारसौ चौवालीस ४४४ घटा देय जो शेष रहे वह कला होती हैं उनमें साठका भाग देय जो लब्धि मिले सो अयनांश होता है। अयनांशको मन्दस्पष्टरविमें मिला देय तब सायन रवि होता है ॥ २१ ॥

उदाहरण—शाके ५३३४ में ४४४ घटाये तब शेष रहे १०९० यह कला हैं, इनमें ६० का भाग दिया तो लब्धि हुई १८ अं. १० कला यह अयनांश है, इसको मन्दस्पष्ट रवि १ रा. ५ अं. ४४ कला १० वि. में युक्त किया तब १ रा. २३ अं, ५४ क. १० वि. यह सायन रवि हुआ। यह सायन रवि तीन राशिके भीतर है इस कारण यह भुज है। अब इस १ रा. २३ अं. ५४ क. १० वि. भुजमें एकराशि है इस कारण अंशादिकों

(२३ अं० ५४ क० १० वि०) को द्वितीय चरखण्ड ४६ से गुणा करा तब गुणनफल १०९९ अं० ३१ क० ४० वि० हुआ इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३६ विकला २९ प्रतिविकला, प्रथम चरखण्डसे गुणाकरा था इस कारण द्वितीय चरखण्ड ५७ को लब्धि ३६ वि० २९ प्रतिविकलामें युक्त किया तब ९३ विकला २९ प्रति विकला यह चर हुआ ऋण है क्योंकि सायन रवि मेषादि छः के भीतर है। इस कारण मन्द स्पष्टरवि १ राशि ५ अंश ४४ कला १० विकलामें चर ९३ वि० अर्थात १ क० ३३ विकलाको घटाया तब शेष रहा १ रा० ५ अं ४२ क० ३७ वि० यह स्पष्ट रवि हुआ ॥

अब दिनमान रात्रिमान और अक्षांश लानेकी रीति लिखते हैं-

गोलौ स्तः सौम्ययाम्यौ क्रियघटरसभे खेच-
रेऽथायने ते नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथ चरपलयु-
तोनास्तु पंचेन्दुनाड्यः ॥ घस्रार्द्धं गोलयोः
स्यात्तदयुतखगुणाः स्यान्निशार्द्धन्त्वथाक्षच्छा-
येषुघ्न्यक्षभायाः कृतिदशमलवोना यामाशाप-
लांशाः ॥ २२ ॥

खचरे, क्रियघटरसभे, सौम्ययाम्यौ, गोलौ, स्तः । अथ, नक्रात्, कर्कात्, च, षड्भे, ते, अयने, (स्तः) । अथ, तु पञ्चेन्दुनाड्यः, चरपलयुतोनाः- (कार्य्याः) । (तदा), घस्रार्द्धम्, स्यात् । तदयुतखगुणाः, निशार्द्धम्, स्यात् । अथ, तु, इषुघ्नी, अक्षच्छाया,

अक्षभायाः, कृतिदशमलवोना, (कार्या) । इयम्, यमाशापलांशाः, (स्युः) ॥ २२ ॥

यदि सायन रवि मेषादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो उसको उत्तर गोलीय कहते हैं और यदि सायनरवि तुलादि छःराशिके अन्तर्गत होय तो उसको दक्षिणगोलीय कहते हैं । तिसी प्रकार यदि सायन रवि मकरादि छः राशिके अन्तर्गत होय उसको उत्तरायण कहते हैं और यदि कर्कादि छः राशिके भीतर होय तो दक्षिणायन कहते हैं, पीछे लायेहुए पलात्मक चरको यदि सायन रवि उत्तरगोलीय होय तो १५ पन्द्रह घडीमें युक्त करे और सायनरवि दक्षिणगोलीय होय तो पलात्मकचर १५ पन्द्रह घडीमें घटा देय जो शेष रहे सो दिनार्द्ध होता है । उस दिनार्द्धको ३० घड़ीमें घटादेय तब जो शेष रहे सो रात्र्यर्द्ध होता है । तदनन्तर दिनार्द्धको द्विगुणित करनेसे दिनमान होता है और रात्र्यर्द्धको द्विगुणित करनेसे रात्रिमान होता है और दिनमान तथा रात्रिमानको जोड़नेसे अहोरात्रमान होता है ।

पलभाको पांचसे गुणा करके जो गुणफल मिले उसको अंशात्मक माने उसमें पलभाके वर्गका दशवां भाग अंशात्मक घटा देय जो शेष रहे वह अक्षांश होता है। अक्षांश सर्वदा दक्षिण होता है, क्योंकि हिन्दुस्थानके दक्षिण (विषुववृत्त रेखा) है ।।२२।।

उदाहरण—पलात्मकचर ९२ यह सायनरवि उत्तरगोलीय है क्योंकि मेषादि छः राशिके अन्तर्गत है इस कारण चर ९२ को १५ घड़ीमें युक्त किया तब १६ घड़ी ३२ पल यह दिनार्द्ध हुआ । इस दिनार्द्ध १६ घ० ३२ प० को ३० घड़ीमें घटाया तब शेष रहा १३ घ० ४७ पल रात्र्यर्द्ध हुआ । दिनार्द्ध १६ घ० ३२ पलको द्विगुणित किया तब ३२ घ. ६ पल यह दिनमान हुआ रात्र्यर्द्ध १३

घ. २७ को द्विगुणित किया तब २६ घड़ी ५४ पल यह रात्रिमान हुआ । दिनमान और रात्रिमानको जोडा तब ६० घड़ी अहोरात्रिमान हुआ ॥

पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ५ से गुणा करा तब २८ अं० ४५ कला हुआ । तब पलभा ५ । ४५ का वर्ग किया तो ३३ । २ हुआ इसमें दशका भाग दिया तब ३ अं० १८ क० १८ वि० लब्धि हुए इनको पांचसे गुणा करी हुई पलभा २८ अं० ४५ क० मे युक्त करा तब २५ अं० २६ क० ४२ वि० यह काशीका दक्षिण अक्षांश हुआ ॥

अब त्रिफल चन्द्र करनेका विषय लिखते हैं-

पीछे कहे हुए ९ श्लोकका उत्तरार्द्ध--अपने अपने नगरसे दक्षिणोत्तर रेखा जितनी योजन दूर होय उस योजन संख्यामें छःका भाग देय तब जो कलादि लब्धि होय वह, अपना नगर दक्षिणोत्तर रेखासे पश्चिम होय तो धन और पूर्व होय तो ऋण होती है, इसको रेखान्तरसंस्कार और प्रथम फल संस्कार कहते हैं ।

श्लोक २१ द्वितीय चरण-चरको दोसे गुणा करके नौ का भाग देय जो लब्धि होय उसको कलादि जाने उसको चरका धन या ऋण जाने, इसको चरसंस्कार और द्वितीय फल संस्कार कहते हैं ॥

श्लोक २१ तृतीय चरण-रवि के मन्द फलमें २७ का भाग देकर जो लब्धि होय उसको अंशादि जाने इसको रवि के मन्दफलका धन अथवा ऋण जाने; इसको मन्दफल संस्कारे और तृतीय फल संस्कार कहते हैं ॥

इन तीनों फलोंको जोडकर जो धन अथवा ऋण हो उसको मध्यम चन्द्रमें धन अथवा ऋण करे तब त्रिफलसंस्कृत चन्द्र होता है ॥

उदाहरण काशीपुरी दक्षिणोत्तर रेखाके पूर्व ६४ योजन है इस कारण ६४ योजन में ६ का भाग दिया तब १० कला ४० विकला यह प्रथम फलसंस्कार ऋण है ।

चर ९३ । २९ को २ से गुणा करा तब १८७ । १८ यह हुआ इसमें ९ का भाग दिया तब २० कला ४८ विकला यह चरका ऋण है ॥

रविके मन्दफल १ अंश ३० कला २८ विकला इसमें २७ सत्ताईसका भाग दिया तब लब्धि हुई अं. ३ क. २१ वि. यह तृतीय फल संस्कार और मन्दफल धन है ॥

अब ऋण

(१)	१० क. ४० वि.	रा. अं. क. वि.
(२)	२० क. ४८ वि.	मध्यमचन्द्र--६ २० १० २४

जोड़--३१ क. २८ वि. इनको मध्यमचन्द्रमें ऋणकरा-ऋण३१ २८

शेष ६ । १९ । ३८ । ५६

६ रा. १९ अं. ३८ क. ५६ वि. इस शेष में धन ३ क. २१ वि. को युक्त करा तब हुए ६ रा. १९ अं. ४२ क. १७ वि. यह त्रिफल संस्कृत चन्द्र हुआ ॥

अब स्पष्ट चन्द्र लाने की रीति लिखते हैं-

विधोः केन्द्रदोर्भागषष्ठोननिघ्नाः खरामाः पृथक् तन्नखांशोनितैश्च ॥ रसाक्षर्हतास्ते लवाद्यं फलं स्याद्रवीन्दू स्फुटौ संस्कृतौ स्तश्च ताभ्याम् ॥ २३ ॥

विधोः, केन्द्रदोर्भागषष्ठोननिघ्नाः, खरामाः, पृथक्, (स्थाप्याः), तन्नखांशोनितैः, रसाक्षैः, हृताः, ते, च, लवाद्यम्, फलम् स्यात । ताभ्याम्, च, संस्कृतौ, स्फुटौ, रवीन्दू, स्तः ॥ २३ ॥

चन्द्रोच्चमें त्रिफलसंस्कृत चन्द्र घटावे जो शेष बचे वह चन्द्रमाका केन्द्र होता है, तब केन्द्र के भुज करके उसके अंश करे और उसमें छः का भाग देय जो लब्धि होय उसको अंशादि माने और ३० तीस अंश में उसको घटा देय तब शेष रहे वह और आई हुई लब्धि को गुणा करे जो गुणन फल होय उसमें बीस का भाग देय जो शेष बचे उसको अंशादि माने और उसको ५६ में घटावे जो शेष रहे उसमें पूर्वोक्त गुणन फल का भाग देय तब जो लब्धि हो सो अंशादिरूप चन्द्रमाका मन्द फल होता है । वह केन्द्र मेषादि छः राशिके भीतर होय तो धन जाने और तुलादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण जाने तदनन्तर यदि मन्दफल ऋण होय तो त्रिफल चन्द्रमें घटादेय और धन होय तो युक्त कर देव तब स्पष्ट चन्द्र होता है ॥ २३ ॥

उदाहरण--चन्द्रोच्च १० रा० १४ अं० ५४ क० ४३ वि० में त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ६ रा० १९ अ० ४२ क० १७ वि० को घटाया तब शेष रहे ३ रा० २५ अं० १२ क० २६ वि० यह केन्द्र हुआ इसको छः राशिमें घटाया तब शेष रहे २ रा० ४ अं० ४७ क० ३४ वि० यह भुज हुआ अर्थात् ६४ अं० ४७ क० ३४ विकला यह अंशादि भुज हुआ इसमें ६ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० अं० ४६ क० ५५ वि० इसको ३० अंशमें घटाया तब शेष रहे १९ अं० १२ क० ५ वि० इसको ऊपर छः ६ का भाग देने से आई हुई लब्धि १० अं० ४७ क० ५५ वि० से गुणा करा तब गुणनफल २०७ अं० २० क० ५४ वि० हुआ

इसमें २० का भाग दिया तब लब्धि हुई १० अं० २२ क० ३ वि० इसको ५६ में घटाया तब शेष रहा ४५ अं० ३७ क० ५७ वि० इसका उपरोक्त गुणनफल २०७ अ० २० क० ५४ वि० में भाग देना चाहा तब भाजक हुआ १६४२७७ विभाज्य हुआ ७४६४५४। भाग दिया तब लब्धि हुई ४ अंश ३२ कला ३७ विकला यह मन्दफल है, और केन्द्र मेषादि ६ राशिके भीतर है इस कारण धन है, अतएव इसको संस्कृत चन्द्र ६ रा० १९ अं० ४२ क० १७ वि० में युक्त किया तब ६ रा० २४ अं० १४ क० ५४ विकला यह स्पष्ट चन्द्र हुआ ॥

अब रवि और चन्द्रका गतिस्पष्टीकरण लिखते हैं—

केन्द्रस्य कोटिलवखाश्विलवोननिघ्ना रुद्रा रवे-स्त्रिकुहृताः शशिनो द्विनिघ्नाः ॥ स्वांगांशकेन सहिताश्च गतौ धनर्णं केन्द्रे कुलीरमृगषट्क-गते स्फुटा सा ॥ २४ ॥

रुद्राः, केन्द्रस्य, कोटिलवखाश्विलवोननिघ्नाः, (कार्याः) (ते), रवेः (चेत्, तर्हि), त्रिकुहृताः, कार्य्याः, (तदा रवेः, कलाद्यम्, गतिफलम्, स्यात्,) (चेत्) शशिनः (तर्हि,) द्विनिघ्नाः, (कार्य्याः, ततः), स्वाङ्गांशकेन, सहिताः, च (कार्याः; तदा, चन्द्रगतेः कलाद्यम्, फलम्, स्यात्) कुलीरमृगषट्कगते, केन्द्रे, गतौ, धनर्णम्, (भवतः), सा, स्फुटा, (गतिः, भवति) ॥ २४ ॥

रविका केन्द्र लेकर उसके भुज करे, और भुजसे कोटि लावे, उस कोटिके अंश करे, फिर उन अंशोंमें २० का भाग देय, जो

लब्धि आवे उसको अंशआदि जाने। उस लब्धिको ११ अंशमें घटावे जो शेष रहे वह और लब्धिको परस्पर गुणा करे, तब जो गुणफल होय उसमें १३ का भाग देय जो लब्धि आवे उसको कलादि जाने, वह कलादि रविका गतिफल होता है, वह केन्द्र कर्कादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो धन और मकर आदि छः राशिके अन्तर्गत होय तो ऋण जाने। तदनन्तर उस गतिफलको रविकी मध्यम गतिमें धन ऋण करे तब रविकी स्पष्टगति होती है॥

चन्द्रमाका केन्द्र लाकर उसके भुज करे और तिस भुजासे कोटि लाकर उसके अंश करे, फिर उन अंशोंमें तीसका भाग देय जो लब्धि मिले उसको कलादि माने और ग्यारह ११ कलामें घटा देय जो शेष रहे उसको लब्धिसे गुणा करे जो गुणन फल होय उसको दो २ से गुणा करे तब जो गुणन फल होय उसमें छः का भाग देय जो लब्धि होय उसको उसमें युक्त कर-देय तब कलादि गतिफल होता है, वह केन्द्र कर्कादि छः राशिके भीतर होय तो धन और मकर आदि छः राशिके भीतर होय तो ऋण होता है ऐसा जाने फिर इस गतिफलको चन्द्रमाकी मध्य गतिमें धन या ऋण करे तब चन्द्रमाकी स्पष्टगति होती है॥२४॥

उदाहरण--रविकेन्द्र १ राशि १३ अं० ४६ कला १८ विकला वह तीन राशिके अन्तर्गत है, इस कारण यह भुज हुआ इसको तीन ३ राशिमें घटाया तब शेष रहा १ राशि १६ अंश १३ कला ४२ विकला यह कोटि हुई; कोटिके अंश--४६ अंश १३ कला ४२ विकला हुए इसमें २० का भाग दिया तब लब्धि मिले २ अंश १८ कला ४१ विकला, इसको ग्यारह अंशमें घटाया तब शेष रहे

१८ अंश ४१ कला १९ विकला इसको ऊपरकी लब्धि २ अंश १८ कला ६१ विकलासे गुणा करा तब २० अंश ४ कला ५७ विकला हुआ, इसमें तेरह १३ का भाग दिया तब लब्धि मिली १ कला ३२ विकला यह रविका गतिफल हुआ यह केन्द्र मकर आदि छः राशिके अन्तर्गत है इस कारण ऋण है इसको रविकी मध्यमगति ५९ कला ८ विकलामें घटाया तब ५७ कला ३६ विकला यह रविकी स्पष्टगति हुई ॥

चन्द्रमाका केन्द्र ३ राशि २५ अंश १२ कला २६ विकला है इसको ६ छः राशिमें घटाया तब २ राशि ४ अंश ४७ कला ३४ विकला यह भुज हुआ, इसको तीन राशि में घटाया तब शेषरहा ० राशि २५ अं० १२क०१६वि० यह कोटि और यही कोट्यंश हुए इसमें २० बीस का भाग दिया तब लब्धि १ कला १५ विकला हुई. इसको ग्यारह ११ कलामें घटाया तब ९ कला ४५ विकला रही इसको ऊपरकी लब्धि १ कला १५ विकलासे गुणा करा तब २४ कला २२ विकला इसमें छः ६ का भाग दिया तब ४ कला ३ विकला लब्धि हुए इसमें उपरोक्त गुणनफलको युक्त करा तब २८ कला २५ विकला यह गतिफल हुआ। यह केन्द्र कर्कादि छः राशिके अन्तर्गत होनेके कारण धन है इस कारण इसको चन्द्रमाकी मध्यमगति ७९० कला ३५ विकलामें युक्त करा तब ८१९ कला ० विकला हुआ यही चन्द्रमाकी स्पष्टगति हुई ॥

अब तिथि करण नक्षत्र और योग साधनेकी रीति दो श्लोकोंमें कहते हैं--

भक्ता व्यर्कविधोर्लवा यमकुभिर्याता तिथिः स्यात्फलं शेषं यातमिदं हरात्प्रपतितं भोग्यं विलिप्तास्तयोः ॥ भुक्तयोरन्तरभाजिताश्च

घटिकां यातैष्यिकाः स्युः क्रमात्पूर्वार्द्धे करणं बवाद्गततिथिर्द्विघ्नाऽद्रितष्टा भवेत् ॥ २५ ॥ तत्सैकं त्वपरे दलेऽथ शकुनेः स्युः कृष्णभूतो-त्तराद्धोंच्चाथ विधोश्च सार्कसितगोर्लिप्ताःखखा-ष्टोद्धृताः ॥ यातेस्तो भयुती क्रमाद्गगनषण्निघ्ने गतैष्ये तयोरिन्दोर्भुक्तिहृते जवैक्यविहृते यातैष्यनाड्यः क्रमात् ॥ २६ ॥

ऽयर्कविधोः, लवाः, (कार्य्याः, ते,) यमकुभिः, भक्ताः, (कार्य्याः), फलम्, याता, तिथिः, स्यात । शेषम्, (अपि), यातम् । इदम् हरात् प्रपतितम्, भोग्यम्, स्यात् । तयोः विलिप्ताः, भुक्त्योः—अन्तरभाजिताः, (कार्य्याः, तदा, लब्धिः), क्रमात् यातैष्यिकाः, घटिकाः, स्युः, द्विघ्नी, (ततः), अद्रितष्टा, गततिथिः, बवात्, तिथेः, पूर्वार्द्धे, करणम्, भवेत् । सैकम्, तु, तत्, अपरे, दले, करणम्, (स्यात्) । अथ, कृष्णभूतोत्तरार्द्धात्, च, शकुनेः, स्युः, । अथ, विधोः, सार्कसितगोः, च, लिप्ताः,खखाष्टोद्धृताः, (कार्य्याः) (फलम्), क्रमात्, याते, भयुती, स्तः, तयोः गतैष्ये, गगनषण्निघ्ने, इन्दोः, भुक्तिहृते, (ततः), जवैक्यविहृते (तदा) क्रमात्, गतैष्यनाड्यः (स्युः) ॥ २५ ॥ २६ ॥

स्पष्टचन्द्रमें स्पष्ट रविको घटा देय जो शेष रहे उसके अंश कर लेय, अंशोंमें बारह १२का भाग देय जो लब्धि मिले सो

गततिथि होती है। और जो शेष अंशात्मक रहे वह भुक्त-तिथि अर्थात् तिथि का व्यतीत भाग होता है। इस भुक्ततिथि को पूर्वोक्त भाजक अंक अर्थात् १२ अंशमें घटावे जो शेष रहे सो भोग्यतिथि अर्थात् तिथिका आगामी भाग होता है, तदनन्तर भुक्तितिथि और भोग्यतिथि दोनों की अलग २ विकला कर लेय उन विकलाओंमें दोनों स्थानमें अलग अलग साठ ६० से गुणा करे जो गुणनफल होय उसमें क्रम से रवि और चन्द्रमा की स्पष्टगतिके अन्तरकी विकलाओंका भाग देय जो लब्धि मिले उसको घटी आदि जाने अर्थात् वह क्रमसे भुक्ततिथि और भोग्यतिथिकी घटिका होती है।

गततिथिकी संख्याको दोसे गुणा करके सातका भाग देय जो लब्धि मिले उसको छोड देय और भाग देनेसे जो शेष बच रहे उसको ग्रहण करे वह बव करणसे गणना करके तिथिके पूर्वार्द्धमें करण होता है, और उस शेषमें एक युक्त कर देय तो वह बव करण से गणना करके तिथि के उत्तरार्द्धमें करण होता है । (तदनन्तर तिथिकी भुक्त और भोग्य घटिका आदिका योग करे उसका आधा करे और उस आधेमें युक्त घटिका घटा देय जो शेष रहे सो करणकी घटिका + आदि होती है। यदि तिथिकी भुक्त घटिका ३० तीस घटिका से अधिक होय तो तिथिके भुक्त भोग्य की

+ एकतिथिमें दो करण होते हैं, पञ्चांगमें तिथि तीस ३० घडीसे कम होय तो उत्तरार्द्धके करणकी भोग्य घटिका लिखे और यदि ३० घडीसे अधिक होय तो पूर्वार्द्धके करणकी भोग्य घटिका लिखे ॥

घटिकाओंमेंसे भुक्तघटिका घटाकर जो शेष रहे सो करणकी घटिका होती है) प्रतिमास कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्द्धमें शकुनि करण और अमावस्याके पूर्वार्द्धमें चतुष्पद और उत्तरार्द्धमें नाग करण तथा शुक्लप्रतिपदाके पूर्वार्द्धमें किंस्तुघ्न ही करण होता है ॥

स्पष्टचन्द्रकी कला करके उनमें आठसौका भाग देय जो लब्धि मिले वह गत नक्षत्र होता है और भाग देकर जो कलादि शेष रहे वह गतनक्षत्रमें आगेके नक्षत्रका गतभाग अर्थात् भुक्त होता है उसको आठसौ कलामें घटावे जो शेष रहे सो भोग्य नक्षत्र अर्थात नक्षत्रका गत भाग होता है। तदनन्तर भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इन दोनोंकी विकला करके प्रत्येकको साठसे गुणा करे जो गुणनफल मिले उसमें चन्द्र स्पष्टगतिकी विकलाओंका भाग देय जो घटिकादि लब्धि होय वह क्रमसे भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्रकी घटिका होती है ॥

स्पष्ट रवि और चन्द्रमा दोनोंके योगकी कला करके आठसौका भाग देय जो लब्धि मिले वह गत योग होता है और जो शेष कलादि बचे वह भुक्त योग अर्थात् आगेके योगका गतभाग होता है. उसको आठसौ कलामें घटावे जो शेष रहे वह भोग्य योग होता है. तदनन्तर भुक्त योग और भोग्य योग दोनोंकी विकला करके प्रत्येकको साठसे गुणा करे जो गुणनफल होय उसमें रवि और चन्द्रकी स्पष्ट गतिके योगकी विकलाओंका भाग देय तब जो लब्धि होय वह क्रमसे भुक्त योग और भोग्य योगकी घटिका होती है ॥ २५ ॥ २६ ॥

उदाहरण—स्पष्टचन्द्र--६ राशि २४ अंश १४ कला ५४ विकला हैं इसमें स्पष्टरवि १ राशि ५ अंश ४२ कला ३७ विकलाको घटाया तब शेष रहा ५ राशि १८ अंश ३२ कला

१७ विकला इसके अंश कर लिये तब शेष रहा ५ राशि १८ अंश २२ कला १७ विकला, इसके अंश कर लिए तब हुये १६८ अंश ६५ कला १७ विकला, अंशोंमें १२ का भाग दिया तब लब्धि हुई १४ यही गततिथि हुई शेष बचा० अंश २२ कला १७ विकला यह भुक्त पूर्णिमा हुई इसको १२ अंशमें घटाया तब शेष रहे ११ अंश२७कला ४३ विकला यह भोग्य पूर्णिमा है । अब 'युक्त' तिथि(पूर्णिमा) २२कला १७विकलाकी विकला करी तब १९३७ विकला हुई इनको ६०से गुणा करा तब ११६२२० हुए इनमें चन्द्रमाकी स्पष्टगति ८१९ कला ० विकला और रविकी स्पष्टगति ५७ कला ३६ विकला इन दोनों स्पष्ट-गतियोंका अन्तर करा तब ७६१ कला २४ विकला अर्थात् ४५६८४ विकला इसका भाग दिया तब लब्धि हुई २ घटिका ३२ पल यह पूर्णिमाकी भुक्त घटिका हुई। फिर भोग्य तिथि ११अंश २७ कला ४३ विकला इसकी विकला करी तब ४१२६३ हुई इनको६०से गुणा करा तब२४७५७८०हुए इसमें चन्द्रसूर्यकी स्पष्ट गतिके अन्तरकी विकलाओं ४५६८४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ५४ घटिका ११ पल यह पूर्णिमाकी भोग्य घटिका हुई ॥

गततिथि १४ को २ से गुणा करा तब २८ हुए इसमें ७ का भाग दिया तब० शेष रहा इस कारण पूर्णिमके पूर्वार्द्धमें भद्रा करण और उत्तरार्द्धमें बवकरण है फिर तिथिकी भुक्त घटिका २ घ० ३२ प० और भोग्य घटिका ५४ घ० ११ पलका योग करा तब ५६ घ० ४३ पल हुआ इसका आधा करा तब २८ घ० २१ प० इसमें भुक्त तिथि २ घ० ३२ प० घटाया तब शेष रहा २५ घ० ४९ प० यह भद्राकरणकी घटिका हुई ॥

स्पष्ट चन्द्र ६ राशि २४ अंश १४ कला ५४ विकला अर्थात् १२२५४ कला ५४ विकलामें ८०० का भाग दिया तब लब्धि मिले १५ यह गत नक्षत्र अर्थात स्वाती हुआ और शेष बचे २५४ कला

५४ विकला यह आगेके नक्षत्र अर्थात् विशाखा नक्षत्रका गत भाग है इसको ८०० कलामें घटाया तब शेष बचे ५४५ कला ६ विकला यह विशाखानक्षत्रका भोग्यभाग है। अबभुक्त विशाखा नक्षत्र २५४ कला ५४ विकलाकी विकला १५२९४ को ६० से गुणा करा तब ९१७६४० इसमें चन्द्र स्पष्टगति ८१९ कला ० विकलाकी विकला ४९१४० का भाग दिया तब लब्धि हुई १८ घ० ४० प० यह विशाखा नक्षत्रकी भुक्त घटी हुई । फिर भोग्य विशाखा नक्षत्र ५४५ कला ६ विकलाकी विकला ३२७०६ को ६० से गुणा करा तब १९६२३६० हुई इसमें चन्द्र स्ष्ट गतिकी विकलाओं ४९१४० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३९ घ० ५६ प० यह विशाखा नक्षत्रकी भोग्य घटिका हुई ॥

स्पष्ट रवि १ राशि ५ अं ४२ कला ३७ विकला और स्पष्ट चन्द्र ६ राशि २४ अंश १४ कला ५४ विकला इनका योग करा तब ७ राशि २९ अंश ५७ कला ३१ विकला हुआ इस योगकी कला करी तब १४३९७ कला ३१ विकला हुई इनमें ८०० का भाग दिया तब लब्धि हुई १७ यह गत योग अर्थात् व्यतीपात योग आया और शेष बचा ७९७ कला ३१ विकला यह आगेके योग अर्थात् वरीयान् योगका भुक्त भाग है उसको ८०० कलामें घटाया तब शेष बचा २ कला १९ विकला यह वरीयान् योगका भोग्य भाग है । फिर भुक्त योग ७९७ कला ३१ वि० की विकला करी ४७८५१ इनको ६० से गुणा करा तब २८७१०६० हुए इसमें रवि और चन्द्रकी स्पष्टगतिके योगकी विकलाओं ५२५९६ का भाग दिया तब लब्धि हुई ५४ घ० ३५ प० यह वरीयान् योगके भुक्त काल की घटी हुई। फिर वरीयान्

योगके भोग्य २ क० १९ वि० की १४९ विकलाओंको ६० से गुणा करा तब ८९४० हुए इसमें चन्द्र और रविकी स्पष्ट गतिके योगकी विकलाओं ५२५९६ का भाग दिया तब लब्धि मिली०घ०१० पल यह वरीयान् योगकी भोग्य घटिकादि हुई ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबाद वास्तव्यगौडवंशावतंसश्रीयुत भोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा विरचितया विस्तृतोदाहरणसनाथीकृतयाऽन्वयसमन्वितया सहितः रविचन्द्रभाषान्याख्यया सहितः रवि चन्द्रस्पष्टीकरणाधिकारः समाप्तिमितः ॥२॥

अथ पञ्चतारास्पष्टीकरणाधिकारो व्याख्यायते ।

तहां प्रथम पञ्चतारा अर्थात मङ्गल बुध गुरु शुक्र और शनिके शीघ्राङ्क कहते हैं,—

खमष्टमरुतोऽद्रिभूभुव उदध्यगोर्व्योऽष्टदृग्-
दृशो नवनगाश्विनोऽक्षदशनाः शराङ्काग्नयः ।
गुणाङ्कदहनाः खखाब्धय इभाङ्गरामाः क्रमा-
न्नवाम्बुधिदृशो नभःक्षितिभुवश्चलाङ्का इमे॥१॥

खम्, अष्टमरुतः, अद्रिभूभुवः, उदध्यगोर्व्यः, अष्टदृग्दृशः, नवनगाश्विनः, अक्षदशनाः, शराङ्काग्नयः, गुणाङ्कदहनाः, खखाब्धयः,

इभाङ्गरामाः; नवाम्बुधिद्दशः, नभः, इमे, क्रमात्, क्षितिसुतः; चलाङ्काः;-(सन्ति) ॥ १ ॥

खम् कहिये शून्य०, अष्ट कहिये आठ और मरुत् कहिये पांच अर्थात अठावन ५८ और अद्रि कहिये सात और भू कहिये एक अर्थात एकसौ सतरह ११७ और उदधि कहिये चार अग कहिये सात उर्वी कहिये एक अथात एकसौ चौहत्तर १७४ और अष्ट कहिये आठ दृक् कहिये दो और दृक् कहिये दो अर्थात् दोसौ अट्ठाइस २२८ और नव कहिये नौ नग कहिये सात अश्विन कहिये दो अर्थात् दोसौ उन्नासी २७९ और पञ्च कहिये पांच दशन कहिये बत्तीस अर्थात् तीनसौ पच्चीस ३२५ और शर कहिये पांच अङ्ग कहिये छः अग्नि कहिये तीन अर्थात् तीन सौ पैंसठ ३६५ और गुण कहिये तीन अङ्क कहिये नौ दहन कहिये तीन अर्थात् तीन-सौतिरानवे ३९३ और ख कहिये शून्य ख कहिये शून्य अब्धि कहिये चार अर्थात् चारसौ ४०० और इभ कहिये आठ अङ्ग कहिये छः राम कहिये तीन अर्थात् तीनसौ अड़सठ ३६८ और नौ कहिये नव अम्बुधि कहिये चार दृक् कहिये दो अर्थात दो सौ उनचास २४९ और नभ कहिये शून्य०, यह क्रमसे भौमके शीघ्रांक हैं ॥ १ ॥

खं भूकृताः कुवसवोऽद्रिभवाः खतिथ्यो-
ऽष्टाद्रीन्दवो नवनवक्षितयोऽर्कपक्षाः ॥
अर्काश्विनः शरखगक्षितयोऽक्षतिथ्यो
गोष्टौ खमाशुफलजाः स्युरिमे विदोऽङ्काः ॥२॥

खम्, भूकृताः, कुवसवः, अद्रिभवाः, खतिथ्यः, अष्टाद्रीन्दवः,

नवनवक्षितयः, अर्कपक्षाः, अर्काश्विनः, शरखगक्षितयः, अक्षतिथ्यः, गोष्टौ, खम्, इमे, विदः, आशुफलजाः, अङ्काः स्युः ॥ २ ॥

ख कहिये शून्य० और भू कहिये एक कृत कहिये चार अर्थात एकतालीस ४१ और कु कहिये एक वसु कहिये आठ अर्थात इक्यासी ८१ और अद्रि कहिये सात भव कहिये ग्यारह अर्थात एकसौसतरह ११७ और खकहिये शून्य तिथि कहिये पन्दरह अर्थात एकसौपञ्चास १५० और अष्ट कहिये आठ अद्रि कहिये सात इन्दु कहिये एक अर्थात् एकसौअठत्तर १७८ और नव कहिये नौ नव कहिये नौ क्षिति कहिये एक अर्थात् एकसौनिन्यानवे १९९ और अर्क कहिये बारह पक्ष कहिये दो अर्थात दोसौ बारह २१२ और अर्क कहिये बारह आश्विन् कहिये दो अर्थात दोसौ-बारह २१२ और शर कहिये पांच खग कहिये नौ क्षिति कहिये एक अर्थात् एकसौपिचानवे १९५ और अक्ष कहिये पांच तिथि कहिये पन्दरह अर्थात् एकसौपचपन १५५ और गोष्ट कहिये नौवासी ८९ और ख कहिये शून्य ० यह (क्रमसे) बुधके शीघ्राङ्क हैं ॥ २ ॥

खं तत्त्वानि नगाब्धयोऽष्टषट्काः पञ्चेभा गज-खेचरा रसाशाः ॥ नागाशा द्विदिशो नवाहयः षट्षष्टिःषट्कगुणा नभो गुरोः स्युः ॥ ३ ॥

खम्, तत्त्वानि, नगाब्धयः, अष्टषट्काः, पञ्चेभाः, गजखेचराः, रसाशाः, नागाशाः द्विदिशः, नवाहयः, षट्षष्टिः, षट्कगुणाः, नभः, (इमे) गुरोः, आशुफलजाः, (अङ्काः) स्युः ॥ ३ ॥

खम् कहिये शून्य० और तत्त्व कहिये पच्चीस २५ और नग कहिये सात अब्धि कहिये चार अर्थात सैंतालीस ४७ और अष्ट-

षट्क कहिये अठसठ, और पञ्च कहिये पांच इभ कहिये आठ अर्थात् पचासी ८५ और गज कहिये आठ खेचर कहिये नौ अर्थात् अठानवे ९८ और रस कहिये छः आशा कहिये दश अर्थात् एकसौ छः १०६ और नाग कहिये आठ आशाकहिये दश अर्थात् एकसौ आठ १०८ और द्वि कहिये दो दिक् कहिये दश अर्थात् एकसौदो १०२ और नव कहिये नौ अहि कहिये आठ अर्थात् नौवासी ८९ और षट्षष्टि कहिये छासठ ६६, और षट्क कहिये छः गुण कहिये तीन अर्थात् छत्तीस ३६, और नभ कहिये शून्य० यह क्रमसे गुरुके शीघ्राङ्क हैं ॥ ३ ॥

खमग्न्यङ्गैस्तुल्या रसयमभुवः षट्कधृतयो-
ऽरिसिद्धाः पक्षाभ्राग्नय उदधिनाराचदहनाः ॥
द्विशून्योदन्वन्तः खजलधिकृता भूरसकृता-
स्त्रिवेदोदन्वन्तो रसयमगुणाः खं भृगुजनेः ॥४॥

खम्, अग्न्यङ्गैः, तुल्याः (अङ्काः) रसयमभुवः, षट्कधृतयः, अरिसिद्धाः, पक्षाभ्राग्नयः, उदधिनाराचदहनाः, द्विशून्योदन्वन्तः, खजलधिकृताः, भूरसकृताः, त्रिवेदोदन्वन्तः, रसयमगुणाः, खम्, (इमे) भृगुजनेः (अङ्काः, स्युः) ॥ ४ ॥

ख कहिये शून्य० और अग्नि कहिये तीन अङ्ग कहिये छः इनकी तुल्य जो अङ्क अर्थात् तिरसठ ६३ और रस कहिये दो भू कहिये एक अर्थात् एकसौछब्बीस १२६ और षट्क कहिये छः धृति कहिये अठारह अर्थात् एकसौछियासी १८६ और अरि कहिये छः सिद्ध कहिये चौबीस अर्थात् दोसौ छियालिस २४६

और पक्ष कहिये दो अभ्र कहिये शून्य अग्नि कहिये तीन अर्थात् तीन सौ दो ३०२ और उदधि कहिये चार नाराच कहिये पांच दहन कहिये तीन अर्थात् तीनसौ चौअन ३५४ और द्वि कहिये दो और शून्य०तथा उदन्वत् कहिये चार अर्थात् चारसौते-दो ४०२ और ख कहिये शून्य जलधि कहिये चार कृत कहिये अर्थात् चारसौ चालीस ४४० और भू कहिये एक रस कहिये छः कृत कहिये चार अर्थात् चारसौ इकसठ ४६१ और त्रि कहिये तीन वेद कहिये चार उदन्वत् कहिये चार अर्थात् चारसौ तालीस ४४३ और रस कहिये छः यम कहिये दो गुण कहिये तीन अर्थात् तीनसौ छब्बीस ३२६ और ख कहिये शून्य०, यह क्रमसे शुक्रके शीघ्राङ्क हैं ॥ ४ ॥

खमिषुक्षितयो गजाश्विनो गोदहना नागकृताः पयोधिबाणाः ॥ द्विरगेषुमिता हुताशबाणाः शरवेदास्त्रिगुणा धृतिः खमार्कैः ॥ ५ ॥

खम्, इषुक्षितयः, गजाश्विनः, गोदहनाः, नागकृताः, पयोधि-बाणाः, द्विः, अगेषुमिताः, हुताशबाणाः, शरवेदाः, त्रिगुणाः, धृतिः, खम्, (इमे), आर्कैः (अङ्काः, स्युः) ॥ ५ ॥

खम् कहिये शून्य० और इषु कहिये पांच क्षिति कहिये एक अर्थात् पन्द्रह १५ और गज कहिये आठ अश्विन् कहिये दो अर्थात् अठाईस २८ और गो कहिये नौ दहन कहिये तीन अर्थात् उनतालीस ३९ और नाग कहिये आठ कृत कहिये चार अर्थात् अड़तालीस ४८ और पयोधि कहिये चार, बाण कहिये पांच अर्थात् चौवन ५४ और दोवार अग कहिये सात और इषुकहिये पांच अर्थात् सत्तावन ५७, और हुताश कहिये तीन बाण कहिये

पांच अर्थात् तिरेपन ५३, और शर कहिये पांच वेद कहिये चार अर्थात् पैंतालीस ४५ और त्रि कहिये तीन गुण कहिये तीन अर्थात् तैंतीस ३३ और धृति कहिये अठारह १८ खम् कहिये शून्य ० यह शनिके शीघ्रांक हैं ॥ ५ ॥

उपरोक्त पांचों श्लोकोंमें कहे हुए पांचों ग्रहोंके शीघ्राङ्क स्पष्टरीतिसे नीचे कोठेमें लिखते हैं-

ना.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मं.	५८	११७	१७४	२२८	१७९	३२५	३६५	३९३	४००	३६८	२४९	०
बु.	४१	८९	११७	१५०	१७८	१९९	२१२	२१२	१९५	१५५	८९	०
गु.	२५	४७	६८	८१	९८	१०६	१०८	१०२	८९	६६	३६	०
शु.	६०	१२६	१८६	१४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४३	३२६	०
श.	१५	२८	३९	४८	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८	०

अब शीघ्रफल साधनेकी रीति लिखते हैं--

भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः स्यात्स्वाशुके-
न्द्रन्तुविद्भृग्वोरुक्तमिदं रसोर्ध्वमिनभाच्छुद्धं
तदंशा दिनैः॥भक्ताः खादिफलं क्रमादिह गता-
ङ्कोऽसौ क्षयद्ध्यो हताच्छेषाद्बाणकुलब्धिहीन-
युगयं दिग्हृल्लवाद्यं फलम् ॥ ६ ॥

भौमार्कीज्यविहीनमध्यरविः, स्वाशुकेन्द्रम्, स्यात्, विद्भृग्वोः, तु, उक्तम्, इदम्, रसोर्ध्वम्, (चेत्) इनभात्, शुद्धम्, (कार्यम्) तदंशाः, दिनैः भक्ताः (सन्तः) इह, क्रमात्, खादिफलम्, गताङ्कः,

(भवेत्) असौ, क्षयद्धर्यां, हृतात्, शेषात्, बाणकुलब्धिहीनयुक्, (कार्य्यः) असौ, दिग्हृत् लवाद्यम्, फलम्, (भवति) ॥ ६ ॥

मध्यम रविमें मध्यमग्रह (मंगल, गुरु, अथवा शनि) घटा देय जो शेषरहे वह तिसतिसग्रह (मङ्गल गुरु तथा शनि) का शीघ्र केन्द्र होता है मध्यम बुध और मध्यम शुक्र इनके केन्द्र पहले मध्यम ग्रह साधनेके समय कह चुके हैं। अभीष्ट ग्रहका यह केन्द्र यदि छः राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो उसको बारह राशिमें घटा देय जो शेष रहे उसके अंश कर लेय उन अंशोंमें पन्द्रहका भाग देय जो लब्धि होय तत्परिमित ग्रहके पहले कहे हुये शीघ्रांक ग्रहण करे और उस लब्धिमें एक मिलाकर जो अंक हो तत्परिमित ग्रहके शीघ्रांक ग्रहण करे,तदनन्तर इन दोनों शीघ्रांकोंका अन्तर करे, जो शेष बचे उससे ऊपरकी अंशात्मक बाकीको गुणा कर देय तब जो गुणनफल होय उसमें पन्द्रहका भाग देय जो अंशादि लब्धि मिले उसको यदि प्रथम ग्रहण करे हुए शीघ्रांककी अपेक्षा दूसरा शीघ्रांक अधिक होय तो प्रथम शीघ्रांकमें युक्त कर देय और यदि प्रथम शीघ्रांककी अपेक्षा दूसरा शीघ्रांक कमती होय तो प्रथम शीघ्रांकमें घटा देय और उसमें दशका भाग देय जो लब्धि मिले वह अंशादि शीघ्रफल होता है वह यदि मेषादि केन्द्र छः राशिके अन्तर्गत होय तो धन होता है और तुलादि केन्द्र छः राशियोंके अन्तर्गत होय तो ऋण होता है ॥ ६ ॥

अब मन्दफल साधनेके निमित्त भौमादिके मन्दांक कहते हैं-

खं गोऽश्विनोऽद्रिमरुतोऽक्षगजा नवाशाः सिद्धे-

न्दवः खदहनक्षितयोऽसृजोऽङ्काः ॥ मान्दा बुधस्य खमिनाः कुदृशोऽष्टपक्षा देवाः शरानलमिता रसवह्नयः स्युः ॥७॥ खेन्द्रक्षाणि नवाभ्रयोऽह्व्युदधयोऽक्षाक्षा नवाक्षा गुरोः शुक्रस्याभ्ररसेशविश्वमनवो द्विर्बाणचन्द्राःक्रमात् ॥ खं गोऽब्जाः खकृताः खषणनगनगा गोष्टौ त्रिनन्दाः शनेः शुद्धोऽब्ध्यद्रिषडग्निनागगृहतः स्यान्मन्दकेन्द्रं कुजात् ॥ ८ ॥

खम्, गोऽश्विनः, अद्रिमरुतः, अक्षगजाः, नवाशाः, सिद्धेन्दवः खदहनक्षितयः, (एते , असृजः, मान्दाः, अंकाः स्युः । खम्, इनाः कुदृशः, अष्टपक्षाः, देवाः, शरानलमिताः, रसवह्नयः, (एते) बुधस्य, (मान्दाः, अंकाः, स्युः) । ख-इन्द्र,ऋक्षाणि, नवाभ्रयः, अहयुदधयः, अंक्षाक्षाः, नवाक्षाः, (एते) गुरोः, (मान्दाः, अंकाः, स्युः) । अभ्र-, रस-ईश-विश्व-मनवः, द्विः-बाणचन्द्राः, (एते) क्रमात, गुरोः-(मान्दा अंकाः, स्युः) । खम्, गोऽब्जाः, खकृताः, खषट्, नगनगाः, गोष्टौ, त्रिनन्दाः, (एते) शनेः, (मान्दाः अङ्काः, स्युः,) । अब्ध्यद्रि, षडग्निनागगृहतः, शुद्धः, कुजात्, मन्दकेन्द्रम्, स्यात् ॥ ७ ॥ ८ ॥

खम् कहिये शून्य ० और गो कहिये नौ अश्विन कहिये दो अर्थात उनतीस २९, और अद्रि कहिये सात मरुत कहिये पांच अर्थात सत्तावन ५७, और अक्ष कहिये पांच गज कहिये आठ

अर्थात् पिचासी ८५, और नव कहिये नौ आशा कहिये दस अर्थात् एकसौ नौ १०९, और सिद्ध कहिये चौबीस इन्दु कहिये एक अर्थात् एकसौ चौबीस १२४ और ख कहिये शून्य दहन कहिये तीन क्षिति कहिये एक अर्थात् एकसौ तीस १३०, यह भौमके मन्दांक हैं। खम् कहिये शून्य० और इन कहिये बारह १२और कु कहिये एक दृक् कहिये दो अर्थात् इक्कीस२१ और अष्ट कहिये आठ पक्ष कहिये दो अर्थात् अट्ठाईस २८ और देव कहिये तैंतीस ३३ और शर कहिये पांच अनल कहिये तीन अर्थात पैंतीस ३५ और रस कहिये छः वह्नि कहिये तीन अर्थात छत्तीस, यह बुधके मन्दांक हैं। ख कहिये शून्य और इन्द्र कहिये चौदह १४ और ऋक्ष कहिये सत्ताईस २७ और नव कहिये नौ अग्नि कहिये तीन अर्थात उनतालीस ३९ और अहि कहिये आठ उदधि कहिये चार अर्थात अड़तालीस ४८ और अक्ष कहिये पांच अक्ष कहिये पांच अर्थात पचपन ५५ और नग कहिये सात अक्ष कहिये पांच अर्थात सत्तावन ५७, यह गुरुके मन्दांक हैं। अभ्र कहिये शून्य० और रस कहिये छः ६ और ईश कहिये ग्यारह ११ और विश्व कहिये तेरह १३ और मनु कहिये चौदह १४ और दो बार बाण कहिये पांच चन्द्र कहिये एक अर्थात पन्द्रह १५ और पन्दरह १५ यह शुक्रके मन्दांक हैं। खम् कहिये शून्य० और गो कहिये नौ अब्ज कहिये एक अर्थात् उन्नीस १९ और ख कहिये शून्य० कृत कहिये चार अर्थात् चालीस ४० और ख कहिये शून्य० षट कहिये छः अर्थात् साठ ६० और नग कहिये सात नग कहिये सात अर्थात् सतहत्तर ७७ और गो कहिये नौ अष्टौ कहिये आठ अर्थात् नौवासी ८९ और त्रि कहिये तीन नन्द कहिये नौ अर्थात् तिरानवे ९३, यह शनिके मन्दांक हैं।

यह पांचों ग्रहोंके मन्दांक स्पष्टरीतिसे नीचे कोठेमें लिखते हैं–

नाम	०	१	२	३	४	५	६
मङ्गलकेमन्दांक	०	२९	५७	८५	१०९	१२४	१३०
बुधकेमन्दांक	०	१२	२१	२८	३३	३५	३६
गुरुकेमंदांक	०	१४	२७	३९	४८	५५	५७
शुक्रकेमंदांक	०	६	११	१३	१४	१५	१५
शनिकेमंदांक	०	१९	४०	६०	७७	८९	९३

अब्धि कहिये चार ४ राशि भौमका मन्दोच्च होता है, अद्रि कहिये सात राशि बुधका मन्दोच्च होता है, छः ६ राशि गुरुका मन्दोच्च होता है, अग्नि कहिये तीन ३ राशि शुक्रका मन्दोच्च होता है और नाग कहिये आठ राशि शनिका मन्दोच्च होता है इनमेंसे यथेष्ट किसी ग्रहका मन्दोच्च ग्रहण करके शीघ्रफल दल स्पष्टग्रहमें घटा देय तब जो शेष रहे वह उसी ग्रहका मन्दकेन्द्र होता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

अब भौमादिक ग्रहोंके मन्दफल साधनेकी रीति लिखते हैं–

मृदुकेन्द्रभुजांशका दिनाप्ताः फलमङ्कः प्रगतस्तदूनितैष्यः। परिशेषहतो दिनाप्तियुक्तो दशभक्तः फलमंशकादि मान्दम् ॥ ९ ॥

मृदुकेन्द्रभुजांशकाः, दिनाप्ताः (कार्य्याः, तदा, यत्,) फलम् (तन्मितः), प्रगतः अङ्कः (स्यात्), तदूनितैष्यः, परिशेषहतः (तस्मात्), दिनाप्तियुक्तः, (ततः), दशभक्तः, (कार्यः, तदा) अंशकादि, मान्दम्, फलम्, (भवति) ॥९॥

किसी अभीष्ट ग्रहके मन्दकेन्द्रके भुज करे और उन भुजोंके अंश करके पंद्रहका भाग देय जो लब्धि मिले तत्परिमित ग्रहके पहले कहे हुए मन्दांक ग्रहण करे और उस लब्धिमें एक मिलाकर जो अंक होय तत्परिमित ग्रहके मन्दांक ग्रहण करके द्वितीय मन्दांकमें प्रथम मन्दांकको घटा देय जो शेष रहे उससे ऊपरकी अंशादि बाकीको गुणा करे तब जो गुणानफल होय उसमें पन्द्रहका भाग देय जो लब्धि होय उसको प्रथम मन्दांकमें युक्त करके दशका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय सो मन्दफल होता है ॥ यह मंदफल मंदकेन्द्र मेषादि छः राशिके भीतर होय तो धन होता है और तुलादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण होता है ॥९॥

शीघ्रफल और मन्दफल ग्रहमें किस प्रकार
संस्कार करना चाहिये सो दिखाते हैं-

प्राङ्मध्यमे चलफलस्य दलं विदध्यात्तस्माच्च मान्दमखिलं विदधीत मध्ये। द्राक्केन्द्रकेऽपि च विलोममतश्च शीघ्रं सर्वं च तत्र विदधीत भवेत्स्फुटोऽसौ ॥ १० ॥

प्राक्, चलफलस्य, दलम्, मध्यमे, विदध्यात्, तस्मात्, मान्दम्, (फलम्, साध्यम्,) (तत , अखिलम्, मध्ये, विधधीत । अपि च, (तत) द्राक्केन्द्रके विलोमम्, (विदध्यात्) । अतः शीघ्रम्, (साध्यम्.) विदधीत, असौ, स्फुटः, भवेत् ॥ १० ॥

पहले शीघ्रफलका आधा करके उसको उक्तरीतिके अनुसार अहर्गणोत्पन्न मध्यमग्रहमें धन कर देय अथवा ऋण कर देय। तब जो राश्यादि आवे उससे मन्दफल साधे उस सम्पूर्ण मन्दफलको अहर्गणोत्पन्न मध्यम ग्रहमें पूर्वोक्त रीतिके अनुसार ऋण कर देय अथवा धन कर देय। और उस मन्द फलको द्राक्केन्द्रमें विपरीत रीतिसे धन और ऋणकरे अर्थात् धनकेस्थानमें ऋण करे और ऋणके स्थानमें धन करे तब जो मन्दफल संस्कृतद्राक्केन्द्र (शीघ्रकेन्द्र) होय उससे शीघ्रफल साधे उस साधे हुए सम्पूर्ण शीघ्रफलको मन्दफल युक्त मध्यम ग्रहमें युक्त करदेय तब वह ग्रह स्पष्ट होता है ॥ १० ॥

उदाहरण—प्रथम भौमको स्पष्ट करते हैं-तहां पहले "भौमाकीज्येत्यादि" छठे श्लोकमें कही हुई रीतिके अनुसार मध्यम रवि एक राशि ४ अंश १३ कला ४२ विकलामें मध्यम मंगल ९ राशि २९ अंश ५५ कला १३ विकलाको घटाया तब शेष रहा ३ राशि ४ अंश १८ कला २९ विकला यह मंगलका शीघ्रकेन्द्र हुआ इसके अंश करे तब ९४ अंश १८ कला २९ विकला हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुए ६ शून्य आदि क्रमसे मङ्गलका छठा शीघ्राङ्क हुआ ३२५ उस लब्धिमें एक और मिलाया तब मङ्गलका सातवां शीघ्राङ्क हुआ ३६५ इन दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर हुआ ४० इससे (पन्द्रहका भाग देनेसे बाकी बची हुई) लब्धि ४ अंश १८ कला २९ विकलाको गुणा करा तब १७२ अंश १९ कला २० विकला इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंश २९ कला १७ विकला इसको द्वितीय शीघ्राङ्कके अधिक होने के कारण प्रथम शीघ्राङ्क ३२५ में युक्त करा तब ३३६ अंश २९ कला १७ विकला हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३३ अंश ३८ कला ५५ विकला इनको आधा करा तब १६ अंश ५९ कला २७ विकला हुआ यह

मेषादि छः के अन्तर्गत है इस कारण यह धन है सो इसको मध्यम मङ्गल ९ राशि. २९ अंश ५५ कला १३ विकलामें युक्त करा तब १० राशि १६ अंश ४४ कला ४० विकला यह फलार्द्ध संस्कृत भौम हुआ । अब मन्दफल लानेके निमित्त भौमके मन्दोच्च ४ राशिको फलार्द्ध संस्कृत भौम १० रा० १६ अंश ४४ कला ४० विकला में घटाया तब शेष रहा ५ रा० १३ अं० १५ क० २० वि० इसके भुज करके अंश करे तब हुए ० रा० १६ अं० ४४ क० ४० वि० इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ और शेष रहा १ अं० ४४ क० ४० वि० लब्धि १ परिमित मङ्गलके मन्दाङ्क २९ को एकाधिकमन्दांक ५७ में घटाया तब शेष रहा २८ इससे शेष १ अंश ४४ कला ४० विकलाको गुणा करा तब ४८ अंश ५० कला ४० विकला हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ अंश १५ कला २२ विकला इसमें प्रथम मन्दांक २९ को युक्त करा तब ३२ अंश १५ कला २२ विकला हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ अंश १५ कला ३२ विकला यह मन्दफल हुआ यह मेषादि छः राशिके अंतर्गत है इस कारण धन है इस कारण इसको मध्यम मङ्गल ९ राशि २९ अंश ५५ कला १३ विकलामें युक्त करा तब १० रा० ३ अं० ८ कला ४५ विकला यह मन्दस्पष्ट भौम हुआ । फिर द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले शीघ्रकेन्द्र ३ रा० ४ अंश १८ कला २९ विकला इसमें मंदफल ३ अंश १२ कला ३२ वि० को (शीघ्रकेन्द्र में विपरीत रीति होती है अर्थात् मेषादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण और तुलादि छः राशि के भीतर होय तो धन होता है इस कारण) घटाया तब ३ रा० १ अं० ५ कला ५७ विकला शेष रहा यह छः राशिसे कम है इस कारण इसके अंश करे तब ९१ अं० ५ कला ५७ विकला यह हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ इस

भागाकार परिमित भौम का शीघ्रांक हुआ ३२५ और एक मिला कर लब्धि ७ परिमित भौम का शीघ्रांक हुआ ३६५ इन दोनों का अन्तर करने से शेष बचे ४० इससे ऊपर के अंशादि १ अं० ४ कला ५७ वि० शेष अंकों को गुणा करा तब ४३। १८। ०। यह अंशादि अंक हुए इनमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई २। ५३। १२ इसको प्रथम शीघ्रांक ३२५ में युक्त करा तब ३२७। ५३। १२ हुए इसमें १० का भाग दिया तब ३२। ४७। १९ यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह मेषादि है इस कारण धन है, सो इसको मंदस्पष्ट मङ्गल १० रा० ३ अं० ८ क० ४५ वि० में युक्त करा तब ११ रा० ५ अं० ५६ क० ४ वि० यह स्पष्ट मङ्गल हुआ।

अथ बुधस्पष्टीकरण.

तहां प्रथम शीघ्रफलदलस्पष्ट बुध लाने के निमित्त "भौमार्कीज्येत्यादि" रीति के अनुसार पूर्वोक्त बुधकेन्द्र १ रा० १७ अं० १४ क० ५० वि० छः राशि से अल्प है इस वास्ते इसको अंशात्मक करा तब ४७ अं० १४ क० ५० वि० हुआ इसमें १५का भाग दिया तब लब्धि मिली ३ और शेष बचा २अं०१४क० ५ वि०। लब्धि ३ परिमित बुधका शीघ्रांक हुआ ११७ और एकाधिक लब्धि ४ परिमित अर्थात् बुधका चौथा शीघ्रांक हुआ १५०। इन दोनोंका अन्तर हुआ ३३ इससे शेष २ अं० १४ क० ५० वि० को गुणा करा तब गुणनफल हुआ ७४ अं० ९ क० ३० वि० इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ अं० ५६ क० ३८ विकला। अब प्रथम शीघ्रांक ११७ की अपेक्षा द्वितीय शीघ्रांक १५० अधिक है इस कारण प्रथम शीघ्रांक ११७ में लब्धि ४ अं० ५६ क० ३८ वि० को युक्त करा तब १२१ अं० ५६ क० ३८ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब १२ अं० ११ क०

२९ वि० लब्धि हुई यही शीघ्रफल हुआ यह केन्द्र मेषादि छः राशि से अल्प है इस कारण धन मानकर शीघ्रफलके अर्द्ध ६ अं० ५ क० ४९ वि० इसको मध्यम बुध १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त कर दिया तब १ रा० १० अं० १९ क० ३१ वि० यह शीघ्रफलद स्पष्ट बुध हुआ ॥

अब मन्दफल लानेके निमित्त बुधके मन्दोच्च७रा० ० अं० ० क० ० वि० में शीघ्रफलदल स्पष्ट बुध १ रा १० अं १९ क० ३१वि०को घटाया तब शेष रहा ५ रा० १९ अं० ४० क० २९ वि० यह बुध का मन्द केन्द्र हुआ । इसके भुज करके अंश करे तब १० अं० १९ क० ३१ विकला हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि मिली० शेष रहा १० अं० १९ क० ३१ वि० लब्धि परिमित बुध-का मन्दांक ० और एकाधिका लब्धि १परिमित बुधका मन्दांक १२ इन दोनों मन्दांकोंका अन्तर हुआ १२ इससे शेष १० अं० १९ क० ३१ वि० को गुणा करा तब गुणनफल हुआ १२२ अं० ५४ क० १२ वि० इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ८ अंश १५ क० ३६ वि० इसमें ५४ प्रथम मन्दांकको युक्त करा तब ८ अं० १५ क० ३६ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई० अं० ४९ क० ३३ वि० यह अंशादि मन्द फल हुआ यह केन्द्र मेषादि होनेके कारण धन है सो इसको मध्यम बुध १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त करा तब १ रा० ५ अंश ३ क० १५ वि० यह मन्द स्पष्ट बुध हुआ ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले साधे हुए शीघ्र केन्द्र १रा० १७ अं० १४ क० ५० वि० में मन्दफल ० अं०४९क०३३

वि० को घटाया तब शेष रहा १ रा० १६ अं० २५ क० १७ वि० यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ यह मेषादि छः राशिसे अल्प है इस कारण इसको अंशादि करा तब ४६ अं० २५ क० १७ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ शेष रहे १ अं० १५ कला १७ वि० । अब लब्धि ३ परिमित बुधका शीघ्राङ्क मिला ११७ और एकाधिक लब्धि ४ परिमित शीघ्राङ्क हुआ १५० इन दोनों शीघ्रांकों ११७।१५० का अन्तर हुआ ३३ इससे शेष १ अं० २५ क० १७ वि० को गुणा करा तब ४६ अं० ५४ क० २१ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब ३ अं० ७ क० ३७ वि० लब्धि हुई इसमें प्रथम शीघ्रांक ११७ को युक्त करा तब १२० अं० ७ क० ३७ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब अंशादि फल मिला १२ अं० ० क० ४५ वि० यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह केन्द्र मेषादि है इस कारण धन है सो इस १२ अं०० क० ४५ वि० को मन्दस्पष्ट बुध १ रा० ५ अं० ३ क० १५ वि० में युक्त करा तब १ रा० १७ अं ४ क०० वि० यह स्पष्ट बुध हुआ ॥

अथ गुरुस्पष्टीकरण ।

तहां प्रथम शीघ्रफलदल स्पष्ट गुरु लानेके लिये प्रथम "भौमार्कीज्येत्यादि" रीतिके अनुसार मध्यमरवि १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में मध्य गुरु ४ रा० ८ अं० १५ क० ३७ वि० को घटाया तब ८ रा० २५ अं० ५८ क० २५ वि० यह शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे अधिक है इस कारण इसको १२ राशिमें घटाया तब शेष रहा ३ रा० ४ अं० १ क० ३५ वि० इसको अंशादि करा तब ९४ अं० १ क० ३५ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब

लब्धि हुई ६ शेष रहा ४ अं० १ क० ३५ वि० और लब्धि परिमित गुरुका शीघ्रांक हुआ १०६ और एकाधिक लब्धि परिमित गुरुका शीघ्रांक हुआ १०८ इन दोनोंका अन्तर हुआ २ इससे शेष ४ अं० १ क० ३५ वि० को गुणा करा तब ८ अ० ३ क० १० वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुआ०अ० ३२ क० १२ वि० और प्रथम शीघ्रांककी अपेक्षा अग्रिम शीघ्रांक अधिक है इस कारण प्रथम शीघ्रांक १०६ में लब्धि ० अ० ३२ क० १२ वि० को युक्त करा तब १०६ अं० ३२ क० १२ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई १० अं० ३९ क० ० वि० यह शीघ्र फल हुआ यह केन्द्र तुलादि छः राशिके अन्तर्गत है इस कारण ऋण है सो इस कारण मध्यमगुरु ४ रा० ८ अं० १५ क० १७ वि० में शीघ्र फलके अर्द्ध ५ अ० १९ क० ३६ विकलाको घटाया तब ४ रा० २ अं० ५५ क० ४१ वि० शेष बचा यह शीघ्र फलदल स्पष्ट गुरु हुआ ॥

अब मन्दफल लानेके लिये गुरुके मन्दोच्च६रा. ० अं. ०क. ० वि० में शीघ्रफल दल स्पष्ट गुरु ४ रा० २० अं० ५५ क० ४१ वि० को घटाया तब १ रा० २७ अं० ४ क० १९ वि० यह गुरुका मन्दकेन्द्र हुआ। इसके अंशादिभुज करे तब ५७ अं० ४ क० १९ वि० हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि मिली ३ और शेष रहा १२ अं० ४ कला १९ वि० और लब्धि ३ परिमित गुरुका मन्दाङ्क हुआ ३९ आर एकाधि लब्धि ४ परिमित गुरुका मन्दांक हुआ ४८ इन दोनों मन्दांकोंका अन्तर हुआ ९ इससे शेष १२ अं० ४ क० १९ विकलाको गुणा करा तब १०८ अं० ३८ क० ५१ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ७ अं० १४ क० ३५

वि० इसको प्रथम मन्दांक २९ में युक्त करा तब ४६ अं० १४ क० ३५ वि० हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ अं० ३७ क० २७ वि० यह मन्दफल हुआ यह मेषादि छः राशिके अन्तर्गत है इस कारण धन है इस ४ अं० ३७ क० २७ वि०को मध्यमगुरु ४ रा० ८ अं० १७ वि० में युक्त करा तब ४ रा० १२ अं० ५२ क० ४४ वि० यह मन्दस्पष्ट गुरु हुआ ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले शीघ्रकेन्द्र ८ रा० २५ अं० ५८ क० २५ वि० में गुरु के मन्दफल ४ अं० ३७ क० २७ वि० को (यह धन है परन्तु विपरीत रीति से ऋण मानकर घटाया तब ८ रा० २१ अं० २० क० ५८ वि० रहा यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे अधिक है इस कारण इसको १२ राशिमें घटाया तब शेष रहा ३ रा० ८ अं०३९क०२वि० इसके अं० करे तब ९८ अं० ३९ क० २ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ और शेष रहा ८ अं० ३९ क० २ वि० फिर लब्धि ६ परिमित गुरुका शीघ्रांक हुआ १०६ और एकाधिक लब्धि ७ परिमित गुरुका शीघ्रांक हुआ १०८ इन दोनोंका अंतर हुआ २ इससे शेष ८ अं० ३९ क० २ विकला को गुणा करा तब १७ अं० १८ क० ४ वि० इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अं० ९ क० १२ वि० इसको प्रथम शीघ्रांक १०६ में युक्त करा तब १०७ अं० ९ क० १२ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १० अं० ४२ क० ५५ वि० यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह तुलादि छः राशि के अन्तर्गत होने के कारण ऋण है इस कारण १० अं० ४२ क० ५५ वि० को मंदस्पष्ट गुरु ४ रा० १२ अं०

५२ क० ४४ वि० में घटाया तब शेष रहे ४ रा० २ अं० ९ क० ४९ वि० यह स्पष्ट गुरु हुआ ॥

अथ शुक्रस्पष्टीकरण

तहां प्रथम शीघ्रफलदलस्पष्ट शुक्रके साधनेके निमित्त "भौमार्कीज्येत्यादि" रीति के अनुसार पूर्वोक्त शुक्रके शीघ्रकेन्द्र ३ रा० ५ अं० ४१ क० ३५ वि० यह छः राशि से अल्प है इस कारण इसके अं० करे ९५ अं० ४१ क० ३५ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ शेष रहा ५ अं० ४० क० ३५ वि० लब्धि परिमित शुक्रका शीघ्रांक हुआ ३५४ एकाधिक लब्धि ७ परिमित शुक्रका शीघ्रांक हुआ ४०२ इन दोनों शीघ्रांकोंका अन्तर हुआ ४८ इससे शेष ५ अं० ४१ क० ३५ वि को गुणा करा तब २७३ अं० १६ क० ० वि० हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १८ अं० १२ क० ४ वि० प्रथम शीघ्रांककी अपेक्षा द्वितीय शीघ्रांक अधिक है इस कारण इस लब्धि १८ अं० १२ क० ४ वि० को प्रथम शीघ्रांक ३५४ में युक्त करा तब ३७२ अं० १२ क० ४ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३७ अं० १३ क० १८ वि० यह शीघ्रफल हुआ, केन्द्र मेषादि छः राशिके अन्तर्गत है इस कारण धन है सो इस शीघ्रफलके अर्द्ध १८ अं० ३६ क० २१ वि० को यह मध्यमशुक्र १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त करा तब १ रा० २२ अं० ५० क० २१ वि० यह शीघ्रफलदलस्पष्ट शुक्र हुआ ॥

अब मन्दफल लानेके निमित्त शुक्रके मंदोच्च ३ रा० ०अं.०क.० वि. में शीघ्रफलदलस्पष्ट शुक्र १ रा० २२ अं० ५० क० २१ वि०

घटाया तब शेष रहे १ रा० ७ अं० ९ क० ३९ वि० यह शुक्रका मंदकेन्द्र हुआ उसके अंशादि भुज करे ३७ अं० ९ क० ३९ वि० इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ शेष बचे ७ अं० ९ क० ३९ वि० लब्धि २ परिमित शुक्रका मंदांक हुआ ११ एकाधिक लब्धि परिमित मंदांक हुआ १३ इन दोनों मंदांकोंका अंतर करा तब २ हुए इससे शेष ७ अं० ९ क० ३९ वि० को गुणा करा तब १४ अं० १९ क० १८ वि० हुए इसमें पन्द्रह १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अं० ५७ क० १७ वि० इसमें प्रथम मंदांक ११ को युक्त करा तब ११ अं० ५७ क० १७ वि० हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अं० ११ क० ४३ वि० यह मंदफल हुआ, यह मंदकेन्द्र मेषादि छः राशिके अंतर्गत है इस कारण धन है सो इस १रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त करा तब १ रा० ५ अं० २५ क० २५ वि० यह मंदस्पष्ट शुक्र हुआ ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लाने के निमित्त प्रथम शीघ्रकेन्द्र ३ रा० ५ अं० ४१ क० ३५ वि० में मंदफल १ अं० ११ क० ४३ वि० को (यद्यपि मेषादि छः राशिके अंतर्गत होने के कारण धन है परंतु विपरीत रीतिसे ऋण मानकर) घटाया तब शेष बचे ३ रा० ४ अं० २९ क० ५२ वि० यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे अल्प है इस कारण इसके अंश करे तब ९४ अं० २९ क० ५२ वि० हुआ इनमें १५ का भाग दिया तब ६ लब्धि हुए और शेष रहे ४ अं० २९ क० ५२ वि० और लब्धि ६ परिमित शुक्रका शीघ्रांक हुआ ३५४ और एकाधिक लब्धि ७ परिमित शुक्रका शीघ्रांक हुआ ४०२ इन दोनों शीघ्रांकोंका अन्तर हुआ ४८ इससे

शेष रहे ४अं०२९क०५२ वि० को गुणा करा तब २१५ अं० ५३ क० ३६ वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १४ अं० २३ क० ३४ वि० इसको प्रथम शीघ्रांक ३५४ में युक्त करा तब ३६८ अं० २३ क० ३४ वि० हुए इसमें १० भाग दिया तब लब्धि हुई ३६ अं० ५० क० २१ वि० यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह केंद्र मेषादि छः राशिके अंतर्गत है इस कारण धन है सो इस ३६ अं० ५० क० २१ वि० को मंदस्पष्ट शुक्र १ रा०५ अं०२५क०२५ वि० से युक्त करा तब २ रा० १२ अं०१५ कला ४६ वि० यह स्पष्ट शुक्र हुआ।

शनिस्पष्टीकरण.

तहां प्रथम शीघ्रफलदल स्पष्ट शनि साधनेके अर्थ "भौमार्की-ज्येत्यादि" रीतिके अनुसार मध्यम रवि १ रा०४ अं० १३ क० ४२ वि० में मध्यम शनि ११ रा. ० अं. ३६ क० ४५ वि० को घटाया तब शेष रहा २ रा० ३अं०३६क.५७वि. यह शनिका शीघ्र-केन्द्र हुआ यह छः राशिसे कम है इसके अंश करे तब ६३ अं. ३६ क. ५७ वि. हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि मिले ४ और शेष रहे ३ अं. ३६ क. ५७ वि. लब्धि ४ परिमित शनिका शीघ्रांक हुआ ४८ और एकाधिक लब्धि ५ परिमित शनिका शीघ्रांक हुआ ५४ इन दोनों शीघ्रांकों का अंतर हुआ इससे शेष ३ अं. ३६ क. ५७ वि. को गुणा करा तब २१ अं. ४१ क. ४० वि. इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अं. २६ क. ४६ वि. इसको प्रथम शीघ्रांक ४८ में युक्त करा तब ४९ अं. २६ क. ४६ वि० हुए इसमें १० का भाग दिया तब ४ अं. ५६ क. ४० वि. शीघ्रफल हुआ यह केंद्र मेषादि छः राशिके अंतर्गत है इस कारण

धन है सो शीघ्रफलके अर्द्ध २ अं. २८ क. २० वि. को मध्यम शनि ११ रा. ० अं, ३६ क. ४५ वि. में युक्त करा तव ११ रा. ३ अं. ५ क. ५ वि. यह शीघ्रफलदलस्पष्ट शनि हुआ ॥

अब मंदफल लानेके निमित्त शनि के मंदोच्च ८ रा. ० अं. ० क. ० वि. में शीघ्रफलदल स्पष्ट शनि ११ रा. ३ अं. ५ क. ५ वि. को घटाया तब ८ रा. २६अं.५४क.५५वि. यह शनिका मन्दकेन्द्र हुआ। इसके भुज २ रा. २६ अं. ५४ क. ५५ वि. करके अंश करे तब ८६ अ. ५४ क. ५५ वि. हुए इसमें १५ का भाग दिया लब्धि हुई ५ शेष रहे ११ अं. ५४ क. ५५ वि. और लब्धिपरिमित शनिका ८९ एकाधिकलब्धि ६ परिमित मंदांक हुआ९३ इन दोनों मंदांकों का अंतर हुआ ४ इससे शेष ११ अं. ५४ क. ५५ वि. को गुणा करा तब ४७ अं. ३९ क. ४० वि. इसमें पन्द्रह का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ अं. १० क. ३८ वि. इसमें प्रथम मंदांक ८९ युक्त कर दिया तब ९२ अं. १० क. ३८ वि. हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ९ अं १३ क. ३ वि. यह मंदफल हुआ, यह मंदकेंद्र तुलादि है. इस कारण ऋण है, इससे इसको मध्यम शनि ११ रा. ० अं. ३६ क. ४५ वि. में घटाया तब १० रा. २१ अं. २३ क. ४२ वि. यह मंदस्पष्ट शनि हुआ ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले शीघ्रकेंद्र २ रा. ३ अं० ३६ क. ५७ वि. में मंदफल ९ अं. १३ क. ३ वि. को घटाया तब २ रा. १२ अं. ५० क. ० वि. यह द्वितीय शीघ्रकेंद्र हुआ इस २ रा. १२ अं. ५० क. ० वि. के ७२ अं. ५० क. ० वि. करके १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ और शेष बचे १२ अं. ५० क. ० वि. लब्धि ४ परिमित शनिका शीघ्रांक हुआ ४८ और एकाधिकलब्धि ५ परिमित शनिका शीघ्रांक हुआ ५४ इन दोनों शीघ्रांकोंका अन्तर हुआ ६ इससे शेष १२ अं. ५० क. ० वि. को

गुणा करा तब ७७ अं. ० क. ० वि. इसमें पन्द्रह १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ५ अं. ८ क. ० वि. इसमें प्रथम शीघ्राङ्क ४८ को युक्त करा तब ५३ अं. ८क. ० वि. हुआ इसमें १० का भाग दिया तब ५ अं. १८ क. ४८ वि. यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह द्वितीय केन्द्र मेषादि है इस कारण धन है सो इस ५अं.१८ क. ४८ वि. को मन्दस्पष्टशनि १०रा० २१ अं० २३ क० ४२ वि०में युक्त करा तब १० रा. २६ अं. ४२ क. ३० वि. यह स्पष्ट शनि हुआ ॥

अब मन्दस्पष्टगतिसाधनकी रीति लिखते हैं-

मान्दाङ्कान्तरमार्क्यसृग्गुरूणां भक्तं बाणनगैः
शरैः खरामैः ॥ विद्भृग्वोर्द्विहतेषु भाजितं
तद्दद्यात्प्राग्वदितौ मृदुस्फुटा सा ॥ ११ ॥

आर्क्यसृग्गुरूणाम्, मान्दाङ्कान्तरम्, (क्रमेण), बाणनगैः, शरैः, खरामैः, भक्तम्, विद्भृग्वोः, (मान्दाङ्कान्तरम्,) द्विहतेषु भाजितम्, (कलाद्यम्) तत्, प्राग्वत्, इतौ, दद्यात, (तदा), सा, मृदुस्फुटा, (गतिः, भवति) ॥ ११ ॥

शनि भौम तथा गुरुके मन्दफल साधनेके समय जो मन्दांकोंके अन्तर आये थे उनमेंसे शनिके मन्दांकोंके अन्तरमें बाणनग कहिये ७५ का भाग देय और भौमके मन्दाङ्कान्तरमें ५ का भाग देय तथा गुरुके मन्दांकान्तरमें खराम कहिये तीसका भाग दे और बुध तथा शुक्रके मन्दांकान्तरको २ से गुणा करके ५ का भाग देय तब जो लब्धि होय उसको कलादि जाने और वह मन्दकेन्द्र कर्कादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो धन और मकरादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो ऋण जाने, और तदनन्तर

उस कलादि लब्धिको क्रमसे शनिआदि ग्रहोंकी मध्यगतिमें धनऋण करै है तब मन्दस्पष्टगति होती है ॥ ११ ॥

मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	यह मन्दाङ्कान्तरों-
५	$\frac{५}{२}$	३०	$\frac{५}{२}$	७५	के भाजकाङ्क हैं

उदाहरण-शनिके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर जो ४ आया था इसमें ७५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ०क. ३ वि. यह लब्धि मन्दकेन्द्र कर्कादि है इस कारण धन है सो शनिकी मध्यमगति २ कला ० वि. में इस लब्धि ० क. ३ वि. को युक्त करा तब २ क. ३ वि. यह शनिकी मन्दस्पष्टगति हुई ॥

मङ्गलके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर जो १८ इसमें उपरोक्त भाजकाङ्क ५ का भाग दिया तब ५ क. ३६ वि. लब्धि हुई यह लब्धि मन्दकेन्द्र कर्कादि है इस कारण धन है सो इसको मङ्गलकी मध्यमगति ३१ क. २६ वि. में युक्त करा तब ३७ क. ० वि. यह भौमकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥

गुरुके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दांकोंका अन्तर जो ९ आया था उसमें ३० का भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई० क० १८ वि० यह लब्धि मन्दकेन्द्र मकरादि होनेसे ऋण है इस कारण इसको गुरुमध्यमगति ५ क० ० वि. में ऋण करा तब ४ क० ४२ वि० यह गुरुकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥

बुधके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दांकोंका अन्तर जो १२ उसको ऊपर कही हुई रीतिके अनुसार २ से गुणा करा तब २४ हुए इनमें ५ का भाग देनेसे कलादि लब्धि हुई ४ क० ४८ वि० यह लब्धि कर्कादि होनेसे धन है इस कारण इसको बुधकी

मध्यम गति ५९ क० ८ वि० में युक्त करा तब ६२ क० ५६ वि० बुधकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥

शुक्रके मन्दफल साधते समय मन्दांकान्तर जो २ आया था उसको उपरोक्त रीतिके अनुसार २ से गुणा करा तब ४ हुए इसमें ५ का भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई ०क ० ४८ वि० यह मदकेन्द्र मकरादि होनेसे ऋण है इस कारण इसको शुक्रकी मध्यमगति ५९ क० ८ वि० में घटाया तब ५८ क० २० वि० यह शुक्रकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥ १२ ॥

अब भौमादि पांचों ग्रहोंकी स्पष्ट गति साधनेकी रीति लिखते हैं—

भौमाच्चलाङ्कविवरं शरहृत्स्वबाणांशाढ्यं त्रिहृत्कृतहृतं द्विगुणाक्षभक्तम् ॥ तद्धीनयु-क्क्षयचये तु मृदुस्फुटा स्यात्स्पष्टाऽथ चेद्बहु ऋणात्पतिता तु वक्रा ॥ १२ ॥

भौमात् चलाङ्कविवरम् (क्रमेण), शरहृत्, स्वबाणांशाढ्यम्, त्रिहृत्, कृतहृतम्, द्विगुणाक्षभक्तम्, (कार्यम्) (लब्धिः गतेः, शीघ्रफलम्, स्यात्) क्षयचये, तद्धीनयुक्, मृदुस्फुटा, स्पष्टा, स्यात् अथ, चेत्, (ऋणफलम्), बहु, (तदा), ऋणात्, पतिता (कार्या), (शेषम्) वक्रा (स्यात्) ॥ १२ ॥

मंगल आदि शनिपर्यंत पांचों ग्रहोंके द्वितीय शीघ्रफल साधनेके समय जो दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर आया था उनमें क्रमसे मंगलके शीघ्राङ्कोंके अन्तरमें शर कहिये ५ का भाग देय

और बुधके शीघ्राङ्कोंके अन्तरमें उसको पञ्चम भाग युक्त कर देय, गुरुके शीघ्रांकोंके अन्तरमें ३ का भाग देय, शुक्रके शीघ्रांकोंके अन्तरमें ४ का भाग देय, और शनिके शीघ्रांकोंके अन्तरको दोसे गुणा करके ५ का भाग देय तब जो फल मिले अर्थात लब्धि हो उसको कलादि जाने और प्रथम शीघ्रांक द्वितीय शीघ्रांकसे अधिक होय तो उस लब्धिको ऋण माने और यदि प्रथम शीघ्रांक द्वितीय शीघ्रांकसे अल्प होय तो धन माने तदनन्तर उस लब्धिको ऊपर साधी हुई मन्दस्पष्टगतिमें धन अथवा ऋण करे तब स्पष्टगति होती है, यदि वह लब्धि ऋण होकर मन्दस्पष्टगतिमें न घट सके अर्थात मन्द स्पष्ट गतिसे भी अधिक होय तो विपरीत रीति करे अर्थात् ऋण लब्धिमें मन्दस्पष्टगति को घटावे और जो शेष रहे उसको उस ग्रहकी वक्र गति जाने ॥ १२ ॥

मङ्गलका	बुधका	गुरुका	शुक्रका	शनिका	यह शीघ्रकोंके अन्तरके भाजकांक हैं
५	+ ५/०	३	४	५/२	

उदाहरण-मङ्गलका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर आया था ४० उसमें ५ का भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई ८ क. ० वि. यहां प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्राङ्ककी अपेक्षा कम था इस कारण यह धन हैं सो इस लब्धि ८ क. ० वि. को मङ्गलकी मन्दस्पष्टगति ३७ क. २ वि. में युक्त करा तब ४५ क० २ वि० यह मङ्गलकी स्पष्टगति हुई ॥

+ ६/५ ऐसा लिखनेका प्रयोजन यह है कि बुधके शीघ्रांकोंके अंतरमें उसका ही पञ्चम भाग युक्त करनेसे जो अंक होता है वही अंक अन्तरको ६ से गुणा कर ५ का भाग देनेसे होताहै ॥

बुधका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्रांकोंका जो अन्तर आया था ३३ इसमें इसका पांचवा भाग ६क.३६वि. युक्त करा तब ३९ क० ३६ वि. यह हुआ अथवा शीघ्रांकान्तर ३३ को ६ से गुणा करा तब १९८ हुए इसमें ५ का भाग दिया तब ३९ क० ३६ वि० यह लब्धि हुई प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीव शीघ्राङ्ककी अपेक्षा कम है इस कारण धन है सो इस लब्धि ३९ क० ३६ वि. को बुधकी मन्दस्पष्टगति ६६ क०५६वि०में युक्त करा तब १०३ क० ३२ वि० यह बुधकी स्पष्टगति हुई ॥

गुरुका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय जो दोनों शीघ्रांकोंका अन्तर २ आया था उसमें ३ का भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई ० क० ४० वि० यहां प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्रांककी अपेक्षा कम था इस कारण यह लब्धि धन है सो इस० क० ४० वि० में गुरुकी मन्दस्पष्टगति ४ क० ४२ वि० को युक्त करा तब ५ क० २२ वि ० यह गुरुकी स्पष्टगति हुई ॥

शुक्रका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर ४८ आया था इसमें ४ का भाग दिया तब १२ क० ० वि. लब्धि हुई १२ यह भी उक्त रीतिके अनुसार धन है इस कारण इस लब्धि १२क०० वि०में शुक्रकी मन्दस्पष्टगति ५८ क० २ वि० को युक्त करा तब ७० क० ० वि० यह शुक्रकी स्पष्टगति हुई ॥

शनिका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर ६ आया उसको २ से गुणा करा तब १२ हुए इसमें ५ का भाग दिया तब २ क० २४ वि. लब्धि हुई यह भी उपरोक्त रीतिके अनुसार धन है इस कारण इस लब्धि २ क. २४ वि. को शनिकी मंदस्पष्टगति २ क. ३ वि. में युक्त करा तब ४क.२७वि. यह शनिकी स्पष्टगति हुई ॥

शुक्र और मङ्गलके द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय शीघ्रांक अन्तका आवे तब स्पष्ट करे हुए ग्रहमें अन्तर पडता है इस कारण तहां स्पष्ट करनेकी विशेष रीति कहते हैं-

शुक्रारयोश्चलभवोऽन्त्यगतो यदाङ्कः
शेषांशकाश्च पतिताः पृथगक्षभूभ्यः ॥
येऽल्पा भृगोस्त्रिहृता असृजोऽक्षभक्ता
देयाःस्वशीघ्रफलवत्स्फुटयोःस्फुटौ तौ ॥१३॥

यदा, शुक्रारयोः, चलभवः, अंकः, अन्त्यगतः, (स्यात् तदा) शेषांशकाः, पृथक्, स्थाप्याः, (एकत्र), अक्षभूभ्यः, पतितः, च, (कार्याः), तयोः, ये, अल्पाः, (ते), भृगोः, त्रिविहृताः, असृजः, अक्षभक्ताः, स्वशीघ्रफलवत्, स्फुटयोः, देयाः, (तदा), तौ, स्फुटौ (स्तः) ॥ १३ ॥

द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय यदि शुक्र और मङ्गलका शीघ्राङ्क अंतका आवे अर्थात् एकादशके नीचेका आवे तो शीघ्रकेन्द्रमें १५ का भाग देकर जो अंशादि शेष बचे उनको अलग अलग दो स्थानोंमें लिखे एक स्थानके अंशादिको १५अंशमें घटावे जो शेष रहे वह अंशादि और पहले दूसरे स्थानके रक्खे हुए शेषभूत अंशादिमें जो कम हो उसको ग्रहण करे वह यदि शुक्रका हो तो तीनका भाग देय और मङ्गलका होय तो ५ का भाग देय जो अंशादि लब्धि होय उसको क्रमसे स्पष्ट शुक्र और स्पष्ट मङ्गलमें शीघ्रफलके समान धन तथा ऋण करे तब शुक्र मंगल स्पष्ट होते हैं ॥ १३ ॥

द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय अंतका शीघ्राङ्क आवे तो भौम बुध और शुक्र इनकी गतिका विशेष संस्कार कहते हैं-

कुजबुधभृगुजानां चेच्चलाङ्कोऽन्तिमः स्याद्
दशहतपरिशेषांशा नगाद्र्यग्निभक्ताः ॥
फलमिषुदहनैर्युक्सप्तगोभिस्त्रिबाणै-
र्भवति गतिफलं तत्स्यात्तदा नैव पूर्वम् ॥१४॥

चेत्, कुजबुधभृगुजानाम्, चलांकः, अन्तिमः, स्यात्, तदा, दशहतपरिशेषांशाः, (क्रमेण) नगाद्र्यग्निभक्ताः, फलम्, (क्रमेण) इषुदहनैः, सप्तगोभिः, त्रिबाणैः, युक् (कार्यम्) तत्, गतिफलं, स्यात्, पूर्वम्, नैव ॥ १४ ॥

द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय मंगल-बुध-और शुक्रका शीघ्रांक यदि अंतका अर्थात् एकादशके नीचेका आवे तो द्वितीय शीघ्रकेन्द्रमें १५ का भाग देकर जो अंशादि शेष बचे उनको दशसे गुणा करके क्रमसे सात ७ और सात ७ तथा तीनका भाग देकर जो कलादि लब्धि मिले उससे क्रमसे पैंतीस और सत्तानवे तथा ५३ मिला देय तब क्रमसे गति फल होता है, पूर्वोक्त यथार्थ नहीं है इस गतिफलको शीघ्रफलके समान मंद स्पष्ट गतिमें धन ऋण करे तब मंगल-बुध और शुक्रकी स्पष्ट गति होती है ॥ १४ ॥

अब भौमादि ग्रहोंका वक्री होना और मार्गी होना लिखते हैं-

त्रिनृपैः शरजिष्णुभिः शरार्कैर्नगभूपैस्त्रिभवैः
क्रमात्कुजाद्याः । चलकेन्द्रलवैः प्रयान्ति

वक्रं भगणात्तैः पतितैर्व्रजन्ति मार्गम् ॥ १५ ॥

कुजाद्याः, क्रमात्, त्रिनृपैः, शरजिष्णुभिः, शरार्कैः, नगभूपैः, त्रिभवैः, चलकेन्द्रलवैः, वक्रम् प्रयान्ति, (तथा), भगणात् ,पतितैः, तैः, मार्गम्, व्रजन्ति ॥ १५ ॥

मङ्गलआदि ग्रहोंके द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे त्रिनृप कहिये १६३ शरजिष्णु कहिये १४५ शरार्क कहिये १२५ नगभूप कहिये १६७ और त्रिभव कहिये ११३ होय तो क्रमसे वक्री होते हैं अर्थात उनकी गति उलटी हो जाती है, और उपरोक्त अंशोंको क्रमसे भगण क-हिये ३६० में घटानेसे जो शेष रहें उतने अंश हों तो मंगल आदि मार्गी होते हैं अर्थात मंगलके द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके १९७ अंश बुधके २३५ गुरुके २६५ शुक्रके १९३ और शनिके २४७ अंश होय तो भौमादि मार्गी होते हैं अर्थात् आगेको चलने लगे ॥ १५ ॥ अब मंगल गुरु और शनि इनके उदय और अस्तके शीघ्रकेन्द्रांश लिखते हैं-

क्षितिजोऽष्टयमैरुदेति पूर्वे गुरुरिन्द्रै रविजस्तु सप्तचन्द्रैः । स्वस्वोदयभागसंविहीनैर्भगणांशै-रपरत्र यांति चास्तम् ॥ १६ ॥

क्षितिजः, अष्टयमैः, गुरुः, इन्द्रैः, रविजः, तु, सप्तचन्द्रैः, पूर्वे, उदेति । च, स्वस्वोदयभागसंविहीनैः, भगणांशैः, अपरत्र, अस्तम् यांति ॥ १६ ॥

द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अष्टयम २८ अंश होय तो मंगल और इन्द्र कहिये १४ अंश होय तो गुरु तथा सप्तचन्द्र कहिये १७ होय तो शनि पूर्व दिशामें अस्त होता है और अपने अपने उदयके अंश भगण कहिये ३६० में घटानेसे जो शेष अंश रहें उतने शीघ्र केन्द्रके अंश हों तो क्रमसे मंगल-गुरु और शनि पश्चिममें अस्त होते हैं अर्थात् द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके३३२हों तो मंगल और ३४६ हों तो गुरु तथा ३४३ हों तो शनि पश्चिममें अस्त होता है ॥ १६ ॥

अब बुध और शुक्रके उदय और अस्तके शीघ्र केन्द्रांशलिखते हैं—

खशरैश्च जिनैः परे ज्ञभृग्वोरुदयोऽस्तोऽक्षदिनैर्नगाद्रिभूभिः ॥ उदयोऽक्षनखैस्त्र्यहीन्दुभिः प्रागस्तो दिग्दहनैश्च षट्सुरैः स्यात् ॥ १७ ॥

खशरैः, जिनैः, परे, ज्ञभृग्वोः, उदयः, च, अक्षदिनैः, नगाद्रिभूभिः, (परे,) अस्तः, स्यात् । (तथा) अक्षनखैः, त्र्यहीन्दुभिः, प्राक्, उदयः, (च), दिग्दहनैः, षट्सुरैः, (प्राक्), अस्तः (स्यात्) ॥ १७ ॥

द्वितीय शीघ्रके खशर कहिये ५० और जिन कहिये २४ अंश हों तो पश्चिम दिशामें क्रमसे बुध और शुक्रका उदय होता है, और द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे अक्षदिन कहिये १५५ और नगाद्रिभू कहिये १७७ हों तो बुध और शुक्रका पश्चिममें अस्त होता है और द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे अक्षनख कहिये २०५ और त्र्यहीन्दु कहिये १८३ हों तो बुधका और शुक्रका पूर्वदिशामें उदय होता है और द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे

दिग्दहन कहिये ३१० और षट्सुर कहिये ३३६ हों तो बुध और शुक्रका पूर्वदिशामें अस्त होता है ॥ १७ ॥

अब भौमादि ग्रहोंकी वक्रगतिके उदय-अस्त और सरल गतिके दिन जाननेकी रीति लिखते हैं-

वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकाल्पाः केन्द्रांशकाः क्षितिसुताद्द्विगुणास्त्रिभक्ताः । सांकांशका दशहतांगहृताः कुभक्ता वक्राद्यमाप्तदिवसैः क्रमशो गतैष्यम् ॥ १८ ॥

वक्रोदयादिगदितांशकतः, (यदि) केंद्रांशकाः, अधिकाल्पाः, (स्युः, तदा,)क्षितिसुतात्, द्विगुणाः, त्रिभक्ताः, सांकांशकाः, दश, हताङ्गहृताः, कुभक्ताः, (कार्य्याः), आप्तदिवसैः, क्रमशः, वक्राद्यम्, गतैष्यम्, (स्यात्) ॥ १८ ॥

भौमादि ग्रहोंके वक्रगति-उदय-अस्त और मार्गगति इनके जो द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंशकहे हैं उनसे यदि अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रकेअंश अधिक या कम हों तो उन दोनोंका अन्तर करके उसमें क्रमसे मंगलकेमें २ से गुणा करे, बुधकेमें ३ का भाग देय, गुरुकेमें उस अन्तरका ही नवम भाग युक्त कर देय शुक्रकेमें १० से गुणा करके छः का भाग देय और शनिकेमें १ का भाग देय तब जो क्रमसे सबके अङ्क लब्ध हों उनको दिन जाने और पूर्वोक्त शीघ्रकेन्द्रके अंशोंसे अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रके अंश यदि अधिक होंतो वक्र-उदय अस्त और मार्ग इनको होकर लब्धि परिमित दिन व्यतीत हुए जाने और यदि उक्त शीघ्र केन्द्रके अंशोंसे अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रके

अंश कम हों तो वक्र उदय अस्त और मार्ग इनके होनेमें आजसे लब्धि परिमित दिन है ऐसा जाने ॥ १८ ॥

अब बुध और शुक्रकी वक्रगति-उदय-अस्त और मार्गगति होनेके दिनोंका क्रम लिखते हैं--

पूर्वास्तादुदयः परेऽनृजुगतिस्तोयास्तमैन्द्र्युद्गमो मार्गोऽस्तोऽत्र च दन्तदन्तदहनाष्ट्याज्याशदन्तैर्दिनैः ॥ चान्द्रेस्तत्परतत्परं त्वथ भृगोस्तद्वद्द्विमाः स्यात्ततोऽष्टाभिर्व्यंघ्रिभुवांघ्रिणा विचरणैकेनाष्टमासैः क्रमात् ॥ १९ ॥

दन्तदन्तदहनाष्ट्याज्याशदन्तैः, दिनैः, चान्द्रेः, क्रमात्, पूर्वास्तात्, परे, उदयः, अनृजुगतिः, तोयास्तम्, ऐन्द्र्युद्गमः मार्गः, अस्तः, स्यात्, तत्परम्, तत्परम्, अथ, (क्रमात्) द्विमाः, ततः, अष्टाभिः, व्यंघ्रिभुवा, अंघिणा, विचरणैकेन, च, अष्टमासैः, भृगोः, तद्वत्, (स्यात्) ॥ १९ ॥

बुधका पूर्वदिशामें अस्त होनेसे दन्त कहिये ३२ दिनके अनन्तर पश्चिममें उदय होता है और उदय होनेसे ३२ दिनके अनन्तर वक्रगति होती है और वक्रगति होनेसे दहन कहि तीन दिनके अनन्तर पश्चिममें अस्त होता है और पश्चिममें अस्त होनेके अष्टि कहिये १६ दिनके अनन्तर पूर्वमें उदय होता है और उदय होनेसे आज्याश (अग्नि) कहिये ३ दिनके अनन्तर मार्गी होता है और मार्गी होनेसे ३२ दिनके अनन्तर पूर्वमें अस्त होता है इसी प्रकार वारंवार होता रहता है ॥

शुक्रका पूर्व दिशामें अस्त होनेसे २ महीनेके अनन्तर पश्चिम-दिशामें उदय होता है और पश्चिम दिशामें उदय होनेसे २४० दिन कहिये ८ महीनेके अनन्तर वक्री होता है और वक्री होनेसे पौन महीना कहिये २२ दिनके अनन्तर पश्चिमदिशामें अस्त होता है और अस्त होनेसे ८ दिन अर्थात् $\frac{1}{4}$ मासके अनन्तर पूर्वदिशामें उदय होता है और उदय होनेसे २२ दि० अर्थात् $\frac{3}{4}$ महीनेके अनन्तर मार्गी होता हैं और मार्गी होनेके २४० दिन कहिये ८ महीनेके अनन्तर पूर्व दिशामें अस्त होता है इसी प्रकार वारम्वार होता है ॥ १९ ॥

अब मङ्गल, गुरु और शनि इन तीनों ग्रहोंके वक्रीभवन-उदय-अस्त-और मार्गगतिके दिनोंका क्रम लिखते हैं

भौमस्यास्तादुदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं क्रमात्स्यान्मासैर्वेदैरथ दशमितैर्लोचनाभ्यां च दिग्भिः ॥ जीवस्योर्व्यां सचरणयुगैः सागरैः सांघ्रिवेदैः साङ्घ्र्येकेन त्रियुगदहनैरर्धयुक्तैस्तथाऽऽर्कैः ॥ २० ॥

भौमस्य, अस्तात्, वेदैः, अथ, दशमितैः, लोचनाभ्याम्, दिग्भिः, च, मासैः, क्रमात्, उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यम्, स्यात् । जीवस्य, (अस्तात्), ऊर्व्यां, सचरणयुगैः, सांघ्रिवेदैः, (मासैः, क्रमात्, उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यम्, स्यात्)। तथा, आर्कैः (अस्तात्), सांघ्र्येकेन, अर्द्धयुक्तैः, त्रियुगदहनैः, (मासैः, क्रमात्, उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यम्, स्यात्) ॥ २० ॥

मङ्गलके पश्चिम दिशामें अस्त होनेसे ४ मास अर्थात् १२० दिनके अनन्तर पूर्वमें उदय होता है और उदय होनेसे दशमास अर्थात् ३०० दिनके अनन्तर वक्री होता है और वक्री होनेसे लोचन कहिये दो मास अर्थात् ६० दिनके अनन्तर मार्गी होता है और मार्गी होनेसे दिक् कहिये दश मास अर्थात् ३०० दिनके अनन्तर पश्चिममें अस्त होता है इसी प्रकार वारंवार होता रहता है ॥

गुरुके पश्चिमदिशामें अस्त होनेसे १ मास अर्थात ३० दिनके अनन्तर पूर्वमें उदय होता है और पूर्वमें उदय होनेसे सचरणयुग कहिये ४$\frac{1}{4}$ मास अर्थात १२८ दिनके अनन्तर वक्री होता है और वक्री होनेसे सागर कहिये ४ मास अर्थात् १२० दिनके अनन्तर मार्गी होनेसे सांघ्रि वेद कहिये ४$\frac{1}{4}$ मास अर्थात् १२८ दिनके अनन्तर पश्चिममें अंस्त होता है ॥

शनिका पश्चिममें अस्त होनेसे सांघ्येक कहिये १$\frac{1}{4}$ मास अर्थात् ३८ दिनके अनन्तर पूर्व दिशामें उदय होता है, उदय होनेसे सार्द्धत्रि कहिये ३$\frac{1}{2}$ मास अर्थात् १०५ दिनमें वक्री होता है, वक्री होनेसे सार्द्धयुग कहिये ४$\frac{1}{2}$ मास अर्थात् १३५ दिनके अनन्तर मार्गी होता है और मार्गी होनेसे सार्द्धदहन कहिये ३$\frac{1}{2}$ मास अर्थात १०५ दिनके अनन्तर पश्चिम दिशामें अस्त होता है, इसी प्रकार वारम्वार करना चाहिये ॥ २० ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे
पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्यगौडवंशावतंसश्रीयुत-
भोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा विरचितया
विस्तृतोदाहरणसनाथीकृतयाऽन्वयसमन्वितया
भाषाव्याख्यया सहितः पंचतारास्पष्टीक-
रणाधिकारः समाप्तिमितः ॥ ३ ॥

अथ त्रिप्रश्नाधिकारो व्याख्यायते ।

अर्थात्

इस अध्यायमें दिशा देश कालके ज्ञानरूप तीन
प्रश्न कहे जायँगे ।

दिशा-देश और कालसे इष्ट समयादि ज्ञात होते हैं सोई कहते हैं-तिसमें भी प्रथम लग्नोपयोगी होनेके कारण लग्नोदय और इष्टस्थलमें राशिका उदय निरूपण करते हैं-

**लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोऽङ्कदस्रा-
स्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः ॥ हीनान्वि-
ताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैर्मेषादितो घटत
उत्क्रमतस्त्विमे स्युः ॥ १ ॥**

गजभानि, गोऽङ्कदस्राः, त्रिपक्षदहनाः, एते, क्रमस्थाः, (मेषादि-त्रयाणाम्,) विघटिकाः, लंकोदयाः, स्युः (एते, एव, उत्क्रमस्थाः, कर्कादित्रयाणाम्, लंकोदयाः, स्युः, इमे, क्रमगोत्क्रमस्थाः, क्रमगोत्क्रमस्थैः, चरदलैः, हीनान्विताः, (क्रमतः), मेषादितः उत्क्रमतः, घटतः (लंकोदयाः, स्युः) ॥ १ ॥

लङ्कामें मेषराशिका उदय गजभा कहिये २७८ पलपर होता है, वृष राशिका उदय गोङ्कदस्र कहिये २९९ पलपर होता है, मिथुन राशिका उदय त्रिपक्षदहन कहिये ३२३ पलपर होता है (इनही

तीनों अंकोंको उलटे रखनेसे कर्क आदि तीनों राशियोंके लंकोदय पल होते है) अर्थात् लंकामें कर्क राशिका उदय ३२३ पल और सिंह राशिका उदय २९९ पल, कन्याराशिका उदय २७८ पल होता है और लङ्कामें तुलासे लेकर मीनपर्यन्त राशियोंके पल, कन्याराशिसे लेकर उलटे मेष राशिपर्यन्त जो उदयके पल कहे हैं सो होते हैं, अर्थात्–लङ्कामें तुलाराशिका उदय २७८ पलात्मक होता है, वृश्चिक राशिका उदय २९९ पलात्मक होता है, धन राशिका उदय ३२३ पलात्मक होता है, मकर राशिका उदय ३२३ पलात्मक होता है, कुम्भ राशिका उदय २९९ पलात्मक होता है और मीन राशिका उदय २७८ पलात्मक होता है ॥

जिस ग्रामकी राशिका उदयकाल लाना हो उस ग्रामके चरखण्ड लेकर उनको क्रमसे मेष-वृष और मिथुन इनके पलात्मक लंकोदयमें घटावे और उलटे क्रमसे कर्क, सिंह तथा कन्या इनके पलात्मक लंकोदयोंमें युक्त करदेय तब स्वदेशीय मेष राशिसे कन्या राशि पर्यन्त उदयकाल क्रमसे होता है और उलटे क्रमसे तुला राशिसे लेकर मीन राशिपर्यन्तका उदयकाल होता है ॥१॥

उदाहरण—अब काशीकी राशियोंका उदयकाल लानेके विषयमें उदाहरण लिखते हैं—मेष राशिके पलात्मक उदय २७८ में काशीके प्रथम चरखण्ड ५७ को घटाया तब २२१ यह पलात्मक काशीके विषै मेष राशिका उदय हुआ । वृषके पलात्मक उदय २९९ में काशीका द्वितीय चरखण्ड ४६ घटाया तब २५२ यह पलात्मक वृषका उदय हुआ, मिथुनके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ घटाया तब ३०४ यह मिथुनका पलात्मक उदय हुआ, कर्कराशिके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ को युक्त करा तब ३४२ यह कर्क-राशिका पलात्मक उदय हुआ, सिंहराशिके पलात्मक उदय

२९९ में द्वितीय चरखण्ड ४६ को युक्त करा तब ३४५ यह सिंहका पलात्मक उदय हुआ, कन्याराशिके पलात्मक उदय २७८ में प्रथम चरखण्ड ५७ को युक्त करा तब ३३५ यह कन्याराशिका पलात्मक उदय हुआ, तुला राशिके पलात्मक उदय २७८ में प्रथम चरखण्ड ५७ को युक्त करा तब ३३५ यह तुलाराशिका पलात्मक उदय हुआ । वृश्चिकराशिके पलात्मक उदय २९९ में द्वितीय चरखण्ड ५६ को युक्त करा तब ३४५ यह वृश्चिकराशिका पलात्मक उदय हुआ, धनराशिके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ को युक्त करा तब ३४२ यह धन-राशिका पलात्मक उदय हुआ, मकरराशिके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ को घटाया तब ३०४ यह मकर-राशिका पलात्मक उदय हुआ, कुम्भराशिके पलात्मक उदय २९९ में द्वितीय चरखण्ड ४६ को घटाया तब २५३ यह कुम्भ-राशिका पलात्मक उदय हुआ और मीन राशिके पलात्मक उदय २५८ में प्रथम चरखण्ड ५७ को घटाया तब २२१ यह मीनराशिका पलात्मक उदय हुआ ॥

अब लग्नसाधनकी रीति लिखते हैं–

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः॥ एवं यातांशैर्भवे-द्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीप-लेभ्यः ॥ २ ॥ तदनु जहीहि गृहोदयाँश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ॥ सहित-

मजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोऽयनांश-
हीनम् ॥ ३ ॥

(यस्मिन्, काले, लग्नम्, साध्यते) तत्कालार्कः, सायनः, (कार्य्यः) भोग्यांशाः, स्वोदयघ्नाः, खत्र्युद्धृताः, भोग्यकालः, (स्यात्) एवम्, यातांशैः, यातकालः, भवेत् । भोग्यः, अभीष्टनाडी, पलेभ्यः, शोध्यः, तदनु, (तस्मात्), गृहोदयात्, च, जहीहि, शेषम्, गगनगुणघ्नम्, अशुद्धहृत् (फलम्), लवाद्यम्, (स्यात्, तत्) अजादिगृहैः अशुद्धपूर्वैः, सहितम्, अदः, अयनांशहीनम्, विलग्नम् भवति ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥

जिस समय लग्न साधनी हो उस समयका सूर्य्य स्पष्ट करके उसमें अयनांश युक्त करदेय तब जो अङ्क हों उनमेंकी राशि दूर करके जो अंशादि अङ्क रहैं वह भुक्तराशि होना है और उस भुक्तराशिको ३० तीस अंशमें घटावे तब जो शेष रहे वह अंशादि भोग्यराशि होता है, तदनन्तर जो राशि दूर करदी थी उसमें एक मिलाकर तत्परिमित राशिके उदयसे भुक्त और भोग्यको गुणा करके तीसका भाग देय तब क्रमसे भुक्त काल और भोग्यकालके पल होते हैं तदनन्तर अभीष्ट घडियों के पल करके उसमें भोग्यकालके पल घटावेजो शेषरहे उसमें जिस उदयसेगुणा करा था उससे आगेके जितने पलात्मक उदय घट सकें उतने घटावे पीछेसे जो पलादिक शेष रहें उनको तीससे गुणा करे तब जो गुणन फल हो उसमें जो उदय घट नहीं सका हो उसका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें मेषराशिसे लेकर

जितनी राशिका उदय घटा हो उतनी राशि युक्त करे तब जो अङ्क आवें उनमें अयनांश घटावे तब जो शेष रहे वह अभीष्ट कालकी राश्यादि लग्न होती है ॥ २ ॥ ३ ॥

उदाहरण-शके १५२४ वैशाख शुक्ल १५ सूर्योदयसे गतघटी अर्थात् इष्टघटी हुई १० घ० ३० पल इस समय की लग्न साधनी है इस कारण सूर्योदय से इष्टघटी हुई १० घ० ३० प० मध्यम सूर्य १ । ४ । १३ । ४२ गति ५९ । ८ यहां आगे कही हुई " गतगम्यदिनाहतद्विभुक्तेरित्यादि " रीति से चालन हुआ १० क. २० वि. इसको मध्यम रवि १।४। १३ । ४२ में युक्त करा तब १ । ४ । २४ । २ यह तात्कालिक मध्यम रवि हुआ इसको मन्दोच्च २। १८ । ० । ० में घटाया तब १ रा. १३ अं. ३५ क. ५८ वि. यह मन्दकेन्द्र हुआ और १ अं. ३० क. ११ वि. यह मन्दफल धन हुआ इसको तात्कालिक मध्यम सूर्य्य १ रा. ४ अं. २४ क. २ वि. में युक्त करा तब १ रा. ५. अं. ५४ क. १३ वि. यह मन्द फलसंस्कृत रवि हुआ इसमें चरऋण ९३ वि. को घटाया तब १ रा. ५ अं. ५२ क. ४० वि. यह तात्कालिक स्पष्ट रवि हुआ इस तात्कालिक सूर्य्य १ रा. ५ अं. ५२ क. ४० वि. में अयनांश १८।१० को युक्त करा तब १ रा. २४ अं २ क. ४० वि. यह सायन रवि हुआ, इसकी राशिको दूर करके २४ अं. २ क. ४० वि० यह वृषभ राशिका भुक्त हुआ इस भुक्तको ३० राशिमें घटाया तब शेष ५ अं. ५७ क. २० वि. यह भोग्य हुआ, यहां एकराशि दूर करी थी इस कारण एकसे आगेकी दूसरी राशि वृषभके उदय ५५३ से भोग्यांश ५ अं. ५७ क. २ वि को गुणा करा तब १५०६ अं. ४५ क. २० वि. हुए इनमें

३० का भाग दिया तब ५० । १३ । ३० यह पलात्मक भोग्य काल हुआ--इस प्रकार भुक्त अंशादिके द्वारा पलात्मक भुक्तकाल सिद्ध होता है । भोग्यकाल ५० । १३ । ३० को इष्टघटी १० प. ३० अर्थात् ६३० पलमें घटाया तब शेष रहा ५७९ । ४६ । ३० यहां ५७९ में मिथुनोदय ३०४ को घटाया तब २७६ शेष रहे इसमें कर्कोदय ३४२ घट नहीं सकते इस कारण शेष रहा २७५ पल ४६ विपल ३० प्रतिविपल इसको ३० से गुणा करा तब ८२७३ पल १५ विपल० प्रतिविपल हुए इनमें जो कर्कराशिका उदय ३४२ पहिले नहीं घट सका था इसका भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई २४ अं. ११ क. २१ वि. इसमें मेष राशिसे लेकर जो राशि शुद्ध नहीं हुई थी अर्थात घट नहीं सकी थी तहां पर्यन्तकी राशि ३ युक्त करी तब ३ रा. २४ अं. ११ क. २१ वि. हुआ इसमें अयनांश १८ । १० को घटाया तब ३ रा. ६ अं. १ क. २१ वि. यह लग्न हुई ॥

अब भोग्यकालसे इष्टकाल कम होय तो लग्नसाधनेकी रीति लिखते हैं--

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात्खरामाहतात्
स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः ॥ ऽऽ ॥

भोग्यतः, अल्पेष्टकालात्, खरामाहतात्, स्वोदयाप्तांशयुक्, भास्करः, तनुः, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

पूर्वोक्त रीतिसे लायाहुआ राशिका भोग्यकाल यदि इष्टकालसे अधिक होय तो पलात्मक इष्टकालको ३० से गुणा करके उसमें सायन रवि जिस राशिका होय उस राशिके उदयका भाग देकर जो अंशादि मिले उसकोइष्ट रविमें संयुक्त करदेय तब इष्टकालीन लग्न होती है ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण– शके १५३४ वैशाख शुक्ल १५ सूर्य्योदयाद्गत घटी० पल ४० उस समय लग्न साधते हैं, यहां सूर्य्योदयसे इष्टघटी० घ. ४० प. "गतगम्येत्यादि" रीतिसे चालित सूर्य्य हुआ १।५। ४३। १५ पूर्वोक्तरीतिसे इस चालित स्पष्ट सूर्यमें अयनांश १८।१० को युक्त करा तब १ रा. २३ अं. ५३ क. १५ वि. यह सायनरवि हुआ इससे पलात्मक भोग्य काल आया ५१ यह इष्ट कालसे अधिक है, इस कारण पलात्मक न्यून इष्ट काल०। ४० को ३० से गुणा करा तब १२०० यहां सायन सूर्य्य वृषभ राशिका है इस कारण वृषभ राशिके पलात्मक २५२ का १२०० में भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ४ अं. ० ४४ क. ३५ वि. इसको स्पष्ट रवि १ रा. ५ अं. ४३ क. १५ वि. में युक्त करा तब १ रा. १० अं. २७ क. ५० वि. यह तत्कालीन लग्न हुई ॥

अब लग्नसे इष्टकाल लानेकी रीति लिखते हैं–

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो
युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥४॥

अर्कभोग्यः, तनोः, भुक्तकालान्वितः, (ततः), युक्तमध्योदयः, अभीष्टकालः, भवेत् ॥ ४ ॥

लग्नमें अयनांश मिलाकर जो अंकयोग होय, उससे भुक्तकाल लावे और स्पष्ट सायन रविसे भोग्यकाल लावे तदनन्तर सायन लग्न और सायन रवि इन दोनोंके मध्यमें जिस राशिका उदय हो उसके अंश ग्रहण करके उसमें भुक्तकाल और भोग्यकाल इनके अंकोंको युक्त करे तब पलात्मक अभीष्ट काल होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण–लग्न ३ रा. ६ अं. २ क. ३७ वि. इसमें अयनांश १८ अं. १० क. को युक्त करा तब ३ रा. २४ अं. १२ क. ३७ वि. हुआ इससे भुक्तकाल साधा तो २४।१२।३७ हुए इसको सायन लग्नकी

राशि कर्कके उदय ३४२ से गुणा करा तब ८२७९।५४।५४ हुए इसमें ३० का भाग दिया तब २७६ यह लग्नका भुक्तकाल हुआ इस लग्नके भुक्तकाल २७६में रविका भोग्य काल ५० को युक्त करा तब ३२६ हुए इनमें सायन सूर्य्य और सायन लग्नके मध्यकी मिथुन राशिके उदय ३०४ को युक्त करा तब ६३० पल हुए इससें ६० का भाग दिया तब १० घ. ३० प. यह अभीष्ट काल हुआ ॥

अब सायन लग्न और सायन सूर्य्य यह दोनों एक राशिपर हों तब लग्नसे इष्टकाल साधन और रात्रिलग्न साधनेकी रीति लिखते हैं-

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशांतरहत उदयः स्यात्खाग्निहृत्त्विष्टकालः ॥ इनत उदय ऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रान्निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥ ५ ॥

यदि, तनुदिननाथौ. एकराशौ, (तदा), तदंशान्तरहतः, उदयः, खाग्निहृत् , इष्टकालः, स्यात् , चेत् , उदयः, इनतः, ऊनः, (तदा) सः, द्युरात्रात् , शोध्यः. निशि, तु, सरसभार्कात् . इष्टकाले, तनूः स्यात् ॥ ५ ॥

सायन लग्न और सायन सूर्य्य यह दोनों एक राशिपर स्थित हों तो उनके अंशोंके अन्तरको रविके उदयसे गुणा करे और ३० का भाग देय तब पलात्मक लब्धि अभीष्ट काल होता है । यदि सूर्य्यकी अपेक्षा सायनलग्न कम होय तो इस ऊपर की रीतिसे साधेहुए कालको ६० घटीमें घटावे जो शेष रहे वह अभीष्ट काल होता है ।

स्पष्ट सूर्य्यमें छः राशि मिलाकर उससे लग्न लाथे परंतु जो इष्टकाल कहा है उसमें दिनमान घटा देय जो शेष रहे उसको इष्ट काल माने ॥ ५ ॥

उदाहरण—सायन लग्न १ रा. २८ अं. ३७ क. ५० वि और सायन सूर्य्य १ रा. २३ अं. ५ क. १५ वि. इन दोनोंकी राशि छोड अशोंका अन्तर करा तब ४ अं. ४४ क. ३५ वि. हुआ इसको वृषभ राशिके उदय २५२ से गुणा करा तब १२०० अं. ० क. ३५ वि. हुए इसमें ३० का भाग दिया तब पलात्मक लब्धी हुई ४० पल इसमें ६० का भाग दिया तब घटी आदि इष्टकाल हुआ ० घ. ४० प. ॥

द्वितीय २ उदाहरण—सायन सूर्य्य १ रा. २४ अं. ४९ क. ७ वि. और सायन लग्न १ रा. १७ अं. ४७ क. ११ वि. यहां एक राशिपर ही लग्न रविसे कम है इस कारण इन दोनोंका जो अन्तर हुआ ७ अं. १ क. ५६ वि. इसको वृषभ राशिका उदय २५३ से गुणा करके तीस ३० का भाग दिया तब ५९ पलात्मक लब्धी हुई इसको ६० घटीमें घटाया तब ५९ घ. १ पल. यह अभीष्ट काल हुआ ॥

तृतीय ३ उदाहरण—शके १५३४ वैशाख शुक्ल १५ के दिन सूर्योदयसे ५९ गत होनेपर लग्न साधनी है तहां इष्ट घटी ५९ मध्यम सूर्य हुआ १ रा. ४ अं. १३ क. ४२ वि. गति हुई ५८ । ८ यहां ५९ घटीसे चालित सूर्य्य हुआ १ रा. ५ अं. ११ क. ५० वि. मन्द केन्द्र हुआ १ रा. १२ अं. ४८ कला १० वि. मन्दफल १ अं. २८ क. ५२ वि. यह धन है इस कारण इस मन्दफल १ । २८ । ५२ को चालित स्पष्ट सूर्य १ । ५ । ११ । ५० में युक्त करा तब १ रा० ६ अं० ४० क० ४२ वि० यह हुआ इसमें चर ऋण ९५ विकलाको घटाया तब १ रा, ६ अं. ३९ क. ७ वि. यह तात्का-

लिक स्पष्ट सूर्य्य हुआ इसमें अयनांश १८ अं. १० क. को युक्त करा तब १ रा. २४ अं. ४९ क. ७ वि. हुआ इसमें ६ रा. युक्त करी तब ७ रा. २४ अं. ४९ क. ७ वि. हुआ, इसमें भोग्यकाल साधा तब भोग्य काल हुआ ५९ पल तदनन्तर इष्ट घटी. ५९ को दिनमान ३३ घटी १० पलमें घटाया तब २५ घ. ५० प. यह सूर्य्यास्तसे घटिकादि इष्टकाल हुआ इस २५ घ. ५० प. के पल करके १५५० में पलात्मक भोग्यकाल ५८ को घटाया तब शेष बचे १४९१ पल इनमें धन=३४२ मकर=३०४ कुम्भ-२५३ मीन=२२१ मेष=२२१ इनके योग १३४१ को घटाया तब १५० शेष रहे इनको ३० से गुणा करा तब ४५०० हुए इनमें वृषराशिके उदय २५३ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई १७ अं. ४७ क. ११ वि. इसमें गतराशि (१) मेष युक्त करा तब १ रा. १७ अं. ४७ क. ११ वि. हुए इसमें अयनांश १८ अं. १० क. को घटाया तब २९ अं. ३७ क. ११ वि. यह लग्न हुई ॥

अब गोलसंज्ञा-अयनसंज्ञा-दिनार्धज्ञान -रात्र्यर्द्धज्ञान - तथा अयनांशज्ञान लिखते हैं-

गोलौ स्तः सौम्ययाम्यौ क्रियघटरसभे खेच-
रेऽथायने ते नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथ चरपल-
युतोनास्तु पञ्चेन्दुनाड्यः ॥ घस्रार्द्धं गोलयोः

---

१ यह श्लोक दूसरे रविचन्द्रस्पष्टीकरणाधिकारमें २२ मा लिखा है, उसका उदाहरण भी सविस्तर लिखा गया है परन्तु यहां त्रिप्रश्नाधिकारमें ही प्रासंगिक है-वहां केवल आनुषंगिक है सो जान लेना ॥

स्यात्तदयुतखगुणाः स्यान्निशार्द्धं त्वथाक्षच्छा-
येषुघ्न्यक्षभायाः कृतिदशमलवोनेयमाशा-
पलांशाः ॥ ६ ॥

खेचरे, क्रियघटरसभे, सौम्ययाम्यौ, गोलौ, स्तः । अथ, नक्रात्, कर्कात्, च, षडभे, अयने, स्तः, अथ, तु, पञ्चेन्दुनाड्यः, गोलयोः, चरपलयुतोनाः, घस्रार्द्धं, स्यात् । तदयुतखगुणाः, निशार्द्धं स्यात् । अथ, तु, अक्षच्छायेषुघ्नी, अक्षभायाः, कृतिदशमलवोना, इयम्, आशापलांशाः स्युः ॥ ६ ॥

जब सायन रवि मेषादि छः राशिमें होता है तब उसको उत्तरगोलीय कहते हैं और जब सायन रवि तुलादि छः राशिमें होता है तब उसको दक्षिणगोलीय कहते हैं, तिसी प्रकार जब सायन रवि कर्कादि छः राशिमें होता है तब उसको दक्षिणा-यन कहते हैं, और मकरादि छः राशिमें होता है तब उत्तरायण कहते हैं, पीछे लाये हुए चरको पलात्मक समझकर उनको यदि सायन रवि उत्तरगोलीय होय तो १५ घटिकामें युक्त कर देय और यदि, सायन रवि दक्षिणगोलीय होय तो १५ घटिकामें घटा देय और जो शेष रहे वह दिनार्द्ध होता है, इस दिनार्द्धको ३० घटीमें घटावे तब जो शेष रहे वह रात्र्यर्द्ध होता है, तद-नन्तर दिनार्द्ध और रात्र्यर्द्धको द्विगुणित करनेसे दिनमान और रात्रिमान होता है ॥ तदनन्तर अक्षच्छाया (पलभा) को ५ से गुणा करने पर जो अंशादि लब्धि होय उसमें पलभाके वर्गमें १० का भाग देकर जो अंशादि लब्धि मिले उनको घटावे तब शेष रहे वह दक्षिण दिशाके अक्षांश होते हैं ॥ ६ ॥

उदाहरण—चर ९३ है. सायनरवि उत्तरगोलीय है, इस कारण १५ घटीमें चर ९३ पल अर्थात् १ घटी ३३ पलको युक्त करा तब १६ घ. ३३ पल यह दिनार्द्ध हुआ इस दिनार्द्धको ३० घटीमें घटाया तब १३ घ. २७ पल यह रात्र्यर्द्ध हुआ दिनार्द्ध १६ घ. ३३ पलको द्विगुणित करा तब ३३ घ. ६ पल दिनमान हुआ और रात्र्यर्द्ध १३ घ. २७ प. को द्विगुणित करा तब २६ घ. ५४ प. रात्रिमान हुआ ॥ पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ५ से गुणा करा तब २८ अं. ४५ क. हुई, तदनन्तर पलभा ५ अंगुल ४५ प्रति अं. का वर्ग करा तब ३३ अंगुल २ प्रति अं. हुए इनमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ अं. १८ क. १८वि. इसको पंचगुणित पलभा २८ अं. ४५ क. में घटाया तब ४५ अं. २६ क. ४२ वि. यह काशीका दक्षिण अक्षांश हुआ ॥

अब नतकाल और उन्नतकाल साधनेकी रीति लिखते हैं—

यातः शेषः प्राक्परत्रोन्नतं स्यात्
कालस्तेनोनं द्युखण्डं नतं स्यात् ॥ ८८ ॥

प्राक्, यातः, उन्नतम्, स्यात्, परत्र, शेषः, कालः, (उन्नतम्, स्यात्), तेन ऊनम्, द्युखण्डम्, नतम्, स्यात् ॥ ८८ ॥

सूर्योदयकालसे लेकर मध्याह्नकालपर्यन्त जो काल है उसको पूर्व कपाल कहते हैं, और मध्याह्नसे लेकर सूर्यास्तपर्यन्त जो काल है उसको पश्चिम कपाल कहते हैं, सूर्योदयसे लेकर पूर्व कपालका जो गतकाल हो वह पूर्वोन्नतकाल कहलाता है और पश्चिमकपालका जो सूर्यास्तपर्यन्त शेषकाल हो वह पश्चिमोन्नतकाल कहलाता है, उन्नतकालको दिनार्द्धमें घटा देनेसे जो शेष रहे उसको नतकाल कहते हैं ॥ ८८ ॥

सूर्योदयसे गतकाल १० घ. ३० प. यह पूर्वोन्नत काल है, इस उन्नतकालको दिनार्द्ध १६ घ. ३३ प. में घटाया तब शेष रहा ६ घ. ३ प. यह पूर्वनतकाल हुआ ॥

अब अक्षकर्ण साधनेकी रीति लिखते हैं–

अक्षच्छायावगतत्त्वांशयुक्तो
मार्तण्डः स्यादङ्गुलाद्योऽक्षकर्णः ॥ ७ ॥

अक्षच्छायावर्गतत्त्वांशयुक्तः, मार्त्तण्डः, अङ्गुलाद्यः, अक्षकर्णः, स्यात् ॥ ७ ॥

पलभाका वर्ग करके उसमें २५ का भाग देय जो लब्धि होय उसको मार्त्तण्ड कहिये १२ अंगुलमें युक्त करदेय तब अंगुलादि अक्षकर्ण होता है ॥

उदाहरण—पलभा ५ अं. ४५ प्रति अं. का वर्ग करा तब ३३ अं. ३ प्रति अं. हुए इसमें २५ का भाग दिया तब १ अं. १९ प्रति अं. लब्धि हुए. तदनन्तर १२ अंगुलमें लब्धि १ अंगु. १९ प्रति अंगुलको युक्त करा तब १३ अंगुल १९ प्रति अंगुल यह अक्षकर्ण हुआ ॥

अब हार साधनेकी रीति लिखते हैं—

वेदेशाः शरहृच्चराढ्यरहिताः सौम्यानुद-
ग्गोलयोर्हारोऽथो घटिकार्द्धयुङ्नतकृतेर्द्व्यंशः
समाख्यः स्मृतः ॥ चेत्सार्द्धत्रिकुतो नतं यद-
धिकं वेदाहतं तद्वियुक्स्पष्टोऽसौ तदयुग्घर-
स्त्वभिमतः स्यादक्षकर्णोद्धृतः ॥ ८ ॥

वेदेशा:, सौम्यानुदग्गोलयोः, शरहृच्चराद्यरहिताः, हारः, (स्यात्), अथो, घटिकार्द्धयुक्, नतकृतेः द्व्यंशः, समाख्यः, स्मृतः। चेत्, नतम्, यत्, सार्द्धत्रिकुतः, अधिकम्, (स्यात्, तदा, सार्द्ध-त्रयोदशहीनम्, कृत्वा) वेदाहतम, तद्वियुक्, असौ, स्फुटः, (स्यात्) । तदयुक्, हरः, अक्षकर्णोद्धृतः, अभिमतः, स्यात् ॥८॥

चरमें ५ का भाग देकर जो लब्धि हो वह यदि उत्तरगोलमें होय तो ११४ में युक्त करदेय और यदि पश्चिमगोलमें होय तो ११४ में घटा देय तब जो अङ्क मिले वह मध्य हार होता है। और नतकालमें ३० पल युक्त करदेय तब जो अङ्क हों उनका वर्ग करके दोका भाग देनेसे जो लब्धि हो वह समाख्य होती है, यदि नतकाल १३ घ. ३० प. से अधिक होय तो पूव रीतिके अनुसार समाख्य लाकर तदनन्तर नतकालमें १३ घ. ३० प. घटावे जो शेष रहे उसको चारसे गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसको पहले लाये हुए समाख्यमें युक्त करदेय और यदि नतकाल १३ घ. ३० प. से न्यून हो तो समाख्य यथावत् रहने देय और मध्यम हारमें समाख्यको घटाकर जो शेष रहे उसमें अक्षकर्णका भाग देय तब जो लब्धि हो वह अभीष्ट हार होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण—चर ९३ में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १८। ३६ यह सायन सूर्य्यके उत्तर गोलमें है इस कारण इस लब्धि १८। ३६ को ११४ में युक्त करा तब १३२। ३६ यह हार हुआ। नतकाल ६ घ. २ प. में घटिकार्ध ३० पल युक्त करे तब ६ घ. ३२ प. हुए इसका वर्ग करा तब ४२ । ५४ हुए इनमें २ का भाग दिया तब लब्धि हुई २१। २७ यह समाख्य हुआ, अब मध्यम हार १३२। ३६ में समाख्य २१।२७ घटाया

तब १११ । ९ रहे इसमें अक्षकर्ण १२ । १९ का भाग दिया तब लब्धि हुई ८ । २० यह अभीष्ट हार हुआ ॥

अब इष्टकर्ण और इष्ट छाया साधनेकी रीति लिखते हैं--

दिग्घ्नाक्षभाहृतचरं स्वगुणं द्विनिघ्नं स्वेष्वंशयुग्युगभवान्वितमत्र भाज्यः ॥ कर्णोऽङ्गुलादिक इहेष्टहराप्तभाज्यःकर्णार्कवर्गविवरात्पदमिष्टभा स्यात् ॥ ९ ॥

दिग्घ्नाक्षमाहृतचरम्, स्वगुणम्, (तत्), द्विनिघ्नम्, (ततः), स्वेष्वंशयुक्, (ततः), युगभवान्वितम्, अत्र, भाज्यः, (स्यात्) । इष्टहराप्तभाज्यः, इह अङ्गुलादिकः, कर्णः, (स्यात्), कर्णार्कवर्गविवरात्, पदम्, इष्टभा स्यात् ॥ ९ ॥

पलभाको १० से गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसका चर में भाग देय तब जो लब्धि हो उसका वर्ग करे और उस वर्गकी दोसे गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें पाचका भाग देय तब जो लब्धि हो उसको उस ही गुणनफलमें युक्त करके जो अङ्क योग हो उसमें ११४ युक्त करदेय तव जो अङ्कयोग हो वह भाज्य कहलाता है । उस भाज्यमें अभीष्ट हारका भाग देय तब जो लब्धि हो वह अंगुलादि इष्टकर्ण होता है इष्टकर्णका वर्ग करके उसमें १२ का वर्ग अर्थात् १४४ घटावे जो शेष रहे उसका वर्गमूल निकाले वह वर्गमूल अंगुलादि इष्टच्छाया होती है ॥ ९ ॥

उदाहरण—पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको १० से गुणा करा तब ५७ अंगुल ३० प्रति अंगुल हुए इसका चर ९२ में भाग दिया तब लब्धि हुई १ । ३७ इसका वर्ग करा तब २ । २६ हुए इनको

२ से गुणा करा तब ५ । १२ हुए इनमें इसका ही पंचमांश १ । २ युक्त करा तब ६ । १४ हुए इसमें ११४ युक्त करे तब १२० । १४ यह भाज्य हुआ इस भाज्यमें अभीष्ट हार ८२० का भाग दिया तब लब्धि हुई १४ । २५ यह अंगुलादि इष्टकर्ण हुआ । इस इष्टकर्ण १४ । २५ का वर्ग करा तब २०७ । ५० हुए और अर्क कहिये १२ का वर्ग करा तब १४४ हुए, इन दोनों (२०७ । ५०)-१४४ का अन्तर करा तब ६३ । ५० हुए, इसका वर्गमूल लिया तब ६ अंगुल ४६ प्रतिअंगुल ५८ तत्प्रतिअंगुल यह इष्टच्छाया हुई ॥ ९ ॥

अब इष्टच्छायासे कर्ण और नतकाल साधनेकी रीति लिखते हैं-

कर्णः स्यात्पदमकभाकृतियुतेस्तद्भक्तभाज्यो
हरोऽभीष्टस्तत्पलकर्णघातरहितो मध्यो हरो
द्व्याहतः ॥ चेद्वेदाङ्कधराधिकः पृथगतो
वेदाङ्कभूताद्गुणाप्ताढ्यस्तस्य पदं घटीमुखनतं
स्याद‌र्द्धनाडीवियुक् ॥ १० ॥

अर्कभाकृतियुतेः, पदम्, कर्णः, स्यात् । तद्भक्तभाज्यः, अभीष्टः, हरः, स्यात् । तत्पलकर्णघातरहितः, द्व्याहतः, मध्यः, हरः, चेत्, वेदांकधराधिकः, (स्यात्, तदा), पृथक् (स्थाप्यः), अतः, वेदांकभूतात्, गुणाप्ताढ्यः (कार्य्यः), तस्य पदम्, अर्द्धनाडी-वियुक्, घटीमुखनतम्, स्यात् ॥ १० ॥

बारहके वर्ग और इष्टच्छायाके वर्गका योग करके उसका वर्गमूल निकाले तब वह वर्गमूल इष्टकर्ण कहलाता है तिस इष्टकर्णका भाज्यमें भाग देय तब जो लब्धि मिले वह अभीष्ट हार

होता है । तदनन्तर तिस अभीष्ट हारको अक्षकर्णसे गुणा करे और जो गुणान फल हो उसको मध्यम हारमें घटावे जो शेष रहे उसको दोसे गुणा करे तब जो गुणान फल हो वह यदि १९४ से अधिक होय तो ऐसा करे कि, उस गुणन फलको दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें उस गुणन फलमें १९४ घटा देय जो शेष रहे उसमें तीनका भाग देय जो लब्धि हो उसको दूसरे स्थानमें लिखे हुए गुणन फलमें युक्त कर देय तब जो अङ्कयोग हो उसका वर्गमूल निकालकर उसमें ३० पल घटा देय तब जो शेष रहे उसको नतकाल जाने और यदि गुणान फल १९४ से अधिक न हो तो उस गुणन फलका ही वर्गमूल निकालकर उसमें तीस पल घटावे तब जो शेष रहे उसको नतकाल जाने ॥ १० ॥

उदाहरण—बारह् १२ का वर्ग हुआ १४४ और इष्टच्छाया ७ । ५९ । २२ का वर्ग हुआ ६३ । ५० इन दोनोंका योग हुआ २०७ । ५० इसका वर्गमूल मिला १४ । २५ यह इष्ट कर्ण हुआ, इसका भाज्य १२० । १४ में भाग दिया तब लब्धि हुई ८ । २० । २३ यह अभीष्ट हर हुआ इस हरको अक्षकर्ण १३ । १९ से गुणा करा तब गुणानफल हुआ १११ । ३ इस गुणनफलको मध्यहर १३२।३६ में घटाया तब शेष रहे २१ । ३३ इसको २ से गुणा करा तब ४३ । ६ हुए इसका वर्गमूल + लिया तब ६।२२ मिला इसमें आधीं घड़ी अर्थात् ३० पल घटाये तब ६ घ. ३ प. यह नतकाल हुआ है ॥ १० ॥

+ वर्गमूल निकालनेकी रीति हमने "लीलावती" की भाषाटीकामें स्पष्ट रीतिसे लिखा है जो बंबईमें "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानेमें छप गयी है ।

सार्द्धत्रयोदशाधिकनतका- उदाहरण.

कल्पित नत १५। १० में घटिकार्द्ध ३० पलको युक्त करा तब १५ घ. ४० प. हुए इसका वर्ग करा तब २४५। २६ हुआ इसमें २ का भाग दिया तब १२२। ४३ यह समाख्य हुआ॥ तदनन्तर नत १५। १० सार्धत्रयोदशसे अधिक है इस कारण नतमें १३।३० घटाये तब शेष रहा १। ४० इसको ४ से गुणा करा तब ६। ४० यह गुणनफल हुआ इस गुणनफलको समाख्य १२२। ४३ में घटाया तब शेष रहा ११६। ३ यह स्पष्ट समाख्य हुआ इस स्पष्ट समाख्य ११६।३ को हार २३२। ३६ में घटाया तब १६। ३६ हुआ इसमें अक्षकर्ण १३। १९ भाग दिया तब लब्धि हुई १। १४ यह अभीष्ट हार हुआ इस अभीष्ट हार १। १४ का भाज्य १२० । १४ में भाग दिया तब लब्धि हुई ९७। २९ यह इष्ट कर्ण हुआ इसका वर्ग करा तब ९५०३० हुआ और बारहका वर्ग १४४ हुआ इन दोनों वर्गोंका अन्तर हुआ ९३५९० इसको ६० से सवर्णित करा तब ३३६९२४००० हुए इनका मूल लिया तब ९६। ४४ यह इष्ट छाया हुई। इसका वर्ग करा तब ९३५८। ५७ हुआ इसमें बारहके वर्ग १४४ को युक्त करा तब ९५०२। ५७ हुआ इसका मूल मिला ९७। २९ यह कर्ण हुआ इसका भाज्य १२०। १४ में भाग दिया तब लब्धि हुई १। १४ यह अभीष्ट हार हुआ इसको अक्षकर्ण १३। १९ से गुणा करा तब १६। २५ हुआ, इसको मध्य हर १२२। ३६ में घटाया तब ११६। ११ रहे इनको दो २ से गुणा करा तब २२३। २२ हुए यह १९४ से अधिक हैं इस कारण दो स्थानमें २३२। २२ ॥ २३२। २२ लिखा एक स्थानमें १९४ घटावे तब शेष रहे ३८। २२ इसमें ३ का भाग

दिया तब लब्धि हुई १२ । ४७ इसको दूसरे स्थानमें रक्खे हुए गुणन फल २३२ । २२ में युक्त करा तब २४५ । ९ हुए इसको मूल लिया तब १५ । ४० यह हुआ इस १५ । ४० में ३० पल घटाये १५ । १० रहे यह कल्पित नतकाल हुआ ॥ १० ॥

अब क्रान्ति साधनेकी रीति लिखते हैं-

चत्वारिंशदशीतिरद्रिकुभवः क्षेन्दवो भूधृती षट्खाक्षीणि जिनाश्विनोऽङ्गविकृती खाब्ध्यश्विनः सायनात् ॥ खेटाद्दोर्लवदिग्लवप्रमगतोंकोऽसौ तदूनागताच्छेषघ्नाद्दश लब्धियुग्दशहृतोंऽशाद्योऽपमः स्यात्स्वदिक् ॥ ११ ॥

सायनात्, खेटात्, दोर्लवदिग्लवप्रमगतः, अंकः, (स्यात्) । असौ, तदूनागतात्, शेषघ्नात्, दशलब्धियुक्, (ततः) दशहृतः, अंशाद्यः, स्वदिक्, अपमः, स्यात् । (अथ) चत्वारिंशत्, अशीतिः, अद्रिकुभवः, क्षेन्दवः, भूधृती, षट् खाक्षीणि, जिनाश्विनः, अङ्गविकृती, खाब्ध्यश्विनः, (एते, नव, अंकाः, स्युः) ॥ ११ ॥

सायन सूर्य्यके भुज करे और उन भुजोंके अंश करके उनमें १० का भाग देय जो लब्धि होय तत्परिमित नीचे लिखे हुए अङ्क ग्रहण करे और उस लब्धिमें एक मिलाकर जो अङ्क होय तत्परिमित नीचे लिखे हुए अङ्क फिर ग्रहण करे । तदनन्तर इस द्वितीयवार ग्रहण करे हुए अङ्कमें प्रथमवार ग्रहण करे हुए अङ्क घटा देय तब जो शेष रहे उससे पहली अंशादि बाकीको गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें दशका भाग देय तब जो

लब्धि हो उसको प्रथम ग्रहण करे हुए अङ्कमें युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग हो उसमें दशका भाग देय तब जो लब्धि मिले उसको अंशादिक्रान्ति जाने उसको सायन रवि उत्तर गोलमें होय तो उत्तर और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण जाने । (जो अङ्क लब्धिपरिमित ग्रहण करना कहे हैं उन अंकोंको लिखते हैं) ४० चालीस और ८० अस्सी-और अद्रि कहिये ७ कु कहिये १ भू कहिये १ अर्थात् ११७ एक सौ सत्तरह-और कु कहिये १ अक्ष कहिये ५ इन्दु कहिये १ अर्थात् एक सौ इक्यावन-और भू कहिये १ धृति कहिये १८ अर्थात् १८१ एकसौइक्यासी और षट् ६ ख कहिये ० अक्ष कहिये २ अर्थात् २०६ दोसौछः—और जिन कहिये २४ अश्विन कहिये२ अर्थात् २२४ दोसौचौवीस-और अङ्क कहिये ६ विकृति कहिये २३ अर्थात् २३६ दोसौछत्तीस-और ख० अब्धि ४ अश्विन् २ अर्थात् २४० दोसौ चालीस, यह नौ अङ्क हैं ॥११॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०

उदाहरण-स्पष्टरवि १ रा. ५ अं. ५२ क. ४१ वि. में अयनांश १८ अं. १० कलाको युक्त करा तब १ रा. २४ अं. २ क. ४१ वि. यह सायन रवि हुआ उसके भुज करके अंश करे तब ५४ अं. २ क. ४१ वि. हुए, इसमें दशका भाग दिया तब लब्धि हुई ५ शेष बचे ४ अं. २ क. ४१ वि. और लब्धि परिमित अङ्क मिला १८१ और एकाधिक लब्धि ६ परिमित अङ्क मिला २०६ इन दोनों अंकोंका अन्तर करा तब २५ हुआ इस अन्तरसे शेष ४ अं. २ क. ४१ वि. को गुणा करा तब १०१ अं. ७ क. ५ वि. हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १० अं. ६ क. ४२ वि. इस लब्धिमें प्रथम ग्रहण करे हुए अंक १८१ को युक्त करा तब १९१ अं० ६ क० ४२ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई अं. ६ क. ४० वि० १९ यह क्रान्ति हुई और यह सायनरवि उत्तर गोलमें है इस कारण उत्तर है ॥ ११ ॥

अब और प्रकारसे क्रान्ति साधनेकी रीति लिखते हैं—

स्युः खण्डानि खवार्द्धयोऽम्बरकृताः शैला-
ग्नयोऽब्ध्यग्नयस्त्रिंशत्तत्त्वधृतीनवारिनिधयस्तैः
सायनांशग्रहात् ॥ बाहंशाभ्रकुभागसंख्यक-
युतिः शेषैश्च घाताद्दशाप्त्याढ्या दिग्विहृता
लवादिरपमस्तद्दिक्स्वगोलाद्भवेत् ॥ १२ ॥

खवार्द्धयः, अम्बरकृताः, शैलाग्नयः, अब्ध्यग्नयः, त्रिंशत्, तत्त्वधृती, इनवारिनिधयः, (एतानि), खण्डानि, स्युः, तैः, सायनांशग्रहात्, बाहंशाभ्रकुभागसंख्यकयुतिः, च, शेषैः, घातात्, दशाप्त्याढ्या, (ततः दिग्विहृता, स्वगोलात्, तिद्दिक्, लवादिः, अपमः स्यात् ॥ १२ ॥

ख० वार्धयः ४ अर्थात् ४० चालीस, और अम्बर० कृत ४ अर्थात् ४० चालीस और शैल ७ अग्नि ३ अर्थात् ३७ सैंतीस और अब्धि ४ अग्नि ३ अर्थात् ३४ चौंतीस—और त्रिशत् ३० और तत्त्व अर्थात् २५ पचीस और धृति अर्थात् १८ अठारह और इन अर्थात् १२ बारह और वारिनिधि अर्थात् ४ चार यह नौ अङ्क हैं ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४

सायनरविके भुज करके अंश करे और उन अंशोंमें १० का भाग देय तब जो लब्धि मिले तत्परिमित ऊपर लिखे हुए अङ्क-

पर्य्यन्त पहले सपूर्ण अंकोंका योग ग्रहण करे और उस लब्धिमें एक युक्त करके तत्परिमित अङ्क ग्रहण करके उससे पहले शेषभूत अंशादिको गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें १० का भाग देय तब जो लब्धि हो उसमें उपरोक्त अङ्कयोग मिलावे तब जो इकट्ठा अङ्कयोग हो उसमें १० का भाग देनेसे जो लब्धि हो वह क्रांति होती है उसको सायन रवि उत्तर गोलके अन्तर्गत हो तो उत्तर और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण जाने ॥ १२ ॥

उदाहरण–स्पष्ट रवि १ रा. ५ अं ५२ क. ४१ वि. में अयनांश १८ अं. १० क. को युक्त करा तब १ रा. २४ अं २ क. ४१ वि. यह सायन रवि हुआ इसके भुज करके अंश करे तब ५४ अं. २ क. ४१ वि. हुए इनमें दश १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ५ शेष बचे ४ अं. २. ४१ वि. और लब्धि ५ परिमित ऊपर लिखे हुए अङ्कपर्य्यन्त पहले संपूर्ण अङ्कोंको ४०–४०–३७–३४–३० का योग १८१ हुआ, फिर एकाधिक लब्धि.६ परिमित अङ्क २५ से उपरोक्त अंशादि शेष ४ अं. २ क. ४१ वि. को गुणा करा तब १०१ अं. ७ क. ५ वि. हुए इनमें १० का भाग दिया तब १० अं. ६ क. ४२ वि. लब्धि हुई इनमें ऊपरके अङ्कयोग १८१ को युक्त करा तब १९१ अं. ६ क. ४२ वि. हुए इनमें १० का भाग दिया तब १९ अं. ६ क. ४० वि. यह क्रांति सायनरवि उत्तर गोलमें होनेके कारण उत्तर है ॥ १२ ॥

अब प्रकारान्तरसे स्थूलक्रांति साधनेकी रीति लिखते हैं–

षट्षडिषूदधिहक्कुभिरर्द्धैः खेटभुजांशदिनांशमितैक्यम् ॥ शेषहतैष्यदिनांशयुतं वांशाद्यपमः सुखसंव्यवहृत्यै ॥ १३ ॥

(वा, षट्षडिषूदधिद्वक्कुभिः अर्द्धैः, खेटभुजांशदिनांशमितैक्यम्, शेषहतैष्यदिनांशयुतम्, अंशाद्यपमः, सुखसंख्यवहृत्यै, (स्यात्) ॥१३॥

सायन स्पष्ट रविके भुज करके अंश करे, उन अंशोंमें १५ का भाग देय जो लब्धि मिले तत्परिमित नीचे लिखे हुए खण्डोंका योग करलेय, और लब्धिमें एक मिलाकर तत्परिमित अङ्क ग्रहण करके उससे पहली बाकीको गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसने १५ का भाग देकर जो लब्धि हो उसको उपरोक्त अङ्क-योग मिला देय तब अंशादि स्थूलक्रांति होती है, क्रांतिकी दिशा जाननेकी रीति पहले कह चुके हैं १२ ।।

१	२	३	४	५	६
६	६	५	४	२	१

उदाहरण-सायन स्पष्टरवि १ रा. २४ अं. २ क. ४१ वि. इसके भुज करके अंश करे तब ५४ अं. २ क. ४२ वि. हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ शेष रहा ९ अं. २ क. ४२ वि. लब्धि ३ परिमित तीन क्रांति ६-६-५का योग हुआ १७ और एकाधिक लब्धि ४ परिमित क्रांतिके अङ्क ४ से शेष ९ अं. २ क. ४१ वि. को गुणा करा तब ३६ अं. १० क. ४४ वि. हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब २ अं. २४ क. ४३ वि. लब्धि हुई इसको उपरोक्त अङ्कयोग १७ में युक्त करा तब १९ अं. २४ क. ४३ वि. यह क्रांति हुई यह सायन रवि उत्तर गोलमें है इस कारण उत्तर है ।। १२ ।।

अथ स्थूलक्रांतिसे भुजांश साधनेकी रीति लिखते हैं-

ततो दलानि शोधयेत्तिथिघ्नशेषमेष्यहृत् ॥
तिथिघ्नशुद्धसंख्यया युतं भवन्ति दोलवाः ॥१४॥

ततः, दलानि, शोधयेत्, तिथिघ्नशेषम्, एष्याहृत्, (कार्य्यम्) (ततः), तिथिघ्नशुद्धसंख्यया, युतम्, दोर्लवाः, भवन्ति ॥ १४ ॥

तिस क्रांतिमें क्रमसे पहले कहे क्रान्त्यङ्क जितने घट सके उतने घटावे अन्तमें जो शेष रहे उसको १५ से गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें अशुद्ध कहिये जो नहीं घट सका था उस क्रान्त्यङ्कका भाग देय तब जो लब्धि हो उसको अंशादि जाने उन अंशोंमें जितने संख्यक क्रान्त्यङ्क ऊपर घटावे हैं उस संख्याको १५ से गुणा करके जो गुणनफल हो वह अंशोंमें युक्त कर देय तब भुजांश होते हैं ॥ १४ ॥

उदाहरण–पूर्व साधन करी हुई क्रान्ति १९ अं. २४ क. ४३ वि. के अंशोंमें प्रथम क्रान्त्यङ्क ६ को घटाया तब शेष रहे १३ अं. २४ क. ४३ अं. इस शेष के अंशों में द्वितीय क्रान्त्यङ्क ६ को घटाया तब ७ अं. २४ क० ४३ वि. शेष रहे इस शेषके अंशोंमें तृतीय क्रान्त्यङ्क ५ को घटाया तब शेष रहे २ अं. १४ क. ४३ वि. अब इस शेषमें आगेका क्रान्त्यङ्क नहीं घट सकता इस कारण इस अन्तिम शेष २ । २४ । ४३ को १५ गुणा करा तब ३६ अं. १० क. ४५ वि. हुए इसमें जो क्रान्त्यङ्क ४ नहीं घट सका था उसको भाग दिया तब लब्धि हुई ९ अं. २ क० ४१ वि. । अब जितने संख्यक क्रान्त्यंक घटाये थे उस ३ संख्याको १५ से गुणा करा तब ४५ हुए इनको उस लब्धि ९ अं. २ क. ४१ वि. में युक्त करा तब ५४ अं. २ क. ४१ वि. यह सायनरविके भुजांश हुए ॥

अब यदि रविका ज्ञान हो तो केवल दिनमानसे ही स्थूल-क्रान्ति साधनेकी रीति लिखते हैं–

द्युदलतिथिवियोगस्तद्विनाडयश्चरं स्या-

दथ निजगजभागोपेतमक्षप्रभाप्तम् ॥
दिनकृदपमभागास्तत्त्वलिप्तायुताः स्यु-
र्द्युदलकृशपृथुत्वे ते क्रमाद्याम्यसौम्याः॥१५॥

द्युदलतिथिवियोगः, विनाड्यः, चरम्, स्यात्, अथ, तत्, निज-गजभागोपेतम्, (ततः), अक्षप्रभाप्तम्, (ते) दिनकृदपमभागाः, स्युः, ते, तत्त्वलिप्तायुताः, द्युदलकृशपृथुत्वे, क्रमात्, याम्य-सौम्याः, स्युः ॥ १५ ॥

दिनार्द्ध और पन्दरह घटिकाका जो अन्तर हो उसको साठसे गुणा करे तब पलात्मक चर होता है, उसमें अपने अष्टमांशको युक्त करदेय तब जो अंक हो उसमें पलभाका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि हो उसमें २५ कला युक्त करे तब रविकी क्रान्तिकी अंशादि होते हैं वह अंशादि यदि १५ घटीसे अधिक हों तो उत्तर और कम हों तो दक्षिण होते हैं ॥ १५ ॥

उदाहरण--दिनार्द्ध है १६ घ. ३३ प. इसमें १५ घटाई तब शेष रहे १ घ. ३३ प. इसको ६० से गुणा करा तब ९३ पल, यह पलात्मक चर हुआ इसमें इस ९३ का ही अष्टमांश ११ । ३७ । ३० युक्त करे तब १०४ । ३७ । ३० हुए इसमें पलभा ५ । ४१ का भाग देनेके निमित्त भाजक ५ । ४१ और भाज्य १०४ । ३७ । ३० दोनोंको सवर्णित करा तब भाजक हुआ २०७०० और भाज्य हुआ ३७६६५० तदनन्तर भाज्य ३७६६५० में भाजक २०७०० का भाग दिया तब अंशादि लब्धि १८ अं. ११ क. ४४ वि. हुई इसमें २५ कला युक्त करा तब १८ अं. ३६ क. ४४ वि. यह क्रान्ति हुई यह दिनार्द्ध १५ घ. से अधिक है इस कारण उत्तर है ॥

अब नतांश उन्नतांश और पराख्याके साधनेकी रीति लिखते हैं-

क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिर्नतांशास्तद्धीना नवतिः स्युरुन्नतांशाः ॥ दिनमध्यभवास्ततोऽपि ये स्युः क्रान्त्यंशा लघुखण्डकैः पराख्यः ॥ १६ ॥

क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिः, नतांशाः, स्युः, तद्धीना, नवतिः, दिनमध्यभवाः, उन्नतांशाः, (स्युः), ततः, अपि, लघुखण्डकैः, ये, क्रान्त्यंशाः, स्युः, (ते), पराख्यः ॥ १६ ॥

क्रान्ति दक्षिण होय तो उसको अक्षांशमें युक्त करदेय और क्रान्ति उत्तर होय तो उसको अक्षांशमें घटा देय तब दक्षिण नतांश होते हैं, यदि क्रान्ति उत्तर होय और अक्षांशकी अपेक्षा अधिक होय तब क्रांतिमें अक्षांश घटानेसे उत्तर नतांश होते हैं और नतांशको ९० में घटादेय तब उन्नतांश होते हैं परन्तु वह दिनके मध्यकाल अर्थात् मध्याह्न कालके होते हैं इष्टकालके नहीं होते हैं। उन्नतांशोंको भुज मानकर उनसे क्रान्त्यङ्कोंके द्वारा स्थूल क्रान्ति लावे तब पराख्य होता है ॥ १६ ॥

उदाहरण--उत्तरक्रान्ति १९ अं. ६ क. ४० वि. को अक्षांश २५ अं. २६ क. ४२ वि. में घटाया तब ६ अं. २० क. २ वि. यह दक्षिणनतांश हुए इन नतांशों६।२०।२को ९० में घटाया तब शेष रहे८३ अं. ३९ क. ५८ वि. यह उन्नतांश हुए। इससे लाई हुई स्थूल क्रान्ति २३ अं. ३४ क. ३९ वि. हुई इसको पराख्य कहते हैं ॥

अब अन्य प्रकारसे उन्नतकालसे अभीष्टकर्ण साधन लिखते हैं-

नवतिगुणितमिष्टमुन्नतं द्युदलहृतं फलभाग-

तोपमः ॥ कथितपरगुणस्तदुद्धृता रविनवषट्-
छ्रवणोथऽवा भवेत् ॥ १७ ॥

इष्टम्, उन्नतम्, नवतिगुणितम्, (ततः,) चदलहृतम्, (कार्य्यम् तदा,) फलभागतः, अपमः, कथितपरगुणः, (कार्य्यः) तदुद्धृताः रविनवषट्, अथवा श्रवणः, भवेत् ॥ १७ ॥

अभीष्ट उन्नतकालको ९० से गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें दिनार्द्धका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उससे स्थूल क्रांति लाकर उसको पूर्वोक्त पराख्यसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसका "रविनवषट्" कहिये ६९१२ में भाग देय तब जो लब्धि हो वह अंगुलादिकर्ण होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण-उन्नतकाल १० घ. ३० प. को ९० से गुणा करा तब ९४५ घटी हुई इसमें दिनार्द्ध १३ घ. ३३ प. का भाग दिया तब लब्धि हुई ५७ अं. ५ क. ५८ वि. इससे लाई हुई क्रांति २० अं. १३ क. ३५ वि. को पराख्य २३ अं. ३४ क. २९ वि. से गुणा करा तब ४७६ अं. ५३ क. १५ वि. हुई इस गुणनफलका ६९१२ में भाग दिया तब लब्धि मिली १४ अंगुल २९ प्रतिअंगुल यह इष्टकर्ण हुआ ॥ १७ ॥

अब इष्टकर्णसे उन्नतकाल साधनेकी रीति लिखते हैं-

तरणिनवरसाः श्रवोद्धृताः परविहृता अपमो
भवेत्ततः ॥ दिनदलगुणिता भुजांशका नवति-
हृता अथवेष्टमुन्नतम् ॥ १८ ॥

अथवा, तरणिनवरसाः श्रवोद्धृताः (ततः), परविहृताः, कार्य्याः,

फलम्) अपमः, भवेत् । ततः, भुजांशकाः, दिनदलगुणिताः, (ततः) नवतिहृताः, इष्टम्, उन्नतम्, (स्यात्) ॥ १८ ॥

"तरणिनवरस" कहिये ६९१२ में इष्टकर्णका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें फिर पराख्यका भाग देय तब जो लब्धि होय वह स्थूल क्रांति होती है, तदनन्तर उस क्रांतिसे पूर्वोक्तरीति के अनुसार भुजांश लाकर उसको दिनार्द्धसे गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें ९० का भाग देय तब जो लब्धि हो वह घटिकादि उन्नतकाल होता है ॥ १८ ॥

उदाहरण—६९१२ में इष्टकर्ण १४ अंगुल २९ प्रतिअंगुलका भाग दिया तब लब्धि हुई ४७६ अं. ५३ क. १५ वि. इसमें पराख्य २३ अं. ३४ क. ३९ वि. का भाग दिया तब लब्धि हुई २० अं. १३ क. ३५ वि. यह स्थूल क्रांति हुई इससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार भुजांश आये ५७ अं. ५ कला. ५८ वि. इसको दिनार्द्ध १६ घ. ३३ प. से गुणा करा तब ९४५ हुए इनमें ९० का भाग दिया तब लब्धि हुई १० घ. ३० प. यह उन्नतकाल हुआ ॥ १८ ॥

अब उन्नतकालसे यन्त्रजोन्नतांश × साधनेकी रीति लिखते हैं—

खांकघ्नोन्नतघटिका दिनार्द्धभक्ता भागाः स्युस्तदपमजांशकाः परघ्नाः ॥ सिद्धाप्ता निगदितवत्ततो भुजांशास्तत्काले स्युरिति च यन्त्रजोन्नतांशाः ॥ १९ ॥

× यन्त्र कहिये तुरीय यंत्र जोन्नतांश कहिये तुरीय यंत्रसे सूर्य पृथ्वीकी ज्यासे जितने अंशोंपर ऊँचा दीखे ॥

खांकघ्नोन्नतघटिकाः, दिनार्द्धभक्ताः, भागाः, स्युः। तदपमजांशकाः, परघ्नः, (ततः), सिद्धाप्ताः, ततः, निगदितवत्, भुजांशाः, तत्काले, यंत्रजोन्नतांशाः, स्युः ॥ १९ ॥

उन्नतकालकी घटिकाओंको ९० से गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें दिनार्द्धका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि हो उससे स्थूल क्रांति लाकर उसको पराख्यसे गुणा करे और जो गुणनफल मिले उसमें २४ का भाग देय तब जो लब्धि हो उसको स्थूलक्रांति मानकर उससे भुजांश लावे वे ही यन्त्रजोन्नतांश होते हैं ॥ १९ ॥

उदाहरण—उन्नतकाल १० घ. ३० प. को ९० से गुणा करा तब ९४५ हुई इनमें दिनार्द्ध १६ घ. २२ प. का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ५७ अं. ५ क. ५८ वि. इससे लाई हुई क्रांति २० अं. १३ कला ३५ वि. हुई इसको पराख्य २३ अं. ३४ कला ३९ वि. से गुणा करा तब ४७६ अं. ५३ क. १५ वि. हुए इनमें २४ का भाग दिया तब लब्धि हुई १९ अं. ५२ क. १३ वि. इससे लाये हुए भुजांश ५६ अं. ४५ क. ४८ वि. यही यन्त्रजोन्नतांश हुए ॥ १९ ॥

अब इष्टयन्त्रजोन्नतांशसे उन्नत काल साधनेकी रीति लिखते हैं—

अभिमतयन्त्रलवास्ततोऽपमोऽसौ जिननिघ्नः
परहृत्ततो भुजांशाः ॥ द्युदलघ्नाः खनवोद्धृताः
कपाले प्राक्पश्चाद्घटिकाः क्रमाद्गतैष्याः ॥२०॥

अभिमतयन्त्रलवाः, ततः, (यः), अपमः, असौ, जिननिघ्नः परहृत्, ततः, भुजांशाः, (स्युः, ते), द्युदलघ्नाः, खनवोद्धृताः, प्राक्पश्चात्कपाले, क्रमात्, गतैष्याः, घटिकाः, (स्युः) ॥ २० ॥

अभीष्ट यंत्रजोन्नतांशसे स्थूल क्रांति लाकर उसको चौबीस से गुणा करे तब जो गुणन फल हो उसमें पराख्यका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको अंशादि स्थूल क्रांति जाने और उससे भुजांश लावे फिर उसको दिनार्द्धसे गुणा करे तब जो गुणन-फल हो उसमें ९० का भाग देय तब जो लब्धि होय वह घटिकाआदि उन्नतकाल पूर्व कपालमें होय तो गत और उत्तर कपाल में होय तो एष्य होता है ॥ २० ॥

उदाहरण—अभीष्टयंत्रजोन्नतांश ५५ अं. ४५ क. ४८ वि इससे लाई हुई क्रांति १९ अं. ५२ कला १३ वि. को २४ से गुणा करा तब ४७६ अं. ५३ क. १२ वि. हुए इनमें पराख्य २३ अं. ३४ क. २९ वि. का भाग दिया तब २० अं. १३ कला ३५ विकला लब्धि हुई इसको क्रांति मानकर लाये हुए भुजांश ५७।५।५८ को दिनार्द्ध १६ घ. ३२ प. से गुणा करा तब ९४५ घ. हुए इसमें ९० का भाग दिया तब १० घ. ३० प. यह पूर्व कपालमें होनेके कारण गत उन्नत काल हुआ ॥ २० ॥

अब यंत्रजोन्नतांशसे इष्टकर्ण साधनेकी रीति लिखते हैं—

यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ता
वस्विभदस्राः स्यादिह कर्णः ॥ २१ ॥

यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ताः, वस्विभदस्राः, इह, कर्णः, स्यात् ॥ २१ ॥

यत्रजोन्नतांशसे क्रांति लाकर उसका वस्विभदस्र कहिये २८८ में भाग देय तब जो लब्धि हो वह अंगुलादि कर्ण होता हैं ॥ २१ ॥

उदाहरण—यंत्रजोन्नतांश ५५ अं. ४५ क. ४८ विकलासे लाई हुई क्रांति १९ अं. ५२ क. १२ वि. का २८८ में भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई १४ अंगुल १९ प्रतिअंगुल ३८ तत्प्रतिअंगुल यह इष्ट कर्ण हुआ ॥ ८८ ॥

अब इष्टकर्णसे यंत्रजोन्नतांश साधनेकी रीति लिखते हैं—

कर्णहृतास्ते स्यादपमोऽतो
बाहुलवाः स्युर्यन्त्रलवा वा ॥ २१ ॥

ते, कर्णहृताः, अपमः, स्यात्, अतः, बाहुलवाः, वा, यन्त्रलवाः, स्युः ॥ २१ ॥

तिन वस्विबदस्र २८८ में कर्णका भाग देय तब जो लब्धि हो वह क्रांति होती है तदनन्तर इसी क्रांतिसे भुजांश लावे वह भुजांश ही यंत्रजोन्नतांश होते हैं ॥

उदाहरण–२८८ में इष्टकर्ण १४ अगुल २९ प्रतिअंगुल ३८ तत्प्रति अंगुलका भाग दिया तब लब्धि हुई १९ अं. ५२ क. १२ वि. यह क्रांति हुई इससे लाए हुए भुजांश हुए ५५ अं. ४५ क. ४८ वि. यही यंत्रजोन्नतांश है ॥ २१ ॥

सर्वत्र नलिकाबन्धादि और कुण्डमण्डपादि विधिमें दिक्सा-
धनका कार्य्य पड़ता है इस कारण अब दिक्साधनकी
रीति लिखते हैं–

वृत्ते समभूगते तु केन्द्रस्थितशङ्कोः क्रमशो
विशत्यपैति ॥ छायाग्रमिहापरा च पूर्वा ताभ्यां
सिद्धतिमेहदक्च याम्या ॥ २२ ॥

समभूगते, वृत्ते, केन्द्रस्थितशङ्कोः, छायाग्रम्, (यत्र) विशति, अपैति, च, क्रमशः, इह, अपरा, (स्यात्), पूर्वा, (स्यात्) ताभ्याम्, सिद्धतिमेः, उदक्, याम्या, च, (स्यात्) ॥ २२ ॥

जलके समान इकसार करी हुई भूमिमें इष्ट त्रिज्या परिमित सूत्रसे एक वर्तुल काढे और उस वर्तुलके मध्यमें द्वादश अंगुल का शंकु गाड़े पूर्वाह्नमें उस शंकुकी छायाका अग्र वर्तुलको जहां स्पर्श करे, तहां पश्चिम दिशाका चिह्न करे और अपराह्नमें तिस शंकुकी छायाका अग्रभाग जहां वर्तुलसे बाहर पडे तहां पूर्व दिशाका चिह्न करे तदनन्तर पूर्व पश्चिम चिह्नोंकी सीधपर एक रेखा खैंचे वह पूर्वापर रेखा होती है, तिस पूर्वापर रेखापर वर्तुलके मध्यसे एक लम्ब खैंचे वह लम्बके ऊपर और नीचे जहां वर्तुलसे मिले वह दक्षिणोत्तर रेखा होती हैं । जिस दिन ३० घड़ी का दिनमान होता है उस दिनही इस प्रकार दिक्साधन होता है ॥ २२ ॥

अब दूसरी रीतिसे दिक्साधन और भुजसाधन कहते हैं—

वार्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिर्भाकर्णनिघ्नीन-
भोक्षाग्न्याप्ता रविदिग्भुजो यमदिशद्धिग्नाक्षभासं-
स्कृतः ॥ केन्द्रेभोत्थवृतौ स पूर्णगुणवद्भाग्रात्प्रदेयो
भवेद्याम्योदक्सभुजाग्रकेंद्रनिहिता रज्जुस्तु पूर्वा-
परा ॥ २३ ॥

वा अर्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिः, भाकर्णनिघ्नी, नभोक्षाग्न्याप्ता, रविदिग्भुजः, स्यात् । (सः) यमदिशद्धिग्नाक्षभासंस्कृतः, (शेष-

दिग्भुजः, स्यात् ।) सः, केन्द्रभोत्थवृत्ते, पूर्णगुणवत्, भाग्रात्, प्रदेयः, सः, याम्योदक्, भवेत्, भुजार्द्धकेन्द्रनिहिता, रज्जुः, तु, पूर्वापरा (स्यात्) ॥ २३ ॥

सूर्यकी क्रांतिको कर्णसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसको फिर छायाकर्णसे गुणा करे तब जो गुणनफल हो, उसमें नभोत्ताग्नि कहिये ३५० का भाग देय तब जो लब्धि हो वह मध्यम भुज होता है यह सायन सूर्य उत्तर गोलमें होय तो उत्तर होता है और सायन सूर्य दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण होता है तदनन्तर पलभाको २ से गुणा करके जो गुणनफल मिले उसको दक्षिण माने और उसमें मध्यम भुज दक्षिण होय तो युक्त कर देय और मध्यम भुज उत्तर होय तो घटा दे तब जो अंक हों वह दक्षिण भुज होता है और यदि मध्यम भुज उत्तर होय और द्विगुणित पलभासे अधिक होय तो द्विगुणित पलभाको मध्यम भुजमें घटा देय जो शेष रहे सो अंगुलादि उत्तर भुज होता है अभीष्ट छाया परिमित सूत्रसे समभूमिपर एक वर्तुल बनाकर उस वर्तुलके मध्यमें एक द्वादश अंगुलका शंकु गाडे उस शंकुकी प्रवेशकालकी और निर्गमकालकी छायाके अग्रभागसे भुजांगुल परिमित शलाका लेकर वह भुज दक्षिण होय तो दक्षिणकी ओर उत्तर होय तो उत्तरकी ओर पूर्णज्याके समान अर्थात वर्तुलके दूसरे ओर लगजाय इस प्रकार रेखा खैंचे वह दक्षिणोत्ता रेखा होती है तदनन्तर दक्षिणोत्तर रेखाको आधा करके उस बिन्दु और वर्तुलके मध्यका बिन्दु इन दोनोंकी सीध बांधकर एक रेखा खैंचे वह पूर्वापर रेखा होती है ॥ २३ ॥

उदाहरण—इष्टकाल १० घ. ३० प. है तत्कालीन स्पष्ट सूर्य १ रा. ५ अं. ५२ क. ४१ वि. है इससे लाई हुई क्रांति १९ अं. ६ क.

४० वि. को अक्षकर्ण १३ अंगुल १९ प्रति अंगुलसे गुणा करा तब २५४।२९।४६ हुए इनको छायाकर्ण १४ अंगुल २४ प्रति अंगुलसे गुणा करा तब ३६६९ अंगुल ३० प्रतिअंगुल हुए इसमें नभोदाग्नि कहिये ३५०का भाग दिया तब लब्धि हुई १०अंगुल २८ प्रति अंगुल यह मध्य भुज सूर्यके उत्तर गोलमें होनेके कारण उत्तर है, अब पलभा ५ अंगुल ४५ प्रति अंगुलको २ से गुणा करा तब ११ अंगुल ३० प्रतिअंगुल गुणनफल दक्षिण हुआ, इसमें मध्यम भुज १० अंगुल २८ प्रतिअंगुलको घटाया तब शेष रहा १ अंगुल २ प्रतिअंगुल यह दक्षिण भुज हुआ ॥ २३ ॥

अब अन्यरीतिसे दिक्साधनके निमित्त दिगंशसाधनकी रीति लिखते हैं—

द्युमानखगुणान्तरं शिवगुणं दिनेऽल्पाधिके
ह्यपागुदगथानुदग्भवति यन्त्रभागापमः ॥
वसुघ्न्युभयसंस्कृतिर्नवतियन्त्रभागान्तरोद्भवापम
हृतास्ततो भुजलवा दिगंशाः स्मृताः ॥ २४ ॥

शिवगुणम्, द्युमानखगुणान्तरम्, दिने, अल्पाधिके, अपाक्, उदक् भवति, अथ, हि, यन्त्रभागापमः (सदा), अनुदक् (भवति) उभयसंस्कृतिः, वसुघ्नी, ततः, नवतियन्त्रभागान्तरोद्भवापमहृताः, (ततः ये) भुजलवाः (ते), दिगंशाः, स्मृताः ॥ २४ ॥

दिनमान और ३० घटीके अन्तरको ११ से गुणा करे तब जो गुणनफल अंशादि होय वह यदि दिनमान ३० घटी से अधिक होय तो उत्तर और कम होय तो दक्षिण होता है। तदनन्तर यन्त्रजोन्नतांशसे क्रांति साधे उस क्रांतिको सदा दक्षिण समझे

और इस क्रांति तथा उपरोक्त अंशादि गुणनफल इन दोनोंकी दिशा एक ही होय तो दोनोंका योग करलेय और यदि भिन्न दिशा होय तो अन्तर करलेय तब जो अंक लब्ध हों उनको आठसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें ९० और यन्त्रजोन्नतांशके अन्तरसे लाई हुई क्रांतिका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको क्रांति समझे,इस क्रांतिसे भुजांश लावे वह भुजांश ही दिगंश कहलाते हैं ॥ २४ ॥

उदाहरण- दिनमान ३३ घ० ६ प० और ३० घटीका अन्तर करा तब ३ घ० ६ प. हुआ इसको ११ से गुणा करा तब ३४ अं० ६ क० हुआ, यह गुणनफल " तीस ३० घटीकी अपेक्षा दिनमान अधिक था ' इस कारण उत्तर हुआ। अब यन्त्रजोन्नतांश ५५ अं० ४५ क० ४८ वि० है इस लाई हुई स्थूल क्रांति दक्षिण १९ अं० ५२ क० १३ वि० इसकी और उपरोक्त गुणाकारकी भिन्न दिशा है इस कारण उपरोक्त अंशादि गुणन फल ३४ अं० ६ क० और स्थूल क्रांति १९ अं० ५२ क० १३ वि० का अन्तर करा तब १४ अं० १३ क० ४७ वि० हुआ इसको ८ से गुणा करा तब ११३ अं० ५० क० १६ वि० हुए इसमें ९० अं० और यन्त्रजोन्नतांश ५५ अं० ४५ क० ५८ वि० के अन्तर ३४ अं० १४ क० १२ वि० से लाई हुई क्रांति १३ अं० २४ क० ४४ वि० का भाग दिया तब लब्धि हुई ८ अं० २९ क० १५ वि० इससे लाये हुए भुजांश २१ अं० १३ क० २४ वि० यह दिगंश हुए ॥ २४ ॥

अब दिगंशोंसे दिक्साधनेकी रीति लिखते हैं-

समभुवि निहिते तुरीययन्त्रे स्पृशति यथा च दिगंशकाग्रकेन्द्रे ॥ अवलम्बविभोत्थकेन्द्र-

संस्थेषीकाभाऽथ दिशोऽत्र यन्त्रगाः स्युः ॥२५॥

समभुवि, तुरीययन्त्रे, निहिते (सति), दिगंशकाग्रे, अवलम्ब-विशोत्थकेन्द्रसंस्थेषीकाभा, यथा, स्पृशति, (तथा, यन्त्रे, साधिते) अत्र यन्त्रगाः, दिशः, स्युः ॥ २५ ॥

इष्टकालमें जलके समान इकसार करी हुई भूमिपर तुरीय यन्त्र रखकर उसपर दिगंश देय अर्थात् यन्त्रकी परिखापर जितने दिगंश हों उतने ही अंशोंपर चिह्न करें और तुरीय यन्त्रके मध्यबिन्दुपर एक सींक खड़ी करे उसकी छाया परिखा-परके चिन्हसे लग जाय इस प्रकार साधकर तुरीय यन्त्रको फिरावे, तदनन्तर चिन्ह और तुरीय यन्त्रका मध्यबिन्दु इन दोनोंको साधकर एक रेखा खैंचे तो वह पूर्वापर रेखा होती है, उस पूर्वापर रेखा के दो भाग करके उस द्विभाग चिह्नके समीपसे एक लम्ब उतारे वह दक्षिणोत्तर रेखा होती है ॥ २५ ॥

अब नलिकाबन्धनके अर्थ भुज कोटि लिखते हैं-

क्रान्तिः स्फुटाभिमतकर्णगुणाक्षकर्णनिघ्नी खखाद्रिहृदपक्रमदिग्भुजः स्यात् ॥ संस्कारितो यमदिशाक्षभयास्फुटोऽसौ तद्वर्गभाकृतिवियोग-पदं च कोटिः ॥ २६ ॥

स्फुटा, क्रान्तिः, अभिमतकर्णगुणाक्षकर्णनिघ्नी, (ततः), खखा-द्रिहृत्, (कार्य्या, तदा), अपक्रमदिग्भुजः, स्यात् । असौ, यमदिशा, अक्षभया, संस्कारितः, स्फुटः (भवति), तद्वर्गभाकृति-वियोगपदम्, च, कोटिः, (स्यात्) ॥ २६ ॥

जिस ग्रहका नलिकाबन्ध करे उस ग्रहकी क्रांतिका अपने शरसे संस्कार करें तब क्रांति स्पष्ट होती है, तदनन्तर उस स्पष्ट क्रांतिको इष्टकर्णसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसको अन्तकर्णसे गुणा करे तब जो गुणन फल होय उसमें खखादि ७०० का भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि मध्यम भुज होता है, उसको स्पष्ट क्रांतिके समान उत्तर अथवा दक्षिण समझे, तदनन्तर पलभाको दक्षिण मानकर उसमें मध्य भुज दक्षिण होय तो मिला देय और उत्तर होय तो घटा देय तब जो अङ्क लब्धि हों वह अंगुलादि दक्षिण भुज होता है और यदि मध्यम भुज उत्तर होकर पलभाकी अपेक्षा अधिक होय तो उसमें पलभाको घटावे तब जो शेष बचे वह अंगुलादि उत्तर भुज होता है और छायाका वर्ग करके उसमें भुजाका वर्ग घटावे तब जो शेष रहे उसका वर्ग-मूल निकाले वह कोटि होती है ॥ २६ ॥

उदाहरण-सम्वत १६६९ शाके १५३४ वैशाख शुक्र पौर्णिमा १५ सोमवारके दिन सूर्योदयसे गतघटी ५७ पर मङ्गलका नलिकाबन्ध करते हैं तहां प्रातःकालीन मध्यम रवि १ रा० ४ अं० ११ क० ४५ वि० और उसकी मध्यम गति ५९ क० ८ वि० है।

और मध्यमभौम ९ रा० २९ अं० ५५ क० १३ वि० तथा उसकी मध्यम गति ३१ क० २६ वि० है इष्ट घटी ५७ से चालित रवि हुआ १ रा० ५ अं० ९ क० ५२ वि० और इष्ट घटीसे चालित मङ्गल हुआ १० रा० ० अं० २५ क. ४ वि.। अब स्पष्टीकरण दिखलाते हैं, रविका मन्दकेन्द्र १ रा० १२ अं० ५० क० ८ वि० है मन्द फल धन १ अं० २८ क० ५५ वि० है। इस मन्द फलको चालित रविमें धन करा तब १ रा० ६ अं ३८ क० ४७ वि० हुआ यह मन्द स्पष्ट रवि हुआ, चर

ऋण ९५ विकला है इसको मन्द स्पष्ट रविमें घटाया तब १ रा० ६ अं० ३७ क० १२ वि० यह संस्कृत स्पष्ट रवि हुआ।

भौमका शीघ्र केन्द्र ३ रा० ४ अं० ४४ क० ४८ वि० है और शीघ्र फलार्द्ध धन १६ अं० ५२ क० ५८ वि० को चालित भौम १० रा०० अं० २५ क० ४ वि० में युक्त करा तब १० रा० १७ अं० १८ क० २ वि० यह दलस्पष्ट भौम हुआ।

अब मङ्गलका मन्दकेन्द्र ५ रा० १२ अं० ४१ क० ५८ वि० और मन्द फल धन ३ अं. १९ क. ४५ वि. है इसको चालित भौम १० रा. ० अं. २५ क. ४ वि. में युक्त करा तब १० रा. ३ अं. ४४ क. ४९ वि. यह मन्दफल संस्कृत भौम हुआ। द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ३ रा. १ अं. २५ क. ३ वि. है शीघ्र फल धन ३२ अं. ५२ क. ४० वि. हुआ इसको मन्द फल संस्कृत भौम १० रा. ३ अं. ४४ क. ४८ वि. में युक्त करा तब ११ रा. ६ अं. ३७ क. २९ वि. यह स्पष्ट भौम हुआ।

अब दृक्कर्म्मसाधन कहिये मङ्गलके दृष्टि पडनेके निमित्त जो गणित तिसके साधनकी रीति–तहां "कुद्विघ्यब्धीत्यादि" रीतिके अनुसार शीघ्रकर्ण हुआ ११ अं. ४८ क. ४० वि. और "मन्दस्पष्टखगात्" इत्यादि रीतिके अनुसार दक्षिण क्रांति हुई २३ अं. ४४ क. ५९ वि. और अङ्गुलादि दक्षिण शर हुआ ३४ अङ्गुल ३१ प्र. अं. और "प्राक्त्रिभेणेत्यादि" रीतिके अनुसार तीन राशि रहित मङ्गल हुआ ८ रा. ६ अं. ३७ क. २९ वि. इससे लाई हुई दक्षिण क्रांति हुई २३ अं. ४७ क. २९ वि. और दक्षिण अक्षांश हुए २५ अं. २६ क. ४२ वि.। इन दोनोंका संस्कार करनेसे दक्षिण नतांश हुए ४९ अं. १४ क. ११ वि. फिर " षट्शैला-

इत्यादि " रीतिके अनुसार दृक्कर्म ११८ क. ४४ वि. धन हुआ इसको स्पष्ट रवि ११ रा. ६अं.३६क. २९ वि. में युक्त करा तब ११ रा. ८ अं. ३६ क. १३ वि. यह संस्कृत भौम हुआ, इससे दक्षिण क्रांति आई १ अं. १७ क. ३० वि. और शर संस्कृत स्पष्ट क्रांति दक्षिण हुई ३ अं. १ क. ३३ वि. । इष्टघटी ५७ । दिनमान ३३ घटी १० पल । रविका भोग्य काल ५९ लग्न ० रा.१५अं. ३३ क. २७वि. लग्न भुक्त ३० दृक्कर्म्म दत्त मङ्गलका भोग्य काल १८ पल । मङ्गलका दिन गत काल ४ घ. २९ प. और "दृक्कर्म्मदत्तभौमाचरमित्यादि" रीतिके अनुसार चर दक्षिण ६ फल दक्षिण ८ स्पष्ट चर दक्षिण १४ दिनमान २९ घ. ३२ पल स्पष्ट क्रांति और अक्षांश इन दोनोंके संस्कारसे लाये हुए नतांश २८ अं. २८ क. १५ वि. और उन्नतांश हुए ६१ अं. ३१ क. ४५ वि. इससे लाया हुआ पराख्य हुआ २१ । १२ । १४ मङ्गलका दिनगत काल ४ घ. २९ प. यही उन्नत काल हुआ इससे लाया हुआ इष्ट कर्ण ३० अंगुल २६ प्रति अंगुल हुआ, इसको स्पष्टक्रांति ३ । १ । ३३ से गुणा करा तब ९२ । ५ । १० हुए इनको अक्षकर्ण १३ अंगुल १९ प्रतिअंगुलसे गुणा करा तब १२२६ । १६ । ४८ हुए इनमें ७०९ का भाग दिया तब १ । ४५ यह मध्यम भुज हुआ, यह क्रांतिके दक्षिण होनेके कारण दक्षिण है, इसमें दक्षिण पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको मिलाया तब ७ अंगुल ३० प्रतिअंगुल यह स्पष्ट भुज हुआ ॥

अब इष्टकर्णसे " कर्णार्कवर्गविवरात्पदमित्यादि " रीतिसे इष्ट छायासाधनेके निमित्त इष्टकर्ण ३० । २६ का वर्ग करा तब ९२६ । ११ हुए इसमें अर्क कहिये १२ का वर्ग १४४ घटाया तब ७८२ । ११ यह कर्णवर्ग और अर्कवर्गका अन्तर हुआ, इसका वर्गमूल

लिया तब २७ । ५८ यह इष्ट छाया हुई, इसका वर्ग करा तब ७८२ । ८ यह हुआ और स्पष्ट भुज ७ । ३० वर्ग करा तब ५६ । १५ हुआ, इन दोनों वर्गों (७८२।८)--(५६।१५) का अन्तर करा तब ७२५ । ५३ हुआ इसका वर्गमूल लिया तब २६ अंगुल ५६ प्रति अंगुल यह कोटि हुई ॥ २६ ॥

अब नलिका बन्धनकी रीति लिखते हैं—

ज्ञात्वाऽऽशाः परखेचरे परमुखीं प्राक्खेचरे प्राङ्मुखीं बिन्दोः कोटिमतो भुजं स्वदिशि तन्मध्ये प्रभां विन्यसेत् ॥ बिन्दोर्भाग्रगशंकुमस्तकगते सूत्रे नले खे खगं के बिन्दुस्थनराग्रभाग्रगते सूत्रे नले लोकयेत् ॥२७॥

आशाः, ज्ञात्वा, बिन्दोः, परखेचरे, परमुखीम्, प्राक्खेचरे, प्राङ्मुखीम्, कोटिम्, विन्यसेत् । अतः, स्वदिशि, भुजम्, (विन्यसेत्)। तन्मध्ये, प्रभाम्, (विन्यसेत्) बिन्दोः, भाग्रगशंकुमस्तकगते, सूत्रे, नले, खे, खगम्, लोकयेत् । बिन्दुस्थनराग्रभाग्रगते, सूत्रे, नले, खे, (खगम्, लोकयेत्) ॥ २७ ॥

समान करी हुई भूमिपर अभीष्ट छाया परिमित सूत्रसे एक वर्तुल काढकर उसमें दिशाओंके चिह्न देय, फिर वर्तुलके मध्यसे ग्रह पश्चिम कपालमें होय तो पश्चिमकी ओर और पूर्व कपालमें होय तो पूर्वकी ओर अङ्गुलादि कोटि देय, तदनन्तर कोटिके अग्रभागसे लम्बरेखापर भुजांगुलोंको यदि भुज दक्षिण होय तो

दक्षिणकी ओर, उत्तर होय तो उत्तरकी ओर देय और भुजके अग्रभागसे वर्तुलके मध्यपर्य्यन्त एक कर्ण रेखा खैंचे, वह छाया होती है, तदनन्तर छायाके अग्रभागमें द्वादशांगुलका शंकु रखकर उस शंकुके अग्रभाग और वर्तुलका मध्य इन दोनों-पर एक सूत्र लावे उस सूत्र रेखापर शंकुके अग्रभागमें एक नलिका रक्खे, उस नलिकासे आकाशकी ओर देखे तो ग्रह दीखता है ।

यदि जलके मध्यमें ग्रह देखना होय तो वर्तुलके मध्यमें द्वादशअंगुल शंकु रखकर शंकुके अग्रभागसे छायाग्रपर्य्यन्त एक सूत्र लेजाय और उस सूत्र रेखापर शंकुके अग्रभागमें एक नलिका रक्खे और छायाके अग्रभागमें एक जलपूर्णपात्र रक्खे और उस पात्रमें नलिकासे देखे तब जलमें इष्टग्रह दीखता है।
जिस समयकी गणित करी हो उस समयसे पहले ही लाकर रक्खी हुई नलिकासे ग्रह दीखता है और यदि न दीखे तो गणित करनेमें किसी प्रकारकी भूल या जिस रीतिसे गणित करी हो उन रीतिमें किसी प्रकारका दोष है ऐसा जाने ॥ २७ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्यकाशीराजकीयविद्यालयपं-डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगो-त्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनुजपंडितरा-मस्वरूपशर्म्मणा विरचितया विस्तृतोदाहरण-सनाथीकृतान्वयसमन्वितया भाषाव्या-ख्यया सहितस्त्रिप्रश्नाधिकारः समाप्तिमितः ॥४॥

अथ चन्द्रग्रहणाधिकारो व्याख्यायते ।

तहां प्रथम ग्रहोंका चालन लिखते हैं-

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशवियुग्युतो ग्रहः स्यात् ॥ तत्कालभवस्तथा घटीघ्न्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतः स्यात् ॥ १ ॥

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः, खरसाप्तांशवियुक्, युतः, ग्रहः,(कार्यः, सः) तत्कालभवः, ग्रहः, स्यात् । तथा, घटीघ्न्याः, खरसैः, लब्ध-कलोनसंयुतः, (ग्रहः, कार्य्यः, सः तत्कालभवः, ग्रहः,) स्यात् ॥ १ ॥

गत कहिये व्यतीत या गम्य कहिये आगामि दिनोंसे ग्रहकी गतिको गुणा करके तब जो गुणनफल होय उसमें खरस कहिये ६० का भाग देय तब जो लब्धि होय उसे अंशादि जाने उसको गतादिवस हों तो ग्रहमें घटा देय और गम्य दिन हो तो ग्रहमें युक्त करदेय तब इष्टकालीन ग्रह होता है। तिसीप्रकार गत अथवा गम्य घटिओंसे ग्रहकी गतिको गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें ६० का भाग देय तब जो लब्धि होय उसको फलादि जाने उसको गत घटी हो तो ग्रहमें घटा देय और गम्यघटी हों तो ग्रहमें युक्त कर देय तब इष्ट कालीन ग्रह होता है। इस लब्धिको चालन कहते हैं ॥ १ ॥

इस रीतिमें इतना विशेष ध्यान रखना चाहिये कि, चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहणके विषे पञ्चांगमें पौर्णमासी और अमावस्या जितनी घटी हों उन घटिकाओंसे मध्यमरवि-चन्द्रोच्च और

राहुका चालन करलेय तदनन्तर स्पष्टीकरण करे। तदनन्तर सूर्य और चन्द्रमासे तिथिकी घटी साधे और तिन साधी हुई घटियोंको पञ्चांगकी घटियोंमें युक्त करदेय, अथवा घटा देय, अर्थात् यदि १४ या २९ गत तिथि आवे तो वर्तमान अमावास्या या पौर्णमासीसे जितनी गतघटी साधे उनको पञ्चांगकी पर्व घटियोंमें युक्त कर देय और यदि १५ या ३० गततिथि आवे तो वर्तमान प्रतिपदासे गतघटी साधकर उनको पंचांगकी घटियोंमें घटा देय तब पर्वान्त काल होता है। इस प्रकार जो गतगम्य घटी आवे उनसे ग्रहोंका चालन देय तब पर्वान्त कालीन ग्रह होते हैं ॥१

उदाहरण—संवत् १६७७ शाके १५४२ मार्गशीर्षशुक्ल पौर्णिमा बुधवार घटी ३८ पल ११ रोहिणी नक्षत्र घटी ९ पल ८ साध्ययोग घटी १० पल ३६ इस दिन चन्द्रग्रहणका पर्वकाल जाननेके निमित्त गणित करते हैं॥

"द्व्यब्धीन्द्रोनितेत्यादि" रीतिके अनुसार अहर्गण हुआ ६३६ चक्र हुआ ९ इस साधन करा हुआ प्रातःकालीन मध्यम सूर्य ८ रा. ० अं. ८ क. ५९ वि० और मध्यम चन्द्र १ रा० २५ अं० १९ क० ५७ वि० और चन्दोच्च १० रा० ३ अं० ३७ क० ५ वि० और राहु हुआ ७ रा० २८ अं० २५ क० २७ वि० और तिथिकी घटी ३८। ११ पलसे चालित इष्ट कालीन मध्यम रवि ८ रा० ० अं० ४६ क० ३६ वि० और चन्द्र २ रा० ३ अं० ४३ क० ४ वि० और चन्दोच्च १० रा० ३ अं० ४१ क० २० वि० और राहु ७ रा० २८ अं० २३ क० ३६ वि० ।

अब स्पष्टीकरण लिखते हैं-रविका मन्दकेन्द्र हुआ ६ रा० १७ अं० १३ क० २४ विकला और मन्दफल ऋण० अं० ३९ क० ४ वि० । मन्द स्पष्ट रवि ८ रा० ० अं० ७ क० ३२ वि० । चरधन ११४ । अयनांश १८ अं० १८ क० चरधन संस्कृत स्पष्ट रवि ८ रा० ० अं० ९ क० २८ विकला। गतिफल धन २

कला ३ विकला । स्पष्टगति ६१ क० ११ वि० त्रिफलसंस्कृत-चन्द्र २ रा० ३ अं० ५६ क० १८ विकला मन्दकेन्द्र ७ रा० २९ अं० ४५ क० २ वि० । मन्द फल ऋण ४ अं० २० कला १२ विकला । स्पष्टचन्द्र १ रा० २९ अं० ३६ कला ६ विकला १ गतिफलधन ३३ कला १५ विकला । स्पष्टगति ८२३ क० ८५ विकला । रविचन्द्रसे लाई हुई भोग्य पूर्णिमा २ घटी ३७ पल इनको पञ्चांगकी घटी ३८ घ० ११ प० में युक्त करा तब पर्वान्त-काल हुआ ४० घ० ४८ प० । एष्यघटी २ घ० ३७ पल चालन करे हुए पर्वान्तकालीन तात्कालिक रवि ८ रा. ० अं० १२ क० ८ वि० । चन्द्र २ रा. ० अं० १२ क० ६ विकला । राहु ८ रा. २८ अं० २३ क० १८ वि० ॥ १ ॥

अब ग्रहणसम्भव और चन्द्रशर साधन लिखते हैं—

एवं पर्वान्ते विराह्वर्कबाह्वोरिन्द्राल्पांशाः सम्भ-वश्चेद्ग्रहस्य ॥ तेंशा निघ्नाः शङ्करैः शैलभक्ता व्यग्वर्कांशः स्यात्पृषत्कोऽङ्गुलादिः ॥ २ ॥

एवम्, पर्वान्ते, विराह्वर्कबाह्वोः, चेत्, इन्द्राल्पांशाः, (तदा) ग्रहस्य, सम्भवः । ते, अंशाः, शङ्करैः, निघ्नाः, शैलभक्ताः, (कार्य्याः, तदा) अंगुलादिः, पृषत्कः, व्यग्वर्कांशः, स्यात् ॥ २ ॥

पर्वान्तकालीन स्पष्ट रविमें राहुको घटावे जो शेष रहे वह व्यग्वर्क होता है । तदनन्तर व्यग्वर्कके भुज करके उसके अंश करे, वह अंश यदि चौदहअंशसे कम हों तो ग्रहणका सम्भव होता है ।

व्यग्वर्कके तीन भुजांशोंको ग्यारहसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें सातका भाग देय तब जो लब्धि मिले वह अंगुलादि शर होता है वह व्यग्वर्क मेषादि होय तो उत्तर और तुलादि होय तो दक्षिण होता है॥ २ ॥

उदाहरण—स्पष्टरवि ८ राशि ० अंश १२ क० ६ विकलामें राहु ७ राशि २८ अंश २३ कला १८ विकलाको घटाया तब ० राशि १ अंश ४८ कला ४८ विकला यह व्यग्वर्क (विराह्वर्क) हुआ। इसके भुजांश १ अंश ४८ कला ४८ वि. हुए, यह १४ अंश की अपेक्षा कम है इस कारण ग्रहणका सम्भव है।

भुजांश १ अंश ४८ कला ४८ विकलाको ११ से गुणा करा तब १९ अंश ५६ कला ४८ विकला हुए इसमें ७ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई २ अंगुल ५० प्रतिअंगुल यह चन्द्रशर हुआ व्यग्वर्क मेषादि है इस कारण उत्तर है॥ २ ॥

अब सूर्यबिम्ब और चन्द्रबिम्ब तथा भूभाबिम्बसाधन लिखते हैं—

गतिर्द्विघ्नीशाप्ताऽङ्गुलमुखतनुः स्यात्खररुचो
विधोर्भुक्तिर्वेदाद्रिभिरपहृता बिम्बमुदितम् ॥
नृपाश्वोना चान्द्री गतिरपहृता लोचनकरैरदाढ्या
भूभा स्याद्दिनगतिनगांशेन रहिता॥ ३ ॥

खररुचः, गतिः, द्विघ्नी, ईशाप्ता, अंगुलमुखतनुः, स्यात्। विधोः, भुक्तिः, वेदाद्रिभिः, अपहृता, बिम्बम्, उदितम्। चान्द्री, गतिः, नृपाश्वोना, लोचनकरैः, अपहृता, रदाढ्या, दिनगतिनगांशेन रहिता, भूभा, स्यात्॥ ३ ॥

सूर्य्यकी स्पष्ट गतिको दो से गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें ग्यारहका भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह सूर्य्यबिम्ब होता है। चन्द्रमाकी स्पष्टगति चौहत्तरका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि चन्द्रबिम्ब होता है और चन्द्र-माकी स्पष्टगतिमें सातसौसोलहकला घटाकर जो शेष रहे उसमें बाईसका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें बत्तीस युक्त कर देय तब जो अङ्क योग होय उसमें सूर्य्यकी स्पष्ट गतिका सप्त-मांश घटा देय तब जो शेष रहे वह अंगुलादि भूभाबिम्ब होता है, इसको ही राहुबिम्ब कहते हैं॥ ३॥

उदाहरण—सूर्य्यकी स्पष्टगति ६१कला ११विकलाको२से गुणा करा तब १२२ क. २२ वि. हुई इसमें ११काभाग दिया तब११अंगुल ७ प्रतिअगुल यह सूर्य्यबिम्ब हुआ और चन्द्रमाकी गति ८२३ कला ५० विकलामें ७४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंगुल ७ प्रतिअंगुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ और चन्द्रमाकी स्पष्ट गति ८२३ कला ५० विकलामें ७१६ घटाये तब शेष रहे १०७ कला ५० विकला इसमें २२ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ क. ५५ विकला इसमें ३२ कला युक्त करी तब ३६ कला ५४ विकला हुए, इसमें सूर्य्यकी स्पष्ट गति ६१ कला ११ विकलाके सप्तमांश ८ कला ४४ विकलाको घटाया तब शेष रहे २८ अंगुल १० प्रति-अंगुल यह भूभाबिम्ब अर्थात् राहुबिम्ब हुआ॥ ३॥

अब मानैक्यखण्ड और ग्राह्यसाधन लिखते हैं—

छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा छादकच्छाद्य-मानैक्यखण्डं कुरु॥ तच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा ग्राह्यहीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम्॥ ४॥

इन्दुः, अर्कम्, छादयति, भूमिभा, विधुम् (छादयति)

(हे गणक !) छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डम्, कुरु । तत्, शरोनम्, छन्नम्, भवेत् । यदा, तु, एतत्, ग्राह्यहीनावशिष्टम्, (तदा) खच्छन्नम्, (भवेत्) ॥ ४ ॥

सूर्यग्रहण होनेके समय चन्द्रमा सूर्यको आच्छादन करता है, इस कारण सूर्यग्रहणमें चन्द्रमाको छादक और सूर्यको छाद्य कहते हैं और चन्द्रग्रहण होनेके समय भूमा कहिये पृथ्वीकी छाया चन्द्रमाको आच्छादन करती है, इस कारण चन्द्रग्रहणमें भूमाको छादक और चन्द्रमाको छाद्य कहते हैं। छाद्य और छादक इन दोनोंके बिम्बोंका योग करके दोका भाग देय तब जो लब्धि होय वह मानैक्यखण्ड होता है। उस मानैक्य खण्डमें शरको घटावे तब जो शेष रहे वह ग्रासबिम्ब होता है। परन्तु यदि मानैक्य खण्डकी अपेक्षा शर अधिक होय तो ग्रहण नहीं होता है। यदि छाद्यके बिम्बमें ग्रासबिम्ब घटावे तब जो शेष बचे वह बिम्ब होता है। यदि छाद्यबिम्बकी अपेक्षा ग्रासबिम्ब अधिक होय तो ग्रासबिम्बमें से छाद्यबिम्बको देय तब जो शेष रहे सो खग्रास होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण -- चन्द्रग्रहणके विषे छादक भूमा २८ अंगुल १० प्रतिअंगुल, छाद्य चन्द्रबिम्ब ११ अंगुल ७ प्रतिअंगुल, इन दोनों छाद्य छादकका योग करा तब ३९ अंगुल १७ प्रतिअंगुल हुआ इसमें २ का भाग दिया तब मानैक्यखण्ड हुआ १९ अंगुल ३८ प्रतिअंगुल इसमें शर २ अंगुल ५० प्रतिअंगुलको घटाया तब शेष रहा १६ अंगुल ४८ प्रतिअंगुल वह ग्रास हुआ, इसमें चन्द्रबिम्ब

११ अंगुल ७ प्रतिअंगुलको घटाया तब शेष रहा ५ अंगुल ४१ प्रति अंगुल यह खग्रास बिम्ब हुआ ॥ ४ ॥

अब ग्रहण मध्यस्थिति तथा खग्रासमर्द स्थिति लिखते हैं–

मानैक्यखण्डमिषुणा सहितं दशघ्नं छन्नाहतं पदमतः स्वरसांशहीनम्॥ग्लौबिम्बहृत्स्थितिरियं घटिकादिका स्यान्मर्दं तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्याम् ॥ ५ ॥

इषुणा, सहितम्, मानैक्यखण्डम्, दशघ्नम्, छन्नहतम्, (कार्य्यम्), अतः, पदम्, स्वरसांशहीनम्, ग्लौबिम्बहृत्, (कार्य्यम्,) इयम्, घटिकादिका, स्थितिः स्यात् । तथा, तनुदलान्तरखग्रहाभ्याम्, मर्दम्, (स्यात्) ॥ ५ ॥

मानैक्यखण्डमें शरयुक्त करके जो अङ्कयोग हो उसको दशसे गुणन करके जो गुणनफल होय उसको फिर ग्राससे गुणा करे तब जो गुणफल होय उसका वर्गमूल निकालकर उसको पांचसे गुणा करके छः का भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें चन्द्रबिम्बके प्रमाणका भाग देय तब जो लब्धि होय वह घटिकादि मध्यस्थिति होती है॥ और छाद्य तथा छादक इन दोनोके बिम्बके अन्तरका अर्ध और खग्रास ग्रहण करके पूर्वोक्त रीतिसे मध्यस्थिति लावे वह मर्दस्थिति कहलाती है ॥ ५ ॥

उदाहरण–मानैक्यखण्ड १९ अंगुल ३८ प्रतिअंगुलमें शर २ अंगुल ५० प्रतिअंगुलको जोड़ा तब २२ अंगुल २८ प्रतिअंगुल हुआ, इसको १० से गुणा करा तब २२४ अंगुल ४० प्रतिअंगुल

हुआ. इस गुणनफलको ग्रास १६ अंगुल ४८ प्रतिअंगुलसे गुणा करा तब ३७७४ अंगुल २४ प्रतिअंगुल हुए, इसका वर्गमूल निकाला तब ६१ अंगुल २४ प्रतिअंगुल मिला, इसको ५ से गुणा करा तब ३०७ अंगुल ० प्रतिअंगुल हुआ, इसमें ६ का भाग दिया तब ५१ अंगुल १० प्रतिअंगुल मिला, इसमें चन्द्र-बिम्ब ११ अंगुल ७ प्रतिअंगुलका भाग दिया तब लब्धि हुई ४ घटी ३६ पल यह मध्यस्थिति हुई ॥

चन्द्रबिम्ब ११ अंगुल ७ प्रतिअंगुल और भूभाबिम्ब २८ अंगुल १० प्रतिअंगुल इन दोनोंका अन्तर करा तब १७ अंगुल ३ प्रतिअंगुल हुआ, इसमें २ का भाग दिया तब ८ अंगुल ३२ प्रति-अंगुल लब्धि हुई इसमें शर २ अंगुल ५० प्रतिअंगुलको युक्त करा तब ११ अंगुल २२ प्रतिअंगुल हुए, इसको १० से गुणा करा तब ११३ अंगुल ४० प्रतिअंगुल हुए, इसको खग्रास ५ अंगुल ४१ प्रति अंगुलसे गुणा करा तब ६४६ अंगुल० प्रतिअंगुल हुआ इसका वर्ग-मूल निकाला तब २५ अंगुल २४ प्रतिअंगुल मिले इसको ५ से गुणा करा तब १२७ अंगुल ० प्रतिअंगुल हुए इसमें ६ का भाग दिया तब लब्धि हुई २१ अंगुल १० प्रतिअंगुल, इसमें चन्द्र-बिम्ब ११ अंगुल ७ प्रतिअंगुलका भाग दिया तब लब्धि हुई १ घटी ५४ पल यह मर्दस्थिति हुई ॥ ५ ॥

स्पर्श-स्थिति और मोक्षस्थिति तथा स्पर्शमर्द और मोक्ष-मर्द साधनेकी रीति लिखते हैं-

युग्माहतैर्ध्यंगुभुजांशसमैः पलैः सा द्विष्ठा स्थितिर्विरहिता सहितार्कषड्भात् ॥ ऊने व्यगा-

वितरथाभ्यधिके स्थिती स्तः स्पर्शान्तिमे क्रमगते च तथैव मर्दे ॥ ६ ॥

सा, द्विष्ठा, स्थितिः, व्यगौ, अर्कषड्भात, ऊने, (सति), युग्मा-, हतैः, व्यगुभुजांशसमैः, पलैः, विरहिता, (च) सहिता, (कार्य्या) अभ्यधिके, (सति), इतरथा, विरहिता, सहिता, (कार्य्या) । (तदा), क्रमगते, स्पर्शान्तिमे, स्थिती, स्तः । तथा, एव, मर्दे, च, (साध्ये) ॥ ६ ॥

व्यर्ग्वकके भुजांशोंको दोसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसको पलात्मक मानकर मध्यस्थितिमें युक्त करे और घटावे, परन्तु यदि व्यग्वर्क ५ राशि १६ अंशसे ६ राशिपर्य्यन्त होय या ११ राशि १६ अंशसे १२ राशि पर्य्यन्त होय तो युक्त करनेसे मोक्षस्थिति होती है और घटानेसे शेष बचे सो स्पर्शस्थिति होती है और यदि व्यग्वर्क ६ राशिसे ६ राशि १४ अंश पर्य्यन्त होय अथवा ० राशि से १० राशि १४ अंशपर्य्यन्त होय तो मध्य-स्थितिमें युक्त करनेसे स्पर्शस्थिति और घटा देनेसे जो शेष रहे सो मोक्षस्थिति होती है तथा मर्दस्थितिके पलात्मक गुणनफलको पूर्ववत युक्त करे और घटावे तो स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द होता है ॥ ६ ॥

उदाहरण—घटिकादि मध्यस्थिति ४ घ. ३६ प. को दो स्थानमें लिखा ४ । ३६ ॥ ४ । ३६ और व्यग्वर्क ० राशि १ अंश ४८ कला ४८ विकलाके भुजांश करे तब १ अंश ४८ कला ४८ विकला हुआ, इसको २ से गुणा करा तब ३ अंश ३७ कला ३६ विकला हुए, इस गुणनफलके अंशोंके समान पलों ३ को एक स्थानकी मध्यस्थिति ४ घ. ३६ प. में घटाया तब ४ घ. ३३ प.

यह मोक्षस्थिति हुई क्योंकि स्पर्शार्क ० राशिसे लेकर १५ अंशके अन्तर्गत था । इस कारण ही दूसरे स्थानमें लिखी हुई मध्यस्थिति ४ घ. ३६ प. में उपरोक्त गुणनफलके अंशोंकी तुल्य पलों ३ को युक्त करा तब ४ घ. ३९ प. यह स्पर्शस्थिति हुई ।

इसी प्रकार मर्दस्थितिको १ घ. ५४ प. मर्दस्थितिको दो स्थानमें १।५४॥ १। ५४। एक स्थानमें उपरोक्त गुणनफलके अंशों के समान पलों ३ को घटाया तब १ घ. ५१ प. यह मोक्षमर्द हुआ और दूसरे स्थानमें लिखी हुई मर्दस्थिति १। ५४ में गुणन-फलके अंशोंके समान पलों ३ को युक्त करा तब १ घ. ५७ प. स्पर्शमर्द हुआ ॥ ६ ॥

अब मध्यग्रहणके स्पर्शकाल, मोक्षकाल और संमीलनकाल कहिये खग्रास स्पर्शकाल तथा उन्मीलनकाल कहिये खग्रास-मोक्षकालके साधनेकी रीति–

तिथिविरतिरयं ग्रहस्य मध्यः स च रहितःस-
हितो निजस्थितिभ्याम् ॥ ग्रहणमुखविरामयोस्तु
कालाविति पिहितापिहिते स्वमर्दकाभ्याम् ॥७॥

तिथिविरतिः; अयम्, ग्रहस्य, मध्यः, (भवति) स च, निजस्थि-तिभ्याम्, (एकत्र), रहितः, (अन्यत्र) सहितः, ग्रहमुखविरामयोः, कालौ, (स्तः) । इति, स्वमर्दकाभ्याम्, पिहितापिहिते (स्तः) ॥ ७ ॥

पौर्णिमा तिथिका जो अन्त सो ग्रहणका मध्यकाल होता है। उस मध्यकालको दो स्थानमें लिखकर एक स्थानमें स्पर्श स्थितिको घटा देय तब जो शेष रहे सो स्पर्शकाल होता है और दूसरे स्थानमें लिखे हुए मध्यकालमें मोक्षस्थिति युक्त करे, तब

जो अङ्कयोग हो वह मोक्षकाल होता है मोक्षकालमें स्पर्शकाल को घटा देय तब पर्वकाल होता है इस प्रकार तिथ्यन्तरूपग्रहण के मध्यकालमें स्पर्शमर्दको घटावे तब जो शेष रहे सो संमिलन काल होता है और मध्यकालमें मोक्षमर्दको युक्त करे तब जो अङ्कयोग हो सो उन्मीलनकाल होता है उन्मीलन कालमें संमीलन कालको घटा देय तब जो शेष रहें सो खग्रास पूर्वकाल होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—तिथ्यन्त ४० घटी ४८ पल है यह ग्रहणका मध्यकाल हुआ, इसे दो स्थानमें लिखा ४० । ४८॥४० । ४८॥ एकस्थान में स्पर्शस्थिति ४ घटी ३९ पलको घटाया तब ३६ घटी ९ पल शेष रहा यह स्पर्शकाल हुआ, दूसरे स्थानमें लिखे हुए मध्यकालमें मोक्षस्थिति ४ घटी ३३ पलको युक्त करा तब ४५ घटी २१ पल यह मोक्षकाल हुआ। मोक्षकाल ४५ घ. २१ प. में स्पर्शकाल ३६ घ. ९ पलको घटाया तब शेष रहा ९ घ. १२ प. यह पर्वकाल हुआ ॥

तिसीप्रकार मध्यमकाल ४० घटी ४८ पलमें स्पर्शमर्द घटाया तब शेष रहा ३८ घ. ५१ प. यह संमीलनकाल हुआ और मध्यकाल ४० घ. ४८ पलमें मोक्षमर्द १ घ. ५१ प. को युक्त करा तब अङ्कयोग हुआ। ४२ घटी ३९ पल यह उन्मीलनकाल हुआ। उन्मीलनकाल ४२ घ. ३९ पलमें संमीलनकाल ३८घ. ५१ प को घटाया तब शेष रहे ३ घ. ४८ प. यह खग्रास पर्वकाल हुआ ॥ ७ ॥

अब इष्टकालीन ग्राससाधनकी रीति लिखते हैं—

पिहितहृतेष्टं स्थितिविहृतं तत् ॥
सचरणभूयुग्ग्रसनमभीष्टम् ॥ ८ ॥

पिहितहतेष्टम्, स्थितिविहृतम्, तत्, अभीष्टम्, सचरणभूयुक्, ग्रसनम्, (भवति) ॥

ग्रासको इष्टघटिकाओंसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें यदि इष्टघटी स्पर्शकालीन हो तो स्पर्शस्थितिका और मोक्षकालीन हो तौ मोक्षस्थितिका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको अंगुलादि जाने और उसमें १ अंगुल १५ प्रति अंगुल युक्त करदेय तब इष्टकालीन ग्रास होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण—स्पर्शके अनन्तर कल्पित घटी २से ग्रास १६ अंगुल ४८ प्रति अंगुलको गुणा करा तब ३३ अंगुल ३६ प्रति अंगुलमें हुआ, इष्टघटिका स्पर्शकालीन है इसकारण गुणनफल ३३ अंगुल ३६ प्रतिअंगुलमें स्पर्शस्थिति ४ घटी ३९ पलका भाग दिया तब लब्धि हुई ७ अंगुल १३ प्रतिअंगुल इसमें ९ अंगुल १५ प्रति अंगुल युक्त करे तब ८ अंगुल २८ प्रतिअंगुल यह यह इष्टकालीन ग्रास हुआ ॥ ८ ॥

अथ अयनवलनसाधनकी रीति लिखते हैं—

त्रिभयुतोनरविः स्वविधुग्रहेऽयनलवाढ्य इतश्चरवद्दलैः ॥ नगशरेन्दुमितैर्वलनं भवेत्स्वरविदिक्—

स्वविधुग्रहे, त्रिभयुतोनरविः, अयनलवाढ्यः, (कार्य्यः) इतः, नगशरेन्दुमितैः, दलैः; चरवत्, स्वरविदिक्, वलनम्, भवेत् ॥

सूर्य्यग्रहणके विषे स्पष्ट रविके ३ राशि मिलावै और चन्द्रग्रहणके विषे स्पष्टरविमें ३ राशि घटावे तदनन्तर उस रविमें अयनांश मिला देय तदनन्तर तिससे प्रथम ७ द्वितीय ५ तृतीय १ इन खण्डोंको ग्रहण करके चरसाधनके समान साधन करे तब

अंगुलादि वलन होता है। अयनांश युक्त रवि मेषादि होय तो उत्तर और तुलादि होय तो दक्षिण होता है इसको अयनवलन कहते हैं।

उदाहरण—स्पष्टरवि ८ राशि ० अंश १२ कला ६ विकलामें चन्द्रग्रहण होनेके कारण ३ राशि घटाई तब शेष रहा ५ राशि ० अंश १२ कला ६ विकला इसमें अयनांश १८ अंश १८ कलाको युक्त करा तब ५ राशि १८ अंश ३० कला ६ वि० हुआ, यह सायन रवि हुआ इससे भुज करे ० राशि १८ अंश २९ कला ५४ विक० इसमें शून्यराशि हैं इसकारण प्रथमखण्ड ७ से ११ अंश २९ कला ५४ विक० गुणा करा तब ८० अंश २९ क० १८ विकला हुए इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अंश ४० कला इसमें खंडको युक्त करा तब २ अंश ४० कला यह अयनवलन हुआ, सायनरवि मेषादि है इस कारण अन्तर है ॥

अब मध्यनतसाधन लिखते हैं—

चन्द्रग्रहणके मध्यकालमें दिनमानको घटाकर जो शेष रहे उसका और रात्र्यर्द्धका अन्तर करे तब मध्यनत होता है, यह यदि ग्रहण मध्यमकाल पूर्वरात्रिमें होय तो पूर्व और उत्तररात्रिमें होय तो पश्चिम होता है। इसी प्रकार सूर्य्यग्रहणके मध्यकाल और दिनार्द्धका अन्तर करे तब सूर्यग्रहणके विषे मध्यनत होता है इसकी दिशा पूर्वोक्तरीतिके अनुसार जाननी ॥

उदाहरण – १५ घटी--चर १ घटी ५४ पल, दिनार्ध १३ घटी ६ पल दिनमान २६ घटी १२ पल और १५ घटी--चर १ घटी ५४ पल रात्र्यर्द्ध १६ घटी ५४ पल रात्रिमान ३३ घटी ४८ पल। चन्द्र-ग्रहणके मध्यकाल ४० घटी ४८ पलमें दिनमान २६ घटी १२

पलको घटाया तब शेष रहा १४ घटी२६पल यह रात्रिमें ग्रहणका मध्यनतकाल हुआ ग्रहण मध्यकाल पूर्व रात्रिमें है इस कारण पूर्व है ॥

अब ग्रस्तोदित अथवा ग्रस्तास्त होनेपर मध्यनत साधन लिखते हैं—

(स्पर्शादिकं यदि विधोर्दिवसस्य शेषे यातेऽथवा द्युदलतद्विवरं रवेस्तु ॥ रात्रेस्तदूनितनिशाशकलं क्रमात्स्यात्प्राक्पश्चिमं नतमिदं वलनस्य सिद्ध्यै ॥ १ ॥)

अथवा, यदि, विधोः, स्पर्शादि　　दिवसस्य, शेषे, याते, (तदा), द्युदलतद्विवर म्, (मध्यनतम्, स्यात), रवेः, तु, (यदि), रात्रेः, (शेषे. याते, तदा,) तदूनितनिशाशकलम्, (कार्य्यम्), इदम् , वलनस्य, सिद्ध्यै, क्रमात्, प्राक्, पश्चिमम्, नतम्, स्यात् ॥ १ ॥

चन्द्रग्रहणका स्पर्श सूर्य्यास्तसे पहिले जितनी घटी हो, उतनी घटीको दिनार्द्धमें घटावे तब जो शेष रहे सो पूर्व मध्यनत होता है और चन्द्रग्रहणका मोक्ष सूर्योदय अनन्तर जितनी घटीपर हो उतनी घटी दिनार्द्धसें घटा देय, तब जो शेष रहे सो पश्चिम मध्यनत है ॥

---

१ यह श्लोक क्षेपक है-ग्रन्थान्तरसे लाया है-कारण, नवमश्लोकके चतुर्थ चरणका सम्बन्ध आगेके श्लोकसे जमता हैं इससे नहीं ।

सूर्य्यग्रहणका स्पर्श सूर्य्योदयसे पहिले जितनी घटीपर हो उतनी घटी राज्यर्द्धमें घटावे तब जो शेष रहे सो पूर्व मध्यनत होता है और सूर्य्यग्रहणका मोक्ष सूर्य्यास्त होनेके अनन्तर जितनी घटीपर हो, उतनी घटी राज्यर्द्धमें घटा देय तब जो शेष रहे सो पश्चिम मध्यनत होता है ॥ १ ॥

अब अक्षवलन साधनकी रीति लिखते हैं-

-त्वथ मध्यनताच्च यत् ॥ ९ ॥

विषयलब्धगृहादित उक्तवद्वलनमक्षहृतं पलभाहतम् ॥ उदगपागिह पूर्वपरे क्रमाद्रसहृतोभयसंस्कृतिरङ्घ्रयः ॥ १० ॥

अथ, तु, यत्, मध्यनतात्, (ततः), विषयलब्धगृहादितः, उक्तवत्, वलनम्, (साध्यम्, ततः,) पलभाहतम्, (ततः) अक्षहृतम्, (अक्षवलनम्, स्यात्), इह, पूर्वपरे, क्रमात्, उदक्, अपाक् (स्यात्), उभयसंस्कृतिः, रसहृता, (सती), अंघ्रयः, स्युः ॥ ९ ॥ १० ॥

मध्यनतमें पांचका भाग देकर जो राश्यादि लब्धि होय उसमें अयनांश न मिलाकर तिससे (७, ५, १) इन तीन खण्डोंको मानकर वलन साधे और उसको पलभासे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें पांचका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि अक्षवलन होता है, यदि मध्यनत पूर्व होय तो उत्तर और मध्यनत पश्चिम होय तो दक्षिण होता है। अयनवलन और अक्षवलन इन दोनोंकी एक दिशा हो तो दोनोंका योग कर लेय और दोनोंकी भिन्न दिशा होय तो अन्तर कर लेय, तदनन्तर

उसमें छः का भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह वल-नांघ्रि होते हैं, उनकी दिशा अङ्क योग अथवा अन्तरकी जो दिशा हो सोई होती है ॥ ९ ॥ १० ॥

उदाहरण—मध्यनत पूर्व २ घटी १८ पलको ५ से गुणा करा तब ० राशि २७ अंश ३६ कला० विकला इससे वलन लाए तब ३ अंश ३८ कला २४ विकला हुआ इसको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रति अंगुलसे गुणा करा तब २० अंश ५५ कला हुआ इसमें ५ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ४ अंगुल ११ प्रतिअंगुल यह अक्षवलन हुआ, यह मध्यनतके पूर्व होनेके कारण उत्तर है। अयनवलन २ । ४० उत्तर है और अक्षवलन ४ । ११ उत्तर है, इन दोनोंकी एक दिशा होनेके कारण दोनोंका योग करा तब ६ अंगुल ५२ प्रतिअंगुल हुए इसमें ६ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंगुल ८ प्रतिअंगुल यह उत्तर वलनांघ्रि हुए ॥ ९ ॥ १० ॥

अब ग्रासांघ्रि और खग्रासांघ्रि साधनकी रीति लिखते हैं—

मानैक्यार्द्धहतात्खषड्घ्नपिहितान्मूलं तदा-शांघ्रयः खच्छन्नं सदलैकयुक्तु गदिताः खच्छन्न-जाशांघ्रयः ॥ ११ ॥

मानैक्यार्द्धहतात्, खषड्घ्नपिहितात्, मूलम्, (ग्राह्यम्), (तत्) तदाशांघ्रयः, (स्युः) सदलैकयुक्, खच्छन्नम्, च, खच्छन्नजाशांघ्रयः, गदिताः ॥ ११ ॥

ग्रासको साठसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें मानैक्यखण्डका भाग देय, तब जो लब्धि होय उसका वर्गमूल

निकाले वह अंगुलादि ग्रासांघ्रि होते हैं। खग्रासमें १ अंगुल ३० प्रतिअंगुल युक्त कर देय तब खग्रासांघ्रि होते हैं ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण—ग्रास १६ अंगुल ४८ प्रतिअंगुलको ६० से गुणा करा तब १००८ अंगुल हुए इसमें मानैक्यखण्ड १९ अंगुल ३८ प्रतिअंगुलका भाग दिया तब लब्धि हुई ५१ अंगुल २० प्रति-अंगुल इसका वर्गमूल निकाला तब ८ अंगुल ९ प्रतिअंगुल यह ग्रासांघ्रि हुए ॥

खग्रास ५ अंगुल ४१ प्रतिअंगुलमें १ अंगुल ३० प्रतिअंगुलको युक्त करा तब ७ अंगुल ११ प्रतिअंगुल यह खग्रासांघ्रि हुए ॥ ऽऽ ॥

अब ग्रहणके मध्यकी दिशा जाननेकी रीति लिखते हैं—

सव्यासव्यमपागुदग्वलनजाशांघ्रीन्प्रदद्याच्छ-राशायाः स्याद्ग्रहमध्यमन्यदिशि खग्रासोऽथवा शेषकम् ॥ ११ ॥

शराशायाः, अपागुदग्वलनजाशांघ्रीन्, सव्यासव्यम्, प्रदद्यात्। (तत्र), ग्रहमध्यम्, स्यात्। अन्यदिशि, खग्रासः, अथवा, शेषकम् (स्यात्) ॥ ११ ॥

छाद्य बिम्बके अर्द्धपरिमिति सूत्रसे एक वर्तुल काढ़कर और उस वर्तुलके विषे दिशाओंकी रेखा काढ़कर उसका एकसे बत्तीस भागकरे तदनन्तर शरकी जो दिशा हो उस दिशाके उत्तर अथवा दक्षिण दिशाके बिन्दुसे यदि वलनांघ्रि उत्तर हों उलटे क्रमसे शरकी दिशा देय अर्थात वाम हाथकी ओरसे दाहिने हाथकी ओर को देय और यदि वलनांघ्रि दक्षिण हों तो क्रमसे अर्थात दक्षिण हस्तकी ओर वाम हस्तकी ओरको देय। उस दिशामें ही

मध्यग्रहण होता है और उससे अन्य दिशामें खग्रासका अथवा शेष बिम्बका मध्य होता है ॥ ११ ॥

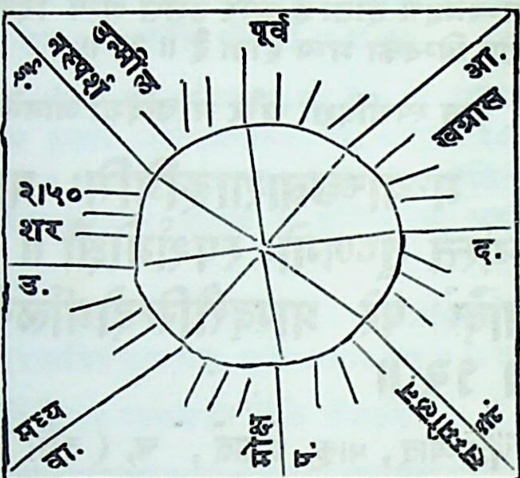
अब स्पर्शदिशा और मोक्षदिशा जाननेकी रीति लिखते हैं--

मध्याच्छन्नाशाङ्घ्रिभिः प्राक्च पश्चादिन्दोर्व्यस्तं तूष्णगोः स्पर्शमोक्षौ ॥ खग्रस्तात्खच्छन्नपादैः परे प्राग्दत्तैरिन्दोर्मीलनोन्मीलने स्तः ॥ १२ ॥

मध्यात्, प्राक्, पश्चात्, च, (दत्तैः), छन्नाशांघ्रिभिः, इन्दोः, स्पर्शमोक्षौ, स्तः । उष्णगोः, तु, व्यस्तम् । खग्रास्तात्, परे, प्राक्, दत्तैः, खच्छन्नपादैः, इन्दोः, मीलनोन्मीलने, स्तः, (रवेः, तु, व्यस्तम् ज्ञेयम्) ॥ १२ ॥

ग्रहणके मध्य चिह्नके पाससे ग्रासांघ्रि पूर्वकी ओर देय, तहां चन्द्रग्रहणका स्पर्श होता है और पश्चिमकी ओर देय तो तहां चन्द्रग्रहणका मोक्ष होता है। सूर्यग्रहणका इससे विपरीत है अर्थात् मध्यचिन्हके पाससे ग्रासांघ्रि पश्चिमकी ओर दिये हों तो तहां सूर्यग्रहणका स्पर्श होता है और पूर्वकी ओर दिये हों तो तहां सूर्यग्रहणका मोक्ष होता है। इसी प्रकार खग्रासके मध्यचिन्हके पाससे खग्रासांघ्रि पश्चिमकी ओर दिये हों तो तहां खग्रासस्पर्श होता है और पूर्वकी ओर दिये हों तो तहां खग्रासका मोक्ष होता है और सूर्यग्रहणके विषे विपरीत होता है अर्थात खग्रासके चिन्हसे पूर्वकी ओर खग्रासांघ्रि दिये हों तो तहां खग्रास का स्पर्श होता है और पश्चिमकी ओर दिये हों तो तहां खग्रास का मोक्ष होता है ॥ १२ ॥

उ०–जिस प्रकार इस लिखी हुई आकृतिके विषे चन्द्रबिम्ब ११ अंगुल ७ प्रतिअंगुल यहां त्रिज्यासे वर्तुल काढ़कर उसमें दिशाओं के बिन्दु ३२ दिखाये हैं और शर २ अंगुल ५० प्रति अं.



और वलनांग्रि १ अंगुल ८ प्रतिअंगुल उत्तर है, अर्थात् उत्तरकी बिन्दु से विपरीत मितिसे अर्थात् पश्चिमकी ओर देकर तहां ग्रहणमध्य. दिखलाया है और उसके अनन्तर खग्रास बिम्ब दिखलाया है, ग्रहणके मध्य बिन्दुसे पूर्वकी और पश्चिमकी ओर ग्रासांग्रि७अंगुल ९ प्रतिअंगुल देकर तहां स्पर्श और मोक्षके चिन्ह दिखलाये हैं, तिसी प्रकार खग्रासके मध्य चिह्नसे पश्चिम या पूर्व दिशाकी ओर खग्रासांग्रि ७ अंगुल १९ प्रतिअंगुल देकर तहां सम्मीलन और उन्मीलन दिखाया है ॥ १२ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराजकीयसंस्कृत विद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रि-सान्नि-ध्याधिगतविद्य-भारद्वाज-गोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंस-श्रियुत भोलानाथतनूज-पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाव्याख्यया सहितश्चन्द्रग्रहणा-धिकारः समाप्तिमितः ॥ ५ ॥

अथ सूर्यग्रहणाधिकारो व्याख्यायते ।



अब हार-लम्बन और लम्बनसंस्कृत तिथिसाधन लिखते हैं-

लग्नं दर्शान्ते त्रिभोनं पृथक्स्थं तत्क्रान्त्यंशैः संस्कृतोऽक्षो नतांशाः ॥ तद्दिग्द्व्यंशा वर्गितश्चेद्द्वि-कोर्ध्वोऽधोऽसौ द्व्यूनः खण्डितस्तद्युतः सः ॥१॥ सार्को हारः स्यात्त्रिभोनोदयार्कविश्लेषांशांशांशहीनघ्नशक्राः ॥ हाराप्ताः स्याल्लम्बनं नाडिकाद्यं तिथ्यां स्वर्णं वित्रिभेऽर्काधिकोने ॥ २ ॥

दर्शान्ते, लग्नम्, त्रिभोनम्, पृथक्स्थम् (कार्य्यम्) तत्क्रान्त्यंशैः, संस्कृतः, अक्षः, नतांशाः, स्युः । तद्द्विद्व्यंशः, वर्गितः, सन् , चेत्, द्विकोर्ध्वः, (स्यात्, तदा), असौ, अधः, (स्थाप्यः), (ततः,) द्व्यूनः, सन् खण्डितः, (कार्य्यः, यत्, फलम्, स्यात) तद्युतः, सः सार्कः, हारः, स्यात् । त्रिभोनोदयार्कविश्लेषांशांशांशहीनघ्नशक्राः, हाराप्ताः, नाडिकाद्यम्, लम्बनम् स्यात् । वित्रिभे, अर्काधिकोने, (सति) तिथ्याम् स्वर्णम् (कार्यम्) ॥ १ ॥ २ ॥

अमावस्याके अन्तरकी लग्न करे, उस लग्नमें तीन राशि घटा देय तब त्रिभोनलग्न होती है, तिस त्रिभोन लग्नसे क्रान्ति लाकर, तिस त्रिभोनका और अक्षांशोंका संस्कार करके नतांश लावे

तदनन्तर नतांशोंमें बाईसका भाग देय तब जो लब्धि होय उसका वर्ग करे तब जो वर्गफल होय वह यदि दोसे अधिक होय तो उसको नीचे अलग एक स्थानमें स्थापनकर देय, तदनन्तर उसमें दो घटाकर जो शेष रहे उसका आधा करके जो अङ्क हों उनको अलग स्थानमें लिखे हुए अङ्कोंमें युक्त कर देय तब जो अङ्कयोग होय उसमें बारह अंश युक्त करदेय तब हार होता है। स्पष्ट रवि और त्रिभोन लग्न इन दोनोंका अन्तर करके जो अंश आवें उनमें दशका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको चौदहमें घटावे तब जो शेष रहे उसको पूर्वोक्त लब्धिसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें पूर्वोक्त हारका भाग देय तब जो लब्धि हो वह घटिकादिलम्बन होता है, वह लम्बन यदि त्रिभोन लग्न स्पष्ट सूर्यकी अपेक्षा अधिक होय तो धन और कम होय तो ऋण होता है। दर्शान्तकी घटिकाओंमें लम्बनको धन ऋण करे तब लंबनसंस्कृत दर्शान्त होता है, यह सूर्य-ग्रहणका मध्य काल होता है॥ १॥ २॥

उदाहरण-संवत् १६६७ शाके १५३२ मार्गशीर्ष कृष्णा अमा-वस्या ३० बुधवार घटी १२ प. ३६ मूल नक्षत्र ५५ घटी ५२ पल गण्डयोग २३ घटी ४५ पल इस दिन सूर्य्यग्रहणका पर्वकाल साधनेके निमित्त गणित करते हैं।

चक्र८ अहर्गण १००५ अधिमास १ अवम १५ प्रातःकालीन मध्यम रवि ८ राशि ५ अं ३९ कला २५ विकला। मध्यमचन्द्र ८ राशि १ अंश १० कला ३३ विकला। चन्द्रोच्च ८ राशि १७ अंश २७ कला २१ विकला। राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १९ वि०।

इष्टकालीन मध्यमरवि ८ राशि ५ अंश ५१ कला ५० विकला। मध्यम चन्द्र ८ राशि ३ अंश ५६ कला ३४ विकला। चन्द्रोच्च ८ राशि १७ अंश २८ कला ४५ विकला। राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १९ विकला।

स्पष्टीकरण-रविका मन्दकेन्द्र ६ राशि १२ अंश ८ कला १० विकला, मन्दफल ऋण ० अंश २७ कला ५० विकला । मन्दस्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २४ कला ० विकला । अयनांश १८ अंश ८ कला । चरखण्ड ५७ । ४६ । १९७ चर धन ११७ । चरसे संस्कृत किया हुआ रवि ८ राशि ५ अंश २५ कला ५७ विकला । गतिफल धन २ कला ७ विकला । स्पष्टगति ६१ कला १५ विकला । त्रिफलसंस्कृत चन्द्र ८ राशि ४ अंश १० कला ५३ विकला । मन्दकेन्द्र १३ अंश १७ कला ५० विकला । मन्दफल धन १ अंश ९ कला ४८ विकला । स्पष्ट चन्द्र ८ राशि ५ अंश २० कला ४१ विकला । गतिफल ऋण ६४ कला ५ विकला । स्पष्टगति ७२६ कला ३० विकला ।

अब रविचन्द्रसे गततिथि २९ आई । और अमावास्याकी एष्य घटी ० घ. २८ पल आई इनकी पञ्चाङ्गस्थ घटिका १२ । ३६ ओमें युक्त करा तब १३ घटी ४ पल यह दर्शान्त घटिका हुई, अर्थात दर्शान्तकालीन ग्रह लानेके निमित्त ० घ. २८ पल इसका चालन देकर लाए हुए ग्रह-स्पष्टरवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला । स्पष्टचन्द्र ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला । राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १८ विकला । विराहर्क ५ राशि २३ अंश ४५ कला ७ विकला ।

अब स्पष्टरवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला, लग्नभोग्यकाल ७३ पल । दर्शान्त १३ घटी ४ पल, इससे लाया हुआ लग्न ११ राशि २ अंश ४६ कला १७ विकला, इसमें ३ राशिको घटाया तब शेष रहा ८ राशि २ अंश ४६ कला १७ विकला यह त्रिभोन लग्न हुआ, इससे लाई हुई क्रान्ति दक्षिण २३ अंश ३८ कला १० विकला, इसका और अक्षांश दक्षिण २५ अंश ३६ कला ४२ विकलाका एक दिशा होनेके कारण योग करा तब ४९ अंश ४ कला ५२ विकला यह दक्षिण नतांश हुआ, इसमें २२ का भाग दिया

तब लब्धि हुई २ अंश १३ कला ५१ विकला, इसका वर्ग करा तब ४ अंश ५८ कला ३५ विकला हुआ, यह वर्ग देशकी अपेक्षा अधिक है इस कारण इसमें २ अंश घटाये तब शेष रहा २ अंश ५८ कला ३५ विकला इसमें २ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश २९ कला १७ विकला, इस लब्धिको वर्ग ४ । ५८ । ३५ में युक्त करा तब ६ अंश २७ कला ५२ विकला हुआ इसमें १२अं. युक्त करे तब १८ अंश २७ कला ५२ विकला यह हार हुआ ॥

फिर स्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला, त्रिभोन लग्न ८ राशि २ अंश ४६ कला, १७ विकला, इन दोनोंका अन्तर करा तब० राशि २ अंश ४० कला ८ विकला इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश १६ कला ० विकला, इसको १४ अंशमें घटाया तब शेष रहा १३ अंश ४४ कला ० विकला, इसको दशमांश लब्धि ० अंश १६ कला० विकलासे गुणा करा तब २ अंश २९ कला ४४ विकला हुआ इसमें हार १८ अंश २७ कला ५२ विकलाका भाग दिया तब घटिकादि लम्बन हुआ ऋण० घटी १३ पल, त्रिभोन लग्न सूर्यकी अपेक्षा कम है इस कारण यह ऋण है ।

दर्शान्त १३ घटी ४ पलमें लम्बन ० घटी ११ पलको ऋण करा तब १२ घटी ५३ पल यह म्बनसंस्कृत दर्शान्त हुआ ॥ १ ॥ २ ॥

अब लम्बनसंस्कृत व्यग्वर्क और चन्द्रशरसाधन लिखते हैं-

त्रिकुनिघ्नविलम्बनं कलास्त-
त्सहितोनस्तिथिवद्व्यगुः शरोऽतः ॥ ऽऽ ॥

त्रिकुनिघ्नविलम्बनम्, कलाः, (स्युः) । तिथिवत्, व्यगुः, तत्सहितोनः, (कार्यः), अतः, शरः, (साध्यः) ॥ ऽऽ ॥

लम्बनको तेरहसे गुणा करके जो गुणनफल हो वह कला होती है, उन कलाओंको लम्बनके समान व्यग्वर्कमें धन अथवा ऋण करदेय, तब लम्बनसंस्कृत व्यग्वर्क होता है, तदनन्तर तिस लम्बनसंस्कृत व्यग्वर्कसे शरको साधन करे ॥ २२ ॥

उदाहरण लम्बन ० घटी ११ पल इसको १३ से गुणा करा तब कलादि गुणनफल हुआ २ कला २३ विकला इसको व्यगु ५ राशि २३ अंश ४५ कला ७ विकलामें लम्बनको दर्शान्तमें ऋण करा था, इस कारण ऋण करा तब ५ राशि २३ अंश ४२ कला ४४ विकला, यह लम्बनसंस्कृत व्यग्वर्क हुआ इसके भुजांश करे ६ अंश १७ कला १६ विकला हुआ इसको ११ से गुणा करा तब ६९ अंश ९ कला ५६ विकला यह गुणनफल हुआ, इसमें ७ का भागदिया तब लब्धि हुई ९ अंगुल ५२ प्रतिअंगुल, यह चन्द्रशर हुआ, लम्बनसंस्कृत व्यग्वर्कके मेषादि होनेके कारण उत्तर है ॥२२॥
अब लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्न और नतांशसाधनरीति लिखते हैं—

अथ षड्गुणलम्बनं लवास्तै-
र्युगयुग्वित्रिभतः पुनर्नतांशाः ॥ ३ ॥

अथ, षड्गुणलम्बनम्, लवाः, (स्युः) । तैः, युगयुग्वित्रिभतः, नतांशाः, (साध्याः) ॥ ३ ॥

लम्बनको ६ से गुणा करके जो गुणनफल होय उसको अंशादि जाने और उन अंशोंको लम्बनके समान त्रिभोन लग्नमें धन अथवा ऋण करे तब लम्बन संस्कृत त्रिभोन लग्न होता है, तदनन्तर उससे क्रान्ति लाकर उस क्रान्तिका और अक्षांशोंका संस्कार करे तब लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश होते हैं ।

उदाहरण—लम्बन ० घटी ११ पलको ६ से गुणा करा तब अंशादि गुणनफल हुआ १ अंश ६ कला इसको त्रिभोन लग्न ८ राशि २ अंश ४६ कला १७ विकलामें लम्बनको दर्शान्तमें ऋण करा था, इसको ऋण करा तब शेष रहा ८ राशि १अंश ४०कला १७ विकला, यह लम्बन संस्कृत त्रिभोनलग्न हुआ, इससे लाई हुई क्रान्ति दक्षिण २३ अंश ३४ कला २५ विकला इनका और अक्षांश दक्षिण २५ अंश २६ कला४२विकलाका एक दिशा होनेके कारण योग करा तब ४९ अंश १ कला १७ विकला यह लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न दक्षिण नतांश हुए ॥ ३ ॥

अब नति और स्पष्ट शर लानेकी रीति लिखते हैं—

दशहृतनतभागोनाहताष्टेन्दवस्तद्रहितसधृतिलिप्तैः षड्भिराप्तास्त एव ॥ स्वदिगिति नतिरेतत्संस्कृतः सोऽङ्गुलादिः स्फुट इषुरमुतोऽत्र स्यात्स्थितिच्छन्नपूर्वम् ॥ ४ ॥

दशहृतनतभागोनाहताष्टेन्दवः, (पृथक्, स्थाप्याः) ते, एव, तद्रहितसधृतिलिप्तैः, षड्भिः आप्ताः, इति, स्वदिक्, नतिः, (स्यात्) एतत्संस्कृतः सः, अत्र, स्फुटः अंगुलादिः, इषुः, (स्यात्), अमुतः, स्थितिच्छन्नपूर्वम्, स्यात् ॥ ४ ॥

लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांशमें दशका भाग देय तब जो कला आदि लब्धि होय उसको १८ कलामें घटावे, तब जो शेष रहे, उसे पूर्वोक्त लब्धिसे गुणा करे, तब जो गुणनफल हो उसको ६ अं. १८ कलामें घटावे, जो शेष रहे उसे कलात्मक मान

कर उसका तिस कलादि गुणाकारमें भाग देय, तब जो लब्धि होय यह अंगुल आदि नति होती है. और उस नतांशके अनुसार दक्षिण अथवा उत्तर होती है। तदनन्तर नतिका और शरका संस्कार करे, तब स्पष्ट शर होता है, इस स्पष्ट शरसे ही चन्द्रग्रहणाधिकारमें कही हुई रीतिसे सूर्य्य-चन्द्र-सुर्य्यचन्द्रके बिम्ब-मानैक्यखण्ड-ग्रास-मध्यस्थिति और शेष बिम्ब साधे ॥ ४ ॥

उदाहरण—लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न नतांश ४९ क. १७ वि. में १० का भाग दिया तब लब्धि हुई४क.५४वि.इस लब्धिको १८ कलामें घटाया तब शेष रहे १३ क. ६ वि. इसको पूर्वोक्त लब्धि ४ क. ५४ वि. से गुणा करा तब ६४ क. १८ वि. हुए इसको ६अं.१८क. में घटाया तब कलादिशेष रहे५ क.१३वि.४९ प्र. वि. इसका पूर्वोक्त गुणनफल ६४ क. ११ वि. में भाग दिया तब लब्धि हुई १२ अं. १६ प्र. अं. यही अंगुलादि गति हुई । लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न नतांश दक्षिण हे, इस कारण नति भी दक्षिण हुई अब दक्षिण नति १२ अं. १६ प्र. अं. और उत्तर शर १ अं० ५३ प्र. अं. इन दोनोंका संस्कार (अन्तर) करा तब २ अं. २३ प्र. अं. यह स्पष्ट शर हुआ ॥

"गतिर्द्विघ्नीत्यादि" रीतिके अनुसार सूर्य्यगति ६१ कला १५ विकला को २ से गुणा करा तब १२ क. ३० विकला हुआ इसमें ११ भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंगुल ८ प्रति अंगुल यही सूर्य्य बिम्ब हुआ।

और ७२६ कला ३० विकलामें ७४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ९ अंगुल ४९ प्रतिअंगुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ।

बिम्बैक्य २० अंगुल ५७ प्रतिअंगुलमें २ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० अंगुल २८ प्रति अंगुल यह मानैक्यखण्ड हुआ इस मानैक्यखण्ड १० अं. २८ प्र. अं. में शर स्पष्ट २ अं. २३ प्र.

अं. को घटाया तब ८ अंगुल ५ प्रति अंगुल यह ग्रास हुआ। सूर्य्यबिम्ब हुआ ११ अंगुल ८ प्रतिअंगुल इसमें ग्रास ८ अंगुल ५ प्र. अं. को घटाया तब शेष रहा ३ अं. ३ प्र. अं. यह शेष बिम्ब हुआ।

मानैक्यखण्ड १० अं. २८ प्र. अं. और स्पष्ट शर २ अं. २३ प्र. अं. इन दोनोंका योग करा तब १२ अं. ५१ प्र. हुआ, इसको १० से गुणा करा तब १२८ अंगुल ३० प्र. अं. हुए इसको ग्रास ८ अं. ५ प्र. अं. से गुणा करा तब १०३८ अंगुल ४२ प्रतिअंगुल हुए, इसका वर्गमूल लिया तब ३२ अं. १४ प्र. मिला इसको ५ से गुणा करा तब १६१ अंगुल १० प्र० अं. हुए इसमें ६ का भाग दिया तब लब्धि हुई २६ अं. ५२ प्र. अं. इसमें चन्द्रबिम्ब ९ अं. ३९ प्र. अं. का भाग दिया तब लब्धि हुई २ घ. ४४ प. यही मध्यस्थिति हुई ॥ ४ ॥

अब स्पर्शलम्बन-मोक्षलम्बन-स्पर्शकाल और मोक्षकाल जाननेकी रीति लिखते हैं-

स्थितिरसहतिरंशा वित्रिभं तैः पृथक्स्थ
रहितसहितमाभ्यां लम्बने ये तु ताभ्याम् ॥
स्थितिविरहितयुक्तः संस्कृतो मध्यदर्शः
क्रमश इति भवेतां स्पर्शमुक्तयोस्तु कालौ॥ ५॥

स्थितिरसहतिः, अंशाः, (स्युः) । पृथक्स्थम्, वित्रिभम्, तैः, रहितसहितम्, (कार्य्यम्) । आभ्याम्, तु, ये, लम्बने, (ते,

साध्ये)। ताभ्याम्, स्थितिविरहितयुक्तः, मध्यदर्शः, संस्कृतः, (कार्य्यः,) । इति तु, क्रमशः, स्पर्शमुक्तयोः, कालौ, भवेताम् ॥५॥

मध्यस्थितिको छःसे गुणा करके जो अंशादि लब्धि होय उसको त्रिभोन लग्नमें घटावे तब स्पर्श त्रिभोन लग्न होता है, फिर उससे नतांश साधे तदनन्तर तिन नतांशोंसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हार साधे और दर्शान्तकालीन सूर्य्यकी मध्यस्थिति घटीकाओंका चालन ऋण करे तब वह स्पर्शकालीन सूर्य्य होता है. फिर स्पर्शकालीन सूर्य्य स्पर्श त्रिभोन लग्न और हार इनसे पूर्वोक्तरीतिके अनुसार लम्बन साधे वह स्पर्शकालीन लम्बन होता है इसी प्रकार मध्यस्थितिको ६ से गुणाकरके जो अंशादि लब्धि आवे उसे त्रिभोन लग्नमें युक्त करदेय तब वह मोक्षत्रिभोन लग्न होता है, और तिससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हार लावे और दर्शान्तकालीन सूर्यकी मध्य स्थितिकी घटिकाओंका चालन मिलावे, तब यह मोक्षकालीन होती है। फिर मोक्षकालीन सूर्य, मोक्ष त्रिभोनलग्न और हार इनसे लम्बन साधे तो वह मोक्षकालीन लम्बन होता है । दर्शान्त घटिकाओंमेंसे मध्यस्थितिकी घटिकाओंको घटावे जो शेष रहे उसमें स्पर्शकालीन लम्बन धन होय तो मिला देय और ऋण होय तो घटादेय. तब स्पर्श काल होता है । इसी प्रकार दर्शान्त घटिकाओंमें मध्यस्थितिको मिला देय तब जो अङ्क हों उनसे मोक्षकालीन लम्बनका संस्कार करे, तब मोक्षकाल होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण—मध्यस्थिति २ । ४४ को ६ से गुणा करा तब १६ अंश १४ कला हुए इसको त्रिभोन लग्न ८ रा० २ अं० ४६ क० ७ वि० में घटाया तब शेष रहे ७ रा० १६ अं० २२ कला १७ विकला, यह स्पर्शत्रिभोन लग्न हुआ । इससे साधी हुई

क्रान्ति दक्षिण २१ अंश २४ कला ३९ विकला, इसका अक्षांश दक्षिण २५ अं० २६ क० ४० वि० से संस्कार करा तब ४६ अं० ५१ क० १९ वि० यह दक्षिण नतांश हुए, इसमें २२ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अं० ७ क० इसका वर्ग ४ अं० २८ क० हुआ इसमें २ अंश घटाये तब २ अंश २८ कला रहा, इसका आधा १ अं० १४ कला हुआ, इसमें पूर्वोक्त वर्ग ४ अं० २८ क० को युक्त करा तब ५ अंश ४२ क० हुआ इसमें १२ अंश जोडे तब १७ अंश ४२ कला यह हार हुआ, दर्शान्तकालीन सूर्य ८ रा० ५ अं० २६ क० २५ वि० सूर्य स्पष्ट गति ६१ क० १५ वि० को २ । ४४ मध्य स्थितिसे गुणा करा तब १६७ क० २५ वि० हुए, इसमें ६० का भाग दिया तब २ क० ४७ वि० लब्धि हुई, इस लब्धिको दर्शान्त कालीन सूर्य ८ । ५ । २६ । २५ में घटाया तब ८ रा० ५ अंश २३ क० ३८ वि० स्पर्श कालीन सूर्य हुआ, इस-मेंसे स्पर्शकालीन त्रिभोन लग्न ७ रा० १६ अं० २२ क० १७ वि० को घटाया तब शेष रहे ० रा० १९ अं० १ क० २१ वि० इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अं० ५४ कला, इसको १४ अंशमें घटाया तब शेष रहे १२ अं० ६ क० इसको लब्धि १ अं० ५४ कलासे गुणा करा तब २२ अंश ५९ कला हुए इसमें हार १७ अं० ४२ क० का भाग दिया तब १ घ० १९ पल यह स्पर्श-कालीन लम्बन त्रिभोन लग्नकी अपेक्षा सूर्य अधिक है इस कारण ऋण है ॥

अब मोक्षकालीन लम्बन साधते हैं—यहाँ मध्यस्थिति २ घ० ४४ पलको ६ से गुणा करा तब १६ अंश २४ कला हुए, इसमें त्रिभोन लग्न ८ रा० २ अं० ४६ क० १७ वि० को युक्त करा

तब ८ राशि १९ अंश १० कला १७ वि० यह मोक्ष त्रिभोन लग्न हुआ, इससे साधी हुई क्रान्ति दक्षिण २३ अं० ४२ क. २७ वि. इससे अक्षांशों २५ अं. २६ क. ४२ विकलाका संस्कार करनेसे ४९ अं. ९ क० १० वि. यह नतांश दक्षिण हुए. इसमें २२ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अं. १४ क. इसका वर्ग ४ अं. ५९ कला हुआ, इसमें २ अंश घटाये तब शेष २ अं. ५९ कला रहा. इसका आधा १ अं. २९ कला हुआ, इसमें पूर्वोक्त वर्ग ४ अं. ५९ क. को युक्त करा तब ६ अं. २८ कला हुआ. इसमें १२ अं. युक्त करे तब १८ अंश २८ क. यह हार हुआ ॥

सूर्य्य स्पष्टगति ६१ क. १५ वि. को मध्य स्थिति २ घ. ४४ प. से गुणा करा तब १६७ क. २५ वि. हुआ इसमें ६० का भाग दिया तब लब्धि हुई २ क. ४७ वि. इसमें दर्शान्तकालीन सूर्य्य ८ रा. ५ अं. २६ क. २५ वि. को युक्त करा तब ८ रा. ५ अं २९ क. १२ वि. यह मोक्षकालीन सूर्य्य हुआ इसको मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न ८ रा० १९ अं० १० क० १७ वि० में घटाया तब० रा० १३ अं० ४१ क० ५ वि० शेष रहे इसमें १० का भाग दिया तब १ अं० २२ क० लब्धि हुई इसको १४ अंशोंमें घटाया तब शेष रहे १२ अंश ३८ क० इसको ऊपरकी लब्धि १ अं० २२ क० से गुणाकरा तब १७अं०१५क० हुए, इसमें हार१८अं०२८क० का भाग दिया तब लब्धि हुई०घ.५६प. यह मोक्षकालीन लंबन मोक्षकालीन सूर्यकी अपेक्षा मोक्षत्रिभोन लग्न अधिक है, इस कारण धन है।

दर्शान्त १३ घ० ४ प० में मध्यस्थिति २ घ० ४४ प० को घटाया तब १० घ० २० प० हुआ, इसमें स्पर्शकालीन लम्बन १ घ० १९ प० को घटाया तब ९ घ० १ प० यह स्पर्शकाल हुआ ॥

दर्शान्त १३ घ० ४ प० में मध्य स्थिति २ घ० ४४ प० को युक्त करा तब १५ घ. ४८ प. हुआ इसमें ०घ.५६ प.को युक्त करा तब १६ घ. ५४ प. मोक्षकाल हुआ ॥ ५ ॥

अब सम्मीलन और उन्मीलन तथा ग्रहणका वर्ण जाननेकी रीति लिखते हैं-

मर्दादेवं मीलनोन्मीलने स्तो ग्रासो नादेश्यो ऽङ्गुलाल्पो रवीन्द्वोः ॥ धूम्रः कृष्णः पिङ्गलोऽल्पार्द्धसर्वग्रस्तश्चन्द्रोऽर्कस्तु कृष्णः सदैव ॥ ६ ॥

एवम्, मर्दात्, मीलनोन्मीलने, स्तः । अंगुलाल्पः, रवीन्द्वोः, ग्रासः, न, आदेश्यः, अल्पार्द्धसर्वग्रस्तः; चन्द्रः, (क्रमात्), धूम्रः, कृष्णः, पिङ्गलः, (भवति), अर्कः, तु, सदा, एव, कृष्णः, (भवति) ॥ ६ ॥

यदि सूर्य्यग्रहण खग्रास होय तो खग्रास और बिम्बान्तर इनसे मर्दस्थिति साधे, तदनन्तर मर्दस्थितिको ६ से गुणा करके जो अंशादि लब्धि होय उसको त्रिभोनलग्नमें रहित और युक्त करे, तब खस्पर्शत्रिभोनलग्न और खमोक्षत्रिभोनलग्न होते हैं, फिर तिनसे स्पर्शकालीन लम्बन और खमोक्षकालीन लम्बन यह दोनों साधे, तदनन्तर दर्शान्तघटिकाओंमें मर्दस्थितिको रहित और युक्त करे और उसमें खस्पर्शकालीन लम्बन और खमोक्षकालीन लम्बन इन दोनोंको धन और ऋण करे, तब सम्मीलनकाल और उन्मीलनकाल होते हैं। यदि सूर्य्यका अथवा चन्द्रमाका ग्रास अंगुलसे कम होय तो ग्रहण न कहै। यदि चन्द्र अल्पग्रस्त

होय तो धूम्रवर्ण यदि अर्द्धग्रस्त होय तो कृष्णवर्ण और यदि सर्वग्रस्त होय तो पिङ्गलवर्ण होता है और सूर्य्यग्रहणमें सूर्य्य तो निरन्तर कृष्णवर्ण होता है ॥ ६ ॥

अब इष्टकालीन ग्रास साधनेकी रीति लिखते हैं–

इष्टं द्विघ्नं छन्नक्षुण्णं स्पर्शान्त्यान्तर्नाडीभक्तम् । रूपार्धेनोपेतं विद्यादिष्टे कालेऽर्कस्य ग्रासम् ॥ ७ ॥

द्विघ्नम्, छन्नक्षुणम्, स्पर्शान्त्यान्तर्नाडीभक्तम्, रूपार्द्धेन, उपेतम्, इष्टे, काले, अर्कस्य ग्रासम्, विद्यात् ॥ ७ ॥

इष्टघटिकाओंको दोसे गुणा करे, तब जो गुणनफल हो उसे ग्राससे गुणा करे, तब जो गुणनफल होय उसमें स्पर्शकाल और मोक्षकालके शेष अर्थात् पर्वकालकी घटिकाओंका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि होती है, उसमें ० अंगुल ३० प्र. अं. मिला देय तब इष्टकालीन ग्रास होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण–इष्टघटी १ इसको २ से गुणा करा तब २ हुए, इसको ग्रास ८ अंगुल ६ प्रति अंगुलसे गुणा करा तब १६ अंगुल २१ प्रतिअंगुल हुए । फिर मोक्षकाल १६ घ. ४४ प. और स्पर्शकाल ९ घ. ३ प. इन दोनोंका अन्तर करनेसे शेष रहा पर्वकाल ७ घ. ४१ प. इसका १६ अं. १२ प्रति अं. में भाग दिया तब लब्धि हुई २ अंगुल ६ प्रति अं. इसमें ३०

प्रतिअंगुल मिलावे तब २ अंगुल ३६ प्रतिअंगुल यह इष्टकालीन ग्रास हुआ ॥

चन्द्रग्रहणके विषे कही रीतिके अनुसार अयन-वलन-मध्यनत-अक्षजवलन-वलनांघ्रि-ग्रासांघ्रि और खग्रासांघ्रि यह साधकर तिससे ग्रहणका मध्यस्पर्श और मोक्ष किस ओरसे होगा, इसका परिलेख अर्थात् आकृति निकाले ॥

उदाहरण—लम्बनसंस्कृत तिथि १२ घ. ५३ प. लम्बन-संस्कृततिथिकालीन रवि ८ रा. ५ अं. २६ क. १४ वि. इसमें ३ रा. युक्त करीं तब ११ रा. ५ अं. २६ क. १४ वि. इसमें अयनांश १८ अं. ८ क. युक्त करे तब ११ रा. २३ अं. ३४ क. १४ वि. हुआ, इससे मिले अयनवलन दक्षिण १ अंगुल ३० प्रति अंगुल, अब १५ घटीमें चर १ घ. ५७ पलको घटाया तब शेष रहा १३ घ. ३ पल यह दिनार्द्ध और ग्रहणमध्यकाल १२ घ ५३ पल इनसे लाया हुआ पूर्वनत ० घ. १० प. हुआ, इसमें ५ का भाग दिया तब ० रा. २ अं. ० क. ० वि. इससे " अस्मान्नगशरेन्दुमितैरित्यादि " रीतिके अनुसार वलन हुआ ० अं. १४ प्र. अं. इसको पलभा ५ अं. ४५ प्र. अंश से गुणा करा तब १ अं. २० प्र. अं. हुए, इसमें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अं. १६ प्र. अं. अक्षज वलन पूर्वनत है, इस कारण उत्तर और अयन वलन दक्षिण १ अंगुल ३० प्रतिअंगुल इन दोनोंका संस्कर करनेसे दक्षिण १ अंगुल १४ प्रतिअंगुल हुए इसमें ६का भाग दिया तब ० अं० १२ प्रतिअं० यह दक्षिण वलनांघ्रि हुए। ग्रास ८ अं० ६ प्र. अं. को ६० से गुणा करा तब ४८६ हुए, इसमें मानैक्य

खण्ड १० अंगुल २८ प्र. अं. का भाग दिया तब लब्धि हुई ४६ अंगुल २५ प्र. मु. अं. इसका वर्गमूल हुआ ६ अं. ४८ प्र. अं. यह ग्रासांघ्रि हुए ॥ ७ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयसंस्कृत-विद्यालयप्रधानाध्यापक--पण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसा-न्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंस श्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितःसूर्यग्रह-णाधिकारः समाप्तिमितः ॥६॥

अथ मासगणाद्ग्रहणद्वयसाधनाधिकारो व्याख्यायते ।

अथ मासगणात्सुलघुक्रियया ग्रहणद्वयसिद्धि-कृतेऽभिदधे ॥ स्फुटसूर्यविपाततिथींश्च वपुर्ग्रस-नादिविशेषचमत्कृतये ॥ १ ॥

अथ, विशेषचमत्कृतये, लघुक्रियया, मासगणात् , ग्रहणद्वयसिद्धि-कृते, स्फुटसूर्यविपाततिथीन् , वपुः, ग्रसनादि, च, अभिदधे ॥ १ ॥

पुरुषोंका अत्यन्त चमत्कार होय और सरलरीतिसे मास-गणसे दोनों ग्रहण सिद्ध हों इस कारण स्पष्टरवि, व्यग्वर्कतिथि, बिम्ब और ग्रासादिका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

अब ध्रुवाङ्कोंको कहते हैं—

भानोः खम्भूः खाब्धयोऽयं ध्रुवः स्याच्छैलाः
क्वर्का राशिपूर्वो व्यगोः स्यात् ॥ वृत्तस्याङ्का भूर-
साश्चाथ तिथ्या वाराद्यस्याक्षाःखगास्तर्करामाः २

खम्भू, भूः, खाब्धयः, अयम्, भानोः, ध्रुवः, स्यात् । शैलाः, कर्काः, राशिपूर्वः, व्यगोः (ध्रुवः), स्यात् । अङ्काः, भूः, रसाः, च वृत्तस्य, (ध्रुवः, स्यात्) अथ अक्षाः, खगाः, तर्करामाः, तिथ्यः, वाराद्यस्य, (ध्रुवः, स्यात्) ॥ २ ॥

ख कहिये शून्य भू कहिये एक, खाब्धि कहिये चालीस यह रविका ध्रुवाङ्क है शैल कहिये सात, कु कहिये एक, अर्क कहिये बारह व्यगु कहिये व्यग्वर्कका

ध्रुवांककोष्टक.

नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	७	९	५ वार
अंश	१	१	१	९ घटी
कला	४०	१२	६	३६ पल
विकला	०	०	०	० विप.

राश्यादि ध्रुवाङ्क हैं,और अंक कहिये नौ भू कहिये एक रस कहिये छः यह वृत्त कहिये चन्द्रमाके मन्दकेन्द्रका ध्रुवाङ्क है और अक्ष कहिये पांच, खग कहिये नौ, तर्कराम कहिये छत्तीस यह तिथि-वारादि कहिये शाकेके आरम्भमें जो वार हो उससे आए हुए वारादिका ध्रुवाङ्क है ॥ २ ॥

अब क्षेपकाङ्क कहते हैं-

क्षेपो भाद्यः खं कृता भूदशोऽर्के रुद्राः शैला

नागचन्द्रा विपाते ॥ वृत्ते शून्यं वज्रिणश्चन्द्रबाणा वाराद्ये द्वौ व्यङ्घ्रिनन्दाब्धयः स्यात् ॥ ३ ॥

खम्, कृताः, भूदशः, अर्के, रुद्राः, शैलाः, नागचन्द्राः, विपाते, शून्यम्, वज्रिणः, चन्द्रबाणाः, वृत्ते, द्वौ, व्यङ्घ्रिनन्दाब्धयः, वाराद्ये, आद्यः, क्षेपः, स्यात, ॥ ३ ॥

खकहिये शून्य, कृत कहिये चार, भूदश कहिये इक्कीस यह सूर्यका राश्यादि क्षेपकाङ्क है और रुद्र कहिये ग्यारह-शैल कहिये सात, नागचन्द्र कहिये अठारह यह व्यगुका राश्यादि क्षेपकाङ्क है। और शून्य-वज्रिन् कहिये चौदह चन्द्रबाण कहिये इक्यावन यह वृत्तका क्षेपकाङ्क है और द्वौ कहिये दो-व्यंघ्रिनन्दाब्धि कहिये अड़तालीस और पैंतालीस-यह वारादिका क्षेपकाङ्क होता है ॥ ३ ॥

क्षेपकांककोष्टक.

नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	११	०	२ वार
अंश	४	७	१४	४८ घ.
कला	२१	१८	५१	४५ प.
विकला	७	०	०	० विप.

अब रविका ध्रुवोनक्षेपक, व्यगु, वृत्त और वारादि इनके ध्रुवयुक्त क्षेपक जाननेकी रीति लिखते हैं-

मासगणाज्जनितो रविरूनश्चक्रहतध्रुवकेन निजेन ॥ सङ्कलिता इतरेऽथ च ते स्युः क्षेपयुता निजमासि सितान्ते ॥ ४ ॥

मासगणात्, जनितः, रविः, निजेन, चक्रहतध्रुवकेन, ऊनः

(कार्य्यः) इतरे, (तेन), सङ्कलिताः, (कार्य्याः) अथ, च, ते, क्षेपयुताः, (सन्तः), निजमासि, सितान्ते, स्युः ॥ ४ ॥

रविका ध्रुवाङ्क लेकर उसे चक्रसे गुणा करे तब जो गणनफल होय उसको रविके क्षेपकाङ्कमें घटावे तब जो शेष रहें वह रविका ध्रुवोन क्षेपक होता है. उसको मासगणोत्पन्न रविमें मिलावे तब अभीष्ट मासकी पूर्णिमाके अन्तका रवि होता है ॥

व्यगु, वृत्त और वारादि इनके क्षेपक ध्रुवयुक्त क्षेपक करने हों तो उनके ध्रुवाङ्कोंको चक्रसे गुणा करके जो राश्यादि गुणनफल होय वह उसके क्षेपकाङ्कमें मिलावे, तब उनका अनुक्रमसे ध्रुवयुक्त क्षेपक होता है, उसको क्रमसे मासगणोत्पन्न व्यगु, वृत्त और वारादिमें युक्त कर देय तब अभीष्टमासका पौर्णमासीके अन्तका होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण–सम्वत् १६६९ शके १५३४ कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा १५ गुरौ घटी ३२ । ३३ भरणीनक्षत्र घटी २३ । १४ वज्रयोग घटी ४४ । ४४ इस दिन पञ्चांगमें चन्द्रग्रहण लिखा है इस कारण पर्वकाल साधनेके अर्थ गणित करते हैं–

शके १५३४ में १४४२ को घटाया तब शेष रहे ९२ वर्ष इसमें ११ का भाग दिया तब लब्धि चक्र ८ हुआ और शेष रहे ४ उनको १२ से गुणा करे तब ४८ हुए, इसमें गतमास ७ और युक्त करे तब ५५ मध्यममास हुआ, इसमें द्विगुणित चक्र१६और १० को युक्त करा तब ८१ हुए इसमें ३३ का भाग दिया तब लब्धि हुए २ इसमें मध्यम मासगण ५५ को युक्त करा तब ५७ यह मासगण हुआ ॥

अब रविके ध्रुवाङ्क ० रा. १ अं. ४० क. ० वि. को चक्र ८ से गुणा करा तब ० रा. १३ अं. २० क. वि. यह गुणनफल हुआ

इसको रविके क्षेपकाङ्क ० रा. ४ अं. २१ क. ० वि. में घटाया तब शेष रहे ११ रा. २१ अं. १ क. ० वि. यह रविका ध्रुवोनक्षेपक हुआ ॥

त्र्यशुके ध्रुवाङ्क ७ रा. १ अं. १२ क. ० वि. को चक्र ८ से गुणा करा तब ८ रा. ९ अं. ३६ क. ० वि. हुआ, इस गुणनफलको त्र्यशुके क्षेपकाङ्कको ११ रा. ७ अं. १८ क. ० वि. में युक्त करा तब ७ रा. १६ अं. ५४ क. ० वि. यह त्र्यशुका ध्रुवयुक्त क्षेपक हुआ ॥

वृत्तके ध्रुवाङ्क ९ रा. १ अं. ६ क. ० वि. को चक्र ८ से गुणा करा तब ० रा. ८ अं. ४ क. ० वि. हुआ, इस गुणनफलको वृत्तके क्षेपकाङ्क ० रा. १४ अं. ५१ क. वि. में युक्त करा तब ० रा. २३ अं. २९ क. ० वि. यह वृत्तका ध्रुवयुक्त क्षेपक हुआ ॥

वारादिके ध्रुवाङ्क ५ वार ९ घटी ३६ पलको चक्र ८ से गुणा करा तब ६ वार १६ घटी ४८ पल हुआ, इस गुणनफलको वारादिके क्षेपकाङ्क २ वार ४८ घटी ४५ पलमें युक्त करा तब २ वार ५ घटी ३३ पल यह वारादिक ध्रुवयुक्त क्षेपक हुआ ॥ ४ ॥

अब मध्यम रवि साधनेकी रीति लिखते हैं-

मासौघतो द्विगुणितान्नगषड्भिराप्त-
राश्यादिना रहितमासगणो रविः स्यात् ॥५५॥

द्विगुणितात् मासौघतः, नगषड्भिः, आप्तराश्यादिना, रहितमासगणः, रविः स्यात् ॥ ५५ ॥

मासगणको दोसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें ६७ सडसठका भाग देय तब जो राश्यादि लब्धि होय उसको मासगणमें घटावे तब मासगणोत्पन्न रवि होता है, उसमें रविका ध्रुवोनक्षेपक युक्त करदेय तब मध्यमरवि होता है ॥ ५५ ॥

उदाहरण–मासगण ५७ को २ से गुणा करा तब ११४ हुए इसमें ६७ का भाग दिया तब राश्यादि लब्धि हुई १ रा. २१ अं. २ क. ४१ वि. इस लब्धिको मासगण ५७ राशिमें घटाया तब ७ रा. ८ अं. ५७ क १९ विकला यह मासगणोत्पन्न रवि हुआ, इसमें रविका ध्रुवोनक्षेपक ११ रा. २१ अं. ३ क. ० वि. युक्त करा तब ६ रा. २९ अं. ५८ क. १९ वि. यह मध्य रवि हुआ ॥ऽऽ॥

अब व्यगु साधनेकी रीति लिखते हैं–

मासा गृहाणि विनिजत्रिलवाश्च तेंऽशा
मासाङ्घ्रितुल्यकलिकाः स्युरयं विपातः ॥५॥

मासाः, गृहाणि, विनिजत्रिलवाः, ते, अंशाः, च, मासाङ्घ्रितुल्यकलिकाः, स्युः, अयम्, विपातः, (स्यात्) ॥ ५ ॥

जो मासगण हैं वही राशि हैं और मासगणमें तीनका भाग देकर जो लब्धि हो वह अंशादि होते हैं उसको मासगणमें घटावे तब जो शेष रहें वह अंश होते हैं। तथा मासगणमें ४ का भाग देकर जो लब्धि हो वह कला होती है, इन सबको इकट्ठा करके मासगणोत्पन्न राश्यादि व्यगु होता है. उसमें व्यगुका ध्रुवयुक्त क्षेपक युक्त करदेय तब व्यगु होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण–मासगण जो ५७ वही हुई राशि और मासगण ५७ में दिया तीनेका भाग तब लब्धि हुई १९ इसको मासगण ५७ में घटाया तब ३८ यह अंश हुए और मासगण ५७ में दिया ४ का भाग तब लब्धि हुई १४क. १५ वि. इस प्रकार १० राशि ८ अंश १४ कला १५ विकला यह मासगणोत्पन्न व्यगु हुआ इसमें व्यगुका ध्रुवयुक्त क्षेपक ७ रा. १६ अंश. ५४ क. ० वि. को युक्त

करा तब ५ राशि २५ अंश ८ कला १५ विकला यह राश्यादि व्यगु हुआ ॥ ५ ॥

अब वृत्त साधनेकी रीति लिखते हैं-

स्वाद्र्यंशकेन रहिता मनुतष्टमासा
वृत्तं गणाभ्रकुलवाढ्यलवं गृहादि ॥ ऽऽ ॥

मनुतष्टमासाः, स्वाद्र्यशकेन, रहिताः, गणाभ्रकुलवाढयलवम् गृहादि, वृत्तम्, (स्यात्) ॥ ऽऽ ॥

मासगणमें चौदहका भागदेय तबजो लब्धिहोय उससे जो शेष रहे उसमें सातका भाग देय तब राश्यादि लब्धि मिले उसको राश्यात्मक शेष समझे और पहली लब्धिमें घटा देय तब जो शेष रहे उसमें, मासगणमे दशका भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय सो युक्त कर देय तब मासगणोत्पन्न वृत्त होता है, उसमें वृत्तका ध्रुवयुक्त क्षेपक मिला देय तब जो राश्यादि अङ्कयोग हो वह वृत्त होता है ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण-मासगण ५७ में १४का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ शेष रहे १इसके अंश करके ३० अंशमें ७ भाग दिया तब लब्धि हुई ४ अंश शेष रहा २ इसकी कला करके १२० इसमें ७ का भाग दिया तब लब्धि हुई १७ कला और शेष रहा १ इसकी विकला करके ६० इसमें ७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ८ विकला इस प्रकार ४ अंश १७ कला ८ विकला इसको शेष १ में घटाया तब शेष रहा ० रा. २५ अं. ४२क.५२वि. इसमें मासगण ५७ में १० का भाग देनेसे प्राप्त हुई लब्धि ५ अंश. ४२ क. ० वि. को युक्त करा तब १ रा. १ अंश २४ कला ५२ विकला यह मास-

गणोत्पन्न वृत्त हुआ, इसमें वृत्तका ध्रुवयुक्त क्षेपक ० रा. २३ अं. ३९ क. ० वि. को युक्त करा तब १ रा. २५ अं. ३ क. ५२ वि. यह वृत्त हुआ ॥ ८ ॥

अब वारादिसाधनेकी रीति लिखते हैं-

स्वार्धान्विता दिनमुखं मनुतष्टमासा
मासौघतो दशगुणाद्गुणाग्नियुक्तम् ॥ ९ ॥

मनुतष्टमासाः, स्वार्द्धान्विताः (सन्तः), दशगुणात्, मासौघतः अगुणाग्नियुक्तम्, दिनमुखम्, (स्यात्) ॥ ९ ॥

मासगणमें चौदहका भाग देय तब जो शेष रहे उसको तीन से गुणा करनेसे जो गुणन फल होय उसमें दो का भाग देय तब जो लब्धि होय और मासगणको दशसे गुणा करके तीनसौ सत्ताइसका भाग देनेसे जो लब्धि होय इन दोनोंका योग कर लेय तब मासगणोत्पन्न वारादि होता है, इसमें वारादि ध्रुवयुक्त क्षेपक मिला देय तो वारादि होता है ॥ ९ ॥

उदाहरण—मासगण ५७ में १४ का भाग दिया तब लब्धि हुए ४ और शेष बचा १ इस शेष १ को ३ से गुणा करा तब तीन हुए इससे २ का भाग दिया तब लब्धि १ वार ३० घटी० प. और मासगण ५७ को १० से गुणा करा तब ५७० हुए इसमें ३२७ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ वार ४४ घटी ३५ पल इसमें ऊपर की लब्धि १ वार ३० घटी० प. को युक्त करा तब ३ वार १४ घ० ३५ पल यह मासगणोत्पन्न वारादि हुआ. इसमें वारादिके ध्रुवयुक्त क्षेपक २ वार २५ घ. ३३ पलको युक्त करा तब ५ वार २० घटी ८ पल यह वारादि हुआ ॥ ९ ॥

अब पक्षचालन लिखते हैं—

रवौ पाक्षिकं चालनं खेन्द्रदेवा विपाते नभो-
बाणचन्द्रा नखाश्च ॥ षडर्का युगाक्षा गृहाद्यं च
वृत्ते दिनाद्येनभोक्षाब्धयो बाणबाणाः ॥ ७ ॥

खेन्द्रदेवाः, रवौ, नभः, बाणचन्द्राः, नखाः, च, विपाते षट्, अर्काः, युगाक्षाः, वृत्ते, गृहाद्यम्, पाक्षिकम्, चालनम्, (स्यात्), नभः, अक्षाब्धयः, बाणबाणाः, दिनाद्ये, (चालनम्, भवति) ॥७॥

पाक्षिकचालन.				
नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	०	६	०
अंश	१४	१५	१२	० वार
कला	३३	२०	५४	४५ घ.
विकला	०	०	०	५५ प.

ख कहिये शून्य. इन्द्र कहिये चौदह, देव कहिये तैंतीस यह रविमें और नभ कहिये शून्य बाणचन्द्र कहिये पन्द्रह नख कहिये बीस यह व्यगुमें और षट् कहिये छः, अर्क कहिये बारह, युगाक्ष कहिये चौवन यह वृत्तमें पाक्षिक चालन होता है और नभ कहिये शून्य, अक्षाब्धि कहिये पैतालिस, बाणबाण कहिये पचपन, यह वारादिमें पाक्षिक चालन होता है ॥ ७ ॥

शरा वेदपक्षा भुजङ्गाग्नयोऽर्के व्यगौ षट् कृताः कुश्च षाण्मासिकं स्यात् ॥ शरा वार्धयस्त्रीषवो भादि वृत्ते दिनाद्ये तिथेद्रौ भवा भूर्दिनाद्यम् ॥ ८ ॥

शराः, वेदपक्षाः भुजङ्गाग्नयः, अर्के, षट्, कृताः, कुः, च, व्यगौ शराः, वार्धयः, त्रीषवः; वृत्ते. आदि षाण्मासिकम्. (चालनम्) स्यात् द्वौ भवाः भूः तिथेः दिनाद्ये दिनाद्यम्, (स्यात्) ॥ ८॥

षाण्मासिकचालन.				
नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	५	६	५	०
अंश	२४	४	४	२ वार
कला	३८	१	५३	११ घटी
विकला	०	०	०	१ प.

शर कहिए पांच, वेद पक्ष कहिये चौबीस. भुजंगाग्नि कहिये अड़तीस यह रविमें और षट् कहिये छः, कृत कहिये चार, कु कहिये एक यह व्यगुमें और शर कहिये पांच, वार्द्धि कहिये चार तथा त्रिषु कहिये तिरपन यह वृत्तमें राश्यादि षाण्मासिक चालन होता है और द्वौ कहिये दो, भव कहिये ग्यारह, भू कहिये एक यह तिथि के वारादिका वारादिचालन होता है ॥ ८ ॥

यदि पाक्षिक कहिये १५ दिनका चालन देना होय तो उसमें इतना ध्यान रखनाचाहिये कि रवि,व्यगु,वृत्त और वारादियहसब अभीष्ट मासके दर्शान्तके करने होंय तो इन सबमें पाक्षिक चालन युक्त कर देय और यह सब अभीष्ट माससे पहिले दर्शान्तके करने होय तो इन सबमें पाक्षिक चालन घटा देय तब षाण्मासिक चालनका यह उपयोग होता है ॥

अब तिथ्यन्तमें वारादिरवि और वृत्तके साधनेकी रीति लिखतेहैं-

अभिमततिथिसिद्ध्यै प्राक्परे यास्तु तिथ्यः
स्वयुगरसलवोनाश्चालनं स्याद् दिनाद्ये ॥

स्वयुगगुणलवोनाः स्याल्लवाद्ये दिनेशे
स्वगुणनवलवोनाः विश्वनिघ्नाश्च वृत्ते ॥ ९ ॥

याः, प्राक्, परे, तिथ्यः, (स्युः), (ताः), अभिमततिथिसिद्ध्यै, स्वयुगरसलवोनाः, दिनाद्ये, चालनम्, स्यात् । स्वयुगगुणलवोनाः, (ताः), दिनेशे, लवाद्यम्. (चालनम्, स्यात्) स्वगुणनवलवोनाः, विश्वनिघ्नाः, च, (ताः), वृत्ते, (चालनम्), स्यात् ॥ ९ ॥

इष्ट तिथि और पौर्णिमा इनके मध्यकी जो अन्तरित तिथि हों उनमें चौसठका भाग देकर जो लब्धि हो उसको अन्तरित तिथिमें घटा देय तब जो शेष रहे उसको वारादि शेष पौर्णिमाके वारादिमें धन अथवा ऋण करे, तब इष्टतिथिका वारादि होता है और उस अन्तरित तिथिमें चौतीसका भाग देकर जो लब्धि हो उसको अन्तरित तिथिमें घटा देय तब जो शेष रहे उसको अंशादि शेष मध्यमरविमें धन अथवा ऋण करे, तब इष्टतिथिका रवि होता है और अन्तरित तिथिको तेहरसे गुणा करे तब जो गुणफल हो उसमें तिरानवेका भाग देय तब जो लब्धि हो उसको उपरोक्त गुणनफलमें घटा देय तब जो शेष रहे उसको वृत्तमें धन अथवा ऋण करे तब इष्टतिथिका वृत्त होता है। यदि लाई हुई इष्टतिथि शुक्लपक्षकी होय तो ऋण करे और कृष्णपक्षकी होय तो धन करे ॥ ९ ॥

अब तिथिसाधनके निमित्त वृत्तफल और रविमन्दकेन्द्रफल साधनेकी रीति लिखते हैं—

अत्यष्ट्यष्टिवृषार्कगोशरदृशः खण्डानि तैर्वृ-

त्तदोर्भागत्रीन्दुलवप्रमैक्यमगतघ्नोच्छिष्टविश्वांश-
युक् ॥ प्राग्वत्स्यात्स्वमृणं फलं त्विति रवेः केन्द्रा-
द्यदन्यच्च तद्व्याप्तं स्वाङ्गलवोनितं कुरु तयोः
कार्य्या पुनः संस्कृतिः ॥१०॥

अत्यष्टयष्टिवृषार्कगोशरदृशः, खण्डानि, स्युः, तैः, वृत्तदोर्भागत्री-
न्दुलवप्रमैक्यम्, (कृत्वा), अगतघ्नोच्छिष्टविश्वांशयुक्, प्राग्वत्,
स्वम्, ऋणम, फलम्, स्याम् । इति, तु, अन्यत्, च, केन्द्रात्,
रवेः, यत, फलम् , (तत्), (साध्यम्) । तद्व्याप्तम्, स्वांगलवोनि-
तम् , कुरु, पुनः, तयोः, संस्कृतिः, कार्य्या ॥ १० ॥

१	२	३	४	५	६	७
१७	१६	१४	१२	९	५	२

अत्यष्टि कहिये सतरह, अष्टि कहिये सोलह, वृष कहिये चौदह, अर्क कहिये बारह, शर ५ कहिये और दृश कहिये २ यह खण्ड हैं । वृत्तके भुजांशोंमें तेरहका भाग देकर जो लब्धि होय तत्प-रिमित अङ्कके नीचे लिखे हुए अंकोंके योगको लेय और शेषको अलग लिखे फिर लब्धिमें एक और मिलाकर जो अङ्क होय तत्परिमित अङ्कके नीचेके अङ्कको लेकर उससे अंशादि शेषको गुणा करे तब जो गुणनफल हो उसमें तेरहका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको पूर्वोक्त योगमें मिला देय, तब अंशादि वृत्तफल होता है, वह वृत्त मेषादि छः राशिके भीतर होय तो धन और तुला आदि छः राशिके भीतर होय तो ऋण जाने, तिसी प्रकार रविमन्द

केन्द्रके भुजांशोंसे वृत्तफलके अनुसार फल लाकर उसको पांचसे गुणा करे तब जो गुणन फल होय उसमें बारहका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंशादि रविका मन्दफल होता है, वह रविमन्दकेन्द्र मेषादि छः राशिमें होय तो धन और तुलादि छः राशिमें होय तो ऋण होता है, तदनन्तर वृत्तफल और रविमन्दफल इन दोनोंका संस्कार करे ॥ १० ॥

उदाहरण—वृत्त १ रा. २५ अं. ३ क. ५२ वि. इसके भुजांश ५५ अं. ० क. ५२ वि. हुए, इसमें १३ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ और शेष बचे ३ अं. ३ क. ५२ वि. लब्धि जो चार ४ तत्परिमित अङ्कके नीचेके फलाङ्कके १२ तकके अङ्कों १७ । १६ । १४ । १२ । के योग ५९ को ग्रहण करा और लब्धि जो ४ उसमें १ और मिलाकर ५ के नीचेके फलाङ्क ९ से शेष ३ अं. ३ क. ५२ वि. को गुणा करा तब २८ अंश ३४ क. ४८ वि. हुए, इसमें १३ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अं. ७ क. १७ वि. इसमें चार फलाङ्कोंके योग ५९ को युक्त करा तब ६१ अं. ७ क. १७ वि. यह वृत्तफल, वृत्तके मेषादि होनेके कारण धन है ॥

रविमन्दोच्च २ रा. १८ अं. ० क. ० वि. में मध्यमरवि ६ रा. २९ अं. ५८ क. ० वि. को घटाया तब शेष रहा ७ रा. १८ अं. १ क. ४१ वि. यह रविमन्दकेन्द्र हुआ, इसके भुजांश ४८ अं. १ क. ४१ वि. हुए, इसमें १३ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३ और शेष रहा ९ अं. १ क. ४१ वि. । लब्धि परिमित कलाङ्कों १७ । १६ । १४ का योग हुआ ४७ और लब्धिमें १ मिलाकर ४ के नीचेके फलाङ्क १२ से बाकी ९ अं. १ क. ४१ वि. को गुणा करा तब १०८ अं. २० क. १२ वि. हुए, इसमें १३ का भाग

दिया तब लब्धि हुई ८ अं. २०. क. ० वि. इसमें तीन फलाङ्कोंका योग ४७ मिलाया तब ५५ अं. २० क. ० वि. हुए, इसको ५ से गुणा करा तब २७६ अं. ४० क. ० वि. हुए, इसमें १२ का भाग दिया तब लब्धि हुई २३ अं. ३ क. २० वि. रविमन्दफल मन्दकेन्द्र तुलादि होने के कारण ऋण है ॥

वृत्तफल धन ६१ अं. ७ क. १७ वि. में रविमन्दफल ऋण २३ अं. ३ क. २८ वि. को घटाया तब शेष रहा ३८ अं. ३ क. ५७ वि. यह फलद्वयसंस्कार हुआ ॥ १० ॥

अब हारसाधनेकी रीति लिखते हैं—

वृत्तैष्यदलाद्रसाप्तियुक्ता रहिताः कर्किमृगादिके च वृत्ते ॥ सगुणांशखवह्नयो हरः स्यादथ सूर्याच्चरमुक्तपूर्ववत्स्यात् ॥ ११ ॥

सगुणांशखवह्नयः, कर्किमृगादिके, वृत्ते, वृत्तैष्यदलात्, रसाप्तियुक्ताः, रहिताः,च,हरः, स्यात । अथ, सूर्यात्,उक्तपूर्ववत् चरम्, स्यात् ११

प्रथम जो एकाधिक वृत्तफलांक ग्रहण करा है उसमें छः का भाग देने से जो अंशादि लब्धि होय वह, यदि वृत्त कर्कादि कहिये तीन राशिसे लेकर नौ राशिपर्य्यन्त होय तो ३० अं. २० क. में युक्त कर देय और यदि वह वृत्त मकरादि कहिये नौ राशि से तीन राशिपर्यन्तहोय तो वह लब्धि ३० अं. २० क. में घटा देय तब हार होता है और सायन मध्यम रविसे पूर्वोक्तरीतिके अनुसार चर साधे ॥ ११ ॥

उदा०—एकाधिक वृत्तफलाङ्क ९में ६का भाग दियातब अंशादि लब्धि हुई १ अं. ३० क. इस लब्धिको वृत्त मकरादि होनेके

कारण ३० अं. २० क. में घटाया तब शेष रहा २८ अं. ५०क. यह हार हुआ ॥

मध्यम रवि ६ रा. २९ अं. ५८ क. १९ वि. इसमें अयनांश १८ अं. १० क. को युक्त करा तब ७ रा. १८ अं. ८ क. १९ वि. यह सायन रवि हुआ, इससे लाया हुआ चर ८४ सायन रवि तुलादि होनेसे धन है ॥ ११ ॥

अब स्पष्टतिथि साधनेकी रीति लिखते हैं—

नाड्यः स्युः फलसंस्कृतिर्दशहता हारोद्धृताऽथो चरं सायंलक्षणकं त्वथो विघटिकाः पश्चादृणं प्राग्धनम् ॥ स्वांघ्र्यूनान्तरयोजनान्यथ तिथिः स्पष्टा त्रिभिः संस्कृता तत्संस्कारघटीसमाश्च कलिका देया व्यगौ चोष्णगौ ॥ १२ ॥

फलसंस्कृतिः, दशहता, (ततः), हारोद्धृता (सती), नाड्यः स्युः । अथो, चरम्, सायंलक्षणकम्, (स्यात्), अथो, नु, स्वांघ्र्यूनान्तरयोजनानि, विघटिकाः, पश्चात् ऋणम्, प्राक्, धनम्, (स्यात्) अथ, च, त्रिभिः, संस्कृता, तिथिः, स्पष्टा, (स्यात्) तत्संस्कारघटीसमाः, कलिकाः व्यगौ, उष्णगौ च देयाः ॥ १२ ॥

फलद्वयसंस्कृतिको दशसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें हारका भाग देय तब जो कलादि लब्धि होय यह फलद्वयसंस्कृतके समान धन ऋण होती है, यह प्रथमफल कहाता है। पूर्वोक्तरीति के अनुसार लाये हुए चरमें साठका भाग देय

तब जो लब्धि होय उसको कलादि जाने, इनको यदि चर ऋण होय तो धन और चर धन होय तो ऋण जाने, यह द्वितीयफल कहाता है। अपने नगरसे दक्षिणोत्तर रेखा जितनी योजन होय उसको तीनसे गुणाकरके चारका भागदेय तब जो विकला आदि लब्धि होय उसको यदि अपने नगरसे दक्षिणोत्तर रेखा पश्चिम होय तो ऋण और पूर्व होय तो धन जाने यह तृतीयफल होता है फिर इन तीनों फलों को इकट्ठा करके जो धन अथवा ऋण होय उसको मध्यतिथिके वारादिकी घटिकाओं में धन ऋण करे तब स्पष्ट तिथिकी घटिका होती है, तिन घटिकाओंकी तुल्य कलाओंको मध्यम रवि और व्यगुमें धन ऋण करे, तब मध्यम रवि व्यगु और स्पष्ट तिथ्यन्तके होते हैं ॥ १२ ॥

उदाहरण—फलद्वयसंस्कृति धन ३८ अं. ३ क. ५७ को १० से गुणा करा तब ३८० अंश ३९ क. ३० वि. गुणनफल हुआ, इसमें हार २८ अंश ५० कलाका भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई १२ कला १२ विकला यह प्रथम फलद्वय संस्कृतिके धन होनेके कारणसे धन है ॥

चरधन विकला ८४ में ६० का भाग दिया तब कलादि लब्धि हुई १ कला २४ विकला, यह द्वितीय फल चरके धन होनेके कारण से ऋण है ॥

देशान्तरयोजन ६४ को तीनसे गुणा करा तब १९२ हुए इसमें ४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४८ विकला यह तृतीय फल अपना नगर दक्षिणोत्तर रेखासे पूर्व होनेके कारण धन है।

अब प्रथम फल धन १२ कला १२ विकला और तृतीय

फल धन ० क. ४८ वि. इन दोनोंका योग हुआ १४० कला विकला इसमें द्वितीय फल ऋण १ कला २४ विकलाको घटाया तब १२ कला ३६ विकला यह एकीकरण धन है इस कारण तिथि के वारादि ५ वार २० घटी ८ पलमें युक्त करा तब ५ वार ३२ घटी ४४ पल अर्थात् गुरुवारमें पौर्णिमा ३२ घटी ४४ पल है, एकीकरणके समान कलाओंको अर्थात् १२ क. ३६ विकलाको मध्यम रवि ६ राशि २९ अंश ५८ कला १९ विकलामें युक्त करा तब ७ रा. ० अंश १० कला ५५ विकला यह स्पष्टतिथ्यन्तका मध्यम रवि हुआ और एकीकरणकी घटिकाओंकी तुल्य कलाओंको अर्थात् १२ कला ३६ विकलाओंको व्यगु ५ राशि २५ अंश ८ कला १५ विकलामें युक्त करा तब ५ राशि २५ अंश २० कला ५१ विकला यह स्पष्ट तिथ्यन्तका व्यगु हुआ ॥ १२ ॥

अब रवि और व्यगु इन दोनोंके स्पष्ट करनेकी रीति लिखते हैं-

स्वंस्वार्हल्लवमिनजं फलं युगघ्नं
लिप्तास्ताः कुरु च तयोः स्फुटौ च तौ स्तः॥१३॥

इनजम्, फलम्, स्वस्वार्हल्लवम्, युगघ्नम्, लिप्ताः (स्युः) ताः, च, तयोः, कुरु, (तदा), च, तौ, स्फुटौ, स्तः ॥ १३ ॥

मन्दफलको चारसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें चौबीसका भाग देय, तब जो लब्धि होय उसे गुणनफलमें युक्त कर देय, तब कलादि फल होता है उसको मन्दफलके अनुसार मध्यम रवि और व्यगुमें धन ऋण करे, तब रवि और व्यगु स्पष्ट होते हैं ॥ १३ ॥

उदाहरण-रविमन्दफल ऋण २३ अंश ३ कला २० विकला इसको ४ से गुणा करा, तब ९२।१३।२० हुए इसमें २४ का भाग

---

१ "वेदघ्नं तरणिफलं सस्विद्भागम्" इत्यपि पाठः

दिया तब लब्धि हुई ३।५०।३० इसमें गुणनफल ९२।१३।२० को युक्त करा तब ९६ कला ३ विकला हुई इसको मन्दफलके ऋण होनेके कारण ९६ कला ३ विकलाको मध्यम रवि ७ राशि ० अं. १० कला ५५ विकलामें ऋण करा अर्थात् घटाया तब ६ रा. २८ अंश २४ कला ५२ विकला यह स्पष्ट रवि हुआ। और ९६ कला ३ विकला अर्थात् १ अंश ३६ कला ३ विकलाको व्यगु ५ राशि २५ अंश २० कला ५१ विकलामें ऋण करा तब ५ राशि २३ अंश ४४ कला ४८ विकला यह स्पष्ट व्यगु हुआ ॥ ऽऽ ॥

अब चन्द्रबिम्ब साधनेकी रीति लिखते हैं-

वित्र्यंशद्वियुतहरः कृशानुभक्त-
श्चन्द्रस्य प्रभवति बिम्बमंगुलाद्यम् ॥ १३ ॥

वित्र्यंशद्वियुतहरः, कृशानुभक्तः, चन्द्रस्य, अंगुलाद्यम्, बिम्बम्, प्रभवति ॥ १३ ॥

हारमें एक अंश चालीस कला मिलाकर तीनका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि चन्द्रबिम्ब होता है ॥ १३ ॥

उदाहरण-हार २८ अं० ५० कलामें १ अंश ४० कलाको युक्त करा तब ३० अंश ३० कला हुआ, इसमें ३ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० अंगुल १० प्रति अंगुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ ॥ १३ ॥

अब सूर्यबिम्ब और भूभाबिम्ब साधनेकी रीति लिखते हैं-

खाब्ध्याप्तार्कागतदलयुतोनाः स्वकेन्द्रे कुलीर-
नक्राद्ये स्याद्द्वचरिलवभवा अंगुलाद्यर्कबिम्बम् ॥

हारो वीषुः स्वतिथिलवयुक्स्यात्कुभाऽस्यां धनर्णं
खाक्षाप्ताकांगतदलमथो नक्रकर्कादिकेंद्रे ॥ १४ ॥

स्वकेन्द्रे, कुलीरनक्राद्ये, (सति), व्यरिलभवाः, खाब्ध्याप्ताकांगत-दलयुतोनाः, (सन्तः), अंगुलादि, अर्कबिम्बम्, स्यात् । अथो, वीषुः, हारः, स्वतिथिलवयुक्, कुभा, स्यात् । अस्याम्, खाक्षाप्ताकांगतद-लम्, नक्रकर्कादिकेन्द्रे धनर्णम्, (कार्य्यम्, तत्, भूभाबिम्बम् भवति) ॥ १४ ॥

रविका मन्दफल साधनेके समयमें जो एकाधिक मन्दफ-लाङ्क आया था उसमें चालीसका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको अंगुलादि जाने और इसको रविमन्दकेन्द्र कर्कादि होय तो दश अंगुल पचास प्रतिअंगुलमें मिला देय और यदि रविमन्द केन्द्र मकरादि होय तो दश अंगुल पचास प्रतिअंगुलमें घटा देय तब अंगुलादि सूर्य्यबिम्ब होता है । हारमें पांच अंश घटाकर जो शेष रहे उसमें उसका पन्द्रहवां भाग युक्त करे, फिर उसमें यदि रविमन्दफलांकका पचासवां भाग, रविमन्दकेन्द्र कर्कादि होय तो घटा देय और रविमन्दकेन्द्र मकरादि होय तो युक्त करदेय तब अंगुलादि भूभाबिम्ब होता है ॥ १४ ॥

उदाहरण—एकाधिक मन्दफलांक १२ में ४० का भाग देना है इस कारण १२ को ६० से गुणा करा तब ७२० हुए इसमें ४० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंगुल १८ प्रति अंगुल इसको रविमन्दकेन्द्रके कर्कादि होनेके कारण धन होनेसे १० अंगुल ५० प्रति अंगुलमें युक्त करा तब ११ अंगुल८प्रतिअंगुल यह सूर्य्यबिम्ब हुआ, इसी प्रकार हार २८ अं० ५० कलामें ५ अंश घटाये तब २३ अंश ५० कला शेष रहा , इसमें २३ अंश ५० कलाका पन्द्रहवां

भाग १ अंश २५ कला युक्त करा तब २५ अंगुल २५ प्रतिअंगुल हुये. अब एकाधिक रविमन्दफलाङ्क १२ में ५० का भाग दिया तब ० अंगुल १४ प्र० अ० लब्धि हुई इसको रविमन्दकेन्द्र कर्कादि हैं इस कारण ऋण होनेसे २५ अंगुल २५ प्रतिअंगुलमें घटाया तब शेष रहा २५ अंगुल ११ प्र० अ० यह भूभाबिम्ब हुआ ॥ १४ ॥

अब ग्रहण सम्भव कहते हैं—

ज्ञात्वैवं तिथिपूर्वकं ग्रहणजं शेषं भवेत्पूर्ववत्
षण्मासैरुत पक्षवर्जितयुतैः पक्षेऽथवालोकयेत् ॥
अर्केन्दुग्रहणं व्यगोर्भुजलवैस्तिथ्यल्पकैरुष्णगो
र्याम्यैर्वस्वधरैर्द्युरात्रिगतिथौ चाहर्निशामाश्रिते
॥ १५ ॥

एवम्, तिथिपूर्वकम्, ज्ञात्वा, शेषम्, ग्रहणजम्, पूर्ववत्, भवेत्, अर्केन्दुग्रहणम्, षण्मासैः, उत, पक्षवर्जितयुतैः अथवा, पक्षे, आलोकयेत्। व्यगोः, भुजलवैः, तिथ्यल्पकैः, (सद्भिः, अर्केन्दुग्रहणम्, स्यात्) उष्णगोः, याम्यैः, (व्यगुभुजांशैः,) वस्वधरैः, (सद्भिः), अर्कग्रहणम्, (स्यात्) द्युरात्रिगतिथौ, (अर्थात्) दिनमानात्तिथौ, न्यूने सति, सूर्य्यग्रहणम्, स्यात्, अधिके, सति, चन्द्रग्रहणम्, स्यात्) अहर्निशम्, आश्रिते, (सति), च, (ग्रहणम्, ग्रस्तोदिते, ग्रस्तास्ते, वा स्यात्) ॥ १५ ॥

सूर्य्य और चन्द्रमा इन दोनोंका ग्रहण होने से ५½ साढ़े पांच महीनेके अनन्तर, अथवा ६ छः महीनेके अनन्तर अथवा ६½ साढ़े छः महीनेके अनन्तर अथवा १५ पन्द्रह दिनके अनन्तर ग्रहणका सम्भव है या नहीं यह देखे। व्यग्वर्कके भुजांश पन्द्रह अंशकी अपेक्षा कम हों तो सूर्य्य अथवा चन्द्रमाके ग्रहणक सम्भव होता है, परन्तु व्यग्वर्कके दक्षिण गोलमें होय और उसके भुजांश १४ अंशसे कम और आठ अंशसे अधिक हो तो सूर्य्यग्रहणका सम्भव नहीं होता है, यदि व्यग्वर्कके भुजांश आठ अंशकी अपेक्षा कम हों तो ही सूर्य्यग्रहणका सम्भव होता है। ग्रहणका सम्भव होकरभी यदि अमावस्या दिनमें होय तो सूर्य्य-ग्रहण दीखे, और यदि पूर्णिमा रात्रि में होय तो चन्द्रग्रहण दीखे और किञ्चिन्मात्र रात्रिका स्पर्श करनेवाली अथवा किञ्चिन्मात्र दिनस्पर्श करनेवाली तिथि होय तो ग्रस्तास्त अथवा ग्रस्तोदित ग्रहण होता है ॥ १५ ॥

अब चन्द्रग्रास साधनेकी रीति लिखते हैं—

सत्र्यंशगुणोनितो हरोऽयं वेदघ्नोऽङ्कहृतो व्यगोर्भुजांशैः ॥ हीनो भवताडितोऽद्रिहृत्स्याच्छन्नं शीतरुचोऽङ्गुलादिकं वा ॥ १६ ॥

सत्र्यंशगुणोनितः, अयम्, हरः, वेदघ्नः, अंकहृतः, व्यगोः, भुजांशैः, हीनः, भवताडितः, अद्रिहृत्, शीतरुचः, अंगुलादिकम् छन्नम्, स्यात् ॥ १६ ॥

हारमें तीन अंश बीस कला घटाकर जो शेष रहे उसको चार से गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें नौका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें व्यगुके भुजांश घटावे तब जो शेष रहे उसको ग्यारह से गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमे सातका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि चन्द्रग्रास + होता है ॥ १६ ॥

उदाहरण–हार १८ अं. ५० कलामें ३ अंश २० कला घटाये तब शेष रहा २५ अंश ३० कला इसको चार ४ से गुणा करा तब १०२ अंश ० कला यह गुणनफल हुआ, इसमें ९ का भाग दिया तब ११ अंश २० कला यह लब्धि हुई इसमें व्यगुके भुजांश ६ अंश १५ कला १२ विकलाको घटाया तब शेष रहे ५ अंश ४ कला ४८ विकला, इसको ग्यारह ११ से गुणा करा तब ५५ अंश ५२ कला ४८ विकला, यह गुणनफल हुआ इसमें ७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ७ अंगुल ५८ प्रतिअंगुल यह चन्द्रग्रास हुआ ॥

अब सूर्यग्रास साधनेकी रीति लिखते हैं–

अमान्तनतनाडिकांघ्रिरहिताद्युतात्प्राक्परे
गुहादिकरवेर्नतांशकरसांशसंस्कारिताः ॥
व्यगोर्भुजलवाः स्फुटाः स्युरथ सप्तशुद्धाश्च ते
निजार्द्धसहिता रवेः स्थगितमंगुलाद्यं स्फुटम् १७

+ यदि लब्धिमें व्यगुके भुजांश न घट सकें तो चन्द्रग्रहण नहीं होता है ।

अमान्तनतनाडिकांघ्रिरहितात् , प्राक्, गृहादिकरवेः, परे, युतात्, नतांशकरसांशसंस्कारिताः, व्यगोः, भुजलवाः, स्फुटाः, स्युः। अथ, ते, सप्तशुद्धाः, निजार्द्धसहिताः, रवेः, स्फुटम्, अंगुलाद्यम्, स्थगितम्, (स्यात्) ॥ १७ ॥

पर्वान्तिकालमें जो नत घटिका हों उनमें चारका भाग देय जो राश्यादि लब्धि होय उसको यदि नत पूर्व होय तो स्पष्ट सूर्यमें घटा देय तब और यदि नत पश्चिम होय तो स्पष्ट सूर्यमें युक्त कर देय, तदनन्तर उससे क्रान्ति साधकर उस क्रान्तिका और अक्षांशका संस्कार करके नतांश साधे और तिन नतांशोंमें छः का भाग देकर जो लब्धि होय उसको नतांशकी दिशाको जाने, फिर स्पष्ट व्यगुकी भुज करके उनके अंश करे वह, व्यगु जिस गोलमें होय उस गोलकी दिशाके होते हैं, तदनन्तर भागाकारका और व्यगुभुजाओंका संस्कार * करे, तब स्पष्ट नतांश होते हैं उनको सात अंशमें घटाकर जो शेष रहे उसको तीनसे गुणा करके दोका भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह सूर्यका अंगुलादि ग्रास + होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण–आगे सूर्यग्रहणका पर्व लानेके समय दिखलावेंगे ॥ १७ ॥

अब ग्रहणके स्वामी जाननेकी रीति लिखते हैं–

व्यगुमध्यपर्य्ययगणो द्विगुणो वणिगादिगे व्यगु-

---

* अत्र संस्कारो नाम-एकदिशोर्योगे भिन्नदिशोरन्तरम्।

+ यदि स्पष्ट नतांश सात अंशसे अधिक हो तो जान ले कि सूर्यग्रहण नहीं होगा।

गृहे कुयुतः ॥ स्मृतचक्रसंज्ञकयुतो विधितो गत-
पर्वपो मुनिहृतोर्वरितः ॥१८॥

व्यगुमध्यपर्ययगणः, (कार्य्यः,) ऽंयगुगृहे, वणिगादिगे, (सति) कुयुतः, (कार्य्यः,), (ततः), स्मृतचक्रसंज्ञकयुतः, (ततः) मुनिहृतोर्वरितः, (सन्) विधितः, गतपर्वपः, (स्यात्) ॥ १८ ॥

मध्यम व्यगु लानेके समय जो भगण लाए थे उसको दोसे गुणा करे तब जो गुणन फल होय, उसमें यदि व्यगु तुलादि होय तो एक मिला देय और यदि व्यगु मेषादि होय तो चक्र-संख्याको युक्त करदेय तब जो अङ्क हों उसमें सातका भाग देय, तब यदि शून्य शेष रहे तो ब्रह्मा, एक शेष रहे तो चन्द्रमा, दो शेष रहें तो इन्द्र, तीन शेष रहें तो कुबेर, ४ शेष रहें तो वरुण, पांच शेष रहें तो अग्नि और छः शेष रहें तो यम ग्रहणका स्वामी होता है। सोई +बृहत्संहिताके विषे वराहमिहिरने कहा है-

"षण्मासोत्तरवृद्ध्या पर्वेशाः सप्त देवताः क्रमशः ।
ब्रह्मशशीन्द्रकुबेरा वरुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः ॥" इति ॥

उत्तरोत्तर छः छः मासकी वृद्धि करके क्रमसे ब्रह्मा, चन्द्रमा, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम यह सात देवता ग्रहणके स्वामी हैं। ज्योतिषी लोग इन ग्रहणके स्वामियोंसे संसारका शुभाशुभ फल कहते हैं ॥ १८ ॥

उदाहरण-मासगणोत्पन्न व्यगु ५२ राशि ४ अं. १२ कला ४५ विकला और चक्रसे गुणा करा ध्रुव ५६. राशि ९ अं.३६क. ० वि.

+ यह "बृहत्संहिता" सरल भाषाटीकासहित "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसमें मिलेगी।

तथा क्षेपक ११ राशि ७ अंश १८ कला ० विकला इन सबका योग करा तब ११९ राशि २१ अंश २ कला ४५ विकला हुआ, इसमें १२ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० यह भगण हुआ इसको २ से गुणा करा तब २० क्योंकि मेषादि है इस कारण द्विगुणित भगण २० में चक्र ८ को युक्त करा तब २८ हुए, इसमें ७ का भाग दिया तब शून्य शेष रहा इस कारण ग्रहणका स्वामी ब्रह्मा हुआ ॥ १८ ॥

अब स्पष्ट चन्द्र और चन्द्रस्पष्टगति लानेकी रीति लिखते हैं-

तिथिरविहतिरंशास्तद्युतोऽर्को विधुः स्यादथ जिनगुणहारो द्व्यङ्गयुक् तद्गतिः स्यात्॥खचरशरकलाः स्यात्सूर्यभुक्तिस्ततः स्युर्भयुतिजगतगम्या नाडिकास्तिथ्यपायात् ॥ १९ ॥

तिथिरविहतिः, अंशाः, (स्युः), तद्युतः, अर्कः, विधुः, स्यात् । अथ जिनगुणहारः, द्व्यङ्गयुक्, तद्गतिः, स्यात् । खचरशरकलाः, सूर्य्यभुक्तिः, स्यात् । ततः, भयुतिजगतगम्याः, नाडिकाः, तिथ्यपायात्, स्युः ॥ १९ ॥

तिथिको बारहसे गुणा करके जो गुणनफल होय वह अंश होते हैं, उन अंशोंको स्पष्ट सूर्यमें मिलावे तब स्पष्ट चन्द्र होता है। तिसी प्रकार हारको चौबीससे गुणा करके जो गुणनफल होय उसको कलादि मानकर उसमें बासठ कला युक्त करे, तब चन्द्रस्पष्टगति होती है और उनसठ कला सूर्यस्पष्टगति होती है। तदनन्तर स्पष्टसूर्य-स्पष्टचन्द्र-स्पष्टचन्द्रगति-और सूर्यस्पष्टगति इनसे नक्षत्र और योग इनकी गत गम्य घटी लावे वह स्पष्ट तिथिके अन्तसे होती है॥ १९॥

उदाहरण-तिथि १५ को १२ से गुणा करा तब १८० हुए। इन अंशोंको स्पष्ट सूर्य ६ राशि २८ अंश ३४ कला ५२ विकलामें युक्त करा तब ० राशि २८ अंश ३४ कला ५२ विकला यह स्पष्ट चन्द्र हुआ। फिर हार २८ अंश ५० कलाको २४ से गुणा करा तब ६९२ कला ० विकला हुआ, इसमें ६२ कला युक्त करीं तब ७५४ कला ० विकला यह चन्द्रमाकी स्पष्ट गति हुई इससे लाथी हुई कृत्तिका नक्षत्रकी गत घटिका हुई ४६ घटिका २८ पल और गम्य घटिका हुई १२ घटिका ३२ पल ॥ १९ ॥

सूर्य्यग्रहणका उदाहरण.

संवत् १६६९ शाके १५३४ वैशाख कृष्णा ३० अमावस्या बुध वार घट्यदि २४ घटी २८ पल, रोहिणी नक्षत्र घट्यादि ३४ घटी ५७ पल, धृतियोग घट्यादि ४९ घटी १९ पल, इस दिन पंचाङ्ग में ग्रहण लिखा है, इस कारण मासगण पर्वकाल साधते हैं-

शाके १५३४ में १४४२ को घटाया तब शेष रहे ९२ इसमें ११ का भाग दिया तब लब्धि हुई ८ यह चक्र हुआ और शेष बचे ४ इसको १२ से गुणा करा तब ४८ हुए इसमें गत मास १ को युक्त करा तब ४९ यह मध्यम मासगण हुआ. इसमें द्विगुणित चक्र १६ को युक्त करा तब ६५ हुए इसमें १० युक्त करे तब ७५ हुए इसमें ३३ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ यह अधिक मास हुआ इसमें मध्यम मासगण ४९ को युक्त करा तब ५१ यह मास-गण हुआ, इसको "मासौघतो द्विगुणितादित्यादि" रीतिके अनु-सार २ से गुणा करा तब १०२ हुए इसमें ६७ का भाग दिया तब राश्यादि लब्धि हुई १ राशि १५ अंश ४० कला १७ विकला इसको मासगणमें घटाया तब शेष रहा राश्यादि १ राशि १४ अंश १९ कला ४२ विफला इसमें चक्रसे गुणा करे हुए ध्रुवक० राशि १३ अंश २० कला ० विकलाको घटाया तब शेष रहे १ राशि ० अंश

५९ कला ४२ विकला इसमें क्षेपक ४ अंश २१ कलाको युक्त करा तब १ राशि ५ अंश २० कला ४३ विकला यह पौर्णिमाके अन्तमें सूर्य्य हुआ. इसमें पक्षचालन ० राशि १४ अंश ३२ कला ० विकलाको युक्तकरा तब १ राशि १९ अंश ५२ कला ४३ विकला यह अमावस्याकें अन्तमें सूर्य्य हुआ, पूर्वोक्त रीतिके अनुसार पौर्णिमान्त व्यगु हुआ ११ राशि २१ अंश ६ कला ४५ विकला इसमें पाक्षिक चालन ० राशि १५ अंश २० कला ० विकलाको युक्त करा तब ० राशि ६ अंश २६ कला ४५ विकला यह अमान्त व्यगु हुआ । अब वृत्त हुआ पूर्णिमान्तमें ८ राशि २० अंश १० कला ४३ विकला इसमें पाक्षिक चालन ६ राशि १२ अंश ५४ कला ० विकलाको युक्त करा तब ३ राशि ३ अंश ४ कला ४३ विकला यह अमान्त वृत्त हुआ । अब पूर्वोक्त रीतिके अनुसार वारादि हुआ ३ वार ९ घटी ७ पल इसमें पाक्षिक चालन ० वार ४५ घटी ५५ पलको युक्त करा तब ३ वार ५५ घटी २ पल यह अमान्त वारादि हुआ ।

स्पष्टीकरण—वृत्त फल धन ७४ अंश २२ कला २१ विकला और मन्दफल धन १४ अंश ४१ कला ४० विकला इन दोनोंका संस्कार (योग) करा तब ८९ अंश ४ कला १ विकला यह फलद्वयसंस्कार धन हुआ । अब रविमन्दोच्च २ राशि १८ अंश ० कला ० विकला में मध्यमरवि १ राशि १९ अंश ५२ कला ४३ विकलाको घटाया तब ० राशि २८ अंश ६ कला १७ विकला यह रविकेन्द्र हुआ, एकाधिक वृत्त फलांक २ और हार ३० अंश ४० कला । तथा चरक्रण १०८ विकला है परन्तु "सायंलक्षणाकमित्यादि" पूर्वोक्त रीतिके अनुसार इसको भी धन माना और

"नाड्यः स्युः फलसंस्कृतिर्दशहता हार इत्यादि" रीतिके अनुसार फलद्वयसंस्कृति ८९ अंश ४ कला १ विकलाको १० से गुणा करा तब ८९० अंश ४० क० १०विकला यह गुणनफल हुआ इससे हार ३० अंश ४० कलाका भाग दिया तब लब्धि हुई फलद्वयसंस्कृति के धन होनेके कारण धन २९कला २ विकला यह प्रथम फल हुआ और द्वितीय फल धन १ कला ४८ विकला हुआ और तृतीय फल धन ० कला ४८ विकला हुआ और इन तीनों फलों का योग करा तब फलत्रयैक्य धन ३१ कला ३८ विकला हुई इसमें वारादि ३ वार ५५ घटी २पल को युक्त करा तब ४ वारे २६ घटी २० पल यह स्पष्ट वारादि अर्थात् बुधवारके दिन अमावास्या २६ घटी ४० पल है ऐसा सिद्ध हुआ।

अब फलत्रयसंस्कृति तुल्य घटिका हुई ३१ घटी ३८ पल इसमें मध्यमरवि १ राशि १९ अंश ५३ कला ४३ विकलाको युक्त करा तब १ राशि २० अंश २५ कला २१ विकला यह दर्शान्तकालीन स्पष्ट मध्यमरवि हुआ और व्यगु ० राशि ६ अंश २६ कला ४५ विकलामें फलत्रयैक्य धन ३१ कला ३८ विकलाको युक्त करा तब ० राशि ६ अंश ५८ कला २३ विकला यह दर्शान्तकालीन स्पष्ट व्यगु हुआ। अब रविमन्दफल धन १४ अंश ४१ कला ४० विकलाको ४ से गुणा करा तब ५८ अंश ४६ कला ४० विकला हुआ इसमें इसके चौबीसवें भाग २३ अंश २६ कला ५७ विकलाको युक्त करा तब कलादि हुआ ६१ कला १३ विकला यह मन्दफलके धन होनेके कारण धन है, इस कारण ६१ कला १३ विकलाको मध्यम रवि १ राशि २० अंश २५ कला २१ विकलामें युक्त करा तब १ राशि २१ अंश २६ कला ३४ वि. यह स्पष्ट सूर्य हुआ इसमें तिथि ३० को १२ से गुणा करके ३६० अंश युक्त करे तब १ राशि २१ अं. २६ क० ३४ वि. यह स्पष्ट चन्द्र हुआ।

दर्शान्तकालीन स्पष्ट व्यगु० राशि ६ अंश ५८ कला २३ विकला में ६१ क. १३ विकलाको युक्त करा तब ० राशि ७ अं. ५९ कला ३६ विकला यह स्पष्ट व्यगु हुआ। हार ३० अंश ४० कलाको २४ से गुणा करा तब ७३६ हुए इसमें ६२ को युक्त करा तब ७९८ कला यह चन्द्रस्पष्ट गति हुई और ५९ कला यह सूर्य-गति है॥

स्पष्टरवि—स्पष्टचन्द्र और इन दोनोंकी गतिसे दर्शान्तकालीन नक्षत्र और योग साधते हैं--रोहिणी नक्षत्रकी गतघटिका हुई ५१ घटी ५७ पल और गम्य घटिका हुई ८ घटी ३१ पल। तिसी प्रकार धृति योगकी गतघटी हुई ४० घटी ७ पळ और गम्य घटी हुई १५ घटी ५२ पल॥

चन्द्रबिम्ब १० अंगुल ४६ प्रतिअंगुल हुआ, सूर्यबिम्ब १० अंगुल २९ प्र. अं.॥

अब सूर्य्यग्रास साधते हैं–अमान्त २६ घटी ४० पलमें दिनार्द्ध १६ घटी ४८ पलको घटाया तब ९ घटी ५२ पल शेष रहा इसमें ४ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ राशि १४ अंश ० कला० विकला। इसमें स्पष्टरवि १ राशि २१ अं. २६ कला ३४ विकलाको युक्त करा तब ४ राशि ५ अंश २६ कला ३४ वि. हुआ, इसकी क्रांति हुई उत्तर १३ अंश ३५ कला २१ विकला और अक्षांश दक्षिण हुए २५ अंश २६ कला ४२ विकला, क्रांति और अक्षांश दोनोंका संस्कार करनेसे नतांश हुए दक्षिण ११ अंश ३४ कला २१ विकला इसका छठा भाग हुआ दक्षिण १ अंश ५५ कला ४३ विकला। स्पष्टव्यगुके उत्तरभुज हुए ७ अंश ५९ कला ३६ विकला।

इसमें व्यगुके उत्तरगोलमें होनेके कारण उपरोक्त षष्ठांश दक्षिण १ अंश ५५ कला ४३ विकलाको घटाया तब शेष रहे ६ अंश ३ कला ५३ विकला इसको ७ अंशमें घटाया तब शेष रहे ० अंश ५६ कला ७ विकला इसमें इसका आधे २८। ४ को युक्त करा तब १ अंगुल २४ प्रतिअंगुल यह सूर्य्यग्रास हुआ ॥

इति मासगणाद्ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः समाप्तिमित: ॥ ७ ॥

अथ पञ्चाङ्गाद ग्रहणद्वयसाधन व्याख्यायते ।

अथवाऽयं तिथिपत्रतोऽवगम्यः पर्वान्तश्च रविस्तमस्तिथेर्वा ॥ भस्यैतैष्यघटीयुतिद्युमानं तेभ्योऽथ ग्रहणद्वयं प्रवच्मि ॥ १ ॥

अथवा, तिथिपत्रतः, अयम्, पर्वान्तः, रविः, तमः, च, अवगम्यः, तिथेः, वा, भस्य, इतैष्यघटीयुतिः, (अवगम्या), द्युमानम्, (अवगम्यम्), अथ, तेभ्यः, ग्रहणद्वयम्, प्रवच्मि ॥ १ ॥

अथवा तिथिपत्र (पञ्चांग) पर्वान्तकालीन घटिका, सूर्य राहु, तिथिका गतगम्य घटिकाओंका योग तथा नक्षत्रका गत-गम्य घटिकाओंका योग और दिनमान जाने, अब इन सबसे ही चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण दोनोंकी गणित करनेकी रीति कहता हूँ ॥ १ ॥

उदाहरण-संवत् १६६९ शाके १५३४ वैशाख शुक्ल पौर्णिमा १५ सोमवार गतघटी २ पल ३३ सूर्योदयसे गम्य घटी ५४ पल १० गतगम्यघटीयोग ५६ घटी ४३ प. अनुराधा नक्षत्र गतघटी २० पल ४ गम्य घटी ३८ पल ३३ गत और गम्यघटिकाओंका योग ५८ घटी ३७ पल दिनमान ३३ घटी ६ पल । पर्वान्तकालीन रवि १ राशि ६ अंश ३४ कला ३७ विकला । पर्वान्तकालीन राहु १ राशि १४ अंश १८ कला ११ विकला । विराह्वर्क ११ राशि २२ अंश १६ कला २६ विकला ॥ १ ॥

अब चन्द्रग्रास लानेकी रीति लिखते हैं—

ताराषड्घ्न्यगतिथियातगम्यनाडीयोगाप्ता व्यगुरविदोर्लवोनितास्ते ॥ संयुक्ता निजदलभूपभागकाभ्यां छन्नं वाऽङ्गुलवदनं भवेत्सुधांशोः ॥ २ ॥

वा ताराषड्घ्न्यगतिथियातगम्यनाडीयोगाप्ताः, व्यगुरविदोर्लवोनिताः, ते, निजदलभूपभागकाभ्याम्, संयुक्ताः, (सन्तः), सुधांशोः, अंगुलवदनम्, छन्नम्, भवेत् ॥ २ ॥

पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योगमें सात घटाकर जो शेष रहे, उसका छः सौ सत्ताईसमें भाग देय, तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें विराह्वर्कके भुजांशोंको घटाकर जो शेष रहे उसको पच्चीससे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें सोलहका भाग देय अथवा उस शेषमें उसका आधा और सोलहवां भाग $\frac{1}{16}$ युक्त करे तब अंगुलादि चन्द्रग्रास होता है ॥ २ ॥

उदाहरण—पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५६ घटी ४३ पलमें ७ सातको घटाया तब शेष रहे ४९ घटी ४३ पल इसका

६२७ में भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई १२ अंश ३६ कला ५१ विकला इसमें विराह्वर्क (व्यगु) के भुजांशों ७ अंश ४२ कला ३४ विकलाको घटाया तब शेष रहे ४ अंश ५२ कला ७ विकला इसको २५ से गुणा करा तब १२२ अंश ७ कला ३५ विकला हुए इसमें १६ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ७ अंगुल ३८ प्रतिअंगुल यही चन्द्रग्रास हुआ। अथवा शेष ४ अंश ५२ कला ७ विकलामें अपना आधा २ अंश २६ कला ३३ विकला और सोलहवां भाग १८ कला १९ विकलाको युक्त करा तब भी ७ अंगुल ३८ प्रति अंगुल यही चन्द्रग्रास × हुआ ॥ २ ॥

अब चन्द्रबिम्ब और भूभाबिम्ब लानेकी रीति लिखते हैं—

अङ्गयुक्तिथिघटीहृतबाणाङ्कर्त्तवोऽङ्गुलमुखं विधुबिम्बम् ॥ दिग्वियुक्तिथिघटीहृतदृग्दृक्रीन्दवोऽङ्गुलमुखा क्षितिभा स्यात् ॥ ३ ॥

अंगयुक्तिथिघटीहृतबाणांकर्त्तवः, अंगुलमुखम्, विधुबिम्बम्, (स्यात्)। दिग्वियुक्तिथिघटीहृतदृग्दृक्रोन्दवाः, अंगुलमुखा, क्षितिभा, (स्यात्) ॥ ३ ॥

तिथि (पर्व) की गतगम्य घटिकाओंके योगमें छः मिलाकर जो अङ्क योग हो उसका छः सौ पिचाणवेमें भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह चन्द्रबिम्ब होता है और तिथिपर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योगमें दश घटाकर जो शेष रहे उसका एक हजार तीन सौ बाईसमें भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह भूभाबिम्ब होता है ॥ ३ ॥

× जहाँ लब्धिमें व्यगुके भुजांश न घट सके तहां जाने कि, चन्द्रग्रहण नहीं होगा ॥

उदाहरण—पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५६घटी४३पलमें घटीको युक्त करा तब ६२ घटी ४३ पल हुआ इसका ६९५ में भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ११ अंगुल ४ प्रतिअंगुल यह चन्द्र-बिम्ब हुआ और पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५६ घटी ४३ पलमें १० घटाये तब शेष रहे ४६ घटी ४३ पल इसका १३२२ में भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई २८ अंगुल १७ प्रतिअंगुल यह मध्यम भूभाबिम्ब हुआ ॥ ३ ॥

अब भूभाके संस्कारकी रीति कहते हैं-

रुद्रभूपनखभूपरुद्रखव्यंगुलैर्विरहिता युता क्रमात् ॥ षड्गृहे सति रवौ घटात्क्रियान्नाडिकोद्भवकुभा स्फुटा भवेत् ॥ ४ ॥

रवौ, घटात्, क्रियात्, षड्गृहे, सति, क्रमात्, रुद्रभूपनखभूपरुद्रखव्यंगुलैः, विरहिता, युता, नाडिकोद्भवकुभा, स्फुटा, भवेत् ॥४॥

फिर तिस उपरोक्त भूभाबिम्बके प्रतिअंगुलोंमें यदि सूर्य्य मेषराशिसे तुलाराशि पर्य्यन्त होय तो जिस राशिमें होय तिस राशिके नीचे लिखे हुए "रुद्र कहिये ग्यारह, भूप कहिये सोलह, नख कहिये बीस, भूप कहिये सोलह, रुद्र कहिये ग्यारह, ख कहिये शून्य" इनमेंके अङ्कको युक्त करदे और यदि सूर्य तुलाराशिसे मेषराशिपर्यन्त होय तो जिस राशिका हो उस राशि-के नीचे लिखे हुए अङ्कको भूभाबिम्बके प्रतिअंगुलोंमें घटा देय तब भूभाबिम्ब स्पष्ट होता है ॥ ४ ॥

मे.	वृष	मि.	क	सिं	कन्या	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मीन	नाम
११	१६	२०	१६	११	०	११	१६	२०	१६	११	०	प्रतिअंगुल

उदाहरण-उपरोक्त भूभाविम्ब २८ अंगुल १७ प्रतिअंगुल है और सूर्य वृषभ राशिका है, इस कारण वृषभ राशिके नीचे लिखे हुए अङ्क १६ को भूभाबिम्बके प्रतिअंगुलों १७ में युक्त करा तब २८ अंगुल ३३ प्रतिअंगुल यह स्पष्ट भूभाविम्ब हुआ ॥ ४ ॥

अब नक्षत्रकी घटिकाओंसे चन्द्रग्रास साधनेकी रीति लिखते हैं-

विदशोडुघटीयुताः खभूषड्व्यगुभास्वद्भुजभा-
गवर्जितास्ते ॥ शितिकण्ठहतास्तुरङ्गभक्ताः स्थ-
गितं चांगुलपूर्वकं विधोः स्यात् ॥ ५ ॥

खभूषट्, विदशोडुघटीहृताः, (ततः), व्यगुभास्वद्भुजभागवर्जिताः, च, (कार्य्याः) ते, शितिकण्ठहताः, (ततः) तुरंगभक्ताः, (सन्तः) अंगुलपूर्वकम्, विधोः, स्थगितम्, स्यात् ॥ ५ ॥

नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योगमें दश घटा देय तब जो शेष रहे उसका छःसौ दशमें भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें व्यगुके भुजांशोंको घटावे तब जो शेष रहे उनको ग्यारहसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें सातका भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह चन्द्रमाका ग्रास होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण-नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५८ घटी ३६ पलमें १० घटाये तब शेष रहे ४८ घटी ३६ पल इसका ६१० में भाग दिया तब लब्धि हुई १२ अंश ३३ कला ५ विकला इसमें व्यगुके भुजांश ७ अंश ४३ कला, ३४ विकलाको घटाया तब शेष रहे ४ अंश ४९ कला ३१ विकला इसको ११ से गुणा करा तब ५३ अंश ४ कला ४१ विकला हुए इसमें ७ का भाग दिया तब

अंगुलादि लब्धि हुई ७ अंगुल ३४ प्रतिअंगुल यह चन्द्रमाका ग्रास हुआ ॥ ५ ॥

अब नक्षत्रसे चन्द्रबिम्ब और भूभाबिम्ब साधन लिखते हैं-

भगतागतनाडिकैक्यभक्ता नववेदर्त्तव इन्दुबिम्बमुक्तम् ॥ विमनूडुघटीहृताः शराक्षद्विभुवः स्यात्क्षितिभांगुलादिका वा ॥ ६ ॥

वा, भगतागतनाडिकैक्यभक्ताः, नववेदर्त्तवः, इन्दुबिम्बम्, उक्तम्, विमनूडुघटीहृताः, शराक्षद्विभुवः, अगुलादिका, क्षितिभा, स्यात् ॥६॥

छःसौ उनचासमें नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योगका भाग देय, तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह चन्द्रबिम्ब होता है; और नक्षत्रकीगतगम्य घटिकाओंके योगमें चौदह घटाकरजो शेष रहे उसका एकहजार दोसौ पचपनमें भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह मध्यम भूभाबिम्ब होता है। इसमें पर्वसे भूभाबिम्ब साधते समय जो संस्कार कहा है वह करे तब भूभाबिम्ब होता है ॥ ६ ॥

उदाहरण-नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५८ घटी ३६ पलका छःसौ उनचास ६४९ में भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ११ अंगुल४ प्रतिअंगुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ। तिसी प्रकार नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५८ घटी ३४ पलमे १४ घटाये तब शेष रहे ४४ घटी ३६ पल इसका १२५५ में भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई २८ अंगुल ८ प्रतिअंगुल यह मध्यम भूभाबिम्ब हुआ इसमें सूर्य वृषभराशिका है इस कारण १६ प्रतिअंगुल युक्त करे तब २८ अंगुल २४ प्रतिअंगुल यह भूभाबिम्ब हुआ ॥ ६ ॥

अब तिथि और नक्षत्रकी घटिकाओंसे सूर्यग्रास साधन लिखते हैं-

खात्यष्ट्यत्तिथिघटीविहृताः सवेदा वाथोडुनाडिहृतदेवयमाः सरामाः ॥ हीना व्यगुस्फुटलवैर्भवसंगुणास्ते शैलोद्धृताः खररुचः स्थगितांगुलानि ॥ ७ ॥

तिथिघटीविहृताः, खात्यष्टयः, सवेदाः, (कार्य्याः,) (ते), व्यगुस्फुटलवैः, हीनाः, (ततः) भवसंगुणाः, ते शैलोद्धृताः (सन्तः), खररुचः, स्थगितांगुलानि, (स्युः), । अथवा, उडुनाडिहृतदेवयमाः, सरामाः, (कार्याः, ते, व्यगुस्फुटलवैः हीनाः, ततः, भवसंगुणाः, ते, शैलोद्धृताः, सन्तः, खररुचः, स्थगितांगुलानि, स्युः) ॥ ७ ॥

पर्वकी गतगम्य घटिकाओंका एकसौ सत्तरमें भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें चार अंश युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग होय उसमें स्पष्टनतांश घटा देय तब जो शेष रहे उसको ग्यारहसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें सातका भाग देय तब जो अंगुलादि लब्धि होय वह सूर्यग्रास होता है । अथवा नक्षत्रकी गतगम्य घटिओंके योगका दोसौ तैंतीसमें भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें तीन अंश युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग होय उसमें स्पष्टनतांश × घटादेय तब जो शेष रहे उसको ग्यारहसे गुणा करे तब जो गुणनफल होथ उसमें

× मासगणाधिकारमें स्पष्टनतांश साधा है तिसी प्रकार यहां भी स्पष्टनतांश लावे । स्पष्टनतांशोंको ही व्यगभुजोंके स्पष्टांश कहते हैं ।

सातका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि सूर्यका ग्रास होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—तिथिकी गतगम्य घटिकाओंके योग६४घटी ४९ पलका १७० में भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई २ अंश ३७ कला २२ विकला इसमें ४ अंश युक्त करे तब ६ अंश ३७ कला २२ विकला हुआ, इसमें स्पष्टनतांश १ अं. ५६ कला ४५ विकलाको घटाया तब शेष रहे ४ अंश ४० कला ३७ विकला इसको ११ से गुणा करा तब ५१ अंश २६ कला ४७ विकला हुआ इसमें ७ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ७ अंगुल २० प्र. अं. यह सूर्यग्रास हुआ ॥

अथवा—नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग ६५ घटी ५६ पलका २३३ में भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई २ अंश ३२ कला १ विकला इसमें ४ अंश युक्त करे तब ६ अंश ३२ कला १ विकला हुआ, इसमें स्पष्टनतांश १ अंश ५६ कला ४५ विकलाको घटाया तब शेष रहे ४ अंश ३५ कला १६ विकला इसको ११ से गुणा करा तब ५० अंश २७ कला ५६ विकला यह गुणन फल हुआ, इसमें ७ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ७ अंगुल १४ प्रतिअंगुल यह सूर्यका ग्रास हुआ ॥ ७ ॥

अब सूर्यबिम्बसाधन लिखते हैं—

रविलवयुतभानोर्दोर्लवत्र्यंशतुल्यैर्विरसलवमहेशा व्यंगुलैर्हीनयुक्तः ॥ अजधटरसभेऽर्के बिम्बमस्यांगुलाद्यं स्थितिमुखमवशिष्टं पूर्ववच्छेषमत्र ॥ ८ ॥

अर्के, अजघटरसभे (सति), विरसलवमहेशाः, रविलवयुतभानोः, दोर्लवत्र्यंशतुल्यैः, व्यंगुलैः, हीनयुक्ताः (कार्य्याः), (तत्) अस्य, अंगुलाद्यम्, बिम्बम्, (स्यात्) । अत्र, स्थितिमुखम्, अवशिष्टम्, शेषम्, पूर्ववत्, ज्ञेयम् ॥ ८ ॥

स्पष्ट रविमें बारह अंश मिलाकर उसके भुजांश करे उन भुजांशोंमें तीनका भाग देय तब जो लब्धि होय वह प्रतिअंगुल होते हैं, रवि मेषादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो दश अंगुल पचास प्रतिअंगुलमें पूर्वोक्त प्रतिअंगुलोंको घटा देय और यदि रवि तुलादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो दश अंगुल पचास प्रतिअंगुलमें पूर्वोक्त प्रतिअंगुलोंको युक्त करदेय तब अंगुलादि सूर्यबिम्ब होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण—स्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २० विकलामें १२ अंश युक्त करे तब ८ राशि १७ अंश २६ कला २० विकला हुआ इसके भुजांश ७७ अंश २६ कला २० विकला हुए इसमें ३का भाग दिया तब लब्धि हुई प्रतिअंगुल २५ सूर्य तुलादि छः राशिमें है इस कारण १० अंगुल ५० प्रतिअंगुलमें २५ प्रतिअंगुल युक्त करे तब ११ अंगुल १५ प्रतिअंगुल यह सूर्यबिम्ब हुआ ॥ ८ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपंडितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराजकीय विद्यालय प्रधानाध्यापक-पंडितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपंडितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाव्याख्यया सहितः पञ्चाङ्गाद्ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः समाप्तिमितः ॥ ८ ॥

अथास्तोदयाधिकारो व्याख्यायते



तहां प्रथम तीन श्लोकोंकरके शुक्ल प्रतिपदाके दिन चन्द्रोदय होगा या नहीं यह जानने की रीति लिखते हैं—

सार्कांशाविह कुरु पक्ष तिक्षयेऽर्कव्यग्वकौ चरमथ केवलाद्व्यगोर्यत् ॥ षड्बाणैर्विहृतमिदं क्रमाल्लवाद्यं स्वर्णं स्याद्व्यगुरविगोलयोः पृथक्तत ॥ १ ॥ त्रिभायनलवान्विताऽरुणचराहतं द्व्यक्षभाहतेः कृतिहृतं धनर्णमसमैकगोले व्यगोः ॥ खखानलविशेषितः सरसभायनार्कोदयः शरद्विकहृतो धनाधनमनल्पकाल्पोदये ॥ २ ॥ द्युमितिप्रतिपद्क्रमान्तरं यच्छरभक्तं स्वमृणं दिनेऽधिकोने ॥ धनमत्र चतुष्कसंस्कृतिश्चेत्तपनास्ते विधुरीक्ष्यतेऽन्यथा न ॥ ३ ॥

इह, पक्षतिक्षये, अर्कव्यग्वकौ, साकांशौ, कुरु । अथ, केवलात्-व्यगोः, यत् चरम्, (साधितम्), इदम्, षड्बाणैः, विहृतम् (कार्यम् तदा) लवाद्यम् (फलम्), क्रमात्, व्यगुरविगोलयोः, स्वर्णम्, स्यात्, तत्, पृथक (स्थाप्यम्, ततः) त्रिभायनलवान्विता रुणचराह-

तम्, (ततः) द्व्यक्षभाहतेः; कृतिहृतम् (कार्य्यम्, ततः) व्यगोः, असमैकगोले, धनणम् (कार्य्यम्,) (तत्, फलम्, पृथक, स्थाप्यम्) सरसभायनार्कोदयः खखानलविशेषितः, शरद्विकहृतः, (तदा, यत् ,फलम्, तत्) अनल्पकाल्पोदये, धनाधनम् (कार्य्यम्) । यत् द्युमितिप्रतिपद्गमान्तरम्, (तत्) शरभक्तम्, अधिकोने, दिने, स्वम् ऋणम्, (कार्य्यम्) । अत्र चतुष्कसंस्कृतिः धनम् चेत् (तदा) तपनास्ते विधुः, ईक्ष्यते अन्यथा, न ॥१-३॥

अभीष्ट मासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके अन्तमें स्पष्ट सूर्य और स्पष्ट व्यग्यर्क करके दोनोंमें बारहअंश युक्त करे, तदनन्तर व्यग्वर्क अयनांश न मिलाकर केवल व्यग्वकसे ही चर लावे और उस चरमें छप्पनका भागदेय तबजो अंशादि लब्धिहोय वह प्रथम फल होताहै,व्यगु उत्तरगोलमेंहोय तो धन और दक्षिणगोलमेंहोय तोऋण जाने और प्रथम फलको अलग स्थापन करे।स्पष्ट सूर्यमें अयनांश और तीन राशि युक्त करे, तब जो अंकयोग होय उससे चर लावेऔर तिसचरको प्रथमफलसे गुणाकरे तबजो गुणानफल होय उसमें द्विगुणित पलभाके वर्गका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय वह द्वितीय फल होता है, उसको यदि त्रिभायनलवान्वित सूय और व्यगु यदि एक गोलमें होय तो ऋण और भिन्न गोलमें होयं तो धन जाने और द्वितीय फलको अलग स्थापन करे ।। स्पष्ट सूर्यमें अयनांश और छः राशि मिलाकर जो अंश योग होय उसका पल पलात्मक उदय ग्रहण करके उसका और तीनसौ पलोंका अन्तर करे और उस अन्तरमें पचीसका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय वह तृतीयफल होता है,

उस तृतीय फलको यदि पलात्मक उदय तीनसौ की अपेक्षा अधिक होय तो धन और पलात्मक उदय तीनसौकी अपेक्षा कम होय तो ऋण जाने और अलग स्थापन करे॥ प्रतिपदाका अन्त और दिनमान इन दोनोंके अन्तर करके पांचका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय वह चतुर्थ फल होता है, उस चतुर्थ फलको यदि दिनमान प्रतिपदाकी अपेक्षा अधिक होय तो धन और दिनमान प्रतिपदाकी अपेक्षा कम होय तो ऋण जाने और उस चतुर्थ फलको भी अलग स्थापन करे। फिर इन चारों फलों का योग करे धनर्णकरण करके वह एकीकरण धन होय तो प्रतिपदामें चन्द्रदर्शन होगा और यदि एकीकरण ऋण आवे तो प्रतिपदामें चन्द्रदर्शन नहीं होगा ऐसा जाने ॥ १-३ ॥

उदाहरण-संवत १६६७ शाके १५३२ माघ शुक्लप्रतिपदा १ शनिवार घटी७श्रवणनक्षत्र घटी२८पल२५सिद्धियोग घटी ४० चक्र अहर्गण १०२६ प्रातःकालीन मध्यमरवि ९ राशि ६ अंश १२ कला ३८ विकला। प्रातःकालीन मध्यम चन्द्र ९ राशि १९ अंश ३८ कला ३३ विकला। चन्द्रोच्च ८ राशि २० अंश ५५ कला १४ विकला। प्रातःकालीनलीन राहु २ राशि १० अंश ३ कला २५ विकला। इन ग्रहोमें पञ्चांगस्थित ७ घटीका चालन दिया तब मध्यम रवि हुआ ९ राशि ६ अंश १९ कला ३१ विकला। मध्यम चन्द्र हुआं ९ राशि २१ अंश १० कला ४० विकला। चन्द्रोच्च हुआ ८ राशि २० अंश ५५ कला १४ विकला। राहु हुआ २ राशि १० अंश ३ कला ३ विकला। अब स्पष्टीकरण लिखते हैं-रविका मन्दकेन्द्र हुआ ५ राशि ११ अंश ४० कला २९ विकला। मन्दफल धन हुआ ० अंश ४१ कला २७ विकला। मन्दस्पष्टरवि हुआ

९ राशि ७ अंश ० कला ५८ विकला। अयनांश हुए १८ कला ८ विकला। चरधन १०६ विकला। चरसंस्कृत स्पष्टरवि ९ राशि ७ अंश २ कला ४४ विकला स्पष्टगति ६१ कला१० विकला और त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ९ राशि २१ अंश २५ कला १२ विकला। मन्द केन्द्र १० राशि २९ अंश ३० कला २ विकला। मन्दफल ऋण २ अंश ३३ कला ० विकला। संस्कृतस्पष्टचन्द्र ९ राशि १८ अंश ५२ कला १२ विकला। चन्द्रस्पष्टगति ७३५ कला १ विकला।

स्पष्ट रवि और चन्द्रसे लाई हुई तिथि ० घटी ५६ पल है, इस कारण ५६ पलका चालन देखकर स्पष्टरवि ९ राशि ७ अंश ३ कला ४१ विकला। राहु २ राशि १० अंश ३ कला १ विकला। विराहुर्क ६ राशि २७ अंश ० कला ४० विकला हुआ स्पष्टरवि ९ राशि ७ अंश ३ कला ४१ विकला में १२ अंश युक्त करे तब रवि हुआ ९ राशि १९ अंश ३ कला ४१ विकला। व्यगु ६ राशि २७ अंश ० कला ४० विकलामें १२ अंश युक्त करे तब व्यगु हुआ ७ राशि ९ अंश ० कला ४० विकला। इस अयनांशरहित केवल व्यगुसे चर मिले ७० इसमें ५६ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि मिली १ अंश १५ कला० विकला यह प्रथम फल व्यगुके दक्षिण गोलीय होनेके कारण ऋण है। अब सूर्य्य ९ राशि १९ अंश ३ कला ४१ विकला में अयनांश १८ अंश ८ कला युक्त करे तब १० राशि ७ अंश ११ कला ४१ विकला हुआ इसमें ३ राशि युक्त करी तब १३ राशि ७ अंश ११ कला ४१ वि. हुआ इससे लाया हुआ चर ६८ हुआ इससे प्रथम फल १ अंश १५ कलाको गुणा करा तब ८५ अंश ० कला ० विकला हुआ इसमें पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको द्विगुणित करके ११ अंगुल ३० प्रतिअंगुल इसके वर्ग

१३२ अंगुल १५ प्रतिअंगुलका भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ० अंश ३८ कला ३३ विकला यह द्वितीय फल व्यगु और सूर्यके भिन्न गोलीय होनेके कारण धन है ॥ अब स्पष्टरवि ९ राशि १९ अंश ३ कला ४१ विकलामें अयनांश १८ अंश ८ कलाको युक्तकरा तब १० राशि ७ अंश ११ कला ४१ विकला हुआ इसमें ६ राशि युक्त करीं तब ४ राशि ७ अंश ११ कला ४१ विकला हुआ इस पञ्चम राशि अर्थात सिंह राशिके ३४५ में ३०० को घटाया तब शेष रहे ४५ इसमें २५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश ४८ कला यह तृतीय फल पलात्मक उदय के तीनसौकी अपेक्षा अधिक होनेके कारण धन है ॥ अब दिनमान २६घटी२८पल और प्रतिपदन्त ७ घटी ५८ पलका अन्तर करा तब १८ घटी ३२ पल हुआ इसमें ५ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ३ अंश ४२ कला २५ वि. यह चतुर्थ फल दिनमानके प्रतिपदन्तकी अपेक्षा अधिक होनेके कारण धन है ॥ द्वितीय फल धन ० अंश ३८ कला ३३ विकला और तृतीय फल धन १ अंश ४८ कला ० विकला तथा चतुर्थ फल धन ३ अंश ४२ कला २४ विकला इन तीनोंका योग करा तब ६ अंश ८कला ५७ विकला हुआ इसमें प्रथम फल ऋण १ अंश १५ कलाको घटाया तब शेष रहा ४ अंश ५३ कला ५७ विकला यह चारों फलोंका एकीकरण धन है इस कारण सूर्यास्त समयमें चन्द्रदर्शन होगा ॥१-३॥

अब मासगणसे गुरुके अस्त और उदय साधनेकी रीति लिखते हैं—

चक्राढ्यो मधुवक्रमासनिचयो विश्वाप्तचक्रो-

नितो द्विघ्नो युग्दशमासधूर्जटिदिनैर्भैः शेषितो भ-च्युतः ॥ द्व्याप्तः स्याद्भमुखः पृथक्तिथिलवैरूनो-ऽस्य बाह्वंशकाकांशांशोनयुतो घटाचरसभे मासा-धिकः स्यान्मधोः ॥ ४ ॥ तिथिदिनरहिताढ्यो ऽसौ द्विधा तैश्च मासैः क्रमश इह भवेतां मंत्रिणो ऽस्तोदयौ च ॥ ऽऽ ॥

मधुवक्रमासनिचयः, चक्राढ्यः, (कार्य्यः), (ततः) विश्वास-चक्रोनितः, (कार्य्यः), (ततः) द्विघ्नः, (कार्य्य) (ततः) दश-मासधूर्जटिदिनैः, युक्, भैः, शेषितः, (ततः) भच्युतः, (ततः) द्व्याप्तः, भमुखः, स्यात्, (सः) पृथक् (स्थाप्यः), तिथिलवै ऊनः (कार्य्यः), अस्य, बाह्वंशकाकांशांशोनयुतः, घटाजरसभे, मधोः, मासाधिकः, स्यात् । असौ, च, द्विधा, तिथिदिनरहिताढ्यः, तैः, मासैः, इह, मन्त्रिणः, क्रमशः, अस्तोदयौ, च भवेताम् ॥४॥ऽऽ॥

अभीष्ट वर्षकी चत्र शुक्ल प्रतिपदाका मासगण लाकर चक्रयुक्त करे तब जो अङ्कयोग होय उसमें, चक्रमें तेरहका भाग देकर जो मासादि लब्धि होय उसे घटा देय तब जो शेष रहे उसको दोसे गुणा करे, तब जो गुणनफल होय उसमें दशमास ग्यारह दिनयुक्त करदेय तब जो अङ्कयोगहोय उसके केवल मासोंमें सत्ता-ईसका भाग देय, तब जो मासादि शेष रहे उसको सत्ताईस मासमें घटावे, तब जो शेष रहे उसमें दोका का भाग देय तब जो राश्यादि लब्धि होय उसमें पन्द्रह अंश घटावे, तब जो

शेष रहे उसके भुज करे और उन भुजोंके अंशोंमें बारहका भाग देय, तब जो अंशादि लब्धि होय वह यदि पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि मेषादि होय तो उसमें युक्त करदेय और यदि पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि तुलादि होय तो उसमें घटादेय, तब मासादिक होता है तदनन्तर उस मासादिकमें पन्द्रह दिन घटाकर जो शेष रहे तिस मासादि करके चैत्र मासका गुरुका पश्चिममें अस्त होगा और तिस मासादिमें पन्द्रह दिन युक्त करके जो अङ्कयोग होय उस मासादि करके चैत्र माससे गुरुका पूर्व दिशामें उदय होता है ॥४॥ऽऽ॥

उ०-संवत् १६६७ शाके १५३२ इस वर्षमें गुरुके अस्त और उदयके दिन जाननेके निमित्त शाके १५३२ में १४४२ को घटाया तब शेष रहे ९० इसमें ११ का भाग दिया तब लब्धि हुई ८ यह हुआ और शेष २ को १२ से गुणा करा तब २४ यह मध्यम मासगण हुआ, इसमें गतमास ० और द्विगुणित चक्र १६ और १० युक्त करे तब ५० हुए इसमें ३३ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ यह अधिकमास हुआ, इसमें मध्यम मासगण २४ को युक्त कर तब २५ यह मासगण हुआ, इसमें चक्र ८ को युक्त करा तब ३३ मास हुए, इसमें चक्र ८ में १३ को भाग देनेसे प्राप्त हु मासादि लब्धि ० मास १८ दिन २७ घटी ४१ पलको घटाया तब शेष रहे ३२ मास ११ दिन ३२ घटी १९ पल इसको २ से गुणा करा तब ६४ मास २३ दिन ४ घटी ३८ पल हुआ इसमें १० मास ११ दिन युक्त करे तब ७५ मास ४ दिन ४ घटी ३८ पल हुए, इसमें २७ का भाग दिया तब शेष रहे २१ मास ४ दिन ४ घटी ३८ पल इनको २७ में घटाया तब

शेष रहे ५ मास २५ दिन ५५ घटी २२ पल इसमें दो का भाग दिया तब लब्धि हुई राश्यादि, २ राशि २७ अंश ५७ कला ४१ विकला इसमें १५ अंश घटाये तब शेष रहे २राशि १२ अंश ५७ कला ४१ विकला इसके भुजांश ७२ अंश ५७ कला ४१ विकला हुए. इनमें १२ का भाग दिया तब ६ अंश ४ कला ४८ विकला इसको पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि २ मेषादि है इस कारण पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि २ राशि २७ अंश ५७ कला ४१ विकलामें युक्त करा तब ३ मास ४ दिन ३ घटी २९ पल यह मासादिक हुआ इसमें १५ दिन घटाये तब शेष रहे २ मास १९ दिन २ घटी २९ पल इतने काल करके चत्रैमाससे अर्थात चैत्रमाससे २ मास १९ दिन २ घटी २९ पलपर पश्चिमदिशामें गुरुका अस्त होगा और मासादिक ३ मास ४दिन २ घटी २९ पलमें १५ युक्त करे तब ३ मास ४ दिन २ घटी २९ पल हुए इतने काल करके पूर्वमें गुरुका उदय होगा ॥४॥ ऽऽ॥

अब शुक्रके अस्त और उदयके साधनकी रीति लिखते हैं-

अथ मधुमुखमासाः सप्तभूनिघ्नचक्रैः स्वशरयुगलवाढ्यैः संयुता मार्गणघ्नाः ॥ उदधिरससमेताश्छिद्रखेगामितष्टा नवनवपरिशुद्धाः पञ्चभक्ताः पृथक्स्थाः ॥ रसगुणदिनहीनाढ्या द्विधा चैत्रतस्तैर्भृगुजहरिदिगस्ताम्बूदयौ स्तः क्रमेण ॥ ५ ॥ नवमासभघस्रतोऽल्पयुष्टाः पृथगास्थाः क्रमशस्त तैर्युतोनाः ॥ द्वेधा युगवासरोनयुक्तास्तोयास्तैन्द्र्युदयौ क्रमाद् भृगोः स्तः ॥ ६ ॥

अथ,मधुमुखमासाः, स्वशरयुगलवाढ्यैः, सप्तभूनिघ्नचक्रैः, संयुताः, (ततः) मार्गणघ्नाः, (ततः) उदधिरससमेताः, (ततः) छिद्रखेगा-मितष्टाः, (शेषाः,) नवनवपरिशुद्धाः, (ततः, शेषाः) पंचभक्ताः, पृथक्स्थाः (कार्य्याः) । (ते, अत्र) द्विधा, रसगुणदिनहीनाढ्याः (कार्य्याः) तैः, चैत्रतः, क्रमेण, हरिदिगस्ताम्बूदयौ, स्तः (ते) पृथगास्थाः, (यदि) नवमासभघस्रतः, अल्पपुष्टाः; (स्युः, तदा) तु, तैः, युतोनाः, (कार्य्याः), (ततः ते) द्वेधा युगवासरोनयुक्ताः; क्रमात्, भृगोः तोयास्तैन्द्र्युदयौ, स्तः ॥ ५ ॥ ६ ॥

अभीष्ट वर्षकी चैत्रशुक्ल प्रतिपदा चक्र और मासगण लावे तदनन्तर चक्रको सत्रह १७ से गुणा करके पैंतालिस का भाग देय तब जो मासादिक लब्धि होय उसको उस गुणनफलमें ही युक्त करदेय, फिर उसी अङ्कयोगमें मासगण मिला देय तब जो अङ्कयोग होय उसको ५ से गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें चौसठ ६४ मास मिला देय तब इस अङ्कयोगमें मास हों उनमें निन्यानवे ९९ का भाग देय तब जो शेष मासादिक रहे उसको निन्यानवे मासमें घटावे तब जो शेष रहे उसमें५ का भाग देय तब जो लब्धि होय वह मासादिक होता है तदनन्तर उस मासादिक लब्धिमें छत्तीस ३६ दिन घटाकर जो शेष रहे उतने समयपर चैत्रमाससे शुक्रका पूर्वदिशामें अस्त होता है और तिस मासादिक लब्धिमें छत्तीस दिन मिलाकर जो अङ्कयोग होय चैत्रसे उतने कालके अनन्तर शुक्रका पश्चिमदिशामें उदय होता है। फिर पहले लाये हुए मासादिक यदि नौ ९ मास सत्ताईस २७ दिनकी अपेक्षा कम होय तो तिस मासादिकमें नौ ९ मास २७ दिन मिलाकर जो अङ्कयोग होय उसमें चार ४ दिन घटा देय तब जो शेष रहे चैत्र माससे उतने ही कालके अनन्तर शुक्रका

पश्चिमदिशामें अस्त होता है और उस अङ्कयोगमें चारदिन मिला कर जो अङ्कयोगहोय चैत्रमाससे उतनेहीकालके अनन्तर शुक्रका पूर्वदिशामें उदय होता है औरयदि पहिले लाएहुए मासादिक नौ ९ मास सत्ताईस २७ दिनसे अधिक हो तो तिस मासादिकमें ९ मास २७ दिन घटाकर जो शेष रहे तिस मासादिकमें ४ चार दिन घठा देय तब जोशेष रहें चैत्रमाससे उतनेही कालके अनन्तर शुक्र का पश्चिममें अस्त होत है और शेष मासादिकमें ४ दिन मिला-कर जो अङ्कयोग होय चैत्रमाससे उतने ही दिनोंके अनन्तर पूर्व-दिशामें शुक्रका उदय × होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

उदाहरण—मास २५ चक्र ८ इस चक्रको १७ से गुणा करा तब १३६ हुए, इसमें ४५ का भाग दिया तब मासादि लब्धि हुई ३ मास ० दिन ४० घटी ० पल, इसको गुणनफल १३६ में युक्त करा तब १३९ मास ० दिन ४० घटी०पल हुआ इसमें मासगण२५ को युक्त करा तब १६४ मास०दिन ४० घटी० पल हुआइसको५से गुणा करा तब ८२० मास ३ दिन २० घटी ० पल हुआ, इसमें ६४ मास युक्त करे तब ८८४ मास ३ दिन २० घटी ० पल हुआ इसमें जो मास ८८४ हैं तिनमें ९९ का भाग दिया तब शेष रहा ९२ मास ३ दिन २० घटी ० पल, इसको ९९ मासमें घटाया तब शेष रहे ६ मास २६ दिन ४० घटी ० पल. इसमें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ मास ११ दिन २० घटी ० पल इसको दो स्थान में लिखकर एक स्थानमें ३६ घटाये तब शेष रहे ० मास ५ दिन २० घटी ० पल इससे मालूम हुआ कि चत्रसे ० मास ५ दिन २० घटी ० पलपर पश्चिम दिशामें शुक्रास्त होगा, दूसरे स्थानमें लिखे हुए १ मास ११ दिन२० घटी ० पलमें ३६ दिन युक्त करे तब २ मास १७ दिन २०घटी०पल हुए, इससे मालूम हुआ कि चैत्रमास से २ मास १७ दिन २० घटी ० पलके अनन्तर पूर्वदिशामें शुक्रो-दय होयगा ॥

× शुक्रका उदय और अस्त वर्षमें दो बार होता है ।

पूर्वोक्तमासादिक अर्थात् १ मास ११ दिन २० घटी ० पल ९ मास २७ दिनकी अपेक्षा कम है इस कारण १ मास ११ दिन २० घटी ० पलमें ९ मास २७ दिनको युक्त करा तब ११ मास ८ दिन २० घटी ० पल हुआ, इसको दो स्थानमें लिखकर एक स्थानमें चार ४ दिन घटा दिये तब ११ मास ४ दिन २० घटी ० पल हुआ, इससे मालूम हुआ कि चन्द्रमाससे ११ मास ४ दिन २० घटी ० पलपर फिर पश्चिमदिशामें शुक्रास्त होगा और दूसरे स्थानमें लिखे हुए ११ मास ८ दिन २० घटी ० पलमें ४ दिन युक्त करदिये तब ११ मास १२ दिन २० घटी ० पल हुआ, इससे प्रतीत हुआ कि चैत्रमाससे ११ मास १२ दिन २० घटी ० पलपर फिर पूर्व दिशामें शुक्रोदय होयगा ॥ ५ ॥ ६ ॥

अब शुक्र और गुरु इन दोनोंके उदय और अस्तके विषयमें सामान्य नियम लिखते हैं—

मासैर्नखैर्व्यरिदिनैरुदयास्तकालः शुक्रस्य शुद्ध्यति गुरोर्यदि साधविश्वैः ॥ सोऽन्यो भवेन्मधुमुखादथ तैर्युतश्चेत्स्यात्तत्परोऽथ पुरतोऽपि विलोमशुद्ध्या ॥ ७ ॥

नखैः, मासैः, व्यरिदिनैः, शुक्रस्य, उदयास्तकालः, शुद्ध्यति, यदि, गुरोः, (तदा), साद्धविश्वैः, (शुद्ध्यति), अथ, यदि मधुमुखात्, तैः, युतः, चेत्, (तदा), सः, अन्यः, भवेत्, अथ, विलोमशुद्ध्या, तत्परः, अथ, परतः, अपि, स्यात् ॥ ७ ॥

शुक्रका पूर्वोदय और पूर्वास्त होनेके अनन्तर फिर पश्चिमोदय और पश्चिमास्त होनेमें १९ मास २४ दिन लगते हैं और

गुरुका पूर्वोदय तथा पश्चिमास्त होकर फिर पूर्वोदय वा पश्चिमास्त होनेमें तेरह १३ मास १५ दिन लगते हैं, जिस मासमें उदयस्तकाल आया हो उसमें उस कालको मिलानेपर जितना काल हो, चैत्रमाससे उतने ही कालके अनन्तर फिर उदय और अस्तकाल होता है, और घटा देनेसे पहिलेका उदय और अस्तकाल होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—शाके १७९० आषाढ कृष्ण चतुर्दशीके दिन शुक्रका पूर्वोदय लिखा है. इस कारण ३ मास २९ दिनमें १९ मास २४ दिन युक्त करा तब २३ मास २३ दिन हुए, अर्थात् शाके १७९१ में फाल्गुन कृष्ण नवमीको फिर शुक्रका पूर्वोदय होयगा और पञ्चाङ्गमें माघवदी दशमीको लिखा है, इसमें कारण यह है कि उस वर्षमें वैशाख अधिक मास है इसी प्रकार शाके १७९० चैत्र शुक्ल चतुर्दशीको शुक्रका पूर्वास्त है इस कारण ० मास १४ दिनमें + १९ मास २४ दिमको युक्त करा तब २० मास ८ दिन हुए, अर्थात् शाके १७९२ मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमीको फिर शुक्रका पूर्वास्त होयगा, परन्तु शाके १७९१ में अधिक मास वैशाख होनेके कारण पञ्चाङ्गमें शाके १७९२ कार्तिक शुक्ल पौर्णिमाको शुक्रका पूर्वास्त लिखा है इसी प्रकार गणित करके गुरुअस्तोदय भी देखलेय ॥ ७ ॥

ग्रहोंका पूर्व पश्चिम दिशाकी ओर उदयास्त कब होता है-

लघुगोऽल्प इनादुदेति पूर्वे भूयान् भूरिगतिर्ग्रहः प्रतीच्याम् ॥ भूयाँल्लघुगः परत्र चास्तं प्राच्यां भूरिजवो लय प्रयाति ॥ ८ ॥

लघुगः, इनात्, अल्पः, ग्रहः पूर्वे, उदेति, भूरिगतिः, (इनात् -

भूयान्, (ग्रहः) प्रतीच्याम्, उदेति, लघुगः, भूयान् (ग्रहः) पश्च, अस्तम्, प्रयाति, भूरिजवः, (अल्पः) च, प्राच्यां, लयम्, प्रयाति॥८॥

ग्रहगति यदि सूर्यकी गतिकी अपेक्षा कम होय और वह ग्रह राश्यादि अवयवोंकरके भी सूर्यकी अपेक्षा कम होय तो उसका पूर्व दिशामें उदय होता है और यदि ग्रहकी गति सूर्यकी गतिकी अपेक्षा अधिक होय और वह ग्रह राश्यादि अवयवोंकरके भी सूर्यकी अपेक्षा अधिक होय तो उसका पश्चिम दिशामें उदय होता है और यदि ग्रहकी गति सूर्यकी गतिकी अपेक्षा कम होय और वह ग्रह राश्यादि अवयवोंकरके सूर्यकी अपेक्षा अधिक होय तो उस ग्रहका पश्चिममें अस्त होता है और यदि ग्रहकी गति तो सूर्यकी गतिकी अपेक्षा अधिक होय और वह ग्रह राश्यादि अवयवोंकरके सूर्यकी अपेक्षा कम होय तो उस ग्रहका पूर्वदिशामें अस्त होता है ॥ ८ ॥

अब चन्द्रशरसाधनकी रीति लिखते हैं—

प्रथमे व्यगुचन्द्रदोर्गृहेंशाः स्वदलाढ्यास्त्वपरे नगाब्धियुक्ताः ॥ चरमे दलिता नगाद्रियुक्ता व्यगुविधुदिग्विशिखोऽङ्गुलादिकः स्यात् ॥ ९ ॥

व्यगुचन्द्रदोर्गृहे, प्रथमे, अंशाः, स्वदलाढ्याः, (कार्य्याः) अपरे तु, नगाब्धियुक्ताः, (कार्य्याः) चरमे, (च, प्रथमम्) दलिताः, (ततः) नागाद्रियुक्ताः, (कार्य्याः, सः) अंगुलादिकः, व्यगुर्विधुदिग्विशिखः, स्यात् ॥ ९ ॥

स्पष्ट चन्द्रमें राहुको घटावे तब जो शेष रहे वह व्यगुविधु होता है, तदनन्तर उस व्यगुविधुके भुज करके वह भुज मेष-

राशिके हों अर्थात उनमें शून्य राशि होय तो भुजोंके अंशोंको ड्योढा कर लेय अथवा उनको तीनसे गुणा करके दो का भागदेय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि चन्द्रशर होता है, यदि भुज वृष राशिके होयं तो उन भुजोंकी राशियोंको त्याग कर केवलमात्र अंशादिमें सैंतालिस अंश युक्त करे, तब अंगुलादि शर होता है और यदि भुज मिथुन राशिका हो तो भुजके राशियोंको त्यागकर केवल अंशादिकोंमें दोका भाग देकर जो लब्धि होय उसमें सत्तर अंश और युक्त कर देय, तब जो अंकयोग होय वह चन्द्रमाका अंगुलादिक शर होता है, फिर पहिला व्यगु विधु उत्तर गोलमें होय तो शर भी उत्तर और व्यगुविधु दक्षिणगोलमें होय तो दक्षिण होता है ॥ ९ ॥

उदाहरण-शाके १५३२ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० बुधवार १२ घटी ५९ पल, दर्शान्तकालीन चन्द्र ८ राशि ५ अंश २६ कला २० विकला, इसमें राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १८ विकलाको घटाया तब शेष रहा ५ राशि २३ अंश ४५ कला २ विकला, यह व्यगुविधु हुआ, इस व्यगुविधुके ६ अंश १४ कला ५८ विकला यह भुज हुए यह भुज मेष राशिके हैं इस कारण इसको आधा करा तब ३ अंश ७ कला २९ विकला हुआ, इसको भुजोंमें युक्त कर दिया तब ड्योढे $\frac{3}{2}$ भुज=९ अंगुल २२ प्रतिअंगुल हुए। यह चन्द्रशर व्यगुविधुके उत्तरगोलीय होनेके कारण उत्तर है ॥ ९ ॥

अब चन्द्रका सूक्ष्म शर लानेकी रीति लिखते हैं-

नृपतिथिमनुविश्वरुद्रगोऽद्रिश्रुतिवसुधाः शरखण्डकानि तैर्यत् ॥ व्यगुविधुभुजतोऽपमोक्तिवद्व्यगुविधुदिग्विशिखोऽङ्गुलादिकःस्यात्॥१०

नृपतिथिमनुविश्वरुद्रगोऽद्रिश्रुतिवसुधाः, सरखण्डकानि (भवन्ति) तैः, व्यगुविधुभुजतः, यत्, अपमोक्तिवत् (भवति, तत्) अंगुलादिकः व्यगुविधुदिग्विशिखः भवति वा ॥१०॥

व्यगुविधुके भुजांशकरके तिन भुजोंसे नीचे लिखेहुए शरांकोंके द्वारा क्रांति लावे, परन्तु क्रांति लाते समय अन्तमें दशका भाग देना पड़ता है, सो यहां दसका भाग न देय, तब वह अंगुलादि सर होता है, वह व्यगुविधु उत्तरगोलमें होय तो उत्तर और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण होता है। नृप कहिये १६, तिथि कहिये १५, मनु कहिये १४, विश्व कहिये १३, रुद्र कहिये ११, गो कहिये ९, अद्रि कहिये ७, श्रुति कहिये ४ और वसुधा कहिये १ यह शरखण्ड (शराङ्क) है ॥ १० ॥

अङ्कसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
शराङ्क	१६	१५	१४	१३	११	९	७	४	१

उदाहरण--व्यगुविधु ५ राशि २३ अंश ४५ कला २ विकलाके भुजांश करे तब ६ अंश १४ कला ५८ विकला हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० शून्य, शेष रहे ६ अंश १४ कला ५८ विकला, इसको एकाधिक शरांक (एष्यखण्ड) १६ से गुणा करा तब ९९ अंश ५९ कला २८ विकला हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ९ अंगुल, ५९ प्र. अं. इसमें लब्धि ० संख्यक शराङ्क ०को युक्त करा तब ९ अंगुल ५९ प्रतिअंगुल यह चन्द्रशर उत्तर हुआ ॥ १० ॥

अब उदय और अस्त कालके जाननेके लिये ग्रहोंके उदयास्तके कलांश लिखते हैं--

भास्करा नगभवो गुणचन्द्रा भूभवो दिविष-

दृस्तिथयोऽब्जात् ॥ प्राक्तनैर्निगदिताः समयांशा
वक्रिणोर्भृगुविदोः क्षितिहीनाः ॥ ११ ॥

भास्कराः नगभुवः,गुणचन्द्राः, भूभुवः, दिविषदः, तिथयः, (एते) प्राक्तनैः, अब्जात्, समयांशाः, निगदिताः, वक्रिणोः भृगुविदोः, क्षितिहीनाः, भवन्ति ॥११॥

भास्कर कहिए १२ कालांशोंकरके चन्द्रमाका उदयास्त होता है, नगभू कहिये १७ कालांशोंकरके मंगलका उदयास्त होता है, गुणचन्द्र कहिये १३ कालांशोंकरके बुधका उदयास्त होता है, भूभू कहिये ११ कालांशोंकरके गुरुका उदयास्त होता है, दिविषद कहिये ९ कालांशोंकरके शुक्रका उदयास्त होता है और तिथि कहिये १५ कालांशोंकरके शनिका उदयास्त होता है, परन्तु यदि बुध और शुक्र यह वक्री हों तो इनके कालांशोंमें एक अंश घटाकर जो बाकी कालांश रहे तिन कालांशोंकरके उनका उदय और अस्त होता है ॥ ११ ॥

ग्रहोंके नाम	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वक्रीबुध	वक्रीशुक्र
कालांश	१२	१७	१३	११	९	१५	१२	८

अब भौम आदि ग्रहोंके पातांक लानेकी रीति लिखते हैं-

खाम्बुधयः खयमाः खभुजङ्गाः खाङ्गमिताः
खदशक्रमशः स्युः ॥ पातलवाः कुसुताद् बुध-
भृग्वोर्मध्यमचञ्चलकेन्द्रविहीनाः ॥ १२ ॥

खाम्बुधयः, खयमाः, खभुजङ्गाः, खांगमिताः, खदश (एते) क्रमशः, कुसुतात्, पातलवाः, (स्युः) बुधभृग्वोः, मध्यमचलकेंद्र-विहीनाः (स्युः) ॥१२॥

खाम्बुधि कहिये ४० मङ्गलके पातांश होते हैं, खयम कहिये २० बुधके पातांश होते हैं, खभुजङ्ग कहिये ८० गुरु के पातांश होते हैं, खांगमित कहिये ६० शुक्र के पातांश होते हैं और खदश कहिये १०० शनिके पातांश होते हैं और बुध तथा शुक्र इनके जो पातांश कहे हैं वह शीघ्रगति मण्डलस्थ हैं, इस कारण क्रमसे उनके जो अहर्गणोत्पन्न शीघ्रकेन्द्र हैं वह उपरोक्त पातांशोंमेंसे घटाकर जो शेष रहें वह बुध और शुक्र इन दोनोंके पातांश होते हैं ॥ १२ ॥

ग्रहोंके नाम	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पाताश वा सपातांश	०	०	८	६०	१००

अब भौमादिग्रहोंके शीघ्रकर्ण लानेकी रीति लिखते हैं-

कुद्वित्र्यब्धियुगाश्विनो दलचयश्चेत्षड्भपुष्टं चलं केन्द्रं चक्रविशुद्धमस्य भमिताधैंऽयं लवघ्नागतात् ॥ त्रिंशल्लब्धयुतं कुजात्कुयमलाब्धीन्द्रद्रिभक्तं क्रमात्तद्धीना धृतिरिष्विला गुणभुवो गोब्जा इनाद्राक्छ्रुतिः ॥ १३ ॥

कुद्वित्र्यब्धियुगाश्विनः, दलचयः, (स्यात्) चलम्, केन्द्रम्, षड्भपुष्टम्, चेत्, तदा), चक्रविशुद्धम्, (कार्य्यम्); अस्य, भमिता-

द्वैक्यम्, लवभागवात्, त्रिशल्लब्धयुतम् (कार्य्यम्), (ततः) कुजात्, कुयमलाब्धीन्द्रद्रिभक्तम्, (कार्य्यम्), (तदा, यत्, फलम्, तद्धीनाः), धृतिः, इष्विलाः, गुणभुवः गोब्जाः, इनाः, द्राक्छ्रुतिः, (स्यात्) ॥१३॥

कु-कहिये १ द्वि-कहिये २ त्रि-कहिये ३ अब्धि-कहिये ४ युग कहिये ४ आश्विन-कहिये २दलचय (शीघ्राङ्कसमुदाय) है। अभीष्ट ग्रहका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र लेकर वह ६ राशिकी अपेक्षा अधिक हो तो उसको १२ राशिमें घटावे और उस षड्भाल्प (छः राशिकी अपेक्षा अल्प) केन्द्रकी राशिप्रमाण संख्याके नीचे लिखे हुए शीघ्राङ्कोंका योग ले और एकाधिक केन्द्रकी राशि परिमित शीघ्राङ्कसे केन्द्रकी राशिको छोडकर केवल अंशादिकों को गुणा करे और इस गुणनफलमें तीसका भाग देकर जो लब्धिसे अंशादि हो उसमें शीघ्राङ्कसख्याका योग युक्त करके अभीष्ट ग्रहके नीचे लिखे हुए भाज्याङ्कका भाग दे तब जो अंशादि लब्धि हो उसको अभीष्ट ग्रहके शीघ्रकर्णाङ्कमें घटावे तब जो शेष रहे वह अंशादि शीघ्रकर्ण होता है ॥ १३ ॥

संख्या	१	२	३	४	५	६
शीघ्रांक	१	२	३	४	४	२

ग्रहोंके नाम.	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रहोंकेभाज्यांक	१	२	४	१	७
ग्रहोंकेशीघ्रकरणांक	१८	१५	१३	९	१२

उदाहरण-शाके १५३४ वैशाख शुक्ल १५ को मंगलादि ग्रहोंका शीघ्रकर्ण लाते मङ्गलका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ३ राशि १ अंश ४ कला ५७ विकला, यह छः राशिकी अपेक्षा अल्प है इसकी

राशि ३ परिमित संख्याके नीचेके शीघ्राङ्कोंका योग हुआ ६ और एकाधिक शीघ्राङ्क हुआ ४ अब राशिरहित केन्द्रके केवल अंशादिकों १ अंश ४ कला ५७ विकलाको गुणा करा तब ४ अंश १९ कला ४८ विकला हुआ, इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ८ कला ३८ विकला इसमें शीघ्राङ्कोंकी संख्याके योग ६ को युक्त करा तब ६ अंश ८ कला ३९ विकला हुआ इसमें भौम भाज्याङ्क १ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ अंश ८ कला ३९ विकला इसको मङ्गलके शीघ्रकर्णाङ्क १८ मेंसे घटाया तब शेष रहे ११ अंश ५१ कला २१ विकला यह मङ्गलका शीघ्रकर्ण हुआ

इसी प्रकार अन्य ग्रहोंके शीघ्रकर्ण लावें सो यहां ग्रहोंके द्वितीय शीघ्रकेन्द्र और शीघ्रकर्ण लिखते हैं–

	रा० अं० क० वि०		अं० क० वि०
बुधका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	१–१६–२५–२७–	शीघ्रकर्ण	१३–५७–१०
गुरुका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	८–२१–१०–५८	,,	११–१२–४२
शुक्रका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	३–४–२९–५२	,,	१२–२४–२
शनिका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	२–२२–५५–०	,,	११–२३–१८

अब भौमादि ग्रहोंके शर और स्पष्ट क्रांति लानकी रीति लिखते हैं—

मन्दस्पष्टखगात्स्वपातरहितात्क्रान्त्यंशकाः केवलात् कर्णाप्तास्त्रियमाहता अथ गुरोश्चेल्लोचनाप्ताः पुनः ॥ स्वांघ्र्यूना असृजोऽङ्गुलादिकशरः पातोनदिक्स्यादसौ त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः स्फुटतरस्तत्संस्कृतश्चापमः ॥

स्वपातरहितात्, मन्दस्पष्टखगात्, केवलात्,क्रान्त्यंशकाः (साध्याः) (ते), त्रियमाहताः, (ततः), कर्णाप्ताः, (कार्य्याः) अथ गुरोः, चेत्, (तर्हि), लोचनाप्ताः, (कार्य्याः) असृजः (चेत्), तर्हि, (द्व्याप्ताः), पुनः, स्वाङ्घ्र्यूनाः, (सन्तः) पातोनदिक् अंगुलादिकशरः, स्यात, असौ, त्रिघ्नः, कलिकादिकः, (स्यात्), तत्संस्कृतः, च, अपमः, स्फुटतरः, (भवति) ॥ १४ ॥

मन्द स्पष्ट ग्रहमेंसे अभीष्ट ग्रहके पातांश घटा, तब पातोन ग्रह होता है, तदनन्तर पातोन ग्रहमें अयनांश न देकर उससे क्रांतिके अंश साधे और उसको तेईससे गुणा करके शीघ्रकर्णका भाग दे, तब अभीष्ट ग्रहका अंगुलादि शर होता है; वह पातोनग्रह उत्तरगोलीय हो तो उत्तर और दक्षिणगोलीय हो तो दक्षिण होता है;परन्तु गुरुका शर साधते समय पूर्वोक्त रीतिसे लाये हुए शरमें दोका भागदेय और मंगलका शर लाते समय पूर्वोक्त रीतिसे लायेहुए शरमेंदोका भागदेय और मंगलका शरलाते समय पूर्वोक्त रीतिसे लाये हुए शरको तीनसे गुणा करके चारका भाग देय (परन्तु जब मंगलका शीघ्र कर्ण ग्यारह अंशकी अपेक्षा कम होय तो ठीक शर लानेके निमित्त उस शरमें भी फिर दोका भाग देय) । अभीष्ट ग्रहकी क्रांति लाकर उसको और अभीष्ट ग्रहके अंगुलादिक त्रिगुणित शरको कलादि मानकर उसका संस्कार करे तब अभीष्ट ग्रहकी स्पष्ट क्रांति होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण—मन्द स्पष्ट भौम १० राशि ३ अंश ८ कला ४५ विकलामें भौम पातांश ४० अंश अर्थात १ राशि १० अंशको घटाया तब शेष रहे ८ राशि २३ अंश ८ कला ४५ विकला, यह पातोन मंगल हुआ इससे लाई हुई क्रान्ति २३ अंश ४३ कला ३३ विकलाको २३ गुणा करा तब ५४५ अंश ४१ कला ३९ विकला हुआ, इसमें भौम शीघ्रकर्ण ११ अंश ५१ कला २२ विकलाका

भाग दिया तब लब्धि हुई ४६ अंश १ कला ३८ विकला, इसको ३ से गुणा करा तब १३८ अंश ४ कला ५४ विकला हुआ इसमें ४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३४ अंगुल ३१ प्रति अंगुल यह मंगलका शर हुआ, यह पातोन मंगलके दक्षिणगोलीय होनेके कारण दक्षिण है ॥

मन्दस्पष्ट बुध १ राशि ५ अंश ३ कला १५ विकला, राश्यादि पातांश० राशि २० अंश ० कला ० विकला इसमें अहर्गणोत्पन्न शीघ्रकेन्द्र १ राशी १७ अंश १४ कला ५० विकलाको घटाया तब शेष रहा ११ राशि २ अंश ४५ कला १० विकला, इसको मन्दस्पष्ट बुध १ राशि ५ अंश ३ कला १५ विकलामें घटाया तब २ राशि २ अंश १८ कला ५ विकला यह शेष रहा यही पातोन बुध हुआ, इससे लाई हुई क्रांति २१ अंश ० कला ५१ विकलाको २३ से गुणा तब ४८३ अंश १९ कला ३३ विकला हुआ, इसमें बुधशीघ्रकर्ण १३ अंश ५७ कला १० विकलाका भाग दिया तब लब्धि हुई ३४ अंगुल ३८ प्रतिअंगुल यह बुधका अंगुलादि शर हुआ, पातोन बुधके उत्तरगोलीय होनेके कारण उत्तर है ॥

मन्दस्पष्ट गुरु ४ राशि १२ अंश ५२ कला ४४ विकलामें गुरुपातांश ८० अंश, अर्थात् २ राशि २० अंशको घटाया तब शेष रहे १ राशि २२ अंश ५२ कला ४४ विकला, यह पातोन गुरु हुआ, इससे लाई हुई क्रांति १८ अंश ४९ कला ११ विकलाको २३ से गुणा करा तब ४३२ अंश ५१ कला १३ विकला हुआ, इसमें गुरुके शीघ्रकर्ण ११ अंश १२ कला ४२ विकलाका भाग दिया तब ३८ अंगुल २६ प्रतिअंगुल लब्धि हुई इस कारण ३८ अंगुल २६ प्रतिअंगुलमें २ का भाग दिया तब लब्धि हुई १९ अंगुल १८ प्रतिअंगुल यह गुरु अंगुलादि शर हुआ यह शर पातोन गुरुके उत्तरगोलीय होनेके कारण उत्तर है ॥

मन्दस्पष्ट शुक्र १ राशि ५ अंश २५ कला २५ विकला, राश्यादिपात २ राशि ० अंश ० कला ० विकलामें अहर्गणोत्पन्न शीघ्र केन्द्र ३ राशि ५ अंश ४१ कला ३५ विकला को घटाया तब शेष रहा १० राशि २४ अंश १८ कला २५विकला यह शुक्रपातांश हुआ इसको मन्दस्पष्ट शुक्र १ राशि ५ अंश २५ कला २५ विकलामें घटाया तब शेष रहा २ राशि ११ अंश ७ कला ० विकला, यह पातोन शुक्र हुआ, इससे लाई क्रांति २२ अंश ३२ कला २ विकलाको २३ से गुणा करा तब ५१८ अंश १६ कला ४६ विकला हुआ इसमें शुक्रके शीघ्रकर्ण १२ अंश २४ कला २ विकला का भाग दिया तब लब्धि हुई ४१ अंगुल ४७ प्रतिअंगुल यह शुक्रका शर, पातोन शुक्रके उत्तरगोलीय होनेके कारण उत्तर है॥

मन्दस्पष्ट शनि १० राशि २१ अंश २२ कला ४२ विकला में शनिके पातांश १०० अंश अर्थात ३ राशि १० अंशको घटाया तब शेष रहें ७ राशि ११ अंश २२ कला ४२ विकला, यह पातोन शनि हुआ, इससे लाई हुई क्रांति १५ अंश ३१ कला ६ विकलाको २३ से गुणा करा तब ३५६ अंश ५५ कला १८ विकला हुआ, इसमें शनिके शीघ्रकर्ण ११ अं. २३ कला १८ विकलाका भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई ३१ अंगुल २० प्रतिअंगुल यह शनि का सर पातोन शनिके दक्षिणगोलीय होनेके कारण दक्षिण है॥

अब स्पष्ट क्रांतिसाधन लिखते हैं--

स्पष्ट मंगल ११ राशि ५ अंश ५६ कला ४ विकलामें अयनांश १८ अंस १० कलाको युक्त करा तब ११ राशि २४ अंश ६ कला ४ विकला, यह सायन मंगल हुआ, इससे सायन मंगल से लाई हुई क्रांति दक्षिण २ अंश २१ कला ३४ विकलामें शर. दक्षिण ३४ अंगुल २१ प्रतिअंगुलको ५ से गुणा करके १ अंश ४२ कला ३३

विकला युक्त करा तब ४ अंश ५ कला ७ विकला, यह मङ्गलकी दक्षिण स्पष्ट क्रांति हुई ॥

स्पष्टबुध १ राशि १७ अं. ४ कला ० विकलामें अयनांश १८ अंश १० कला युक्त करे तब २ राशी ५ अंश १४ कला ० विकला यह सायन बुध हुआ। इस सायन बुध से लाई हुई क्रांति उत्तर २१ अंश ३२ कला ३१ विकलामें शर उत्तर ३४ अंगुल ३८ प्रतिअंगुल को ३ गुणा करके १ अंश ४३ कला ५४ विकलाको युक्त करा तब २३ अंश १६ कला २६ विकला यह बुधकी स्पष्ट क्रांति उत्तर हुई ॥

स्पष्ट गुरु ४ राशि २ अंश ९ कला ४९ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्त करा तब ४ राशि २० अंश १९ कला ४९ वि. यह सायन गुरु हुआ, इस सायन गुरुसे लाई हुई क्रांति उत्तर १४ अंश ५९ कला १९ विकलामें शर उत्तर १९ अंगुल १८ प्रति-अंगुलको ३ से गुणा करके ५७ कला ५४ विकला युक्त करा तब १५ अंश ५७ कला १३ विकला यह गुरुकी स्पष्ट क्रान्ति उत्तर हुई ॥

स्पष्ट शुक्र २ राशि १२ अंश १५ कला ४६ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्त करा तब ३ राशि ० अंश २५ कला ४६ विकला यह सायन शुक्र हुआ, इस सायन शुक्रसे लाई हुई क्रांति उत्तर २३ अंश ५८ कला ५८ विकलामें शर उत्तर ४१ अंगुल ४७ प्रतिअंगुलको ३ से गुणा करके २ अंश ५ कला २१ विकला युक्त करा तब २६ अंश ४ कला १९ विकला यह शुक्रकी स्पष्ट क्रांति उत्तर हुई ॥

स्पष्ट शनि १० राशि २६ अं. ४२ कला ३० विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्त करा तब ११ राशि १४ अं ५२ कला ३० विकला यह सायनशनि हुआ. सायन शनिसे लाई हुई क्रान्ति

दक्षिण६अंश३कला०विकलामें शर दक्षिण३१अंगुल २० प्रतिअंगुल को ३से गुणा करके१अंश३४कला०विकला युक्त करा तब ७ अंश ३७ कला ० विकला यह शनिकी स्पष्ट क्रान्ति दक्षिण हुई ॥१४॥

अब पचांगमें स्थिति स्पष्ट ग्रह और वक्रास्तादि दिनोंसे इष्ट दिनके विषे मन्द स्पष्ट ग्रहसाधनकी रीति लिखते हैं-

वक्रास्ताद्यं तिथिपटगतं तद्दिनेऽस्योक्तकेन्द्रं
स्यात्तच्चाल्पं त्वभिमतदिने स्वाशुकेन्द्रोक्तगत्या ॥
तस्मात्प्राग्वच्चलफलमिदं चालितस्पष्टखेटे व्यस्तं
देयं मृदुजफलभाक्स्यात्ततो वा शराद्यम् ॥१५॥

तिथिपटगतम्, वक्रास्त द्यम्, तद्दिने, अस्य, उक्तकेन्द्रम्, स्यात्, तत, तु, अभिमतदिने, स्वाशुकेन्द्रोक्तगत्या, च, अल्पम्, तस्मात्, प्राग्वत्, चलफलम्, साध्यम्, इदम्, चालितस्पष्टखेटे, व्यस्तम्, देयम् (सः), मृदुजफलभाक्, (भवति) ततः वा, शराद्यम्, साध्यम्१५

तिथिपट कहिये पञ्चांगके विषे जिस दिन अभीष्टग्रहका वक्रास्तादिकके लिखाहो तिसदिन अभीष्ट ग्रहोंके वक्रास्तादिकके पञ्चतारास्पष्टाधिकारमें कहे हुए द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशको लेकर उनमें शीघ्रकेन्द्रों की गति करके अभीष्ट दिन और वक्रास्तादिकका दिन इन दोनोंके मध्यमें जो दिन हों उन दिनोंका चालन देय तब अभीष्ट दिनके विषे द्वितीय शीघ्रकेंद्रांश होते हैं, तदनन्तर तिस द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशसे द्वितीय शीघ्रफल लावे, फिर पञ्चांगमेंके अभीष्ट ग्रहको उसकी ही गति करके लाये हुए अन्तरित दिनोंका चालन देवे तब इष्टदिनोंमेंका स्पष्ट ग्रह होता है, (परन्तु

यदि इष्टदिन पञ्चांगस्थ दिनके पहिले होय तो चालन ऋण करे और पञ्चांगस्थ दिनके अनन्तर इष्ट दिन होय तो चालन धन करे) तिस स्पष्टग्रहमें द्वितीय शीघ्रफल धन होय तो ऋण करे और ऋण होय तो धन करे तब मन्दस्पष्ट ग्रह होता है फिर तिस मन्दस्पष्ट ग्रहसे शरआदि लावै ॥ १५॥

अब दृक्कर्म साधनके निमित्त नतांशसाधन लिखते हैं—

प्राक्त्रिभेण वर्जितात्संयुताच्च पश्चिमे ॥ खेटतोपमाक्षयोः संस्कृतिर्नता लवाः ॥ १६ ॥ षट्शैलाष्टनवार्कधृत्यदितिजाः खण्डानि कार्य्यं नतांशांशांशभमखण्डकैक्यमगतोच्छिष्टांशघाताद्युतम् ॥ आशाप्त्या रविहृच्छराङ्गुलहतं लिप्ता ग्रहे ता नतांशेष्वोः स्वर्णमभिन्नभिन्नदिशि स व्यस्तं परे दृग्ग्रहः ॥ १७ ॥

प्राक्, त्रिभेण, वर्जितात्, पश्चिमे, तु, संयुतात्, खेटतः, क्रांतिः (साध्या) अपमाक्षयोः, संस्कृतिः, नताः, लवाः, (स्युः) ॥१६॥ षट्शैलाष्टनवार्कधृत्यदितिजाः, (एतानि) खण्डानि, नतांशांशांशभमखण्डकैक्यम्, कार्य्यम्, अगतोच्छिष्टांशघातात्, आशाप्त्या, युतम् शरांगुलहतम्, रविहृत्, लिप्ताः, (भवंति) ताः, नतांशेष्वोः, अभिन्नभिन्नदिशि, ग्रहे, स्वर्णम्, (देयाः), परे, व्यस्तम्, (देयाः) सः दृग्ग्रहः, (भवति) ॥ १७ ॥

ग्रहोंका उदयास्त पूर्वदिशाके विषे होयतो तिस स्पष्ट ग्रहोंमेंसे तीन राशि घटा देय और यदि उदयास्त पश्चिम दिशाके विषे होय तो तिस ग्रहमें तीन राशि युक्त कर देय, फिर तिससे क्रांति लाकर उस क्रांतिका और अक्षांशोंका संस्कार करे तब नतांश होते हैं ॥ १६ ॥ तदनन्तर तिन नतांशोंमें दशका भाग देकर जो लब्धि होय तिस लब्धिपरिमित नीचे लिखे हुए " षट्-कहिये ६ शैल-कहिये ७, अष्ट-कहिये ८, नव-कहिये ९, अर्क-कहिये १२, धृति-कहिये १८ और अदितिज-कहिये ३३" इनमेंके अङ्कोंका योग लेय और आगेसे अङ्कसे अंशादि शेषको गुणा करके दशका भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय उसको योगमें युक्त कर देय तब जो अङ्कयोग होय उसको शरांगुलोंसे गुणाकरके बारहका भाग देय, तब दृक्कर्म्म कला होती है, तदनन्तर नतांश और शर यह एक दिशाके होयँ तो तिन दिक्कर्म्मकलाओंको स्पष्ट ग्रहमें युक्त कर देय और नतांश तथा शर भिन्न दिशाके होयँ तो तिन दृक्कर्म्मकलाओंको स्पष्ट ग्रहमें घटा देय तब दृक्कर्म्मदत्त ग्रह होता है परन्तु वेध सूर्य्यास्तके अनन्तर होय तो नतांश और शर इन दोनोंके एक दिशाके होनेपर दृक्कर्म्मकलाओंको स्पष्ट ग्रह-मेंसे घटावे और भिन्न दिशाके होंने पर स्पष्ट ग्रहमें युक्त कर देय तब दृक्कर्म्मदत्त ग्रह होता है ॥ १७ ॥

अंकसंख्या	१	२	३	४	५	६	७
दृक्कर्म्मांक	६	७	८	९	१२	१८	३३

उदाहरण—शाके १५३२ चैत्र शुक्ला ५गुरुवारके दिन शुक्रके पूर्वास्तका गणित-चक्र ८ अहर्गण ७४७ मध्यम रवि ११ राशि २१ अंश २२ कला १७ विकला, रविकेन्द्र २ राशि २६अंश ३७कला ४३ विकला, मन्दफल धन २ अंश १० कला ३१ विकला, मन्द स्पष्ट रवि ११ राशि २३ अंश ३२ कला ४८ विकला, रविऋण २२ विकला, स्पष्ट रवि ११ राशि २३ अंश ३२ कला

२६ विकला, रविस्पष्ट गति ५९ कला ० विकला, शुक्र-का शीघ्रकेन्द्र ११ राशि ८ अंश. ३१ कला ५२ विकला, शीघ्र फलार्द्ध ऋण ० अंश ४ कला ३० विकला, शीघ्र फलदल स्पष्ट शुक्र ११ राशि १६ अंश ५७ कला ४५ विकला, मन्द केन्द्र २ राशि १२ अंश ८ कला १३ विकला, मन्द फल धन १ अंश २० कला ० विकला, मन्द स्पष्ट शुक्र ११ राशि २२ अंश ५२ कला १७ विकला, द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ११ राशि ७ अंश १ कला ५२ विकला, शीघ्रफल ऋण ९ अंश ७ कला ४८ विकला, स्पष्ट शुक्र ११ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकला, स्पष्ट गति ७४ कला ५४ विकला, शुक्र शीघ्रकर्ण १८ अंश १४ कला ४ विकला, क्रांति उत्तर २३ अंश ५६ कला ३८ विकला, शरदक्षिण ३० अंगुल १२ प्रतिअंगुल । अब दृक्कर्म कला साधते हैं-शुक्रका पूर्वास्त है इस कारण स्पष्ट शुक्र ११ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकलामें ३ राशि घटाई तब शेष रहे ८ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकला, इससे लाई हुई क्रांति दक्षिण २३ अंश ५६ कला ४२ विकला इसमें अक्षांशों २५ अंश २६ कला ४२ विकलाको युक्त करा तब नतांश दक्षिण ४९ अंश २३ कला २४ विकला हुए फिर नतांशों ४९ अंश २३ कला २४ विकला में १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ और शेष रहे ९ अंश २३ कला२४विकला इसकारण पहिले चार दृक्कर्माङ्कोंका योग३०और पांचवें अङ्क १२ से शेष ९ अंश २३ कला २४ विकलाको गुणा करा तब ११२ अंश ४० कला ४८ विकला हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंश १६ कला ४ विकला उसमें पहिले दृक्कर्माङ्क योग ३० को युक्त करा तब ४१ अंश १६ कला ४ विकला हुआ इसको शरांगुलों ३० अंगुल १२ प्रतिअंगुलसे

गुणा करा तब १२४६ अंश २० कला ३९ विकला हुआ इसमें १२ का भाग दिया तब लब्धि हुई कलादि दृक्कर्म्म १०३ कला ५१ विकला यह दृक्कर्म्म कला हुई अब नतांश और शर दोनोंकी एक दिशा है इस कारण दृक्कर्म्म कला १०३ कला ५१ विकला अर्थात् १ अंश ४३ कला ५१ विकलाको स्पष्ट शुक्र ११ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकलामें युक्त करा तब ११ राशि १४ अंश ५८ कला २० विकला यह दृक्कर्म्मदत्त शुक्र हुआ ॥ १७ ॥

अब ग्रहका उदयास्तदिन जाननेके निमित्त गतगम्यलक्षण कहते हैं-

कल्प्योऽल्पो रविरर्कदृक्खचरयोरन्यश्च लग्नं तयोर्मध्ये स्युर्घटिकाश्च पूर्ववदिमाः पश्चात्स चक्रार्द्धयोः ॥ षड्घ्नाः काललवा अमीभिरधिकैर्गम्योऽस्त ऊनैर्गतः प्रोक्तेभ्योऽभ्यधिकैर्गतः समुदयो न्यूनैस्तु गम्यो भवेत् ॥ १८ ॥

रविः, अर्कदृक्खचरयोः, अल्पः, कल्प्यः, (यः) अन्यः, च, (तस्य,) लग्नम्, (कल्प्यम्,) तयोः, मध्ये, च, (अयनांशान् , दत्त्वा,) पूर्ववत्, (कालः, साध्यः,) पश्चात्, चक्रार्द्धयोः, सः, (साध्यः,) इमाः, घटिकाः, च, षड्घ्नाः, काललवाः, स्युः, अमीभिः, अधिकैः, अस्तः, गम्यः, ऊनैः, गतः, (भवेत्) समुदयः, (तु,) प्रोक्तेभ्यः, अभ्यधिकैः, गतः, न्यूनैः, गम्यः, भवेत् ॥ १८ ॥

स्पष्ट सूर्य और दृक्कर्मदत्त ग्रह इन दोनोंमें जो कम होय उसको रवि और जो अधिक होय उसको लग्न समझकर तिस सूर्य लग्न से त्रिप्रश्नाधिकारमें कही हुई रीतिके अनुसार अभीष्ट काल साधे,

परन्तु पश्चिमोदयास्त साधनमें लग्न और रवि इन दोनोंमें छः राशि मिलाकर तदनन्तर अभीष्ट काल साधे, फिर तिस घटिकात्मक कालको छःसे गुणा करे तब इष्ट कालांश होता है. वह अभीष्ट ग्रहके पहिले कहे हुए कालांशोकी अपेक्षा अधिक होय तो अभीष्ट ग्रहका अस्त होयगा, और वह पूर्वोक्त कालांशोंकी अपेक्षा कम होय तो अस्त हो गया है ऐसा जाने, उदयके विषयमें विपरीत होता है अर्थात् यदि इष्टकालांश प्रोक्त कालांशोंकी अपेक्षा कम होय तो उदय होयगा और अधिक होय तो उदय हो गया, ऐसा जाने ॥ १८ ॥

उदाहरण–स्पष्ट सूर्य ११ राशि २३ अंश ३२ कला २६ विकला और दृक्कर्म्मदत्त शुक्र ११ राशि १४ अंश ५८ कला २० विकला इन दोनोंमें सूर्य्य अधिक है इस कारण ११ राशि २३ अंश ३२ कला २६ विकला, यह लग्न है और ११ राशि १४ अंश ५८ कला २० विकला यह सूर्य है, इन दोनोंमें अयनांश १८ अंश १० कला मिलाकर ० राशि २ अंश ६ कला २० विकला यह सायन रवि हुआ और ० राशि ११ अंश ४० कला २६ विकला यह सायन लग्न हुआ अब सायन रवि और सायन लग्न यह दोनों एकराशिके हैं इस कारण इन दोनोंका अन्तर ८ अंश ३४ कला ६ विकला हुआ इससे मेषोदय २२१ को गुणा करा तब १८९३ अंश ३६ कला ६ विकला हुआ. इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई ६३ पल अर्थात् १ घटी ३ पल यह अभीष्ट काल हुआ इस कारण इसको ६ से गुणा करा तब ६ अंश १८ कला यह इष्ट कालांश हुए ॥१८॥

अब दिन लानेकी रीति लिखते हैं–

खाभ्राग्निभिर्विनिहिताः कथितेष्टकालभागान्तरस्य कलिका रविभोदयाप्ताः॥ तत्सप्तमेन पर-

तोऽथ जवान्तराप्ता योगेन वक्रिणि दिनान्युदया-
स्तयोः स्युः ॥ १९ ॥

कथितेष्टकालभागान्तरस्य, कलिकाः, खाग्न्यग्निभिः, विनिहिताः, (ततः), रविभोदयाप्ताः, अथ, परतः, तत्सप्तमेन, (भक्ताः, ततः), जवान्तराप्ताः, (भक्ताः), वक्रिणि, (ग्रहे) योगेन, (भक्ताः), उदयास्तयोः, दिनानि, स्युः ॥ १९ ॥

अभीष्ट ग्रहके कहे हुए कालांश और इष्ट कालांश इन दोनोंका जो अन्तर होय उसकी कला करके तीनसौसे गुणा करे और तिस गुणनफलमें सायन रविके पलात्मक उदयका भाग देय परन्तु पश्चिमोदयास्त साधनके विषे सायन सूर्यमें छः राशि मिलाकर उसके पलात्मक उदयका भाग देय तब जो लब्धि हो उसमें फिर रवि और ग्रह इन दोनोंकी गतिके अन्तरका भागदेय, परन्तु ग्रह वक्री होय तो लब्धिमें रवि और ग्रह दोनोंकी गतिके योगका भाग देय तब उदयके थवा अस्तके दिन होते हैं ॥ १९ ॥

उदाहरण—शुक्रके कहे हुए स्पष्ट कालांश ६ अंश ४६ कला और इष्ट कालांश ६ अंश १८ कला, इन दोनोंके अन्तर करनेसे कालांश रहे २८ कला, इसको ३०० से गुणा करा तब ८४०० हुए, इसमें सायन सूर्यके उदय २२१ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३८ कला० विकला ३२ प्रतिविकला इसमें शुक्रगति ७४ कला ४५ विकला और रविगति ५९ कला इन दोनोंके अन्तर १५ कला ५४ विकलाका भाग दिया तब लब्धि हुई २ दिन २३ घटी३४पल इतने दिन होगये तब शुक्रका अस्त हो चुका ॥ १९ ॥

अब ग्रन्थकारने शुक्र और चन्द्रमाके कालांशोंका संस्कार कहा है सो लिखते हैं—

स्यात्खाभ्राग्न्युदयान्तरं भविहृतं स्वर्णं पृथू-
नोदये यत्तत्संस्कृतदृष्टिकर्म्मलवतः प्राणांशसं-
स्कारिताः । पूर्वोक्ता भृगुचन्द्रयोः क्षणलवाः स्प-
ष्टा भृगोश्चोनिता द्वाभ्यां तैरुदयास्तदृष्टिसमता
स्याल्लक्षितैषा मया ॥ २० ॥

खाभ्राग्न्युदयान्तरम्, भविहृतम्, (तत्), यत्, (फलम्) स्यात्, (तत्) पृथूनोदये, स्वर्णम्, (का र्यम्), तत्संस्कृतदृष्टि, कर्म्मलवतः, प्राणांशसंस्कारिताः, भृगुचन्द्रयोः, पूर्वोक्ताः, क्षणलवाः, स्पष्टाः, (स्युः), भृगोः, च, द्वाभ्याम्, ऊनिताः, (कार्य्याः), तैः, (शुक्रचन्द्रयोः), उदयास्तदृष्टिसमता, स्यात्, एषा, मया, लक्षिता ॥ २० ॥

चन्द्रमा और शुक्र इन दोनोंके पूर्व कहे हुए कालांशोंका एक विशेष संस्कार किया जाता है, वह यह है कि–ग्रहोंका पलात्मक उदय और तीनसौ पल इन दोनोंका अन्तर करके सत्ताईसका भाग देय, तब अंशादि लब्धि मिले वह यदि पलात्मक उदय (तीनसौ पल) की अपेक्षा अधिक होय तो धन और कम होय तो ऋण जाने, तदनन्तर अंशादि लब्धि और दृक्कर्म्म कलाओंका संस्कार करें (अर्थात् दृक्कर्म्मकला ग्रहमें मिली हों तो धन और घटाई हुई हो तो ऋण जाने) और जो धन ऋणात्मक आवे उसमें पांचका भाग देय और अंशादि धनऋणात्मक लब्धिको

पूर्वोक्त कालांशोंमें धन ऋण करे, तब चन्द्रमाके स्पष्ट कालांश होते हैं, इस रीतिसे लाये हुये स्पष्ट कालांशोंमेंसे दो अंश घटा देनेसे शुक्रके स्पष्ट कालांश होते हैं, यह कालांश और इष्ट कालांश इनसे पूर्वोक्त रीतिसे अस्तोदयके गत गम्य लक्षण जाने ॥ २० ॥

उदाहरण—अब शुक्रके विषयमें गणित करना है इस कारण शुक्रके (मेषोदय) उदय २२१ और २०० का अन्तर करा तब ७९ हुए , इसमें २७ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अंश ५५ कला ३३ विकला, यह लब्धि उदय ३०० की अपेक्षा कम है इस कारण ऋण है, अब दृक्कर्म्मकला १०३ कला ५१ विकला अर्थात् १ अंश ४३ कला ५१ विकलामें लब्धि २ अंश ५५ कला ३३ विकलाको ऋण करा तब (ऋण) १ अंश ११ कला ४२ विकला रहा, इसमें ५ का भाग देनेसे लब्धि हुई ऋण ० अंश १४ कला, इसको शुक्रके पूर्वोक्त कालांशों ९ में घटाकर शेष रहे ८ अंश ४६ कला, इसमें २ अंश घटाये तब शेष रहे६अंश४६कला यह शुक्रके स्पष्ट कालांश हुए इसकी अपेक्षा इष्ट कालांश ६ अंश१८ कला कम हैं इस कारण अस्त हो गया ॥ २० ॥

अब अगस्त्यके उदय और अस्तको जाननेकी रीति लिखते हैं-

पलभाष्टवधोनसंयुता गजशैला वसुखेचरा लवाः ॥ इह तावति भास्करे क्रमाद्घटजोऽस्तं ह्युदयं च गच्छति ॥ २१ ॥

गजशैलाः, वसुखेचराः, लवाः, पलभाष्टवधोनसंयुताः, (कार्याः) तावति, भास्करे (सति), इह क्रमात्, घटजः, हि, अस्तम्, उदयम्, च गच्छति ॥२१ ॥

पलभाको आठसे गुणा करके जो अंशादि गुणान फल होय उसको अठहत्तर अंशोंमें घटावे तब जो शेष रहे उतने ही अंशोंपर रवि जिस समय आवेगा उस समय अगस्त्यका अस्त होयगा और उस अंशादि गुणानफलको अट्ठानवे अंशोंमें युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग होय उतने अंशोंपर रवि जिस समय आवे तब ही अगस्त्यका उदय होगया ॥ २१ ॥

उदाहरण-पलभा ५अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ८ से गुणा करा तब ४६ अंगुल हुए इस गुणनफल ४६ को ७८ अंशमें घटाया तब शेष रहे ३२ अंश अर्थात् १ राशि २ अंशपर रवि आवेगा तब अगस्त्यका अस्त होयगा और पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ८ से गुणा करके ४६ अंगुल ९८ अंशोंमें युक्त करा तब १४४ अंश अर्थात् ४ राशि २४ अंशपर रवि आवेगा तब आगस्त्यका उदय होयगा । (इतना ध्यान रखना चाहिये कि १ राशि २ अंशपर रवि, मई महीनेकी १४ तारीखको होता है इसकारण उस दिन ही अगस्त्यका अस्त होता है और ४ राशि २४ अंशपर रवि सितम्बर महीनेकी ८ तारीखको होता है इस कारण उस दिन ही अगस्त्यका उदय होता है यह उदाहरण श्रीकाशीक्षेत्रका है इस कारण ऐसा तहां ही दृष्टिगोचर होगा अन्यत्र कुछ अन्तर पडेगा) ॥ २१ ॥

अब ग्रहका नित्य उदयास्त जाननेकी रीति लिखते हैं-

खेचरोऽर्कास्तकाले सषड्भार्कतो योऽधिकोऽल्पोऽर्कतो निश्युदेतीह सः ॥ अस्तमेत्यन्यथाऽथो विधेयः क्रमात्पूर्वपश्चात्स्थदृक्कर्मभाक्स ग्रहः ॥ २२ ॥

अर्कास्तकाले, यः, खचरः, सषड्भार्कतः, अधिकः, (वा, यः, केवलात्,) अर्कतः, अल्पः, सः, इह, निशि, उदेति, अन्यथा, अस्तम्, एति, अथो, सः, ग्रहः, क्रमात्, पूर्वपश्चात्स्थदृक्कर्म्मभाक्, विधेयः॥२२॥

सायंकालके समय स्पष्ट सूर्य और स्पष्ट ग्रह करे, फिर यदि वह स्पष्ट ग्रह छः राशि करके युक्त स्पष्ट सूर्यसे अधिक होय, अथवा केवल स्पष्ट सूर्यसे कम होय तो उस ग्रहका रात्रिके समय उदय होता है और यदि वह स्पष्ट ग्रह षड्राशियुक्त सूर्यसे कम और स्पष्ट सूर्यसे अधिक होय तो रात्रिमें अस्त होता है। फिर रात्रिमें उस ग्रहका उदय होय तो उसको पूर्वदृक्कर्म्मदत्त करे (पूर्वदृक्कर्म्मदत्त वह कहाता है जो दृक्कर्म्मदत्त पूर्वोदयास्त साधनकी रीतिसे लाया जाता है) और रात्रिमें उस ग्रहका अस्त होय तो उसको पश्चिमदृक्कर्म्मदत्त करे (पश्चिमदृक्कर्म्मदत्त वह कहाता है जो दृक्कर्म्मदत्त ग्रह पश्चिमोदयास्त साधनकी रीतिसे लाया जाता है) ॥ २२ ॥

उदाहरण-शाके १४३४ वैशाख शुक्ल १५ के दिन रात्रिके समय गुरुके अस्तका गणित करते हैं-प्रातःकालीन ग्रह स्पष्ट रवि १ राशि ५ अंश ४२ कला ३७ विकला, स्पष्टगति ५७ कला २६ वि. स्पष्ट गुरु ४ राशि २ अंश ९ कला ४९ विकला, स्पष्टगति ५ क. २२ विकला, मन्दस्पष्ट गुरु ४ राशि १४ अंश ५२ कला ४४ विकला मन्दस्पष्टगति ४ कला ४२ विकला, दिनमान ३३ घटी ६ पल, अब सायंकालीन रवि १ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकला, गुरु ४ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला, मन्दस्पष्ट गुरु ४ राशि १२ अंश ५५ कला १९ विकलामें गुरुगति २ राशि २० अंशको घटाया तब शेष रहा १ राशि २२ अंश ५५ कला १९ विकला, इससे लाई हुई क्रांति १८।४९।४९ शीघ्रकर्ण ११ अंश १२ क. ४२ वि. अंगुलादि गुरुशर उत्तर १९ अंगुल १८ प्रतिअंगुल ५२ तत्प्रतिअंगुल

अब गुरु ४ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला षड्राशि-युक्त रवि ७ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकलाकी अपेक्षा कम है और स्पष्ट रवि १ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकलाकी अपेक्षा अधिक है, इस कारण रात्रिमें गुरु का अस्त हो गया। गुरु ४ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला में ३ राशि युक्त करीं तब ७ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला हुआ, इससे लाई हुई क्रान्ति दक्षिण १८ अंश ११ कला ४१ विकला, नतांश दक्षिण ४३ अंश ३८ कला २३ विकला दृक्कर्म्म-कला धन ५५ कला १८ विकला दृक्कर्म्मदत्त गुरु ४ राशि २ अंश ८ कला ४ विकला ॥ २२ ॥

अब रात्रिके समय ग्रहके उदय और अस्तकी गतघटिका जाननेकी रीति लिखते हैं-

उद्गमे यातकालः खगात्त्वस्तके षड्भयुक्तात्स-षड्भार्कभोग्यान्वितः ॥ युक्तमध्योदयोऽस्योद्ग-मास्ते भवेद्रात्रियातोऽथ तत्कालखेटात्स्फुटः॥२३

उद्गमे, (सति), खगात्, यातकालः, (साध्यः,) अस्तके,तु,षड्भयु-क्तात्, (यातकालः, साध्यः), सषडमार्कभोग्यान्वितः, युक्तमध्योदयः, अस्य, उद्गमास्ते, रात्रियातः, भवेत्, अथ, तत्कालखेटात्, स्फुटः (स्यात्) ॥ २३ ॥

ग्रहका उदयकाल लाना होय तो दृक्कर्म्मदत्त ग्रहको लग्न मानकर तिससे भुक्तकाल लावे, परन्तु अस्तकाल लाना होय तो षड्राशियुक्त दृक्कर्म्मदत्त ग्रहको लग्न मानकर तिससे भुक्त-काल लावे और षड्राशियुक्त सूर्य्यको रवि मानकर तिससे

भोग्यकाल लावे, तदनन्तर भुक्तकाल और भोग्यकाल इन दोनों के योगमें लग्न और रवि इन दोनोंके मध्यके पलात्मक उदयोंके योगको युक्त करे, तब जो अङ्कयोग होय उतनी ही घड़ीपर रात्रि में ग्रहका उदय अथवा अस्त होयगा, तदनन्तर उदयास्तकालीन दृक्कर्म्मदत्त ग्रह और सूर्य्य इनको तात्कालिक करके इनसे पूर्वोक्त रीतिके द्वारा उदयास्तकालकी घटिका फिर लावें तब स्पष्ट उदयास्त काल होता है ॥ २३ ॥

उदाहरण-षड्राशियुक्त दृक्कर्म्मदत्त गुरु १० राशि ३ अंश ० कला ४ विकलाको लग्न मानकर इससे लाया हुआ पलात्मक भुक्तकाल १७९ पलमें षड्राशियुक्त सूर्य्य ७ राशि ६ अंश १४ कला २३ विकलाको रवि मानकर इससे लाए हुए भोग्यकाल ६४ पलको युक्तकरा तब भुक्त और भोग्य दोनोंका योग हुआ २४३ इसमें लग्न और रवि इनके मध्यमेंके पलात्मक उदय अर्थात धनोदय ३४२ पल और मकरोदय ३०४ पलको युक्त करा तब ८८९ पल अर्थात १४ घटी ४९ पल हुआ, इस कारण सूर्य्यास्त कालसे इतनी घटी पलपर गुरुका अस्त होयगा। अब १४ घटी ४९ पल इनका चालन देकर लाया हुआ दृक्कर्म्मदत्त गुरु ४ राशि ३ अंश ९ कला २४ विकला और स्पष्ट सूर्य १ राशि ६ अंश २८ कला २६ विकला इनमें ६ राशि युक्त करके और पहिलेको लग्न तथा दूसरेको रवि मानकर तिनसे लाए हुए भुक्त और भोग्य कालका योग हुआ २४० पल इसमें लग्न और रवि इन दोनोंके मध्यके उदयोंके योग ६४६ पलको युक्त करा तब ८८६ पल अर्थात् १४ घटी ४६ पल, यह गुरुका स्पष्ट अस्तकाल हुआ॥ २३ ॥

अब चन्द्रमाके स्पष्टोदयास्तकालसाधनकी रीति लिखते हैं-

इन्दोस्तु गोपलाढ्योनः कार्य्योऽथ प्रतिना-

डिकम् । युतो द्विद्विपलैः स्पष्टः किं स्यात्तात्कालिकेन्दुना ॥ २४ ॥

इन्दोः,(उदयास्तकालः), गोपलाढ्योनः, (कार्य्यः), अथ, तु, प्रतिनाडिकम्, द्विद्विपलैः, युक्तः, स्पष्टः, (भवति), (पुनः), तात्कालिकेन्दुना, किम्, स्यात् ॥ २४ ॥

चन्द्रमाके उदय कालमें नौ पल मिलावे, और अस्त कालमें नौ पल घटावे तब जो घटिकादिकहोय उसमें क्रमसे उदयकालकी और अस्तकालकी घटिकाओंको दोसे गुणा करके जो गुणनफल होय तत्तुल्य पल मिलावे तब तात्कालिक चन्द्रमाके करे विना ही चन्द्रमाका स्पष्ट उदयास्तकाल होता है ॥ २४ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीय मुरादाबादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयसंस्कृत विद्यालयप्रधानाध्यापक-पंडितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंस-श्रीयुतभोलानाथतनूजपंडितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीका सहितः अस्तोदयाधिकारः समाप्तिमितः ॥९॥

अथ ग्रहच्छायाधिकारः ।



वहां प्रथम अभीष्टग्रहके दिनगतकालके साधनकी रीति लिखते हैं-

प्राग्दृष्टिकर्म्मखचरस्तनुतोऽल्पकोऽस्तात्पुष्टश्च दृश्य इह खेचरभोग्यकालः ॥ लग्नेन युक्च विवरोदययुग्द्युयातः स्यात्खेचरस्य सितगोर्यदि गोपलोनः ॥ १ ॥

प्राग्दृष्टिकर्म्मखचरः, (यदा), तनुतः, अल्पकः, अस्तात्, च, पुष्टः, (स्यात्) तदा, दृश्यः, इह, खेचरभोग्यकालः, (स्यात्) । लग्नेन, युक्, विवरोदययुक्, च, खेचरस्य, द्युयातः, स्यात, यदि, सितगो , (तर्हि), गोपलोनः (कार्य्यः) ॥१॥

रात्रिमें जब अभीष्ट ग्रहका दिनगत (ग्रहके उदयको प्राप्त होनेसे रात्रिमें जब उसका वेध लेना होय तबतक व्यतीत हुआ) काल लाना होय तो पूर्वदृक्कर्म्मदत्त अभीष्टग्रह और तात्कालिक लग्न यह दोनों लावे, तदनन्तर पूर्व दृक्कर्म्मदत्त अभीष्टग्रह यदि तात्कालिक लग्नकी अपेक्षा कम और षड्राशियुक्त तात्कालिक लग्नकी अपेक्षा अधिक होय तो रात्रिमें वह ग्रह उस समय दृश्य होयगा, तदनन्तर दृक्कर्म्मदत्त ग्रहसे लायाहुआ भोग्यकाल;तात्कालिक लग्नका भुक्तकाल और तात्कालिक लग्न तथा दृक्कर्म्मदत्त ग्रह इनके मध्यके पलात्मक उदयोंका योग करे, तब अभीष्टग्रहका घटिकादि दिनगत काल आता है, परन्तु यदि चन्द्रमाका दिनगत काल लाना होय तो पूर्वोक्त रीतिसे लाई हुई कलाओंमेंसे नौ पल घटा देय ।। १ ॥

उ०-शके १५३२ वैशाख शुक्ल नवमी ९ शनिवारके दिन १० घटी रात्रिको चन्द्रमाकी छाया साधते हैं-तहां अहर्गण ७७७, प्रातःकालीन मध्यम ग्रह रवि० राशि २० अंश ५६ कला २२ विकला, चन्द्र ३ राशि २६ अंश ५८ कला ३ विकला. उच्च ७ राशि २२ अंश ४ कला ६ विकला, राहु २ राशि ३३ अंश ४७ कला ३ विकला, स्पष्टीकरण-रविमन्दकेन्द्र १ राशि २७ अंश ३ कला ३८ विकला, मन्दफलधन १ अंश ४९ कला ४० विकला, मन्दस्पष्ट रवि २२ अंश ४६ कला २ विकला, अयनांश १८ अंश ८ कला, चरऋण ७३ विकला, चरसंस्कृतस्पष्टरवि० राशि २२ अंश ४४ कला ४९ विकला, स्पष्टगति ५७ कला २८ विकला, त्रिफल-संस्कृत चन्द्र ३ राशि २६ अंश ३५ कला १३ विकला, मन्दकेन्द्र ३ राशि २५ अंश २८ कला ५३ विकला, मन्दफल धन ४ अंश ३२ कला ० विकला संस्कृत स्पष्टचन्द्र ४ राशि १ अंश ७ कला १३ विकला, स्पष्टगति ८१९ कला १९ विकला, दिनमान ३२ घटी २६ पल, सूर्योदयसे गत घटियों ४२ घटी २६ पलसे चालित सूर्य ० राशि २३ अंश २५ कला ४७ विकला, चालितचन्द्र ४ राशि १० अंश ४६ कला ३९ विकला, चालितराहु २ राशि २५ अंश ४४ कला ४८ विकला, व्यगुविधु १ राशि १७ अंश १ कला ५१ विकला चन्द्रशरउत्तर ६५ अंगुल ४४ प्रतिअंगुल, चन्द्रमा ४ राशि १० अंश ४६ कला ३९ विकलामें ३ राशि. घटाई तब शेष रहा १ राशि १० अंश ४६ कला ३९ विकला, इससे लाई हुई क्रांति उत्तर २० अंश १९ कला ३९ विकला, अक्षांशदक्षिण २५ अंश २६ कला ४२ विकला, नतांशदक्षिण ५ राशि ० अंश १३ कला ३ विकला, पूर्व दृक्कर्म्मकलादिक ऋण १६ कला ४९ विकला, दृक्कर्म्मदत्तच द्र

४ राशि १० अंश २९ कला ५० विकला, १० घटी रात्रिका लग्न ८ राशि १६ अंश २४ कला२२विकला, अब दृक्कर्म्मदत्तचन्द्र लग्नकी अपेक्षा कमती है और षड्राशियुक्त लग्न २ राशि १६ अंश २४ कला २२ विकलाकी अपेक्षा अधिक है, इस कारण चन्द्रमा दृश्य है, दृक्कर्म्मदत्त चन्द्रसे लाया हुआ भोग्यकाल १५पल, लग्नसे लाया हुआ भुक्तकाल ४६ पल, सायन दृक्कर्म्मदत्त चन्द्रमाके भोग्यकाल १५ पलको सायन लग्नके भुक्तकालमें युक्त करा तब ६१ हुए इसको ग्रह और लग्न इन दोनोंके मध्यमें जो सिंहसे लेकर मकरपर्य्यन्त राशियोंके उदय तिनके योग १३५७ में युक्त करा तब १४१८ पल अर्थात २३ घटी ३८ पल हुए इसमें चन्द्रमाका दिनगतकाल लाना है, इस कारण ९ पल घटाये तब शेष रहे २३ घटी २९ पल, यह चन्द्रमाका स्पष्ट दिनगतकाल हुआ ॥ १ ॥

अब ग्रहका दिनमान जाननेकी रीति लिखते हैं-

जिनाप्तोऽक्षाभाघ्नोऽङ्गुलमयशरोऽनेन तु चरं
स्फुटं संस्कृत्यातो दिनमथ खगस्य द्युविगतात्॥
प्रभाद्यं संसिद्ध्येदथ खचरभादेर्निशि गतं भुवेऽ-
थारादीनां द्युतिपरिगमं यन्त्रवशतः ॥ २ ॥

अंगुलमयशरः, अक्षाभाघ्नः, (ततः) जिनाप्तः, (कार्य्यः), अनेन, तु, चरम्, संस्कृत्य, स्फुटम्, (कार्य्यम्)अतः, दिनम्, साध्यम्), अथ, खगस्य, द्युविगतात्, प्रभाद्यम्, ससिध्येत्, अथ, खचरभादेः, निशिगम्, अथ, आरादीनाम्, द्युतिपरिगमम्, यन्त्रवशतः, वे ॥ २ ॥

अंगुलादि शरको पलभासे गुणा करके चौबीसका भागदेय, तब जो पलात्मक लब्धि मिले वह शर उत्तर होय तो उत्तर शर दक्षिण होय तो दक्षिण होती है और दृक्कर्म्मदत्त ग्रहसे चर लाकर वह ग्रह उत्तरगोलीय होय तो उत्तर और दक्षिणगोलीय होय तो दक्षिण जाने, तदनन्तरे पलात्मक लब्धिका और चरका संस्कार करे तब वह स्पष्टचर होता है, फिर तिस चरसे दिनमान लावे वह अभीष्ट ग्रहका दिनमान होता है, तदनन्तर अभीष्ट ग्रहका दिनमान और दिनगतकाल इनसे त्रिप्रश्नाधिकारमें कही हुई रीति के द्वारा अभीष्ट ग्रहकी इष्टच्छाया लावे ॥ २ ॥

उदाहरण—शर उत्तर ६५ अंगुल ४४ प्रतिअंगुलको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलसे गुणा करा तब ३७७ अंगुल ५८ प्रतिअंगुल हुए इसमें २४ का भाग दिया तब लब्धि हुई १५ पल ४४ वि० । यह लब्धि शरके उत्तर होनेके कारणसे उत्तर है इससे दृक्कर्म्मदत्त चन्द्रसे लाए हुए चर उत्तर ५९ पलका संस्कार करा तब ७४ । ४४ यह स्पष्ट चर हुआ, यह दृक्कर्म्मदत्त चन्द्रके उत्तरगोलीय होनेके कारण धन है, इसकारण ७४ पलमें १५ घटीको युक्त करा तब १६ घटी १४ प. यह दिनार्द्ध हुआ, इसकारण ३२ घटी २८ पल यह चन्द्रमा का दिनमान हुआ, इसमेंसे दिनगत काल २३ घटी २९ पलको घटाया तब शेष रहे ८ घटी ५९ पल यह पश्चिमोन्नत काल हुआ, इसको दिनार्द्ध १६ घटी १४ पलमें घटाया तब ७ घटी १५ पल यह पश्चिम नतकाल हुआ, इससे लाये हुए अक्षकर्ण १३ अंगुल २९ प्रति अंगुल, स्पष्ट चर ७४। ४४ हार १२८ । ५६ समाख्य ३० । १ । इष्टहार २७ । ५ । भाज्य ११ । ७ । ५५ । अंगुलादि कर्ण १५ अंगुल ५३ प्रतिअंगुल, इष्टच्छाया १० अंगुल ३४ प्रतिअंगुल ॥ २ ॥

अब वेधसे ग्रहच्छाया साधनकी रीति लिखते हैं—

पश्येज्जलादौ प्रतिबिम्बितं वा खेटं दृगोच्च्यं

गणयेच्च लम्बम् ॥ तं लम्बपातप्रतिबिम्बमध्यं दृ-
गौच्च्यहृत्सूर्य्यहतं प्रभा स्यात् ॥ ३ ॥

जलादौ, खेटम्, प्रतिबिम्बितम्, पश्येत्, वा, दृगौच्च्यम् लम्बनम् च, गणयेत्, तम् लम्बपातप्रतिबिम्बमध्यम्, (गणयेत्), सूर्य्यहतम्, दृगौच्च्यहृत्, प्रभा, स्यात् ॥ ३ ॥

जलमें अथवा दर्पण आदिमें अभीष्ट ग्रहका प्रतिबिम्ब देख-कर भूतलसे अपनी दृष्टिपर्यन्त अंगुलादि ऊँचाईको गिने और लम्ब पात और प्रतिबिम्बके मध्यके अन्तरको भी अंगुलादि गणना करे. फिर उसको बारह से गुणा करके और अंगुलादि दृगौच्च्य का भाग देय तब ग्रह की छाया होती है ॥ ३ ॥

अब ग्रहको छायासे दिनगतकाल साधनेकी रीति लिखते हैं-

ज्ञात्वाऽनुमानान्निशि यातनाडीस्तत्कालखेटा-
त्कथितैश्चराद्यैः ॥ दृष्टप्रभादेर्द्युगतो ग्रहस्य सा-
ध्यस्त्विहेन्दोर्यदि गोपलाढ्यः ॥ ४ ॥

अनुमानात्, निशि, यातनाडीः, ज्ञात्वा, तत्कालखेटात्, कथितैः चराद्यैः, इष्टप्रभादेः, ग्रहस्य, द्युगतः, (कालः), साध्यः, इन्दोः यदि, (तर्हि) तु, इह, गोपलाढ्यः, (कार्य्यः) ॥ ४ ॥

जिस समय ग्रहका वेध करा हो उस समय जितनी घटी रात्रि बीती होय उसको अनुमानसे जानकर उस समयका ग्रह, स्पष्ट चर और दिनमान लावे, तदनन्तर इनसे और ग्रहकी इष्ट छाया

से त्रिप्रश्नाधिकारमें कही हुई रीतिके अनुसार अभीष्ट ग्रहका दिनगत काल लावे, यह दिनगत काल चन्द्रमाका होय तो उसमें नौ पल युक्त कर देय ॥ ४ ॥

उदाहरण—रात्रिमें चन्द्रमाकी ओर देखकर अनुमान करनेसे १० घटी रात्रि व्यतीत हुई मालूम पड़ी इसकारण तिस समय के चन्द्रसे लाया हुआ स्पष्टचर ७४ पल हुआ और दिनमान ३२ घटी २८ पल हुआ और बेधसे लाई हुई इष्ट छाया १० अंगुल २४ प्रतिअंगुल हुई इसकारण इनसे लाया हुआ कर्ण १३ अंगुल ५२ प्रतिअंगुल, भाज्य ११ । ७ । ५५, इष्टहार ७ । ५, अक्षकर्ण १३ अंगुल १९ प्रतिअंगुल, हार १२८ । ५८ और पश्चिमनत ७घटी १५ इस कारण दिनार्द्ध १६ घटी १४ पलमें पश्चिमनत ७ घटी १५ पलको युक्त करा तब २३ घटी २९ पल हुए, इसमें ९ पल युक्त करे तब २३ घटी ३८ पल यह चन्द्रमाका दिनगत काल हुआ॥४॥

अब ग्रहके उदयमें दिन शेष रात्रिगत कालसाधन लिखते हैं—

प्राग्दृक्खचराङ्गभाढ्यभान्वोरल्पोऽर्कस्त्वपरस्तनुस्तदन्तः ॥ कालः स खगोदये द्युशेषो रात्रीतः क्रमशो ग्रहेऽल्पपुष्टे ॥ ५ ॥

प्राग्दृक्खचराङ्गभाढ्यभान्वोः, अल्पः, अर्कः, अपरः, तु, तनुः, तदन्तः, (यः) कालः, सः, खगोदये, ग्रहे, अल्पपुष्टे, क्रमशः, द्युशेषः, रात्रीतः, स्यात ॥ ५ ॥

पूर्व दृक्कर्म्मदत्त ग्रह और षड्राशियुक्त रवि इन दोनोंमें जो कम हो वह रवि और जो अधिक हो उसको लग्न मानकर इन दोनों से अभीष्ट काल लावे तब यदि पूर्वदृक्कर्म्मदत्त ग्रह षड्राशियुक्त

सूर्य्यकी अपेक्षा कम होय तो ग्रहोदय होनेमें अभीष्ट कालकी तुल्य दिन रहेगा ऐसा जाने और यदि पूर्व दृक्कर्म्मदत्त ग्रह षड्राशियुक्त सूर्य्यकी अपेक्षा अधिक होय तो ग्रहोदय होनेमें अभीष्ट कालकी तुल्य रात्रि व्यतीत होनेपर चन्द्रोदय होयगा ऐसा जाने ॥ ५ ॥

उदाहरण—पूर्वदृक्कर्म्मदत्त चन्द्र ४ राशि ० अंश २९ कला ५० विकला और षड्राशियुक्त सूर्य्य ६ राशि २३ अंश २५ कला ४८ विकला, इन दोनोंमें चन्द्रमा कम है इस कारण चन्द्र ४ राशि १० अंश २९ कला ५० विकलाको सूर्य्य मानकर लाया हुआ भोग्य काल १५ पल हुआ और षड्राशियुक्त सूर्य्य ६ राशि २३ अंश २५ कला ४८ विकला को लग्न मानकर लाया हुआ भुक्तकाल १२३ पल हुआ अब भोग्य कालके पल १५ और भुक्तकालके पल १२३ तथा रवि और लग्न इन दोनोंके मध्यके उदय पल कन्योदय ३३५ और तुलोदय ३३५ पल, इन सबका योग करा ८१८ पल अर्थात् १३ घटी ३८ पल, यह इष्टकाल हुआ, अब चन्द्रमा षड्राशियुक्त रविकी अपेक्षा कम है इस कारण १३ घटी ३८ पल दिन शेष रहनेपर चन्द्रोदय होयगा ॥ ५ ॥

अब सूर्य्यास्तसे रात्रिगत काल जाननेकी रीति लिखते हैं—

तेनोनोऽथ च सहितो ग्रहद्युयातः स्यादर्कास्तसमयतो निशि प्रयातः ॥ चेद् ग्लावोऽनुमितघटीष्वतोऽल्पपुष्टं द्विघ्नं तत्समपलयुग्वियुक्स्फुटः सः ॥ ६ ॥

तेन, ऊनः, अथ, च, (रात्रिगतेन), सहितः, ग्रहद्युयातः, अर्कास्तसमयतः, निशि, प्रयातः, स्यात्, ग्लावः, चेत्, (तदा), अनुमितघटीषु, अतः, (यावत्), अल्पपुष्टम् (तावत्, एव), द्विघ्नम्, (पलात्मकम्, स्यात्), तत्समपलयुग्वियुक्, सः, स्फुटः, (स्यात्) ॥६ ॥

ग्रहके दिनगतकालमें दिनशेष काल घटावे और रात्रिगतकाल आया होय तब तो मिला देनेसे सूर्य्यास्तसमयसे ग्रहवेधपर्यन्त काल होता है, परन्तु यदि यह काल चन्द्रमाके विषयका होकर अनुमान करी हुई घटिकाओंकी अपेक्षा अधिक अथवा कम होय तो तिन दोनों कालोंके अन्तरको दोसे गुणा करके जो पलात्मक गुनणफल होय उसको वेधीय कालमें घटानेसे अथवा युक्त करनेसे चन्द्रमाका वेधीय काल स्पष्ट होता है ॥ ६ ॥

उदाहरण—चन्द्रमाके दिनगतकाल २३ घटी ३८ पलमेंसे दिन शेषकाल १३ घटी ३८ पलको घटाया तब शेष रहे १० घटी, यह सूर्य्यास्तसे चन्द्रवेधपय न्तका काल हुआ, यह और अनुमित घटी १० बराबर हैं इस कारण यहीं स्पष्ट काल हुआ ॥ ६ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराजकीयसंस्कृत-विद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्य-भारद्वाज-गोत्रोत्पन्न गौडवंशावतंस-श्रीयुतभोलानाथतनूज-पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाव्याख्यया सहितो ग्रहच्छायाधिकारः समाप्तिमितः ॥ १० ॥

अथ नक्षत्रच्छायाधिकारः ।

तहां प्रथम नक्षत्रोंके स्वदेशीय उदयध्रुव और अस्तध्रुव २ साधनकी रीति लिखते हैं—

दास्रादष्ट च मूर्च्छना गजगुणा नन्दाब्धयो दृग्रसाः षट्तर्का युगखेचरा रसदिशोऽद्र्याशा नवार्काः क्रमात ॥ भाग्यादष्टयुगेन्दवोऽक्षतिथयः खात्यष्टयोंऽशा ध्रुवास्त्र्यष्टाब्जा गजगोभुवो रविदृशः सिद्धाश्विनः खत्रिदृक् ॥ १ ॥ मूलात्स्युर्द्विजिनाः शराग्निगदृशः कङ्गाश्विनोऽष्टेषुदृग्बाणक्षाणि रसाष्टदृङ्नखगुणास्तत्त्वाग्नयोऽश्वामराः ॥ खं दत्तायनदृक्क्रियाः स्युरिह च क्षेपोऽक्षभाघ्नोऽकहृत्स्वर्णं प्राक्परतोऽन्यथोत्तरशरे ते स्युः स्वदेशे ध्रुवाः ॥ २ ॥

दास्रात्, अष्ट, मूर्छनाः, गजगुणाः, नन्दाब्धयः,दृग्रसाः, षट्तर्काः, युगखेचराः, रसदिशः, अद्र्याशाः,नवार्काः, भाग्यात् , अष्टयुगेन्दवः, अक्षतिथयः, खात्यष्टयः, त्र्यष्टाब्जाः, गजगोभुवः, रविदृशः, सिद्धाश्विनः, खत्रिदृक्, मूलात्, द्विजिनाः, शराग्निगदृशः, कंगाश्विनः, अष्टेपुदृक्, बाणक्षाणि, रसाष्टदृक्, नखगुणाः, तत्त्वाग्नयः, अश्वामराः, खम्, (एते), क्रमात्, अंशाः, ध्रुवाः, (इमे), दत्तायनदृक्क्रियाः,

स्युः, इह, क्षेपः, अक्षभाघ्नः, (ततः), अर्कहृत्, प्राक्परतः, स्वर्णम्, (कार्य्यम्), उत्तरशरे, अन्यथा, (कार्य्यम्), ते, स्वदेशे, ध्रुवाः स्युः ॥ १ ॥ २ ॥

अश्विनीनक्षत्रसे लेकर रेवती नक्षत्रपर्य्यन्त सम्पूर्ण नक्षत्रोंके क्रमसे आठ आदि अंशात्मक ध्रुव होते हैं अर्थात् अश्विनीका आठ अंश ध्रुव होता है, भरणीका मूर्च्छना कहिये इक्कीस अंश ध्रुव होता है, कृत्तिका का 'गजगुणा' कहिये अड़तीस अंश अर्थात् एक राशि आठ अंश ध्रुव होता है, रोहिणीका 'नन्दाब्धि' कहिये उनचास अंश अर्थात् एकराशि उन्नीस अंश ध्रुव होता है, मृगशिराका 'दृग्रस' कहिये बासठ अंश अर्थात् दो राशि दो अंश ध्रुव होता है, आर्द्राका 'षट्तर्क' कहिये छैसठ अंश अर्थात् दो राशि छः अंश ध्रुव होता है, पुनर्वसुका 'युगखेचर' कहिये चौरानबे अंश अर्थात् तीन राशि चार अंश ध्रुव होता है, पुष्यका 'रसदिश' कहिये एकसौ छः अंश अर्थात् तीन राशि १६ अंश ध्रुव होता है, आश्लेषाका 'अद्र्याशा' कहिये एक सौ सात अंश अर्थात तीन राशि सत्रह अंश ध्रुव होता है, मघाका 'नवार्क' कहिये एकसौ उनतीस अंश अर्थात चार राशि नौ अंश ध्रुव होता है, पूर्वाफाल्गुनीका 'अष्टयोगेन्दु' कहिये एकसौ अड़तालीस अंश अर्थात् चार राशि अट्ठाईस अंश ध्रुव होता है, उत्तराफाल्गुनीका 'अक्षतिथि' कहिये एकसौ पचपन अंश अर्थात पांच राशि पांच अंश ध्रुव होता है, हस्तका 'खात्यष्टि' कहिये एकसौ सत्तर अंश अर्थात पांच राशि बीस अंश ध्रुव होता है, चित्राका 'त्र्यष्टाब्ज' कहिये एकसौ तिरासी अंश अर्थात् छः राशि ३ अंश ध्रुव होता है, स्वातीका 'गजगोभू' कहिये एकसौ अठानवे अंश अर्थात् छः राशि अठारह अंश ध्रुव होता है, विशाखाका 'रविदृश' कहिये दो सौ बारह अंश अर्थात् सात राशि दो अंश ध्रुव होता है अनुराधाका 'सिद्धाश्विन्' कहिये दो सौ चौबीस अंश

अर्थात् सात राशि चौदह अंश ध्रुव होता है, ज्येष्ठाका 'खत्रिदृक' कहिये दो सौ तीस अंश अर्थात् सात राशि बीस अंश ध्रुव होता है, मूलका 'द्विजिन' कहिये दो सौ बयालीस अंश अर्थात् आठ राशि दो अंश ध्रुव होता है, पूर्वाषाढाका 'शराशुगदृश' कहिये दो सौ पचपन अंश अर्थात् आठ राशि पन्द्रह अंश ध्रुव होता है उत्तराषाढाका 'कङ्काश्विन' कहिये दो सौ इकसठ अंश अर्थात आठ राशि इक्कीस अंश ध्रुव होता है, अभिजितका 'अष्टेषुदृक्, कहिये दोसौ अट्ठावन अंश अर्थात आठ राशि अठारह अंश ध्रुव होता है, श्रावणका 'बाणर्क्ष' कहिये दोसौ पिछत्तर अंश अर्थात् नौ राशि पाच अंश ध्रुव होता है, धनिष्ठाका 'रसाष्टदृक्' कहिये दोसौ छियासी अंश अर्थात नौराशि सोलह अंश ध्रुव होता है, शततारकाका 'नखगुण' तीनसौ बीस अंश अर्थात् दशराशि बीस अंश ध्रुव होता है, पूर्वभाद्रपदाका 'तत्त्वाग्नि' कहिये तीन सौ पचीस अंश अर्थात् दश राशि पचीस अंश ध्रुव होता है, उत्तराभाद्रपदाका ' अश्वामरा ' कहिये तीन सौ सैंतीस अंश ध्रुव अर्थात ग्यारह राशि सात अंश ध्रुव होता है और रेवतीका ' खम्'कहिये शून्य अंश ध्रुव होता है, इन नक्षत्रोंमेंसे जिस नक्षत्रका ध्रुव लाना हो उसके शरको पलभासे गुणा करातब जो गुणन फल होय उसमें बारहका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसको नक्षत्रके राश्यादि ध्रुवाङ्कमें घटावे या युक्त करे तब क्रमसे उदयध्रुव और अस्तध्रुव होता है परन्तु यदि नक्षत्रका दक्षिण होय तो विपरीत होता है अर्थात् घटानेसे जो शेष रहे वह अस्तध्रुव और युक्त करनेसे युक्त जो अङ्क होय वह उदयध्रुव होता है, यह निज देशमें नक्षत्रध्रुव होते हैं ॥ १ ॥ २॥

अब नक्षत्रोंके शरभाग कहते हैं-

दिक्सूर्य्येषिवषुदिक्छिवाङ्गखनगाभ्रार्काश्च विश्वे भवास्त्वाष्ट्राद्द्वौ नगवह्नयः कुयमलाग्नीभाक्षबाणा द्विषट् ॥ कर्णात्त्रिंशदरित्रयः खजिनभाभ्रं त्वाष्ट्रहस्ताहिभे द्वीशात्षट्सुकभात्त्रयं शरलवा याम्या उदक्छेषभे ॥ ३ ॥

दिक्सूर्य्येष्विषुदिक्छिवाङ्गखनगाभ्रार्काः, विश्वे, भवाः, त्वाष्ट्रात्, च, द्वौ, नगवह्नयः, कुयमलाग्नीभाक्षबाणाः, द्विषट्, कर्णात्, त्रिंशत्, अरित्रयः, खजिनभाभ्रम्, (एते) शरलवाः, (सन्ति) त्वाष्ट्रहस्ताहिभे, द्वीशात्, षट्सुकभात्, त्रयम्, याम्याः, शेषभे उदक् ॥ ३ ॥

दिक् कहिये १०, सूर्य्य कहिये १२, इषु कहिये ५, इषु कहिये ५, दिक् कहिये १०, शिव कहिये ११, अङ्ग कहिये ६, ख कहिये ०, नग कहिये ७, अभ्र कहिये ०, अर्क कहिये १२, विश्वे कहिये १३, भव कहिये ११, द्वौ कहिये २, नगवह्नि कहिये ३७, कु कहिये १, यमल कहिये २, अग्नि कहिये ३, इभ कहिये ८, अक्ष कहिये ५, बाण कहिये ५, द्विषट् कहिये ६२, त्रिंशत् कहिये ३०, अरित्रयः कहिये ३६, ख कहिये ०, जिन कहिये १४, भ कहिये २७ और अभ्र कहिये ०, यह शर भाग हैं, जिसमें त्वाष्ट्र कहिये चित्रा और हस्त तथा अहि कहिये आश्लेषा इनके शर तथा विशाखासे लेकर छः नक्षत्र और रोहिणीसे लेकर तीन नक्षत्र इनके शर दक्षिण हैं और शेष नक्षत्रोंके शर उत्तर हैं ॥ ३ ॥

उदाहरण—अश्विनीका शर १० अंश है इसको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलसे गुणा करा तब ५७ अंगुल ३० प्रतिअंगुल हुए, इसमें १२ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ४ अंश ४७ कला ३० विकला इसको अश्विनीके शरके उत्तर होनेके कारण अश्विनीके ध्रुव ८ अंशमें घटाया तब शेष रहे ३ अंश १२ कला ३० वि. यह श्रीकाशीक्षेत्रमें अश्विनी नक्षत्रका उदय ध्रुव हुआ और लब्धि ४ अंश ४७ कला ३० विकलाको अश्विनीके ध्रुव ८ अंशमें युक्त करा तब १२ अंश ४७ कला ५० विकला यह श्रीकाशीक्षेत्रमें अश्विनी नक्षत्रका अस्त ध्रुव हुआ इसी प्रकार शेष सम्पूर्ण नक्षत्रोंके उदयास्त ध्रुव आगे लिखे हुए कोष्ठकके अनुसार जानना ॥३॥

अब प्रजापति आदिकी ध्रुवांश कहते हैं—

प्रजापतिब्रह्महृदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः स्युः ॥ कुषट् षडक्षास्त्रिशरा नभोऽष्टौ त्र्यष्टेन्दवो भूफणिनः क्रमेण ॥ ४ ॥

कुषट्, षडक्षाः, त्रिशराः, नभोऽष्टौ, त्र्यष्टेन्दवः, भूफणिनः, क्रमेण, प्रजापतिब्रह्महृदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः, स्युः ॥ ४ ॥

'कुषट्' कहिये इकसठ अंश अर्थात् दो राशि एक अंश और 'षडक्षाः' कहिये छप्पन अंश अर्थात् एक राशि छब्बीस अंश और 'त्रिशराः' कहिये त्रेपन अंश अर्थात् एक राशि तेईस अंश और 'नभोऽष्टौ' कहिये अस्सी अंश अर्थात् दो राशि बीस अंश और 'त्र्यष्टेन्दवः' कहिये एकसौ तिराशी अंश अर्थात् छः राशि तीन अंश तथा 'भूफणिनः' कहिये इक्यासी अंश अर्थात् दो राशि इक्कीस अंश, यह क्रमसे प्रजापति, ब्रह्महृदय, अग्नि, अगस्त्य, अपांवत्स और लुब्धक इनके ध्रुवांश हैं ॥ ४ ॥

नक्षत्रोंकनाम	ध्रुव		शरभाग	उदयध्रुव				अस्तध्रुव			
अश्विनी	राशि	८अंश	१०उत्तर	०रा.	३अं	१२क	२०वि.	०रा.	१२अं	४७क	३०वि
भरणी	०	२१	१२उत्तर	०	१५	५५	०	०	२६	४५	०
कृत्तिका	१	८	५उत्तर	१	५	३६	१५	१	१०	२३	४५
रोहिणी	१	१९	५दक्षिण	१	२१	२३	४५	१	१६	३६	१५
मृगशिर	२	२	१०दक्षिण	२	६	४७	३०	१	२७	१२	३२
आर्द्रा	२	४	११दक्षिण	२	११	१६	१५	२	०	४३	४५
पुनर्वसु	३	६	६उत्तर	३	१	७	३०	३	६	५२	३०
पुष्य	३	१६	०उत्तर	३	१६	०	०	३	१६	०	०
आश्लेषा	३	१७	७दक्षिण	३	२०	२१	१५	३	१३	३८	४५
मघा	४	९	०उत्तर	४	९	०	०	४	९	०	०
पूर्वाफाल्गुनी	४	२८	१२उत्तर	४	२२	१५	०	५	३	४५	०
उत्तराफाल्गु.	५	५	१३उत्तर	४	२८	४६	१५	५	११	१३	४५
हस्त	५	२०	११दक्षिण	५	२५	१६	१५	५	१४	४३	४५
चित्रा	६	३	२दक्षिण	६	३	५७	३०	६	२	२	३०
स्वाती	६	१८	३७उत्तर	६	०	१६	१५	७	५	४३	४५
विशाखा	७	२	१दक्षिण	७	२	२८	४५	७	१	३१	१५
अनुराधा	७	१४	२दक्षिण	७	१४	५७	३०	७	१३	२	३०
ज्येष्ठा	७	२०	३दक्षिण	७	२१	२६	१५	७	१८	३३	४५
मूल	८	२	८दक्षिण	८	५	५०	०	७	२८	१०	०
पूर्वाषाढ़ा	८	१५	५दक्षिण	८	१७	२३	४५	८	१२	३६	१५
उत्तराषाढ़ा	८	२१	५दक्षिण	८	२३	२३	४५	८	१८	३६	१५
अभिजित्	८	१८	६२उत्तर	७	१८	१७	३०	९	१७	४२	३०
श्रवण	९	५	३०उत्तर	८	२०	३७	३०	९	२९	२२	३०
धनिष्ठा	९	१६	३६उत्तर	८	२९	१३	४५	१०	२	४६	१५
शततारका	१०	२०	०उत्तर	१०	२०	०	०	१०	२०	०	०
पूर्वाभाद्रपदा	१०	२५	२४उत्तर	१०	१३	३०	०	११	६	३०	१०
उत्तराभाद्रप.	११	७	२७उत्तर	१०	२४	३	४५	११	१९	५६	१५
रेवती	०	०	०उत्तर	०	०	०	०	०	०	०	०

अब प्रजापति आदिके शरभाग कहते हैं-

तेषां क्रमाद्गोशिखिनः खरामा अष्टौ रसाश्वाः शिखिनः खवेदाः॥शरांशकाः स्युर्मुनिलुब्धयोस्तु याम्यास्तु सौम्याः परिशेषकाणाम् ॥ ५ ॥

गोशिखिनः, खरामाः, अष्टौ, रसाश्वाः,शिखिनः, खवेदाः, (इमे) क्रमात्, तेषाम्, शरांशकाः, स्युः । मुनिलुब्धयोः, तु, याम्याः, परिशेषकाणाम्, तु, सौम्याः ॥ ५ ॥

'गोशिखिनः' कहिये ३९; 'खरामाः' कहिये ३०; अष्टौ ८; 'रसाश्वाः' कहिये ७६; 'शिखिनः' कहिये ३ और 'खवेदाः' कहिये ४०; यह क्रमसे तिन प्रजापति आदिके शरभाग हैं, तिनमें मुनि और लुब्धकके दक्षिण हैं और शेषके उत्तर हैं। (इनके उदयास्त ध्रुव अश्विन्यादि नक्षत्रोंकी रीतिसे लाने चाहिये सो आगे कोष्टक में लिखते हैं) ॥ ५ ॥

नाम	ध्रुव		शरभाग	उदयध्रुव				अस्तध्रुव			
प्रजापति	२	१	३९ उत्तर	१ रा	१२ अं.	१८ क.	४५ वि	२ रा	१९ अं	४१ क.	१५ वि
ब्रह्महृदय	१	२६	३० उत्तर	१	११	८	४५	२	१०	५१	१५
अग्नि	१	२३	८ उत्तर	१	१९	१०	०	१	२६	५०	०
अगस्त्य	२	२०	७६ दक्षि	३	२६	५	०	१	१३	३५	०
अपांवत्स	६	२	३ उत्तर	६	१	३३	४५	६	४	२६	१५
लुब्धक	२	२१	४० दक्षि	३	१०	१०	०	२	१	५०	०

अब नक्षत्रच्छायादि साधनकी रीति लिखते हैं-

निजदेशभवाद् ध्रुवाच्च बाणाच्छाया यंत्रलवा-

दि खेटवत्स्यात् ॥ छायादेरपि चेह रात्रियातं न-
क्षत्रग्रहयोग उक्तवच्च ॥ ६ ॥

निजदेशभवात्, ध्रुवात्, बाणात्, च, छाया, यन्त्रलवादि, खेटवत्, स्यात् । अपि,–च, इह, छायादेः, रात्रियातम्, (तद्वदेव स्यात्) नक्षत्रग्रहयोगः, च, उक्तवत्, (ज्ञेयः) ॥ ६ ॥

अपने देशके ध्रुव और शरसेग्रहच्छायाधिकारमें कहीहुईरीतिके अनुसार छाया-यन्त्र भाग आदि साधे; और छाया आदिसे रात्रि गत जाने तथा नक्षत्र ग्रहयोग + ग्रहयुतिके तुल्य जाने ॥ ६ ॥

+ नक्षत्रग्रहयोग गणेशदैवज्ञाचार्यने इस अपने ग्रहलाघव ग्रन्थ में नहीं कहा है परन्तु इनके भ्राताके पुत्र नृसिंहदैवज्ञने अपने करणग्रन्थमें कहा है सो यहां टिप्पणीरूपसे लिखते हैं–द्विचरभ-ध्रुवकान्तरलिप्तिका द्युगतिभुक्तिहता हि गतागतैः । फलदिनद्युचरे ऽधिकहीनके युतिरिहेतरथा खलु वक्रिणि॥" अन्वयः–हि, द्युचरभ ध्रुवकान्तरलिप्तिकाः, द्युगतिभुक्तिहताः, (कार्याः); (तदा) द्युचरे, अधिकहीनके, फलदिनैः, गतागतैः, युतिः (ज्ञेया); वक्रिणि, खलु, इतरथा (युतिः ज्ञेया) ॥ अर्थः–ग्रह और नक्षत्रका ध्रुव इन दोनोंका अन्तर करके, उसकी कला करे और तिन कलाओंमें ग्रहकी गतिका भाग देकर जो लब्धि होय वह दिनादि होती है, तदनन्तर यदि नक्षत्रध्रुवकी अपेक्षा ग्रह अधिक होय तो तिस ग्रहको तिस नक्षत्रमें आये हुए लब्धिपरिमित दिन व्यतीत हुए जाने, और यदि ग्रह ध्रुवनक्षत्रकी अपेक्षा कम होय तो लब्धि-परिमित दिनोंमें वह ग्रह तिस नक्षत्रके विषे आवेगा ऐसा जाने; परन्तु यदि ग्रह वक्री होकर नक्षत्र ध्रुवकी अपेक्षा अधिक या कम होय तो उपरोक्त फलके विपरीत फल होता है, अर्थात् यदि—

अब ग्रहोंका रोहिणीशकटभेद और उसका फल कहते हैं-

गवि नगकुलवे खगोऽस्य चेद्यमदिगिषुः ख-
शरांगुलाधिकः ॥ कभशकटमसौ भिनत्त्यसृक्छ-
निरुडुपो यदि चेज्जनक्षयः ॥ ७ ॥

(यः), खगः, गवि, नगकुलवे, (वर्तमानः), चेत्, अस्य, इषुः, (च), यमदिक्, खशरांगुलाधिकः, (चेत्, तदा), असौ, कभश-कटम्, भिनत्ति, यदि, असृक्, शनिः, उडुपः, (भेदयति,) चेत् , (तदा), जनक्षयः, (भवति) ॥ ७ ॥

कोईसा भी ग्रह वृषराशिके सत्रह अंशपरिमित हो और उसका शर दक्षिण और पचास अंगुलकी अपेक्षा अधिक होय तो वह ग्रह रोहिणी शकटको भेदता है (अर्थात् रोहिणी नक्षत्रका आकार गाड़ीकी आकृतिका है उसमेंको होकर ग्रह पार जाता है) यदि मंगल, शनि और चन्द्रमा इनमेंसे कोईसा भी ग्रह रोहिणीशकट का भेद करे तो लोगोंका नाश होता है ॥ ७ ॥

अब चन्द्रमाका रोहिणीशकटको भेदनेका काल लिखते हैं-

स्वर्भानावदितिभतोऽष्टऋक्षसंस्थे शीतांशुः क-
भशकटं सदा भिनत्ति ॥ भौमार्क्योः शकटभिदा
युगान्तरे स्यात्सेदानीं नहि भवतीदृशि स्वपाते॥८

स्वर्भानौ, अदितिभतः, अष्टऋक्षसंस्थे, (सति,) सदा, शीतांशुः, कभशटम्, भिनत्ति, भौमार्क्योः, शकटभिदा, युगान्तरे, स्यात्, सा,

---

—अधिक होय तो लब्धिपरिमित दिनोंके व्यतीत होनेपर ग्रह नक्षत्रके विषे आवेगा और कम होय तो ग्रहको नक्षत्रमें आये हुए लब्धिपरिमित दिन व्यतीत हो गये ऐसा जाने ॥

हि, इदानीम्, ईदृशि, स्वपाते, न, भवति ॥ ८ ॥

यदि राहु पुनर्वसु नक्षत्रसे लेकर आगेके आठ नक्षत्रोंमें स्थित होय तो चन्द्रमा अवश्य ही रोहिणीशकटका भेद करता है, परन्तु मंगल और शनि इनके पात (अस्तोदयाधिकारमें १२ श्लोक देखो) पुनर्वसु नक्षत्रसे लेकर आगेसे ८ नक्षत्रोंमें हों तो भी यह दोनों रोहिणी शकटका भेद नहीं करते हैं। इनका शकट भेद युगान्तरमें होता है ॥ ८ ॥

अब याम्योत्तर वृत्तस्थ नक्षत्रदर्शनसे तत्काल लग्न और गतरात्रि जाननेकी रीति लिखते हैं—

खमध्यगर्क्षध्रुवतोऽस्फुटं चरं ततो दिनार्द्धान्निजभोदयैस्तनुः ॥ भवेत्तदा लग्नमथो तदङ्गभान्वितार्कमध्ये घटिका निशागताः ॥ ९ ॥

खमध्यगर्क्षध्रुवतः, अस्फुटम्, चरम्, (साध्यम्), ततः, (साधितात्), दिनार्द्धात् निजभोदयैः, (साधितः), तनुः, तदा, लग्नम्, भवेत्, अथो, तदङ्गभान्वितार्कमध्ये, निशागताः, घटिकाः, (स्युः)॥९॥

याम्योत्तर वृत्तस्थ नक्षत्रका ध्रुव लेकर उसका शरसंस्कार करे विना ही तिससे चर लावे, तिस चरसे दिनार्द्ध साध, वह इष्टकाल होता है, तदनन्तर नक्षत्र ध्रुवांकोंको रवि मानकर तिससे स्वदेशीय उदयोंके द्वारा इष्टकालकी लग्न लावे. वही खमध्यस्थ होती है,वह लग्न और षड्राशियुक्त सूर्य्य इन दोनोंसे त्रिप्रश्नाधिकारमें कही हुई रीतिके अनुसार इष्टकाल साधे. तब तितने काल की तुल्य ही रात्रि बीती जाने ॥ ९ ॥

उदाहरण—याम्योत्तर वृत्तस्थ अश्विनी नक्षत्रका ध्रुव ० राशि ८ अंश है इसमें अयनांश १८ अंश १० कलाको भुक्त करा तब ० राशि २६ अंश १० कला हुआ, इससे लाया हुआ चर ४९ पल

हुआ, इसमें १५ घटी युक्त करीं तब १५ घटी ४९ पल यह दिनार्द्ध हुआ, अब अश्विनी नक्षत्रके ध्रुव ० राशि ८ अंशमें अयनांशों १८ अंश १० पलको युक्त करा २६ अंश १० कलाको रवि मानकर और दिनार्द्ध १५ घटी ४९ पलको इष्ट काल मानकर इनसे लाया हुआ भोग्य काल २८ पल और सायन लग्न ४ राशि १ अं. ५४ कला ४६ विकला हुआ, इस रीतिसे प्रत्येक नक्षत्रका दिनार्द्ध और खमध्यस्थ विरयण लग्न साधकर लिखते हैं सो आगे लिखे हुए कोष्ठकके अनुसार जानना ॥

	दिनार्द्ध			लग्न				दिनार्द्ध			लग्न		
नाम	घ.	प.	रा.	अं.	क.	वि.	नाम	घ.	प.	रा.	अं.	क.	वि.
अश्विनी	१५	४९	३	१३	५४	४६	ज्येष्ठा	१३	१२	१०	१०	१७	३०
भरणी	१६	११	३	४	५३	३६	मूल	१३	५	१०	२७	३४	४७
कृत्तिका	१६	३७	४	९	३४	२०	पूर्वाषाढा	१३	१	११	६	४३	१२
रोहिणी	१६	४७	४	१९	४८	१२	उत्तराषाढा	१३	४	११	२९	१६	२०
मृगशिरा	१६	५५	५	२	२०	२६	अभिजित्	१३	२	११	२०	५५	४१
आर्द्रा	१६	५८	५	६	११	१९	श्रवण	१३	३	५	१५	१	१९
पुनर्वसू	१६	४७	६	३	८	४८	धनिष्ठा	१३	२४	०	२९	१	३७
पुष्य	१६	३६	६	१४	१६	१८	शततारका	१३	१९	२	४	२	१४
आश्लेषा	१६	३६	६	१५	१८	४१	पूर्वाभाद्रप.	१४	२९	२	८	३४	३६
मघा	१६	३१	७	४	२१	१८	उत्तराभा.	१४	५१	२	१८	४०	३१
पूर्वाफा.	१५	२६	७	१९	५४	१३	रेवती	१५	३४	३	७	१६	१७
उत्तराफा	१५	१२	७	२५	३१	३	प्रजापति	१६	५५	५	१	२६	४३
हस्त	१४	४५	८	७	५१	९	ब्रह्महृदय	१६	५१	४	२६	३१	११
चित्रा	१४	२०	८	१९	१४	४	अग्नि	१६	५०	४	२३	४४	३७
स्वाती	१३	४	९	५	१९	१२	अगस्त्य	१६	५६	५	२९	४२	५०
विशाखा	१३	३२	९	१८	१४	११	अपावत्स	१४	२०	८	१९	१४	४
अनुराधा	१३	१६	१०	२	३५	३	लुब्धक	१६	५६	५	१०	४१	५६

फिर अश्विनी नक्षत्र याम्योत्तर वृत्तमें है सो निरयण लग्न ३ राशि १३ अंश ४४ कला ४६ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कला युक्त तब ४ राशि १ अंश ५४ कला ४६ विकला और तिस दिनके स्पष्ट सूर्य ६ राशि २५ अंश ५० कला ३० विकलामें अयनांश १८ अंश १० कला युक्त करा तब हुआ ७ राशि १४ अंश ० कला ३० विकलामें ६ राशि युक्त करीं तब हुआ १ राशि १४ अंश ० कला ३० विकला, इनसे लाया हुआ भोग्य काल १३४ पल इसमें लग्नभुक्तकाल २२ पल (और दोनोंके मध्य उदय) मिथुनोदय ३०४ पल, कर्कोदय ३४२ पल इन सबका योग हुआ ८०२ पल अर्थात् १३ घटी २२ पल यह रात्रिगतकाल हुआ ॥ ९ ॥

अब नक्षत्रकी उदयलग्न और अस्तलग्न तथा तिन दोनोंसे रात्रिगतकाल लानेकी रीति लिखते हैं-

उद्यद्ध्रुवकः स्वदेशजोऽस्तं वा प्राप्नुवतः सषड्ग्रहः । स्यात्तत्कालविलग्नकं ततःप्राग्वत्स्युर्घटिका निशागताः ॥१०॥

स्वदेशजः, उद्यद्ध्रुवकः, वा, अस्तम्, प्राप्नुवतः, सषड्ग्रहः, (ध्रुवकः,) तत्कालविलग्नकम्, स्यात्, ततः, प्राग्वत्, निशागताः, घटिकाः, स्युः ॥ १० ॥

उदयको प्राप्त होनेवाले नक्षत्रका जो स्वदेशीय उदय ध्रुव हो वह उसका उदयलग्न होता है और अस्त को प्राप्त होनेवाले नक्षत्रके स्वदेशीय अस्तध्रुवमें छः राशि युक्त कर देय तब तिस नक्षत्रका अस्तलग्न होता है। तिससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार रात्रिगत घटिका होती हैं ॥ १० ॥

उदाहरण-अश्विनीका उदय ध्रुव जो ० राशि ३ अंश १२ कला ३० वि. यह ही अश्विनीका अस्तध्रुव जो ० राशि १२ अंश ४७ कला ३० विकला इसमें ६ राशि युक्त करीं तब हुआ ६ राशि १२ अंश ४७ कला ३० विकला यह अश्विनीका अस्तलग्न है इन ही उदय लग्न और अस्तलग्नसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार रात्रिगत घटिका जाननी ॥ १० ॥

अब यह वार्ता कहते हैं-कि स्वदेशीय नक्षत्रोदयोंके स्थिरलग्नकरे-

इति नैजदेशपलभावशतो ह्युदयं खमध्यमथ-
वाऽस्तमयम्॥व्रजदश्विभादिषु सुखार्थमिह स्थिर-
लग्नकानि विदधीत सुधीः ॥११॥

इति, नैजदेशपलभावशतः, हि, व्रजदश्विभादिषु, उदयम्, अथवा, खमध्यम्, अस्तम्, (गच्छतः, नक्षत्रस्य) सुधीः, सुखार्थम्, स्थिरलग्नकानि, विदधीत ॥ ११ ॥

गणितज्ञ विद्वान् इस प्रकार स्वदेशीय पलभासे गणितकी सुलभताके निमित्त अश्विनी आदि नक्षत्रोंके उदय-मध्य और अस्त इन कालोंके स्थिर लग्न लाकर रक्खें ॥ ११ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराजकीयविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसांनिध्याधिगतविद्येन भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुत भोलानाथात्मजेन पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितो नक्षत्रच्छायाधिकारः समाप्तिमितः ॥११॥

अथ शृङ्गोन्नत्यधिकारो व्याख्यायते।

तहां प्रथम चन्द्रमाकी शृङ्गोन्नतिका काल कहते हैं—

मासस्य प्रथमेऽन्तिमेऽथवांऽघ्रौ विधुशृङ्गोन्नतिरीक्ष्यते यदह्नि ॥ तपनास्तमयोदयेऽवगम्यास्तिथयः सावयवाः क्रमाद्गतैष्याः ॥ १ ॥

मासस्य, प्रथमे, अथवा अन्तिमे, अंघ्रौ, यदह्नि, विधुशृङ्गोन्नतिः, ईक्ष्यते, (तद्दिवसे), तपनास्तमयोद्भये, क्रमात् , गतैष्याः, तिथयः, सावयवाः, अवगम्याः ॥ १ ॥

प्रत्येक महीनेके प्रथम चरणमें (शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे शुक्ल अष्टमीपर्य्यन्त) अथवा चतुर्थ चरणमें (कृष्णपक्षकी अष्टमीसे अमावास्यापर्यन्त) शृङ्गोन्नति देखी जाती है, शुक्ल पक्षमें जिस दिन शृङ्गोन्नति देखनी होय उस दिन सायंकालके समय रवि-चन्द्र-राहु और शुक्ल प्रतिपदासे गत तिथि लावे और कृष्णपक्षमें शृङ्गोन्नति देखनी होय तो अभीष्ट दिवसमें सूर्य्योदयके समय रवि-चन्द्र-राहु और एष्य तिथि लावे ॥ १ ॥

उदाहरण—शाके १५२२ ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी ५ गुरुवारके दिन शृङ्गोन्नति देखनेके लिये गणित करते हैं-तहां अहर्गण ८०२३, प्रातःकालीन मध्यम रवि ११ राशि १६ अंश २२ कला ५४ विकला चन्द्र ३ राशि ९ अंश ३२ कला ११ विकला, उच्च ७ राशि २४ अंश ५७ कला ४८ विकला, राहु २ राशि २२ अंश २४ कला २३ विकला, रविमन्दकेन्द्र १ राशि १ अंश २६ कला ६ विकला, मन्दफल धन १ अंश ८ कला २२ विकला, मन्दस्पष्ट रवि १ राशि १७ अंश ४२ कला १६ विकला, अयनांश १८ अंश ८ कला, चर-

ऋण १०६ विकला, स्पष्ट रवि १ राशि १७ अंश ४० कला ३७ विकला, स्पष्टगति ५७ कला २० विकला, त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ३ राशि ९ अंश १ कला २८ विकला, मन्दकेन्द्र ४ राशि १५ अंश ५६ कला २० विकला, मन्दफल धन ३ अंश २९ कला २१ विकला स्पष्टचन्द्र ३ राशि १२ अंश ३० कला ४९ विकला, स्पष्टगति ८३७ कला १ विकला; दिनमान ३३ घटी ३२ पल, इन घटिकाओंका चालन देकर लाये हुए ग्रह रवि १ राशि १८ अंश १२ कला ३२ विकला, चन्द्र ३ राशि १९ अंश ४९ कला २ विकला, राहु २ राशि २२ अंश २२ कला ३७ विकला, सायंकालके समय गत तिथि पञ्चमी ७ घटी २० पल ॥ १ ॥

अब गत एष्य सावयव तिथि और पञ्चांगस्थ रविसे चन्द्रसाधनकी रीति लिखते हैं-

रविहततिथयोंऽशास्तद्द्वियुग्युक्क्रमेण
द्युमणिरपरपूर्वे मासपादे विधुः स्यात् ॥ ऽऽ ॥

रविहततिथयः, अंशाः, तद्द्वियुग्युक्, द्युमणिः, क्रमेण, अपर–पूर्वे, मासपादे, विधुः, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

तिथियोंको बारहसे गुणा करे तब जो गुणन फल होय वह अंशात्मक होता है, तिसको यदि शृङ्गोन्नति कृष्णपक्षमें होय तो रविमें घटा देय और शृङ्गोन्नति शुक्लपक्षमें होय तो रविमें युक्त कर देय तब चन्द्र होता है ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण—सावयवतिथि पञ्चमी ७ घटी २० पलको १२ से गुणा करा तब ६१ अंश २८ कला ० विकला शृङ्गोन्नति शुक्लपक्षमें हैं इस कारण रवि १ राशि १८ अंश १२ कला ३२ विकलामें ६१

अंश २८ कला ० विकलाको युक्त करा तब ३ राशि १९ अंश ४० कला ३२ विकला, यह चन्द्र हुआ ॥ ऽऽ ॥

वलन और सित इन दोनोंके साधनेकी रीति लिखते हैं-

नृपगुणतिथिरूना स्वघ्नतिथ्याऽक्षभाघ्नी
शरकुहृदुदगाशा संस्कृताऽर्कापमांशैः ॥ २ ॥
चन्द्रस्य च व्यस्तशरापमांशै-
र्द्विनिघ्नतिथ्या विहृताऽङ्गुलाद्यम् ॥
संस्कारदिक्कं वलनं स्फुटं स्यात्
स्वेष्वंशहीनास्तिथयः सितं स्यात् ॥ ३ ॥

नृपगुणतिथिः, स्वघ्नतिथ्या, ऊना, अक्षभाघ्नी, (ततः) शरकुहृत्, उदगाशा, (स्यात्, सा), अर्कापमांशैः, चन्द्रस्य, व्यस्तशरापमांशैः, च, संस्कृता, (ततः), द्विनिघ्नतिथ्या, विहृता, संस्कारदिक्कम्, वलनम्, स्फुटम्, स्यात् । स्वेष्वंशहीनाः, तिथयः, सितम्, स्यात् ॥ २-३ ॥

तिथियोंको सोलहसे गुणा करनेपर जो गुणनफल होय, उसमेंसे तिथिका वर्ग घटा देय तब जो शेष रहे उसको पलभासे गुणा करे तब जो गुणन फल होय उसमें पन्द्रहका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसको उत्तर समझकर उस लब्धिका और सूर्य्यकी क्रांतिका संस्कार करे वह संस्कारकी दिशाकी स्पष्ट लब्धि होती है, तदनन्तर चन्द्रमाकी स्पष्ट क्रांति करके वह दक्षिण होय तो उत्तर और उत्तर होय तो दक्षिण मानकर उसका और स्पष्ट लब्धिका संस्कार करे उस संस्कारमें तिथिको

दोसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि वलन होता है, वह संस्कार दक्षिण होय तो दक्षिण और उत्तर होय तो उत्तर होता है। तिथिको चारसे गुणा करके पांचका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि सित होता है ॥ २ ॥ ३ ॥

उदाहरण—५ तिथि ७ घटी २० पलको १६ से गुणा करा तब ८१ तिथि ५७ घटी २० पल हुआ, इसमें ५ तिथि ७ घटी २० पलके वर्ग २६ तिथि १४ घटी १३ पलको घटाया तब शेष रहे ५५ तिथि ४७ घटी ७ पल इसको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलसे गुणा करा तब गुणनफल हुआ ३२० तिथि २२ घटी ५५ पल, इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई २१ अंश २१ कला २१ विकला इस लब्धि उत्तर और सूर्य्यक्रांति उत्तर २१ अंश ४४ कला २९ विकला इन दोनोंका संस्कार करा तब (एकदिशाके होनेके कारण योग करनेसे) ४३ अंश ६ कला ० विकला हुआ, चन्द्रकी स्पष्ट क्रांति उत्तर २० अंश ४१ कला ९ विकला है इस कारण इसको स्पष्ट लब्धि ४३ अंश ६ कला ० विकलामें घटाया तब शेष रहा उत्तर २२ अंश २४ कला ५१ विकला, इसमें तिथि ५ घटी ७ पल २० को २ से गुणा करनेसे जो गुणन फल हुआ १० तिथि १४ घटी ४० पल, इसका भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई २ अंगुल ११ प्रतिअंगुल यह उत्तर वलन स्पष्ट हुए। ५ तिथि ७ घटी २० पलको ४ से गुणा करा तब २० तिथि २९ घटी २० पल हुआ, इसमें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ अंगुल ५ प्रति अंगुल यह चन्द्रके सित हुए ॥ २ ॥ ३ ॥

किस दिशामें चन्द्रका शृङ्गौच्चय होयगा यह जाननेकी रीति लिखते हैं—

उन्नतं वलनाशायामन्यस्यां स्यान्नतं विधोः।

वलनस्याङ्गुलैः शृङ्गं किमत्र परिलेखतः ॥ ४ ॥

विधोः, शृङ्गम्, वलनाशायाम्, उन्नतम्, अन्यस्याम्, नतम्, वलनस्य, अंगुलैः, (तुल्य म्) स्यात्, अत्र, परिलेखतः, किम् ? ॥ ४ ॥

वलनकी जो दिशा हो उस ही दिशाकी और चन्द्रमाके शृंगकी उँचाई होती है, और अन्य दिशामें शृङ्गकी नति (नीचाई) होगी और वलनके जितने अंगुल होंगे उतना ही प्रमाण शृङ्गौच्चयका होगा फिर यहां वृथा प्रयास करनेसे क्या प्रयोजन है ? ॥ ४ ॥

उदाहरण—चन्द्रका वलन उत्तर२ अंगुल११ प्रतिअंगुल है इस कारण शृङ्गोन्नति उत्तरकी ओर होयगी और शृङ्गनति दक्षिणकी ओर होयगी, तथा शृङ्गका मान २ अंगुल ११ प्रतिअंगुल होयगा ॥ ४ ॥

इतिश्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थेपश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य–काशीस्थराजकीयसंस्कृत-विद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुत-भोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितः शृङ्गोन्नत्यधिकारः समाप्तिमितः ॥ १२ ॥

अथ ग्रहयुत्यधिकारो व्याख्यायते ।

तहां प्रथम ग्रहबिम्ब साधनकी रीति लिखते हैं-

पञ्चर्त्वंगाङ्कविशिखाः पृथगीशकर्णायोगाहताः प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः । भक्ताः फलोनसहिताः श्रवणेऽधिकोने ते त्र्युद्धृताः स्युरसृजो वपुरङ्गुलानि ॥ १ ॥

पञ्चर्त्वंगाङ्कविशिखाः, (अङ्कः) पृथक्, ईशकर्णायोगाहताः, (ततः) प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः, भक्ताः, श्रवणे, अधिकोने, फलोनसहिताः ते, त्र्युद्धृताः, असृजः, वपुरंगुलानि, स्युः ॥ १ ॥

मंगल आदि पांचों ग्रहोंमेंसे जिसका बिम्ब लाना होय उसके शीघ्रकर्ण और ग्यारह अंश इन दोनोंका अन्तर करके, तिस अन्तरको इष्टग्रहकेनीचे लिखे हुए बिम्बाङ्कसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें भाज्याङ्कका भाग देय, फिर यदि शीघ्रकर्ण ग्यारह अंशोंकी अपेक्षा अधिक होय तब तो भाज्याङ्कका भाग देनेसे प्राप्त हुई लब्धिको बिम्बाङ्कमेंसे घटा देय और यदि शीघ्रकर्ण ग्यारह अंशोंकी अपेक्षा कम होय तो उस लब्धिको बिम्बाङ्कमें युक्त करे तब जो होय उसमें तीनका भाग देनेसे जो लब्धि होय वह अंगुलादि बिम्ब मंगल आदि ग्रहोंके होते हैं। पञ्च कहिये ५, ऋतु कहिये ६ अंग कहिये ७, अङ्क कहिये ९ और विशिख कहिये

५ यह क्रमसे मंगलआदि पांचों ग्रहोंके बिम्बाङ्क हैं और प्रकृति कहिये २१, भानु कहिये १२, अरि कहिये ६, सिद्ध कहिये २४ और राम कहिये ३ यह क्रमसे मंगल आदिके भाज्याङ्क हैं ॥ १ ॥

ग्रहोंकेनाम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बिम्बाङ्क	५	६	७	९	५
भाज्यांक	२१	१२	१६	२४	३

उदाहरण—संवत् १६६७ शाके १५३२ वैशाख शुक्ल १० रविवारके दिन ग्रहयुति दिनसाधनके निमित्त ग्रहबिम्बसाधनकी गणित लिखते हैं—अहर्गण ७७८ चक्र ८, मध्यरवि ० राशि २१ अंश ५५ कला ३० विकला, भौम ९ राशि ० अंश ३३ कला ५१ विकला, शनि १० राशि ५ अंश ४५ कला ५९ विकला सूर्यका मन्दकेन्द्र १ राशि २६ अंश ४ कला ३० विकला, मन्दफल धन १ अंश ४८ कला २६ विकला संस्कृत रवि० राशि २३ अंश ४३ कला ५६ विकला, अयनांश १८ अंश ८ कला, चरऋण ७५ स्पष्ट रवि ० राशि २३ अंश ४२ कला ४१ विकला, स्पष्टगति ५७ कला ५६ विकला ।

अब भौमस्पष्टीकरण लिखते हैं—शीघ्रकेन्द्र २ राशि २१ अंश २१ कला ३९ विकला. शीघ्रफलार्द्धधन १८ अंश ५० कला ३७ विकला संस्कृत भौम ९ राशि १९ अंश २४ कला २८ विकला, मन्दकेन्द्र ६ राशि १० अंश २५ कला ३२ विकला, मन्दफल ऋण १ अंश २ कला ५२ विकला । मन्दस्पष्ट भौम ८ राशि २८ अंश २० कला ५९ विकला, शीघ्रकेन्द्र ३ राशि २३ अंश २४ कला ३१ विकला, शीघ्रफल धन ३८ । ४ । १० स्पष्ट भौम १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकला, स्पष्टगति ४२ कला ५० विकला ।

अब शनिस्पष्टीकरण लिखते हैं—शीघ्रकेन्द्र २ । १६ । ३१ शीघ्रफलार्द्ध धन २ अंश ४२ कला ४१ विकला, संस्कृत शनि १० राशि ८ अंश २८ कला ४० विकला. मन्दकेन्द्र ९ राशि २१ अंश ३१

कला २० विकला, मन्दफल ऋण ८।२२।४१, मन्दस्पष्ट शनि ९रा २७ अंश ३३ कला १८ विकला, शीघ्रकेन्द्र २ राशि २४ अंश ३३ कला १६ विकला, शीघ्रफल ५ अंश ३८ कला ३६ विकला, स्पष्ट-शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला, स्पष्ट गति ३ कला ३ विकला, दिनमान ३२ घटी ३० पल, मंगलका शीघ्रकर्ण ८ अंश ५५ कला, शनिका शीघ्रकर्ण ११ अंश १३ कला । अब भौम-बिम्बसाधन लिखते हैं-मङ्गलके बिम्बाङ्क ५ कलाको ११ अंश और शीघ्रकर्ण ८ अंश ५२ कलाके अन्तर २ अंश ८ कलासे गुणा करा तब १० अंश ४० कला हुआ इसमें मङ्गलके भाज्याङ्क २१ कलाका भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ३० कला इसको कर्णके ग्यारहसे कम होनेके कारण, बिम्बांक ५ में युक्त करा तब ५ अंश ३० कला हुआ, इसमें ३ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई १ अंगुल ५ प्रतिअंगुल, यह मङ्गलका स्पष्ट बिम्ब हुआ अब शनिबिम्बसाधन लिखते हैं-शनिके बिम्बांक ५ कलाको ११ अंश और शनिशीघ्रकर्ण ११ अंश १३ कला इनके अन्तर १३ कलासे गुणा करा तब १ अंश ५ कला हुआ इसमें शनिके भाज्यांक ३ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश २१ कला इसको कर्णके ग्यारह अंशसे अधिक होनेके कारण शनिके बिम्बाङ्क ५ में घटाया तब शेष रहें ४ अंश ३९ कला इसमें ३ का भाग दिया तब अंगुलादि लब्धि हुई १ अंगुल ३३ प्रतिअंगुल, यह शनिका स्पष्ट बिम्ब हुआ ॥ १ ॥

अब युतिके गतगम्यके जाननेकी रीति लिखते हैं—

अधिकजवखगेऽधिकेऽल्पभुक्तेरथ कुटिलेऽल्पतरेऽनुलोमतो वा । अनृजुगखगयोस्तु शीघ्रगेऽल्पे युतिरनयोः प्रगताऽन्यथा तु गम्या ॥ २ ॥

अनयोः, अधिकजवखगे, अल्पभुक्तेः, अधिके, अथवा, कुटिले, अनुलोमतः, अल्पतरे, अनृजुगखगयोः, तु, शीघ्रके, अल्पे, (सति), युतिः, प्रगता, अन्यथा, गम्या, (वाच्या) ॥ २ ॥

जिन दो ग्रहोंकी युति लानी हैं उनमें यदि अधिकगति ग्रह अल्पगति ग्रहकी अपेक्षा अंशादि अवयवोंकरके अधिक होय अथवा मार्ग गति ग्रहकी अपेक्षा वक्रगति ग्रहअंशादि अवयवोंकरके कम होय, या अधिकवक्रगति ग्रह अल्पवक्रगति ग्रहकी अपेक्षा अंशादि अवयवों करके कम होय तो युतिको गत (बीतीहुई) जाने, और यदि इस लक्षणमें विपरीतता होय तो ग्रहयुतिको एष्य (होनेवाली है) ऐसा जाने ॥ २ ॥

उदाहरण–अल्पगति ग्रह शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला, अधिकगति ग्रह मंगल १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकलाकी अपेक्षा कम है इस कारण मंगल और शनि इनकी युति गत (होगई) है ॥ २ ॥

अब ग्रहयुतिके दिन जाननेकी रीति लिखते हैं–

ऋजुगतिखगयोस्तु वक्रयोर्वा विवरकला गतिजान्तरेण भक्ताः ॥ गतिजयुतिहृता यदैकवक्री युतिरगता प्रगताऽऽप्तवासरैः स्यात् ॥ ३ ॥

ऋजुगतिखगयोः, वा वक्रयोः, विवरकलाः, गतिजान्तरेण, भक्ताः, यदा, एकवक्री, (तदा), गतिजयुतिहृता, आप्तवासरैः, अगता, प्रगता, युतिः, स्यात् ॥ ३ ॥

यदि दोनों ग्रह मार्गी अथवा वक्री हों तो उन दोनों ग्रहोंके अन्तरकी कलाओंमें गतिके अन्तरका भाग देय और यदि एक ग्रह वक्री होय और दूसरा ग्रह मार्गी होय तो इन दोनों ग्रहोंके

अन्तरकी कलाओंमें गतिके योगका भाग देय, तब जो लब्धि होय उस लब्धिके तुल्य दिनोंमें तिन दोनों ग्रहोंकी युति होयगी अथवा होगई ऐसा जाने ॥ ३ ॥

उदाहरण–मार्गी ग्रह जो भौम १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकला और शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला इन दोनोंके अन्तर ३ अं. ३६ कला २५ विकलाकी कला हुई २१६ कला २५ विकला इसमें मंगलकी गति ५२ कला ५० विकला और शनिकी गति ३ कला ३ विकला इन दोनोंके अन्तर ४९ कला ४७ विकलाका भाग दिया तब दिनादि लब्धि हुई ५ दिन ३६ घटी २३ पल इतने दिन युति हुए होगए, अर्थात् इस दिनादि ५ दिन ३६ घटी २३ पलको वैशाख शुक्ल दशमी १० में घटाया तब शेष रहा वैशाख शुक्ल ४ चतुर्थी ३३ घटी ३७ पल, अर्थात् वैशाख शुक्ल चतुर्थीको सूर्य्योदयसे ३३ घटी ३७ पलपर अर्थात् २ घटी ७ पल रात्रि व्यतीत होनेपर शनि और भौमकी युति (युद्ध) हुआ ॥ ३ ॥

अब ग्रहोंका दक्षिणोत्तर दिशामें स्वस्थान और उनके अन्तरको जाननेकी रीति लिखते हैं–

चाल्यौ खेटौ समौ स्तो ग्रहयुतिदिवसेऽथ चन्द्र-
बाणः स्वनत्या संस्कार्य्योऽत्र ग्रहौ स्वेषु दिशि
समदिशोस्त्वल्पबाणः परस्याम् ॥ एकान्याशौ
यदेषू विरहितसहितौ खेटमध्येऽन्तरं स्याद्भेदो
मानैक्यखण्डादिह लघुनि तदाऽल्पं हि किं
लम्बनाद्यम् ॥ ४ ॥

ग्रहयुतिदिवसैः, खेटौ, चाल्यौ, (तौ), समौ, स्तः (तयोः, शरः, साध्यः,) चन्द्रबाणः, (चेत्, तदा) स्वनत्या, संस्कार्य्यः, अत्र, ग्रहौ, स्वेषु, दिशि, (भवतः), समदिशोः, तु अल्पबाणः, परस्याम् (स्यात्) यदा इषू, एकान्याशौ, (तदा)विरहितसहितौ, (कार्य्यौ), तदा खेटमध्ये, (अंगुलाद्यम्), अन्तरम्, स्यात्, इह, मानैक्यखण्डात् लघुनि, भेदः, (स्यात्), तदा, हि, अल्पम्, लम्बनाद्यम्, (अत्र) किम् (कर्त्तव्यम्) ॥ ४ ॥

ग्रहयुतिके जो गत अथवा एष्य दिन हों वैसे ही तिस युतिके दिनोंका ऋण अथवा धन चालन ग्रहोंमें देय तब वह ग्रह राशि आदि अवयवोंकरके तुल्य होंगे तदनन्तर तिन ग्रहोंके शर लावे, (परन्तु जब चन्द्रमाकी युति अन्य ग्रहोंकरके होय तब चन्द्रमाका नति संस्कृत शर लेय केवल शर न लेय) और वह शर जिस दिशाका होय उस दिशाका ही उस ग्रहको जाने अर्थात् जिस ग्रहके शरकी दिशा उत्तर हो तो वह ग्रह उत्तर दिशाका और शर दक्षिण दिशाका होय तो वह ग्रह दक्षिण दिशाका है ऐसा जाने, परन्तु यदि दोनों ग्रहकी दिशा एक ही आवे तो जिस ग्रहका शर अल्प होय वह ग्रह अधिक शरवाले ग्रहकी दिशासे अन्य दिशाको जाने यदि एक ही दिशाके ग्रहोंके शर हो तो तिन शरोंका अन्तर करे और ग्रहोंके शर भिन्न दिशाओंके हो तो तिन शरोंका योग कर लेय तब उन ग्रहोंके मध्यमें दक्षिणोत्तर अंगुलात्मक अन्तर होता है तदनन्तर यदि ग्रहोंके बिम्बोंके योगके अर्द्धकी अपेक्षा दक्षिणोत्तर अन्तर कम होय तो ग्रहोंके बिंबोंका ऐक्य होयगा और यदि दक्षिणोत्तर अन्तर अधिक होय तो ग्रहोंके बिम्बोंका ऐक्य नहीं होयगा ऐसा जाने फिर यह समझनेके लिये लम्बनादि गणित करनेकी क्या आवश्यकता है ? ॥ ४ ॥

उदाहरण—मङ्गल १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकला, गत युति दिनों ५ दिन ३६ घटी २३ पलका ऋण चालन ३ अंश ५३ कला ० विकला, शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला, गति युतिदिनोंका ऋण चालन ० अंश १६ कला ३५ विकला, चालित मंगल १० राशि २ अंश ४२ कला ९ विकला चालित शनि १० राशि २ अंश ४२ कला ९ विकला, यह दोनों चालित ग्रह अंशादि अवयवोंकरके तुल्य हैं अब अस्तोदयाधिकारमें कही हुई रीतिके अनुसार लाए हुए शर मंगलका शर दक्षिण १६ अंगुल ११ प्रतिअंगुल है और शनिका शर दक्षिण १४ अंगुल ७ प्रतिअंगुल है, अब इन दोनों शरोंकी दिशा एक है और मंगलका शर अधिक है. इस कारण शरान्तर २ अंगुल ४ प्रतिअंगुल हुआ, मंगलके बिम्ब १ अंगुल ५० प्रति अंगुल शनिके बिम्ब १ अंगुल ३३ प्रतिअंगुलको युक्त करा तब ३ अंगुल २३ प्रतिअंगुल यह बिम्बमानैक्य हुआ और इसको आधा करनेसे १ अंगुल ४१½ प्रतिअंगुल मानैक्य खण्ड हुआ, इसकी अपेक्षा शरान्तर अधिक है इस कारण बिम्बैक्य नहीं होगा, अर्थात् मंगल और शनि एक एकके नीचे ऊपर होकर नहीं जायँगे किन्तु दाएँ बाएँ होकर जायँगे ॥ ४ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चि-
मोत्तरदेशीयमुरादबादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयसंस्कृतवि-
द्यालयप्रधानाध्यापक-पण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसा-
न्निध्याधिगतविद्येन भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशा-
वतंसश्रीयुतभोलानाथात्मजेन पण्डितराम-
स्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटी-
कया सहितो ग्रहयुत्यधिकारः
समाप्तिमितः ॥ १३ ॥

अथ पाताधिकारो व्याख्यायते ।

तहां प्रथम पातकाल (रवि और चन्द्रकी क्रांतियोंका* साम्य) का अनुमान करनेकी रीति लिखते हैं—

नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः सार्द्धविश्वे तथा तारास्तावति साग्रयोगविगमे पातो व्यतीपातकः ॥ ज्ञेयो वैधृतिरत्र यातघटिकाः सर्वर्क्षनाडीहताः स्पष्टाः स्युः शरषड्हृता इह तमोऽर्कौ सायनांशौ कुरु ॥ १ ॥

सार्द्धविश्वे, तथा, ताराः, नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः, (कार्य्याः) तावति, साग्रयोगविगमे, व्यतीपातकः, वैधृतिः, (च), पातः ज्ञेयः, अत्र, यातघटिकाः, सर्वर्क्षनाडीहताः, शरषड्हृताः, स्पष्टाः, स्युः, इह, तमोऽर्कौ, सायनांशौ, कुरु ॥ १ ॥

अयनांशोंको नौसे गुणा करके जो घटिकादि गुणन फल होय उसको १३ योग और ३० घटीमें घटावे, तब जो बाकी रहे तिसकी तुल्य योगादि जब होयगा तब व्यतीपात योग होयगा और पहिले गुणन फलको सत्ताईस योगमें घटावे तब जो शेष

---

* यह क्रान्तिसाम्य शाके १४९७ के विवृद्धिपात योगके चतुर्थ चरणमें और ब्रह्मयोगके द्वितीय चरणमें हुए थे, यह वार्ता आगे लिखे हुए मार्तण्डके श्लोकसे मालूम होती है "प्रेक्ष्यः सम्प्रति वृद्धितुर्यचरणे ब्रह्मद्वितीयेऽपमः ॥" इति ।

रहे उसकी तुल्य योगादि जब होयगा तब वैधृतिपातयोग होयगा, ऐसा अनुमान करे; तदनन्तर अभीष्ट पातयोगकी घटी और पल इतने मात्रकी इष्ट दिनमेंके नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओंसे गुणा करके जो गुणन फल होय उसमें पैंसठका भाग देय तब जो लब्धि होय वह तिस अभीष्ट पातयोगकी घटी होती है, फिर स्पष्ट घटिकाओंमेंका स्पष्ट रवि और राहु करके उसमें अयनांश युक्त कर देय ॥ १ ॥

उदाहरण—संवत १६७० शाके १५३५ वैशाख कृष्णा सप्तमी ७ शनिवार घटी ११ पल ३० धनिष्ठा नक्षत्र ५९ घटी ६ पल, ब्रह्मयोग २८ घटी ६६ पल, इस दिन पात जाननेके लिये गणित करते हैं—चक्र ८, अहर्गण १८८३, प्रातःकालीन मध्यम रवि १ राशि १ अंश ० कला ५९ विकला, चन्द्र ९ राशि २० अंश ० कला ४४ विकला उच्च ११ राशि २५ अंश १३ कला १४ विकला, राहु ० राशि २५ अंश ९ कला ५२ विकला, रविमन्दकेन्द्र १ राशि १६ अंश ५९ कला १ विकला, मन्द फल धन १ अंश ३५ कला ३५ विकला, संस्कृतरवि १ राशि २ अंश ३६ कला ३४ विकला, अयनांश १८ अंश ११ कला, सायन रवि १ राशि २० अंश ४७ कला ३४ विकला, चर ऋण ८८ विकला, स्पष्ट रवि १ राशि २ अंश ३५ कला ६ विकला, स्पष्टगति ५७ कला ३३ विकला, प्रातःकालीन मध्यम चन्द्र ९ राशि २० अंश ० कला ४४ विकला, उच्च ११ राशि २५ अंश १३ कला १४ विकला, राहु ० राशि २५ अंश ९ कला ५२ विकला, त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ९ राशि १९ अंश ३४ कला३ विकला, मन्दकेन्द्र २ राशि ५ अंश ३९ कला ११ विकला, मन्दफल धन ४ अंश ३४ कला ३२ विकला, स्पष्टचन्द्र ९ राशि २४ अंश ८ कला २५ विकला, स्पष्टगति ७६२ कला ४८ विकला, धनिष्ठा नक्षत्रकी गतघटी ३ घटी ४९ पल, एष्य ५९ घटी ६ पल, गतैष्य घटिकाओंका योग ६२ घटी ५५ पल, अब प्रथम मध्यम पात जाननेके लिये गणित लिखते हैं—अयनांशों १८ अंश ११

कलाको ९ से गुणा करा तब १६२ घटी ३९ पल, हुए इसमें ६० का भाग दिया तब योगादि लब्धि हुई २ योग ४३ घटी ३९ पल, इसको १३ योग ३० घटीमेंसे घटाया तब शेष रहे १० योग ४६ घटी २१ पल इसकी तुल्य योग होनेपर व्यतीपातयोग होनेका सम्भव है और २७ योगमेंसे २ योग ४३ घटी ३९ पलको घटाया तब शेष रहे २४ योग १६ घटी २१ पल, इसकी तुल्य योग होने- पर वैधृतिपात योग होनेका सम्भव है । अब ब्रह्मपात योगकी घटिका १६ घटी २१ पलको तत्कालीन पञ्चांगके नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओं ६२ घटी ५५ पलसे गुणा करा तब १०२८ घटी ४१ पल हुए, इसमें ६५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १५ घटी ४९ पल यह ब्रह्मयोगकी स्पष्ट घटिका हुई । पहले दिन अर्थात् शुक्रवारके दिन शुक्र योग ३० घटी १ पल है इसमें ब्रह्मयोगकी स्पष्ट घटिका १५ घटी ४९ पलको युक्त करा तब ४५ घटी ५० पल हुए इसको ६० घटीमें घटाया तब शेष रहे १४ घटी १० पल यह मध्यम क्रांतिसाम्य काल हुआ, यह काल सूर्योदयसे पहिलेका है, इस कारण ऋण चालन देकर लाए हुए ग्रह-और सायन ग्रह- चालित सूर्य्य १ राशि २ अंश २१ कला ३१ विकला, चालित राहु ० राशि २५ अंश १८ कला ३७ विकला, सायन सूर्य्य १राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला, सायनराहु १ राशि १३ अंश २१ कला ३७ विकला ॥ १ ॥

अब स्पष्ट पातके संभवलक्षण और असंभवलक्षणको कहते हैं-

गोलैक्ये सायर्कभान्वोः सदा स्यात्पातोऽ-
न्यत्वेचेद्रवेर्बाहुभागाः ॥ पञ्चेषुभ्योऽल्पास्तदाऽ-
स्त्येव पातः पुष्टाश्चेत्तत्संशयस्तं च भिन्नः ॥ २ ॥

सायर्कभान्वोः, गोलैक्ये, (सति), सदा, पातः, स्यात्, चेत् ,

अन्यत्वे, रवेः, बाहुभागाः, (कार्य्याः), (ते), पञ्चेषुभ्यः, अल्पाः, तदा, पातः, अस्ति, एव, पुष्टाः, चेत, (तदा), तत्संशयः, तम्, च, वक्ष्यमाणप्रकारेण, (वयम्), भिन्नः ॥ २ ॥

(सायन) सूर्य्यमें (सायन) राहुको मिलाकर जो अङ्क योग होय उसको साग्वर्क कहते हैं, यदि साग्वर्क और सायन सूर्य्य एकगोलीय होयँ अथवा साग्वर्क और सायन सूर्य्य दोनों भिन्न-गोलीय हों तो रविके भुजांश करे। वह भुजांश पचपन अंशोंकी अपेक्षा कम हों तो पात अवश्य होगा, परन्तु यदि वह एकगो-लीय न हों और सूर्य्यके भुजांश पचपन अंशकी अपेक्षा अधिक हो तो पात होनेका संशय होता है, उस संशयको भेदन करनेकी रीति भी आगेके श्लोकमें लिखते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण—सायन राहु १ राशि १३ अंश २१ कला ३७ विक-लामें सायन सूर्य्य १ राशि ० अंश ३२ कला ३१ विकलाको युक्त करा तब ३ राशि ३ अंश ५४ कला ८ विकला यह साग्वर्क हुआ, यह और सायनसूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला, यह दोनों एकगोलीय हैं इस कारण पात होयगा, अब तुम समझो कि, सूर्य्य १ राशि २७ अंश और राहु ६ राशि १५ अंश है तो इनका योग हुआ ८ राशि १२ अंश यह साग्वर्क और सायन सूर्य्य १ राशि २७ अंश भिन्नगोलीय हैं और सायन सूर्य्यके भुजांश ५७ भी ५५ अंशकी अपेक्षा अधिक हैं इस कारण पात होनेका संशय है ॥ २ ॥

अब पातसंशयको भेदन करनेकी रीति लिखते हैं—

खाभ्रेन्दुद्विरसा धृतिर्नगशराः साग्वर्कभान्वोः
पदैक्ययेऽङ्घ्रीनि त्र्यगरुद्रभूपतिनखाङ्ग्यक्षीणि भेदे

क्रमा ॥ क्षेपः षड्दश चार्ककोटिजलवेष्वंशप्रमार्द्धैक्यकं शेषांशैष्यवधेषुभागसहितं सन्धिर्भवेत्क्षेपयुक् ॥ ३ ॥ साग्वर्कभुजांशका यदाऽल्पाः सन्धेः क्रान्तिसमत्वमस्ति चेत् ॥ अधिका न तदा भुजांशसंध्यंतरसादृश्यमिहापमान्तरं स्यात् ॥४॥

साग्वर्कभान्वोः, पदैक्ये, खाभ्रेन्दुद्विरसाः, धृतिः, नगशराः, भेदे; अगरुद्रभूपतिखाः, त्र्यक्षीणि, अर्द्धानि, (स्युः), षट्, दश, च, क्रमात् क्षेपः, अर्ककोटिजलवेष्वंशप्रमार्द्धैक्यकम्, शेषांशैष्यवधेषुभागसहितम्, (ततः), क्षेपयुक्, सन्धिः, भवेत्, यदा, साग्वर्कभुजांशकाः, सन्धेः, अल्पाः, (यदा), क्रान्तिसमत्वम्, अ ति, अधिकाः, चेत्, तदा, न, भुजांशसन्ध्यन्तरसादृश्यम्, अपमान्तरम्, स्यात् ॥३ ॥ ४॥

राशिचक्रके चतुर्थांशको पद अर्थात् चतुर्थ भाग कहते हैं, पहिले और तीसरे पद (मेषके आरम्भसे लेकर मिथुनके अन्तपर्यन्तके और तुलाके प्रारम्भसे लेकर धनके अन्तपर्य्यन्तके भाग को विषमपद कहते हैं और दूसरा तथा चौथेपद (कर्कके प्रारम्भसे लेकर कन्याके अन्तपर्य्यन्तके और मकरके प्रारम्भसे मीनके अन्तपर्य्यन्तके भाग) को समपद कहते हैं, अब साग्वर्क और सायन सूर्य्य यह दोनों एकपदमें अर्थात विषमपदमें हों तो सायन सूर्य्यके केवल कोटचंशोंमें पांचका भाग देय तब जो लब्धिका अंक होय उसके तुल्य नीचे लिखे हुए पदैक्यखण्डोंका योग करे और यदि साग्वर्क तथा सायन सूर्य्य यह दोनों भिन्नपदमें हों तो नीचे लिखे हुए पद-

भेदखण्डका योग करे और लब्धिके अंकमें एक युक्त करके तत्परिमित अंकसे अंशादि शेषको गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें पांचका भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय उसमें पहिला अंशात्मक अंकयोग युक्त करदेय तब मध्यम संधि होती है, इसमें यदि साग्वर्क और सायन सूर्य समपदमें होवेँ तो छः अंश युक्त कर देय और भिन्नपदमें हों तो दश अंश युक्त करदेय तब संधि होती है, तदनन्तर यदि साग्वर्कके भुजांश संधिके अंशोंकी अपेक्षा कम हों तो क्रांतिसाम्य कहिये पात होता है और अधिक हों तो क्रांतिसाम्य कहिये पात नहीं होता है, पात न होय तब भुजांश और संध्यशोंका अन्तर करे तब वह क्रान्त्यन्तर होता है ॥ ख कहिये ०, अभ्र कहिये०, इन्दु कहिये १, द्वि कहिये २, रस कहिये ६, धृति कहिये १८ और नग शर कहिये ५७. यह साग्वर्क और सायन सूर्य्यके पदैक्यखण्ड हैं और त्रि कहिये ३, अंग कहिये ७, रुद्र कहिये ११ भूपति कहिये १६, नग कहिये २० और त्र्यक्षि कहिये २३ यह साग्वर्क और सायन सूर्यके पदभेदखण्ड हैं और ६ तथा १० यह क्रमसे क्षेपकाङ्क हैं ॥ ३॥४ ॥

खण्ड	१	२	३	४	५	६	७
पदैक्यखण्ड	०	०	१	२	६	१८	५७
पदभेदखण्ड	३	७	११	१६	२०	२३	०

उदाहरण-यहाँ कल्पित उदाहरण लिखते हैं-रवि १ राशि २७ अंश है, और राहु ६ राशि १५ अंश है इन दोनोंका योग करनेसे साग्वर्क हुआ ८ राशि १२ अंश यह साग्वर्क और सायनार्क १ राशि २७ अंश यह दोनों समान पदमें हैं इस कारण सूर्य्यके कोटिअंशों ३२ में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ और शेष बचे २ अब छः पदैक्यखण्डोंका योग २७ हुआ और एष्य ७ खण्डोंके योग ५७ को शेष ३ अंशसे गुणा करा तब १७५ हुए सका पञ्चम भाग जो ३४ अंश १२ कला तिसमें पहले अङ्कयोग

२७ को युक्त करा तब ६१ अंश १२ कला हुआ, यह मध्यम संधि हुआ, इसमें क्षेपकाङ्क ६ को युक्त करा तब ६७ अंश १२ कला यह संधि हुआ, इस संधिकी अपेक्षा साग्वर्कके भुजांश ७२ अधिक हैं, इस कारण पात अर्थात् क्रान्तिसाम्य नहीं है, किंतु भुजांश ७२ और संधि ६७। १२ के अन्तर ४ अंश ४८ कलाकी तुल्य क्रांतिका अन्तर है ॥ ३ ॥ ४ ॥

अथ पातके गतगम्य लक्षणके जाननेकी रीति लिखते हैं-

पदे युग्मौजेऽर्कः समविषमगोलः सतमसस्त-
दा यातः पातस्त्वगत इतरत्वे निगदितात् ॥
विभिन्ने गोले चेदिह कृतशरांघ्रेर्लघुतरा रवेर्दोर्भा-
गाः स्यादिह रविपदान्यत्वमुचितम् ॥ ५ ॥

सतमसः, अर्कः, (यदि), युग्मौजे, पदे, समविषमगोलः, तदा-पातः, यातः, (स्यात्), निगदितात्, इतरत्वे, तु, अगतः, (स्यात्), इह, विभिन्न, गोले, चेत्, कृतशराङ्घ्रेः, रवेः, दोर्भागाः, लघुतराः, (तदा) इह, रविपदान्यत्वम्, उचितं, स्यात् ॥ ५ ॥

साग्वर्क और सायन सूर्य एक गोलीय हों और यदि सायन सूर्य समपदमें हैं अथवा साग्वर्क और सायन सूर्य भिन्नगोलीय हों और यदि सायन सूर्य विषमपदमें हैं तो पात होगया और साग्वर्क तथा सायन सूर्य होकर यदि सायन सूर्य विषमपदमें हैं अथवा वह दोनों भिन्नगोलीय हैं और यदि सायन सूर्य समपदमें हैं तो पात (क्रांतिसाम्य) होनेवाला है ऐसा जाने; इस प्रकार ही साग्वर्क और सायन सूर्यके भिन्नगोलीय होनेपर सायन सूर्यके पद

उलटेलेय अथवा न लेय,इसका विचार नीचेकहीहुई रीतिसेकरनेके अनन्तर पातके गत अथवा गम्य होनेका निर्णय करे, आगेकी रीतिसे शर लाकर उस शरके चतुर्थांशसे यदि सायन सूर्यके भुजांश कम हों तो सायन सूर्यके पद उलटे लेय, अर्थात् सम होनेपर विषम और विषम होनेपर सम लेय ॥ ५ ॥

उदाहरण-सायन सूर्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला विषम पदमें है और सायन सूर्य तथा साग्वर्क ३ राशि ३ अंश ५४ कला ८ विकला एक गोलीय हैं इस कारण वैधृति पात होनेवाला है ॥ ५ ॥

अब शरखण्ड और शरसाधनेकी रीति लिखते हैं—

पञ्चधा सागराः पञ्चधा वह्नयो द्वौ चतुर्धा कुभूखाभ्रमङ्का इषोः ॥ साग्विनाद्दोलवेष्वंशतुल्यै-क्यकं शेषभोग्याहतीष्वंशयुक्स्याच्छरः ॥ ६ ॥

सागराः, पञ्चधा, वह्नयः, पञ्चधा, द्वौ, चतुर्धा, (ततः), कुभू-खाभ्रम् इषोः, अंकाः, (स्युः), साग्विनात् , दोर्लवेष्वंशतुल्यैक्य-कम्, शेषभोग्याहतीष्वंशयुक्, शरः, स्यात् ॥ ६ ॥

सागर कहिये चार पांच स्थानमें; वन्हि कहिये तीन पांच स्थानमें; द्वि कहिये दो चार स्थानमें तदनन्तर कु कहिये १क. भु कहिये एक, ख कहिये शून्य और अभ्र कहिये शून्य यह शराङ्क हैं; साग्वर्कके भुजांशों मात्रमें पांचका भाग देय तब जो लब्धि होय तत्परिमित नीचे लिखे हुये शराङ्कोंका योग कर लेय और एकाधिक लब्धिपरिमित शराङ्कसे अंशादि बाकीको गुणा

करके जो गुणनफल होय उसमें पांचका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें पहिले शराङ्कोंका योग युक्त कर देय तब शर होता है ॥ ६ ॥

अंकसंख्या																	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
शरांक																	
४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	०	०

उदाहरण—सायनार्क ३ राशि ३ अंश ५४ कला ८ विकला है, इसके भुज ८६ अंश ५ कला ५२ विकलां हुए. इसमेंके केवल अंशों ८६ में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १७ अंश १७ कला इस कारण १७ शराङ्कोंका योग हुआ ४५ और एकाधिक १८ वें शराङ्क ० से १ अंश ५ कला ५२ विकलाको गुणा करा तब ० अंश ० कला ० विकला यह गुणनफल हुआ, इसमें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ० कला ० विकला, इसमें पहिले शराङ्कोंके योग ४५ को युक्त करा तब ४५ अंश ० कला ० विकला यह शर हुआ । अब सायनार्क और सायन सूर्यको भिन्न गोलमें मानकर सायन सूर्यके पद उलटे लेने चाहिये या नहीं, इस विषयमें शर ४५ अंशमें ४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंश १५ कला, इसकी अपेक्षा सायन सूर्य १ राशि २० अंश ३६ कला ३२ विकलाके भुज ५० अंश ३२ कला ३१ विकला अधिक हैं, इस कारण पद उलटे लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥ ६ ॥

अब शरको स्पष्ट करनेकी रीति लिखते हैं—

खैकादिके रविभुजांशदशांशके स्याद्धारोऽर्क-विश्वमनुधृत्युडवोऽङ्करामाः ॥ खाश्वा द्विशत्युडु-

गुणास्तु शरार्द्धराप्त्या हीनोऽत्र स ह्यपमसंस्कृतये स्फुटः स्यात् ॥ ७ ॥

रविभुजांशदशांशके, तु, खैकादिके, (सति), अर्कविश्वमनुधृत्युडवः: अंकरामाः, खाश्वाः, द्विशती, उडुगुणाः (क्रमात्), हारः स्यात्, अत्र, हि, शरात्, हराप्त्या, हीनः, सः, अपमसंस्कृतये, स्फुटः, स्यात् ७

सायन सूर्यके भुजांशोंमें दसका भाग देय तब जो लब्धि होय तत्परिमित आगे लिखे हुए हाराङ्क और एकाधिक लब्धि इन दोनोंके अन्तरसे अंशादि बाकीको गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें दशका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें पहिले लिये हुए हाराङ्क युक्त करे तब हार होताहै; तदनन्तर पहिले लाए हुए शरमें हारका भाग देकर जो लब्धि होय उसको शरमें घटा देय तब जो शेष रहे वह स्पष्ट शर होता है । सूर्यके भुजांशोंका दशमांश शून्य एक आदिके समान होय तो क्रमसे अर्क कहिये बारह, विश्व कहिये तेरह मनु कहिये चौदह, धृति कहिये अठारह, उडु कहिये सत्ताईस, अङ्कराम कहिये छत्तीस खाश्व कहिये सत्तर, द्विशती कहिये दो सौ और उडुगुण कहिये तीन सौ सत्ताईस, यह हाराङ्क होते हैं ॥ ७ ॥

लब्ध्यंक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
हारांक	१२	१३	१४	१८	२७	३६	७०	२००	३२७	०

उदाहरण—सायन सूर्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकलाके भुजांश ५० अंश ३२ कला ३१ विकलाके अंशों ५० में १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ५ इस कारण पांचवे हाराङ्क ३६ और एकाधिक लब्धि ६ परिमित हाराङ्क ७० इन दोनोंका अन्तर ३४ से शेष ० अंश ३२ कला ३१ विकलाको गुणा करा तब १८

अंश २५ कला ३४ विकला हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश ५० कला ३३ विकला, यह हारहुआ. तदनन्तर शर ४५ अंश ० कला ० विकलामें हार ३७ अंश ५० कला ३३ विकलाका भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश ११ कला, इसको शर ४५ अंश ० कला ० विकलामें घटाया तब शेष रहे ४३ अंश ४९ कला यह स्पष्ट शर हुआ ॥ ७ ॥

अब क्रान्त्यङ्क लिखते हैं—

चतुर्धा नखा गोभुवो द्विर्गजाब्जा नृपाष्टीन्द्र-
विश्वार्कदिग्वस्वगाक्षाः ॥ त्रयः क्ष्माऽपमाङ्काः क्र-
मादर्कबाहोर्लवेष्वंशतुल्यो गतोऽन्यस्य शेषम् ८

नखाः, चतुर्धा, गोभुवः, द्विः, गजाब्जाः, नृपाष्टीन्द्रविश्वार्कदिग्व-स्वगाक्षाः, त्रयः, क्ष्मा, (एते), क्रमात्, अपमाङ्काः, (सन्ति), अर्कबाहोः, लवेष्वंशतुल्यः, गतः, शेषम्, अन्यस्य, (स्यात्) ॥८॥

'नख' कहिये बीस चार स्थानमें 'गोभुवः' कहिये उन्नीस फिर दो स्थानमें, गजाब्ज कहिये अठारह; नृप कहिये सोलह, अष्टि कहिये सोलह, इन्द्र कहिये चौदह, विश्व कहिये तेरह, अर्क कहिये बारह, दिक् कहिये दश, वसु कहिये आठ, अग कहिये सात, अक्ष कहिये पांच, त्रि कहिये तीन और क्ष्मा कहिये एक, यह क्रमसे क्रान्त्यङ्क हैं, सायन सूर्यके भुजांशोंमें पांचका भाग देनेसे लब्धि होय तत्परिमित नीचे दिये हुए क्रान्त्यङ्कोंको लेकर उनको गताङ्क कहे और जो शेष बचे उसका अन्यका जानकर एकान्तमें स्थापन करदेय ॥ ८ ॥

लब्ध्यंक																	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
क्रान्त्यक																	
२०	२०	२०	२०	१९	१८	१८	१६	१६	१४	१३	१२	१०	८	७	५	३	१

उदाहरण—सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला २१ विकलाकी भुजों ५० अंश ३२ कला ३१ विकलाके अंशों ५० में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० इस कारण दशवां क्रान्त्यङ्क १४ गतांक है और शेष ० अंश ३२ कला ३१ विकला रहा ॥ ८ ॥

अब क्रान्त्यङ्क और शरांक इन दोनोंका संस्कार लिखते हैं-

क्रमोत्क्रमादुक्तशरापमाङ्कान्संख्याहि भोग्यात्क्रमतः षडङ्काः ॥ स्थाप्या गतैष्या गतगम्यपाते युग्मेऽन्यथौजे स्युरिमेऽयनांशाः ॥ ९ ॥ अन्त्याद्विलोमा यदि तेऽन्यदिक्का अथापमाङ्काः क्रमशः शराङ्कः ॥ सुसंस्कृतास्त्रीन्दुहृतापमैष्याङ्केनापि ते स्पष्टतरा भवेयुः ॥ १० ॥

(हे गणक !) उक्तशरापमाङ्कान्, क्रमोत्क्रमात्, संख्याहि भोग्यात्, क्रमतः, गतमम्यपाते, गतैष्याः, षट्, अङ्काः, स्थाप्याः, (एवम्), युग्मे, ओजे, अन्यथा, इमे, अयनांशाः स्युः, यदि, ते, अन्त्यात्, विलोमाः, (तदा), अन्यदिक्काः, (ज्ञेयाः) अथ, क्रमशः, शराङ्कः, अपमांकाः, सुसंस्कृताः, (ततः), त्रीन्दुहृतापमैष्यांकेन, अपि, संस्कृताः ते, स्पष्टतराः, भवेयुः ॥ ९ ॥ १० ॥

हे गणक ! पहिले जो शरांक और क्रान्त्यङ्क कहे हैं उनको क्रमसे और उत्क्रमसे गिने, अर्थात् क्रान्त्यङ्कोंको पहिलेसे अठारह पर्य्यन्त और फिर अठारहसे पहिलेपर्य्यन्त इसप्रकार छत्तीस क्रान्त्यङ्क गिने, तिसी प्रकार शराङ्कों को भी गिने, तदनन्तर सायन सूर्य्य समपदमें होकर यदि गतपात है, अथवा विषम पदमें होकर गम्यपात है, तो पहिले लाये हुए क्रान्त्यङ्कोंमेंसे गतांक आगेके अंकसे अर्थात् एष्य अंकसे पहिले छः क्रान्त्यंक लेय और यदि सायन रवि विषमपदमें होकर गतपात है अथवा समपदमें होकर एष्यपात है तो एष्याङ्कसे आगेके छः क्रान्त्यङ्क लेय, परन्तु यदि एष्यांक छःके भीतर हो और पहिले क्रान्त्यङ्क लेने हो तो पहिले अंक लेकर छः अङ्कोंकी पूर्तिके क्रात्यंक अन्तरसे लेय, यह अंक सायन रविके उत्तर होनेसे उत्तरायण और दक्षिणायनमें होनेसे दक्षिण होते हैं, परन्तु पहिले छः क्रान्त्यङ्कोकी पूर्ति करनेके लिये कोई अङ्क उत्क्रमसे गिने हुए क्रान्यङ्कोंमेंसे लिये हों तो उनको ही पहिले अङ्कोंकी विपरीत दिशाका जाने. इस प्रकार ही साब्वर्कके भुजामें पांचका भाग देकर जो लब्धि होय तत्परिमित क्रमसे गिने हुए शराङ्कोंमेंसे अंक लेकर उनको गतांक कहे और उससे आगेके अंकसे अर्थात् एष्याङ्कसे पहिले अथवा आगेके छः अंक लेय और साग्वकों उनकी दिशा लावे तदनन्तर तिन छःक्रान्त्यङ्कोंका और छः शरांकोंका संस्कार करे, एष्य क्रान्त्यङ्कोंमें तेरहका भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय उसको एष्याङ्ककी दिशाको जाने और तिस लब्धिका तथा संस्कार करके लाएहुए प्रत्येक अंकका फिर संस्कार करे, तब वह छः अङ्क स्पष्ट होते हैं ॥ ९ ॥ १० ॥

उदाहरण—क्रमसे स्थापित क्रान्त्यंक २० । २० । २० । २० । १९ । १८ । १८ । १६ । १६ । १४ । १३ । १२ । १० । ८ । ७ । ५ । ३ । १ ॥ उत्क्रमसे स्थापित क्रान्त्यङ्क १ । ३ । ५ । ७ । ८ ।

१० । १२ । १३ । १४ । १६ । १६ । १८ । १८ । १९ । २० । २० । २० । २० ॥ क्रमसे स्थापित शराङ्क ४ । ४ । ४ । ४ । ४ । ३ । ३ । ३ । ३ । २ । २ । २ । २ । १ । १ । ० । ० ॥ उत्क्रमसे स्थापित शराङ्क । ० । ० । १ । १ । २ । २ । २ । २ । ३ । ३ । ३ । ३ । ४ । ४ । ४ । ४ । ४ ॥ सायन सूर्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला विषमपदमें होकर एष्य पात है इस कारण पहिले लाए हुए गतांक १४ से अगले १२ अंकसे पहिले छः अंक १३ । १४ । १६ । १६ । १८ । १८, यह अंक सायन रविके उत्तरायणमें होनेके कारण उत्तर है, तिसी प्रकार साग्वर्क २ राशि ३ अंश ५४ कला ८ विकला, इसके भुजों ८६ अंश ५ कला ५२ विकलाके अंशों ८६ में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १७ इस कारण सत्रहवां शरांक ० यह गतांक हुआ, अब साग्वर्क समपदमें होकर एष्य पात है, इस कारण अन्त्य शराङ्कसे आगेके छः अंक ० । ० । ० । १ । १ । २ । साग्वर्कके दक्षिणायन होनेके कारण दक्षिण हैं, 'अन्त्याद्विलोमाः' कहा है इस कारण पहिले स्थापन करे हुए शरांकमें पहिलेको छोडकर अन्य पांच अंक उत्क्रमसे स्थापित अंकोंमें उत्तर होगये और प्रथम अंक दक्षिण ही रहा, इस कारण क्रान्त्यङ्क १३ उत्तर, १४उत्तर,१६उत्तर,१६उत्तर,१८उत्तर१८उत्तर और शरांक ० दक्षिण, ० उत्तर, ० उत्तर, १ उत्तर, १ उत्तर, २ उत्तर, इन दोनोंका संस्कार (एकदिशावालोंका योग और भिन्न दिशावालोंका अन्तर) करा, उत्तर शरांक हुए १३ । १४ । १६ । १७ । १९ । २० यहां साग्वर्क दक्षिणायनमें है इस कारण विलोम (उलटी रीतिसे गिने हुए) पहिले शरांकोंमेंसे अन्तके पांच उत्तर हैं, अब क्रान्त्यङ्कोंमें पहिले अंक १३ में १३ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश उत्तर

इसका पहिले प्रत्येक शरांकसे संस्कार करा तब आये अंशात्मक छवों स्पष्टांक १४ १५ । १७ । १८ । २० । २१ यह हुए ॥ ९ ॥ १० ॥

अब पातमध्यमकालसाधनेकी रीति लिखते हैं—

प्राक्स्थापिताः शेषलवाः शराप्ता रूपाद्विशुद्धा लघुसंज्ञकः स्यात् ॥ आद्यः स्फुटाङ्को लघुना ह-तो यस्तेनाढ्यबाणात्क्रमशोऽथ जह्यात् ॥ ११ ॥ तानङ्ककाञ्छेषमशुद्धभक्तं विशुद्धसंख्यासहितंलघू-नम् ॥ त्रिघ्नं भनाडीघ्नमिभाप्तमाप्तयातैष्यनाडी-ष्विह पातमध्यम् ॥ १२ ॥

प्राक्, स्थापिताः, शेषलवाः, शराप्ताः, (ततः) रूपात्, विशुद्धा लघुसंज्ञकः, स्यात्, यः, आद्यः, स्फुटाङ्कः, (सः) लघुना, हतः, (कार्य्यः) शेषम्, अशुद्धभक्तम्, (ततः) विशुद्धसंख्यासहितम्, (ततः) लघूनम्, (ततः), त्रिघ्नम्, (ततः), भनाडीघ्नम्, (ततः), इभाप्तम्, सत्, यातैष्यनाडीषु, इह, पातमध्यम् (स्यात्) ॥११॥१२॥

पहिले सायन सूर्यके भुजोंसे गतांक लाकर जो अंशादि बाकी रही थी, उसमें पांचका भाग देकर जो अंशादि लब्धि आवे, उसको एक अंशमेंसे घटावे, तब जो शेष रहे उसको 'लघुशेष' कहते हैं, फिर पहले स्पष्ट अंकसे लघुशेषको गुणा करे, तब जो गुणनफल होय उसमें स्पष्ट शर युक्त कर देय और तिस योग-मेंसे प्रथमसे लेकर जितने स्पष्टांक घट सकें उतने घटा देय (जब स्पष्टशर मिलानेसे लाये हुए अंकयोगमेंसे छःओं भी स्पष्टांक

घट जांय, तब पूर्वोक्तरीतिसे और भी तीन आगेके स्पष्टांक लाकर उनसे जितने घट सकें तितने घटाकर शेष ले लेय) और उस शेषमें, जो स्पष्टांक घटा न हो उसका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें जितने स्पष्टांक घटे हों उनके तुल्य अंश मिलाकर जो अंकयोग होय उसमें लघुसंज्ञकको घटा देय तब जो शेष रहे उसको तीनसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसको फिर नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओंसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें आठका भाग देय तब जो लब्धि होय उसके तुल्य घटिका गत पात होय तो पातमध्य होगया और एष्य पात होय तो पातमध्य होने लगेगा ऐसा कहै ॥ ११ ॥ १२ ॥

उदाहरण–पूर्व शेष ० अंश ३२ कला ३१ विकलामें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ६ कला ३० विकला लब्धिके पात एष्य होनेके कारण यह ही लघु शेष है, इसको प्रथम स्पष्टांक १४ से गुणा करा तब एक अंश ३१ कला ० विकला यह गुणन फल हुआ इसमें स्पष्ट शर ४३ अंश ४९ कलाको युक्त करा तब ४५ अंश २० कला ० विकला हुआ, इसमें प्रथम स्पष्टांक १४ और द्वितीय स्पष्टांक १५ को घटाया तब शेष रहे १६ अंश २० कला इसमें (शेषमें तृतीय अंश १७ नहीं घटाया इस कारण) तृतीय स्पष्ट अंक १७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ५७ कला ३८ विकला उसमें (स्पष्टांक घटे थे इस कारण) विशुद्ध संख्या २ को युक्त करा तब २ अंश ५७ कला ३८ विकला हुए इसमें लघुशेष ६ कला ३० विकलाको घटाया तब शेष रहे २ अंश ५१ कला ८ विकला इसको ३ से गुणा करा तब ८ अंश ३३ कला २४ विकला हुआ इसको नक्षत्रकी गतैष्य घटी ६२ । ५५

से गुणा करा तब ५३८ घटी ३१ पल हुए इसमें ८ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६७ घटी १७ पल इसको गणितकाल वैशाख कृष्णा षष्ठी शुक्रवार ४५ घटी ५५ पलमें युक्त करा तब वैशाख कृष्णा सप्तमी शनिवार ५३ घटी ५० पल पातमध्यकाल हुआ ११।१२

अब पातस्थितिकालसाधनेकी रीति लिखते हैं-

अविशुद्धहृता यमार्कनाड्यः प्राक्पश्चात्स्थितिरत्र पातमध्यात् ॥ शुद्धाः क्वचिदत्र चेत्षडङ्काः संस्कार्याश्च तदग्रतस्त्रयोऽङ्काः ॥ १३ ॥

यमार्कनाड्यः, अविशुद्धहृताः (कार्य्याः, फल-घटिकाभिः) पातमध्यात्, अत्र, प्राक्, पश्चात्, स्थितिः, (स्यात्); अत्र क्वचित्, षट् अंकाः, शुद्धाः, चेत्, (तदा) च, तदग्रतः, त्रयः, अंकाः, संस्कार्य्याः ॥ १३ ॥

जो स्पष्टांक न घटा हो उसका एकसौ बाईस घटीमें भाग देय तब जो लब्धि होय वह घटिकादि पातमध्यकालसे पातस्थिति-काल होता है, तदनन्तर पातमध्यकालमेंसे उस स्थितिकालको घटावे तब जो शेष रहे वह पातप्रवेश काल होता है और पातमध्यकालमें पातस्थितिकालको युक्त कर देय तब पातनिर्गम काल होता है, यदि स्पष्ट शर मिलाकर लाये हुए अङ्कयोगमें छओं स्पष्टांक घटजांय तो पूर्वोक्त रीतिसे और तीन आगेके स्पष्टांक लाकर इसमेंसे जितने घट सकें उतने और घटाकर शेषको ग्रहण कर लेय ॥ १३ ॥

उदाहरण-१२२ घटी ० पलमें अविशुद्ध तृतीय स्पष्टांक १७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ७ घटी १० पल यह पातस्थिति काल हुआ, इसको पातमध्यकाल ५३ घटी ७ पलमें घटाया

तब शेष रहा ४५ घटी ५७ पल, यह पात प्रवेशकाल हुआ । अब पातमध्यकाल ५३ घटी ७ पलमें पातस्थितिकाल ७ घटी १० पलको युक्त करा तब ० घटी १७ पल यह पातनिर्गमकाल हुआ ॥ १३ ॥

अब सूर्यसे चन्द्रज्ञानकी रीति लिखते हैं-

षड्भार्कमच्युतरविस्त्विह सावनाब्जोऽथार्के घटीसमकलाश्चलनं त्वथेन्दोः ॥ भुक्त्यंशकाभघटिकाप्तखखाहयः स्युस्तच्चालितापमसमत्वमिह प्रतीत्यै ॥ १४ ॥

इह, तु, षड्भार्कमच्युतरविः, सावनाब्जः, (स्यात्), अथ, अर्के, घटीसमकलाः, चलनम्, (देयम्), अथ, तु, अघटिकाप्तखखाहयः, इन्दोः, भुक्त्यंशकाः, स्युः, तच्चालितापमसमत्वम्, इह, प्रतीत्यै (स्यात) ॥१४॥

पात व्यतीपात होय तो सायन सूर्यको छः राशियोंमें घटावे और वधृतिपात होय तो बारह राशिमेंसे घटावे, तब जो शेष रहे वह सायन चन्द्र होता है, सूर्यमें घटिकाओंकी तुल्यकलाओंका चालन देय और नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओंका आठसौ अंशमें भाग देय तब जो लब्धि होय वह चन्द्रमाकी अंशादि गति होती है, तदनन्तर सायन सूर्य और सायन चन्द्र इन दोनोंको पातमध्यकालीन करके उनकी क्रांतिलावे और उनका समत्व देखे ॥१४

उदाहरण-वैधृतिपात है इस कारण १२ राशिमेंसे सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकलाको घटाया तब शेष रहे १० राशि ९ अंश २७ कला २९ विकला, यह सायन चन्द्र हुआ और ८०० अंशोंमें नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओं ६२ घटी ५५ पलका भाग दिया तब लब्धि हुई १२ अंश ४२ कला ५४ विकला, यह

चन्द्रमाकी गति हुई; अब सायन सूर्य्य और सायन चन्द्र वैशाख कृष्ण षष्ठी शुक्रवारके दिन ४५ घटी ५७ कला इस समयके हैं; और वह पातमध्यकालीन (वैशाखकृष्ण ७ के दिन सूर्य्योदयसे५३घटी७पल,इस समयके)करने हैं इस कारण६७घटी १० पलकी तुल्य कलाओंका चालन देकर लाया हुआ रवि १ राशि २१ अंश ३९ कला ४८ विकला, चन्द्रगत्यंशों १२ अंश ४२ कला ५५ विकला करके चालित चन्द्र १० राशि २३ अंश ४३ कला ० विकला, स्वगति करके चालित राहु ० राशि २५ अंश ७ कला ३ विकला; रविकी क्रांति १८ अंश ३० कला ५८ विकला, चन्द्रक्रांति १३ अंश ५० कला १० विकला, विराहुचन्द्र ९ राशि १० अंश २४ कला ५७ विकला, इससे इसी अधिकारमें कही हुई, " पञ्चधेत्यादि " रीतिके अनुसार लाया हुआ स्पष्ट शर दक्षिण ४३ । ५० । १९, इसमें " अस्तोदयाधिकारमें दशवें श्लोकके विषे कही हुई रीतिके अनुसार " १० का भाग दिया तब अंशादि शर दक्षिण ४ अंश २३ कला २ विकला हुआ, इसका और चन्द्रक्रांतिका संस्कार करके चन्द्रस्पष्टक्रांति हुई १८ अंश १३ कला १२ विकला; अब सूर्य्य और चन्द्र इन दोनोंकी क्रांतिका अन्तर १७· कला ४५ विकला है; इस थोडेसे अन्तरके होनेसे कोई दोष नहीं इस कारण क्रांतिसाम्य है ऐसा कहनेमें कोई हानि नहीं है ॥ १४ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य–काशीस्थराजकीयसंस्कृत-विद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्नि-ध्याधिगतविद्य–भारद्वाज–गोत्रोत्पन्न गौडवंशावतंस-श्रीयुतभोलानाथतनूज–पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितः पाता-धिकारः समाप्तिमितः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चाङ्गचन्द्रग्रहणानयनाधिकारो व्याख्यायते।



तहाँ प्रथम तिथि साधन लिखते हैं-

मासाः स्वार्द्धयुतास्तिथेर्दिनाद्यं तावत्यो घटिकाश्च माससंघात् ॥ त्र्यंशाढ्याः सहितं द्व्यत्रयाभ्यां चक्रघ्नाक्षनवाङ्गवर्गयुक्तम् ॥ १ ॥

स्वार्द्धयुताः, मासाः, तिथेः, दिनाद्यम्,(स्यात्)तावत्यः, घटिकाः, च, माससंघात् त्र्यंशाढ्याः, (ततः, तत्), द्व्यत्रयाभ्याम्, (ततः) चक्रघ्नाक्षनवाङ्गवर्गयुक्तम् ॥ १ ॥

(इष्टमासका जो मासगण वह होते है) मास अपने अर्द्ध करके युक्त तिथिके वार आदि होते हैं और उतनी ही घटिका अधोभागमें स्थापन करे, और मासगणका तृतीयांश युक्त करदेय, फिर क्रमसे ऊपरके भागमें और अधोभागमें दो और तीन युक्त करदेय, फिर उसमें चक्रसे गुणा करे हुए अक्षयकहिये पांच और नव कहिये नौ तथा अङ्गवर्ग कहिये छत्तीसको युक्त कर देय (फिर देशान्तर पलोंको युक्त कर देनेसे) वारादि होता है ॥ १ ॥

उदाहरण-शाके १५३४ कार्तिक शुक्ला १५ गुरुवारके दिन मासगण ५७ है इसमें इसके आधे २८। ३० को युक्त करा तब

८५ । ३० हुए इसको तुल्य घटिका इसके अधोभागमें स्थापन करि $^{६५०}_{८५३०}$ तब ८५ । ११५ । ३० हुए इसमें मासगण ५७ के तृतीयांश १९ को युक्त करा तब ८५ । १३४ । ३० हुए इसमें क्रमसे २ और ३ को यु $^{३४}_{२}$ । ३० करा तब ८७ । १३७ । ३० हुए इसमें चक्र ८ से गुणा करे हुए ५ । ९ । ३६=४१ । १६ । ४८ को युक्त करा तब १२८ । १५४ । १८ हुए यह वारादि हुआ यहां वारके स्थानमें ७ से और घटिके स्थानमें ६० से तष्ट किया तब ४ वार ३५ घटी १८ पल यह वारादि हुआ, इसमें देशान्तरीय पल ४८ युक्त करे तब कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाके दिन ४ वार ३५ घटी ६ पल यह वारादि हुआ ॥ १ ॥

अब नक्षत्र ध्रुवकके साधनकी रीति लिखते हैं-

खं सप्ताष्टयमाश्च चक्रनिघ्ना नागाम्भोधिघटी-युता भशुद्धाः ॥द्वाभ्यां धूर्जटिभिर्विनिघ्नमासैर्युक्ता भध्रुवको भपूर्वकः स्यात् ॥ २ ॥

चक्रनिघ्नाः, खम्, सप्त, अष्टयमाः, नागाम्भोधिघटीयुताः, (कार्य्याः), (ततः) भशुद्धाः, (ततः) द्वाभ्याम्, धूर्जटिभिः, विनिघ्नमासैः युक्तः, भपूर्वकः, भध्रुवकः स्यात् ॥ २ ॥

'खम्' कहिये शून्य, 'सप्त' कहिये सात, 'अष्टयम' कहिये अठाईस, इनको चक्रसे गुणा करे, तब जो गुणनफल होय उसमें 'नागाम्भोधि' कहिये अड़तालीस युक्त कर देय, तब जो अङ्क-योग होय उसको सत्ताईसमें घटा देय तब जो शेष होय उसमें

दोसे और ग्यारहसे गुणा करे हुए मास युक्त कर देय तब नक्षत्रादि नक्षत्रध्रुवक होता है ॥ २ ।

उदहरण—० । ७ । २८ को चक्र ८ से गुणा करा तब ० । ५९ । ४४ हुए इसमें अड़तालीस ४८ घटी युक्त करीं तब १ नक्षत्र ४७ घटी ४४ पल हुए, इसको २७ में घटाया तब शेष रहे २५ नक्षत्र १२ घटी १६ पल हुए, इसमें २ से और ११ से मास ५७ को गुणा करके १२४ । २७ युक्त करा तब १४९ । ३९ । १६ हुए यहाँ सत्ताईस २७ से तष्ट किया तब १४ । ३९ । १६ यह नक्षत्रादि नक्षत्र-ध्रुव हुआ ॥ २ ॥

अब पिण्डसाधनकी रीति लिखते हैं-

स्वर्गाः शरा नव च चक्रहता द्विनिघ्नमासान्विता द्विहृतमासयुता घटीषु ॥ पिण्डो भवेद्युगकुभिः खचरैः समेतास्तष्टो गजाश्विभिरिदं भवतीह चक्रम् ॥ ३ ॥

स्वर्गाः, शराः, नव, च, चक्रहताः, (ततः) द्विनिघ्नमासान्विताः, घटीषु, द्विहृतमासयुताः, युगकुभिः, खचरैः, समेताः, पिण्डः, भवेत्, गजाश्विभिः, तष्टः, (कार्य्यः) इदम्, चक्रम्, इह, (अष्टाविंशतिमितम्) भवति ॥ ३ ॥

स्वर्ग कहिये इक्कीस, शर कहिये पाँच, नव कहिये नौ इनको चक्रसे गुणा करे, तब जो गुणनफल हो उसमें द्विगुणित मास-

गणको युक्त करे, तदनन्तर घटियोंमें दोका भाग देनेसे जो लब्धि होय उसको युक्त करदेय, फिर क्रमसे 'युगकु' कहिये चौदह और खचर कहिये नौ युक्त करदेय, फिर अठाईससे तष्ट देय तब पिण्ड होता है, यहाँ अठाईस परिमित चक्र माना गया है ॥ ३ ॥

उदाहरण—२१ । ५ । ९ को चक्र ८ से गुणा करा तब १६८ । ४१ । १२ । हुए इसमें मासगण ५७ को २ से गुणा करके ११४ युक्त करा तब २८२ । ४१ । १२ हुए यहां घटियोंमें मासगण ५७ में २ का भाग देकर २८ । ३० लब्धिको युक्त करा तब २८३ । ९ । ४२ हुए, यहां क्रमसे १४ और ९ को युक्त करा तब २९७ । १८ । ४२ हुए, यहां आद्य अंकको २८ से तष्ट किया तब १७ । १८ । ४२ यह पिण्ड हुआ ॥ ३ ॥

अब सूर्यनक्षत्रसे फलघटिका लानेकी रीति लिखते हैं—

शिवदशवसुषट्काब्ध्यश्विनाड्योऽश्विभात्स्वं खगुणशरनगाङ्काशेशदिग्दिङ्नवाष्टौ ॥ रसगुणखमिनर्क्षादादितेयादृणं स्युर्द्वियुगरसगजाङ्काशेश्वरा वैश्वतः स्वम् ॥ ४ ॥

इनर्क्षात्, अश्विभात, शिवदशवसुषट्काब्ध्यश्विनाड्यः, स्वम् आदितेयात्, खगुणशरनगाङ्काशेशदिग्दिङ्नवाष्टौ, रसगुणखम्, ऋणम्, वैश्वतः, द्वियुगरसगजाङ्काशेश्वराः, स्वम्, स्युः, ॥ ४ ॥

सूर्यनक्षत्र अश्विनीसे लेकर आर्द्रापर्यन्तका होय तो उसमें क्रमसे शिव कहिये ११, दश १०, वसु कहिये ८ षट्क कहिये ६

अब्धि कहिये ४ अश्वि कहिये २ यह घटी धन होती हैं; और पुनर्वसुसेलेकर पूर्वाषाढा पर्य्यन्तका नक्षत्रहोय तो पुनर्वसुसेलेकर उनमें क्रमसे शून्य, तीन, पांच, सात, नौ, दश, ग्यारह, दश, दश, नौ, आठ, छः, तीन, शून्य, यह घटी ऋण करे, तथा उत्तराषाढ़ासे लेकर सम्पूर्ण नक्षत्रोंमें क्रमसे दो, चार, छः, आठ, नौ, दश और ग्यारह घटी धन करे ॥ ४

अब सूर्यनक्षत्रसाधनकी रीति लिखते हैं –

वेदघ्नेष्टतिथिर्युतार्कभागा योज्या भध्रुवनाडिकासु तत्स्यात् ॥ सूर्यर्क्षं विगतं ततोऽर्कजाख्यनाडीहीनयुतं स्फुटं भवेत्तत् ॥ ५ ॥

युतार्कभागा, वेदघ्नेष्टतिथिः, भध्रुवनाडिकासु, योज्या, तत्, विगतम्, सूर्य्यर्क्षम्, स्यात्, ततः, तत्, अर्कजाख्यनाडीहीनयुतम्, स्फुटम्, भवेत् ॥ ५ ॥

वर्तमान इष्ट तिथिको चारसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें उसके बारहवें भागको युक्त कर देय, तब जो अंकयोग होय उसको नक्षत्रध्रुवककी घटिकाओंमें युक्त कर देय तब जो अंकयोग होय वह गत सूर्यनक्षत्र होता है, तदनन्तर उसमें स्फुट अर्कज घटीकाओंको हीन युक्त करे तब वह सूर्य्यनक्षत्र स्फुट होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण–इष्ट तिथि १५ को ४ से गुणा करा तब ६० हुए, इसमें इसके ही बारहवें भाग ५ को युक्त करा तब ६५ हुए, इसमें नक्षत्रध्रुवककी घटिका १४।३९।१६। युक्त करा तब १५।४४।१६। हुए, यह गत सावयव सूर्य्यनक्षत्र हुआ, यहां सूर्य्य विशाखानक्षत्रमें है इस कारण 'शिवदशे' त्यादि रीतिके अनुसार, अर्कजाख्य घटिका९ऋणहुई। अब अर्कजाख्य घटिकाओंको स्फुट करते हैं–विशाखाकी घटी ९ और अनुराधाकी घटी ८ इन दोनोंका अन्तर हुआ १ इससे सूर्य्यनक्षत्रकी घट्यादि ४४ घटी १६ पलको गुणा करा तब ४४ घटी १६ पल हुए इसमें ६० का भाग दिया तब०घटी ४४ पल यह अग्रिमके क्षय होनेके कारण ऋण है, इससे संस्कार करी हुई अर्कज घटी ९ हुई ऋण ८ घटी १६ पल इनको सूर्य्यनक्षत्र १५।४४।१६ में घटाया तब स्पष्ट सूर्य्यनक्षत्र हुआ १५ । ३६ । ० ॥ ५ ॥

अब पिण्डफल कहते हैं–

पिण्डे युक्ततिथौ तदाद्यमनुषु स्वं शेषपिण्डेष्वृणं विश्वेन्दोश्च शरा दशार्कयमयोः पञ्चेन्दवस्त्रीशयोः ॥ गोचन्द्रा दशवेदयोर्यमयमाः पञ्चाङ्कयोः स्युर्जिनाः षड्वस्वोश्च नगे तु तत्त्वघटिकाः शक्रे च खं पिण्डजाः ॥ ६ ॥

युक्ततिथौ, पिण्डे, विश्वेन्द्वोः, (तुल्ये, सति) शराः, अर्कयमयोः

(तुल्ये, सति) दश, त्रीश्वयोः, (तुल्ये, सति) पञ्चेन्दवः, दशवेदयोः, (तुल्ये, सति) गोचन्द्राः, पञ्चाङ्कयोः, (तुल्ये, सति) यमयमाः, षड्वस्वोः, च, (तुल्ये, सति) जिनाः, नगे, तु (तुल्ये, सति) तत्त्वघटिकाः शक्रे, च, (तुल्ये, सति) खम्, पिण्डजाः, आद्यमनुषु, (चेत्) तदा, खम्, शेषपिण्डेषु (चेत्, तदा,) ऋणम्, स्युः ॥ ६ ॥

तिथियुक्त पिण्डोर्ध्वाङ्कके तेरह और एककी तुल्य होनेपर पांच घटी बारह और दोकी तुल्य होनेपर दश घटिका, तीन और ग्यारहकी तुल्य होनेपर पन्दरह घटिका, दश और चारकी तुल्य होनेपर उन्नीस घटिका, पांच और नौकी तुल्य होनेपर बाईस घटिका, छः और आठकी तुल्य होनेपर चौवीस घटिका, सातकी तुल्य होनेपर पच्चीस घटिका, और चौदहकी तुल्य होनेपर शून्य घटिका यह पिण्डघटिका होती हैं, परन्तु तिथियुक्त पिण्डोर्ध्वाङ्क चौदह पर्यन्त होय तो यह घटिका धन होती हैं, और चौदहसे लेकर अट्ठाईसके भीतर होय तो यह घटिका ऋण होती हैं ॥ ६ ॥

<table>
<tr><th colspan="14">तिथियुक्तपिण्डोर्ध्वाङ्क</th></tr>
<tr><td>१३</td><td>१</td><td>१२</td><td>२</td><td>३</td><td>११</td><td>१०</td><td>४</td><td>५</td><td>९</td><td>६</td><td>८</td><td>७</td><td>१४</td></tr>
<tr><th colspan="14">पिण्डजघटिका</th></tr>
<tr><td colspan="2">५</td><td colspan="2">१०</td><td colspan="2">१५</td><td colspan="2">१९</td><td colspan="2">२२</td><td colspan="2">४</td><td>५</td><td>१०</td></tr>
</table>

उदाहरण—प्रथम और चौदहके मध्यमें स्थितपिण्ड ७ । १८ । ४२ इसमें इष्टतिथि १५ को युक्त करा तब २२।१८।४२ हुए, यह

चक्रसे अधिक है इस कारण १८ से तष्ट किया तब ४।१८।४२ हुए, यह चारके तुल्य है इस कारण इसमें १९ घटी ऊर्ध्वाङ्कके प्रथम चतुर्दशके मध्यमें स्थित होनेके कारण धन हुई। अब इन पिण्ड-घटिकाओंको स्पष्ट करते हैं-पिण्डघटी १९ और इससे आगेकी पिण्डघटिका २२ इन दोनोंका अन्तर करा तब ३ हुए, इससे पि-ण्डके अधोभागकी घटिका १८।४२ को गुणा करा तब ५६।६ हुए, इसमें ६० का भाग दिया तब ० घटी ५६ पल अग्रिमके अधिक होनेके कारण धन है इससे संस्कार करा तब स्पष्ट पिण्डघटिका हुई धन १९ घटी ५६ पल ॥ ६ ॥

अब तिथिके स्पष्ट करनेकी रीति लिखते हैं—

वारेषु तिथिर्देया हेया नाडीषु जायते मध्या॥
रविजापिण्डफलाभ्यां सुसंस्कृता स्पष्टतां याति ७

तिथिः, वारेषु, देया, नाडीषु, हेया, (तदा) मध्या, जायते, (सा) रविजापिण्डफलाभ्याम्, सुसंस्कृता, स्पष्टताम्, याति ॥ ७ ॥

मासगणसे जो तिथिवारादि पहिले साधा है, तहां वारोंमें तिथिको युक्त कर देय, और घटियोंमें तिथिको घटा देय, तब जो होय वह मध्यतिथि होती है, इस मध्यतिथिका सूर्यज घटिकाओं करके और पिण्डज घटिकाओं करके संस्कार करे तब तिथि स्पष्ट होती है ॥ ७ ॥

उदाहरण—वारादि ४। ३५। ६ है यहां वारों ४ में तिथि १५ को युक्त करा तब १९। ३५। ६ हुई, और घटिकाओं ३५ में

तिथि १८ को घटाया तब १९ । २० । ६ यह वारोंको ७ से तष्टा तब ५ । २० । ६ । यह मध्यतिथि हुई, इसका रवि घटिका ८ । १६ ओंमें संस्कार (हीन) करा तब ५ । ११ । ६ हुए, इसका पिण्डज घन घटिका १९ । ५६ से संस्कार करा तब ५ । ३१ । ४६ यह स्पष्ट तिथि हुई ॥ ७ ॥

अब नक्षत्र साधनकी रीति लिखते हैं—

स्याद्भं केवलयोस्तिथिध्रुवभयोर्योगे तिथेर्नाडिका युक्ता व्यङ्गलवद्विनिघ्नतिथिना व्यस्तार्कजासंस्कृताः ॥ नाडीभिर्ध्रुवभस्य चेन्न वियुतास्तद्धीनषष्ट्यन्विताः सैकं भं घटिका वियत्षडधिकाः षष्ट्यूनिता व्येकभम् ॥ ८ ॥

केवलयोः, तिथिध्रुवभयोः, योगेभम्, स्यात्, तिथेः, नाडिकाः, व्यङ्गलवद्विनिघ्नतिथिना, युक्ताः, व्यस्तार्कजासंस्कृताः, ध्रुवभस्य, नाडीभिः, वियुताः, (कार्य्याः) न, चेत्, तद्धीनषष्ट्यन्विताः, (कार्य्याः) भम्, सैकम्, (कर्त्तव्यम्) घटिकाः, वियत्षडधिकाः, (चेत्) षष्ट्यूनिताः, (कार्य्याः) व्येकभम्, (च, कार्य्यम्) ॥८॥

इष्ट तिथि और अवयवरहित नक्षत्र ध्रुवक केवल इन दोनोंका योग करे और सत्ताईससे तष्ट देय तब नक्षत्र होता है, तिथिकी घटिकाओंमें अपने छठे भाग करके रहित जो द्विगुणिततिथि

तिसको युक्त कर देय, तब जो अङ्कयोग होय उसका विपरीत (धन हों तो ऋण कर लेय, और ऋण हों तो धन कर लेय) अर्कज घटिकाओं करके संस्कार करे, फिर नक्षत्र ध्रुवकी घटिका घटा देय, यदि नक्षत्रध्रुवकी घटी नहीं घट सकें तो उनको साठमें घटाकर जो शेष रहे वह युक्त करदेय, और नक्षत्रमें एक युक्तकर देय; और यदि घटिका साठसे अधिक हों तो उनमें साठ घटा देय, और नक्षत्रमें एक हीन कर देय ॥ ८ ॥

उदाहरण—केवल (अवयवरहित) नक्षत्रध्रुव १४ केवल इष्ट तिथि १५ दोनोंका योग करा तब २९ हुए इसको २७ से तष्टा तब शेष रहे २ यह नक्षत्र (भरणी) हुआ, तब तिथि घटिकाओ ३१ । ४६ में केवल तिथि १५ को दोसे गुणा करा तब ३० हुए इसके छठे भाग ५ को युक्त करा तब ५६ घटी ४६ पल हुए, इसमें अर्कज ऋण ८ घटी १६ पलको विपरीत (ऋणसे धन) करके युक्त करा तब ६५ घटी २ पल हुए, इसमें नक्षत्र ध्रुवकी घटिकाओं ३९ । १६ को घटाया तब २५ घटी ४६ पल हुए, अर्थात भरणी २५ घ. ४६ प. हुआ ॥ ८ ॥

अथ योगसाधनकी रीति लिखते हैं—

सूर्यभेन्दुभयुतिर्भवेद्युतिस्तद्घटीविवरमत्र नाडिकाः ॥ चेद्द्युभेऽल्पघटिकास्तदा सकुयोगकोऽस्य घटिकाः खषट्च्युताः ॥ ९ ॥

सूर्यभेन्दुभयुतिः, युतिः, भवेत्, तद्घटीविवरम, अत्र, नाडिकाः,

(स्युः) द्युभे, अल्पघटिकाः, चेत्, तदा, योगकः, सकुः, (कार्य्यः) अस्य, घटिकाः, खषट्च्युताः, (कार्य्याः) ॥ ९ ॥

सूर्य्यनक्षत्रका और चन्द्र नक्षत्रका योग करे तब योग होता है और सूर्य्यनक्षत्र तथा चन्द्रनक्षत्रकी घटिकाओंका जो अन्तर वह योगकी घटिका होती है, यदि दिननक्षत्रकी घटिका कम हों तो योगमें एक युक्त कर दे और घटिकाओंको साठमें घटाकर जो शेष रहे वह ले ले ॥ ९ ॥

उदाहरण—सूर्य्यनक्षत्र १५ और चन्द्रनक्षत्र २इन दोनोंका योग करा तब १७ यह व्यतीपात योग हुआ, अब सूर्य्यनक्षत्रकी घटिका ३६ घटी ० पल और चन्द्रनक्षत्रकी घटिका २५ घटी ४६ पल इन दोनोंका अन्तर करा तब १० घटी १४ पल यह व्यतीपात योगकी घटिका हुई, यहाँ दिननक्षत्रकी घटिका सूर्यनक्षत्रकी घटिकाओंसे कम है इस कारण योग १७ में १ युक्त करा तब १८ हुए अर्थात् वरीयान् योग हुआ और अब पहिले लाई हुई घटिकाओं १० घटी १४ पलको ६० घटीमें घटाया तब ४९ घटी ४६ पल हुए ॥ ९ ॥

अब पूर्णान्तकालमें राहुसाधनकी रीति लिखते हैं—

चक्राहताः सप्त यमौ खबाणा मासाहताः खं क्षितिरब्धिरामाः ॥ भाद्यानयोः संयुतिरर्कशुद्धा भांशैर्युता शुक्लगते तमः स्यात् ॥ १० ॥

सप्त, यमौ, खबाणाः, चक्राहताः, (कार्य्याः) खम्, क्षितिः, अब्धिरामाः, मासाहताः, (कार्य्याः) अनयोः, भाद्या, संयुतिः, अर्कशुद्धा, भांशैः, युता, शुक्लगते, तमः, स्यात् ॥ १० ॥

सात, दो और पचासको चक्रसे गुणा करे, और शून्य, एक तथा चौतीसको मासोंसे गुणा करे, इन दोनोंका राश्यादि योग करे और उस योगको बारह राशिमें घटावे तब जो शेष रहे उसमें सत्ताईस अंश युक्त करदे तब पौर्णिमाके अन्तमें राहु होता है ॥ १० ॥

उदाहरण—७ । २ । ५० को चक्र ८ से गुणाकरा तब ५६ । २२। ४० हुए और ० । १ । ३४ को मासों ५७ से गुणा करा तब ० । ५७ । १९ । ३८ । यहां कलाओंमें साठ ६० का भाग दिया और अंशोंमें ३० का भाग दिया तब २ । २९ । १८ हुए, अब दोनोंका गुणनफल ५६ । २२ । ४० और २ । २९ । १८ । का राश्यादि योग करा तब ११ राशि २१ अंश ५८ कला हुआ, इसको १२ राशिमेंसे घटाया तब ० राशि ८ अंश २ कला रहा, इसमें २७ अंश युक्त करे तब १ राशि ५ अंश २ कला यह पौर्णिमान्तकालीन राहु हुआ॥१०

अब सूर्य्यसाधनकी और ग्रहणसंभव जाननेकी रीति लिखते हैं—

वेदघ्नगोह्रद्रविभुक्तधिष्ण्यं तिथ्यन्तजोऽर्कों ग्रहपूर्वकः सः ॥ राहूनितः पर्वणि तद्भुजांशाः मन्वल्पकाश्चेद्ग्रहसंभवः स्यात् ॥ ११ ॥

रविभुक्तधिष्ण्यम्, वेदघ्नगोहृत्, ग्रहपूर्वकः, तिथ्यन्तजः, अर्कः, (भवेत्) सः, पर्वणि, राहूनितः, (कार्य्यः) तद्भुजांशाः, मन्वल्पकाः, चेत् , (तदा) ग्रहसम्भवः, स्यात ॥ ११ ॥

सूर्य्यका जो सावयव भुक्त नक्षत्र है उसको चारसे गुणा करके नौका भाग दे तब जो लब्धि होय वह तिथ्यन्तकालीन राश्यादि सूर्य्य होता है; उस सूर्य्यमें राहुको घटा दे तब जो शेष रहे उसके भुजांश यदि चौदहसे कम हों तो ग्रहणसम्भव होता है ॥ ११ ॥

उदाहरण—सूर्य्यका भुक्त सावयवनक्षत्र १५ । ३६ । ० है इसको ४ से गुणा करा तब ६२ । २४ । ० हुआ, इसमें ९ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ राशि, शेष रहा ८ । २४ । ० इसको ३० से गुणा करा तब २५२ ० हुए, इसमें ९ का भाग दिया तब लब्धि हुई २८ अंश, शेष रहे ० । ० इसको ६० से गुणा करा तब ० । ० । ० हुए, इसमें ९ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० कला. इसीप्रकार ० विकला, इस प्रकार तिथ्यन्तकालीन राश्यादि सूर्य्य ६ राशि २८ अंश ० कला ० विकला अब तिथ्यन्तकालीन रवि ६ राशि २८ अंश ० कला ० विकलामें राहु १ राशि ५ अंश २ कला ० विकलाको घटाया तब शेष रहे ५ राशि २२ अंश ५८ कला ० विकला, इसके भुजांश ७ अंश २ कला ० विकला चौदह अंशसे कम हैं इस कारण ग्रहणका सम्भव है ॥ ११ ॥

अब ग्रासमान जाननेकी रीति लिखते हैं—

पिण्डनाडयन्तरांघ्र्यूनयुक्ता इनाः स्वर्गपिण्डा-
द्रिपिण्डान् क्रमाद्वर्जिताः॥व्यग्विनाद्योर्लवैः स्वा-
र्धयुक्ता भवेच्छन्नमिन्दो रविच्छन्नकाद्युक्तवत् ॥१२

क्रमात्, स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात्, पिण्डनाडयन्तरांघ्र्यूनयुक्ताः, इनाः,

व्यग्विनात, (जातैः) दोर्लवैः, वर्जिताः, (ततः) स्वार्धयुक्ताः, इन्दोः, छन्नम्, भवेत्, रविच्छन्नकादि, उक्तवत् (ज्ञेयम्) ॥ १२ ॥

गत और एष्य पिण्डकी जो घटिका उनका जो अन्तर तिसके चतुर्थांशको यदि इक्कीसवें पिण्डसे लेकर छठे पिण्डपर्य्यन्त होय तो बारहमें युक्त कर देय और बीससे लेकर षष्ठ पिण्डपर्य्यन्त होय तो घटा देय, तब जो रहे उसमें व्यगु रविके भुजांशोंको घटा देय तब जो शेष रहे उसमें उसका अर्द्ध युक्त कर देय, तब अंगुलादि चन्द्रग्रास होता है, और सूर्य्यका ग्रास आदि पूर्वोक्त रीतिसे साधे ॥१२॥

उदाहरण—पिण्डघटिकाओंके अन्तर ३ है, इसके चतुर्थांश ० ४५ को सप्त पिण्डसे विंशति पिण्डके मध्यमें होनेके कारण १२ में युक्त करा तब १२ । ४५ हुए इसमें विराहर्कके भुजभागों ७ । २ को घटाया तब ५ । ४३ रहे इसमें इसके आधे २ । ५१ को युक्त करा तब ८ अंगुल ३४ प्रतिअंगुल, यह चन्द्रग्रास हुआ सुर्य्यग्रासको पूर्वोक्तरीतिसे ही साधना चाहिये ॥ १२ ॥

अब चन्द्रबिम्ब और भूभासाधन लिखते हैं—

विर्त्र्यंशेशाः पिण्डनाडयन्तरस्य षष्ठोनाढ्याः स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात् ॥ ग्लौबिम्बं स्यात्तद्वदुर्वी-प्रभास्यात्त्रिघ्नस्याक्षांशोनयुक्तानि भानि ॥ १३ ॥

स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात्, पिण्डनाडयन्तरस्य, षष्ठोनाढ्याः विर्त्र्यं-शेशाः, ग्लौबिम्बम्, स्यात्, तद्वत्, त्रिघ्नस्य, अक्षांशोनयुक्तानि, भानि, उर्वीप्रभा, स्यात् ॥ १३ ॥

गत और एष्य पिण्डकी जो घटिका उनका जो अन्तर तिसके छठे भागको यदि इक्कीसवे पिण्डसे लेकर छठे पिण्डपर्य्यन्त होय तो तृतीयांशरहित ग्यारहमें घटा देय और षष्ठ पिण्डसे लेकर इक्कीस पिण्डपर्य्यन्त होय तो युक्त कर देय तब चन्द्रबिम्ब होता है, तिसी प्रकार पिण्ड-घटिकाओंके अन्तरको तीनसे गुणा करनेसे जो गुणनफल होय उसके पञ्चमांशको पूर्वोक्त रीतिसे सत्ताईसमें घटा देय और युक्त कर देय ॥ १३ ॥

उदाहरण-पिण्डघटिकाओंका अन्तर ३ है इसके छठे भाग ०। ३० को अद्रिपिण्ड होनेके कारण तृतीयांशरहित ग्यारह १०। ४० में युक्त करा तब ११ अंगुल १० प्रतिअंगुल चन्द्रबिम्ब हुआ । अब पिण्डघटिकाओंके अन्तर ३ को ३ से गुणा करा तब ९ हुए. इसके पंचमांश १। ४८ को अद्रिपिण्ड होनेके कारण २७ में युक्त करा तब २८ अंगुल ४८ प्रतिअंगुल भूभाबिम्ब हुआ ॥ १३ ॥

अब प्रतिमासमें वारादिका चालन कहते हैं-

वारादिके भूः कुगुणाः खबाणाः पिण्डे द्वयं भे द्वयमीशनाड्यः ॥ क्षेप्याः क्रमेण प्रतिमासमत्र राहौ युगाङ्काः कलिका वियोज्याः ॥ १४ ॥

प्रतिमासम्, वारादिके, क्रमेण, भूः, कुगुणाः, खबाणाः, क्षेप्याः, पिण्डे, द्वयम्, भे, (च), द्वयम्, (क्षेप्यम्, घटिकासु) ईशनाड्यः, (क्षेप्याः) अत्र, राहौ, युगाङ्काः, कलिकाः, वियोज्याः ॥ १४ ॥

प्रत्येक मासमें वारादिकेविषे क्रमसे एक-इकतीस और पचास युक्त करे, पिण्डमें दो युक्त करे और नक्षत्रमें भी दो युक्त करे, तथा घटिकाओंमें ग्यारह युक्त करे परन्तु राहुमें चौरानवे कला घटा देय ॥ १४ ॥

उदाहरण-कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको वारादि ४ । ३५ । ६ है यहां क्रमसे १ । ३१ । ५० को युक्त करा तब मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदाके दिन वारादि हुआ ६ । ६ । ५६ मासादि पिण्ड १७ । १८ ४८ है इसमें २ युक्त करे तब अग्रिममासमें पिण्ड १९ । १८ । ४२ हुआ मासादि नक्षत्र ध्रुवक १४ । ३९ । १६ है इसमें २ को युक्त करा और घटिकाओंमें ११ घटीयुक्त करी तब अग्रिममासमें नक्षत्र-ध्रुवक १६ । ५० । १६ हुआ राहु १ । ५ । २ । ० में ९४ कला घटाई तब अग्रिममासमें राहु १ । ३ । २८ । ० हुआ ॥ १४ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराजकीयविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसांनिध्याधिगतविद्येन भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुत भोलानाथात्मजेन पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितः पञ्चाङ्गचन्द्रग्रहणानयनाधिकारः समाप्तिमितः ॥१५॥

अथ पूर्वशकादहर्गणाद्यानयनाधिकारो व्याख्यायते ।

तहां प्रथम यदि शाके १४४२ वर्षोंसे पहिलेका होय तब अह-र्गण लानेकी रीति लिखते हैं—

द्व्यब्धीन्द्राः शकरहितास्ततो भवाप्तं चक्रा-
ख्यं रविहतशेषकं तु हीनम् ॥ चैत्राद्यैः पृथगमुतः
सद्रग्घ्नचक्रात्सिद्धाब्ध्यादमरफलाधिमासयुक्तम्॥१॥
खत्रिघ्नं तिथिरहितं निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यं पृथगमु-
तोऽब्धिषट्कलब्धैः ॥ ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै
वारः प्राक्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥ २ ॥

द्व्यब्धीन्द्राः, शकरहिताः, (कार्याः) ततः, भवाप्तम्, चक्राख्यम्, (स्यात्) रविहतशेषकम्, तु, चैत्राद्यैः, हीनम्, पृथक्, (स्थाप्यम्) सद्रग्घ्नचक्रात्, सिद्धाब्ध्यात्, अमुतः, अमरफलाधिमासयुक्तम्, खत्रिघ्नम्, तिथिरहितम्, निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यम्, पृथक्. (स्थाप्यम्) अमुतः, अब्धिषट्कलब्धैः, ऊनाहैः, वियुतम्, अहर्गणः, भवेत, शरहतचक्र-युग्गणः, प्राक्, अब्जात्, वारः, (भवेत्) ॥ १ ॥ २ ॥

इष्ट शाकेको चौदहसौ ब्यालीससमें घटा देय तब शेष रहे उसमें ग्यारहका भाग देनेसे जो लब्धि होय वह चक्र होता है,

और जो शेष रहे उसको बारहसे गुणा करे, तब जो गुणनफल होय उसमें चैत्रादि गत मास हीन करदेय तब जो शेष रहे वह मध्यममासगण होता है, उसको अलग स्थापन करदेय, और उस मध्यममासगणमें द्विगुणित चक्र और चौवीस युक्त करके तैंतीसका भाग देय और तब जो लब्धि होय वह अधिक मास होता है, उसको मध्यम मासगणमें युक्त करदेय तब मासगण होता है, तिस मासगणको तीससे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें गत तिथि घटाकर जो शेष रहे उसमें चक्रमें छःका भाग देकर जो लब्धि होय उसको युक्त करदेय तब मध्यम अह-र्गण होता है, तिसमें चौसठका भाग देनेसे जो लब्धि होय वह क्षयदिवस होते हैं उनको मध्यम अहर्गणमेंसे घटा देय तब अह-र्गण होता है, चक्रको पांचसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें अहर्गण युक्त करदेय, और फिर सातका भाग देय तब जो शून्यादि लब्धि होय उसको त्यागकर जो शेष बचे वह सोम-वारादि वार होता है ॥ १ ॥ २ ॥

उदाहरण—शाके १५४१ आषाढ शुक्ल १५ बुधवारके दिन अह-र्गण साधते हैं-शाके १५४१ को १५४२ में घटाया तब शेष रहा १ इसमें ११ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० यह चक्र हुआ, शेष बचा १ इसको १२ से गुणा करा तब १२ हुए गत मास ३ वियुक्त करे तब ९ यह मध्यम मासगण हुआ, इसमें द्विगुणित चक्र ० और २४ युक्त करे तब ३३ हुए इसमें ३३ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ यह अधिक मास हुआ, इसको मध्यम मासगण ९ में युक्त करा तब १० यह मासगण हुआ, इस मास गण १० को ३० से गुणा करा तब ३०० यह गुणन फल हुआ, इसमें गत तिथि

१४ घटाई तब शेष रहे २८६ इसमें चक्रके छठे भाग ० को युक्त करा तब २८६ हुए, इसमें ६४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ यह क्षयदिवस हुए, इसको २८६ में घटाया तब शेष रहे २८२ यह अहर्गण हुआ ।

अब चक्र ० को ५ से गुणा करा तब ० हुआ, इसमें अहर्गण २८२ को युक्त करा तब २८२ हुए, इसमें ७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४० और शेष रहे २ इस कारण बुधवार हुआ ॥१॥२॥

अब ग्रहसाधनकी रीति लिखते हैं—

चक्रनिघ्नध्रुवोपेताः सक्षेपा द्युगणोद्भवैः॥खेटै-
रूनाः स्युरिष्टाहे द्व्यब्धीन्द्वाल्पःशको यदा ॥३॥

यदा, इष्टाहे, शकः, द्व्यब्धीन्द्वाल्पः, (तदा) चक्रनिघ्नध्रुवोपेताः, सक्षेपाः, द्युगणोद्भवैः, खेटैः, ऊनाः, इष्टखेटाः, स्युः ॥ ३ ॥

यदि इष्टदिनके विषे शाके चौदहसौ बयालीससे कम होय तो चक्रको ध्रुवसे गुणा करके जो गुणन फल होय उसमें क्षेपकांक युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग होय उसमेंसे पहिले कही हुई रीतिके अनुसार अहर्गणसे लाये हुए ग्रहको घटा देय तब जो शेष रहे वह अभीष्ट ग्रह होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण–रविध्रुव ० राशि १ अंश ४९ कला ११ विकला इसमें चक्र ० से गुणा करा तब ० राशि ० अंश ० कला ० विकला हुए इसमें रविक्षेपक १२ राशि १९ अंश ४१ कला ० विकलाको युक्त

करा तब ११ राशि १९ अंश ४१ कला ० विकला हुए यही ध्रुवयुक्त रविक्षेपक हुआ अहर्गणोत्पन्न रवि ९ राशि ७ अंश ५६ कला २६ विकलाको ध्रुव युक्त क्षेपक ११ राशि १९ अंश ४१ कला ० विकलामें घटाया तब शेष रहे २ राशि ११ अंश ४४ कला ३४ विकला, यह रवि हुआ ॥ ३ ॥

अब पूर्वाचार्य्योंका अहङ्कारित्व और अपने विनीतत्वको कहते हैं—

पूर्वे प्रौढतराः क्वचित्किमपि यच्चक्रुर्धनुर्ज्ये विना
ते तेनैव महातिगर्वकुभृदुच्छृङ्गेऽधिरोहन्ति हि ॥
सिद्धान्तोक्तमिहाखिलं लघुकृतं हित्वा धनुर्ज्ये
मया तद्गर्वो मयि मास्तु किं न यदहं तच्छास्त्र-
तो वृद्धधीः ॥ ४ ॥

क्वचित्, धनुर्ज्ये, विना, यत्, किम्, अपि, पूर्वे, प्रौढतराः, चक्रुः, ते, तेन, एव, हि, महातिगर्वकुभृदुच्छृङ्गे, अधिरोहन्ति, इह, मया धनुर्ज्ये, विना, अखिलम्, सिद्धान्तोक्तम्, लघुकृतम्; तद्गर्वः, मयि, मा, अस्तु, यत्, अहम्, किम्, तच्छास्त्रतः,वृद्धधीः,न,(अस्मि)॥ ४ ॥

पहिले भास्कराचार्यआदि बड़े बड़े ग्रन्थकारोंने जो कुछ छाया-साधन ज्या और चापको छोड़कर किया है, उससे वह गर्वरूपी

पर्वतके बड़े ऊंचे शिखरपर चढ़ गये और मैंने तो इस ग्रन्थमें सम्पूर्ण गणित ज्या और चापके विना ही किया है, इस कारण मुझे उनसे भी अधिक गर्व होना चाहिये, परन्तु उनके ही शास्त्रसे मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ है इस कारण मुझमें किञ्चिन्मात्र गर्व नहीं है ॥ ४ ॥

अब ग्रन्थकार अपना नामादि लिखता है—

नन्दिग्राम इहापरान्तविषये शिष्यादिगीतस्तुतिर्योऽभूत्कौशिकवंशजः सकलसच्छास्त्रार्थवित्केशवः ॥ सूनुस्तस्य तदङ्घ्रिपद्मभजनाल्लब्ध्वावबोधांशकं स्पष्टं वृत्तविचित्रमल्पकरणं चैतद्गणेशोऽकरोत् ॥ ५ ॥

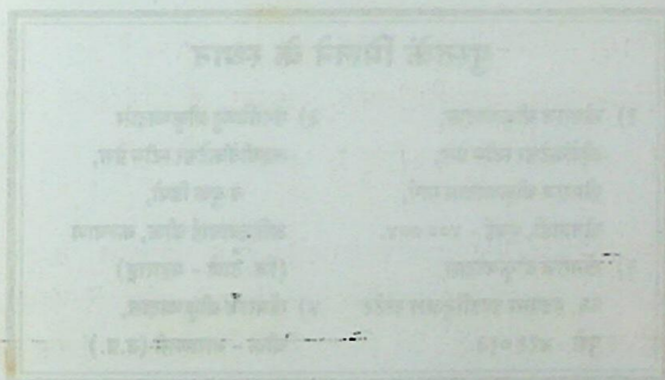
इह, अपरान्तविषये, नन्दिग्रामे, यः, शिष्यादिगीतस्तुतिः, सकलसच्छास्त्रवित्, कौशिकवंशजः, केशवः, अभूत्, तस्य, सूनुः, गणेशः, तदङ्घ्रिपद्मभजनात्, अवबोधांशकम्, लब्ध्वा, वृत्तविचित्रम्, स्पष्टम्, च, एतत्, अल्पकरणम्, अकरोत् ॥ ५ ॥

पश्चिम समुद्रके तटपर नंदिग्रामके विषे निवास करनेवाले कौशिकगोत्री, सकल सच्छास्त्रोंके जाननेवाले और शिष्यआदिसे प्रशंसाको प्राप्त होनेवाले, मेरे पिताजी जो केशव दैवज्ञ तिनके

चरणकमलोंकी सेवा करनेसे जो कुछ ज्ञान मुझ गणेशदैवज्ञको प्राप्त हुआ है, तिसके अवलम्बनसे अनेक प्रकारके वृत्तोंसे शोभायमान, स्पष्टार्थ और बहुत अर्थयुक्त इस करण ग्रन्थको मैंने रचा है ॥ ५ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रि-सान्निध्याधिगतविद्य-भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा विरचितयाऽन्वयसनाथितया भाषाटीकया सहितः पूर्वशकादहर्गणाद्यानयनाधिकारः समाप्तः ॥१६॥

शुभमस्तु ।



भाषाटीकानिर्माणसमयः ।



श्लो०-अश्विबाणागविन्द्वब्दे कार्त्तिकस्यापरे दले ।
द्वितीयायां तिथौ मन्दवासरे च निशामुखे ॥ १ ॥
ग्रहलाघवग्रन्थस्य ह्यन्वयेन सनाथिताम् ।
रामस्वरूपशर्माहं भाषाटीकामपीपरम् ॥ २ ॥

दोहा-नेत्र बाण गो इन्दु मित, वर्ष कार्तिक मास ।
कृष्णपक्ष तिथि द्वितीया, मन्दवार सुखरास ॥ १ ॥
ता दिन में या ग्रन्थके, टीकाको विस्तार ।
अन्वय औ भाषा विरचि, पूरण कियो विचार ॥ २ ॥
रामगंगतटपर बसत, नगर मुरादाबाद ।
तहँद्विज रामस्वरूपने, कियो सुभग अनुवाद ॥ ३ ॥
ता ग्रहलाघव ग्रन्थको, जो करिहैं सुविचार ।
तिनको बहुविधि होयँगे, सुलभ पदारथ चार ॥ ४ ॥
श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज सुखखानि ।
तिन आज्ञासों रची यह, व्याख्या बहु हित जानि ॥५ ॥

शुभमस्तु ॥

इति सान्वयभाषाटीकासमेत-ग्रहलाघवः समाप्तः ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)



हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-|२४२००७८.

